MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

MANAV Astro & Vedic 8586094945, 8302680069

भारत में सर्वाधिक प्रामाणिक बिक्री वाले इस पंचांग को लेते समय 'बम्बई वाले पं. श्रीधर शिवलालजी' नाम अवश्य देखें।

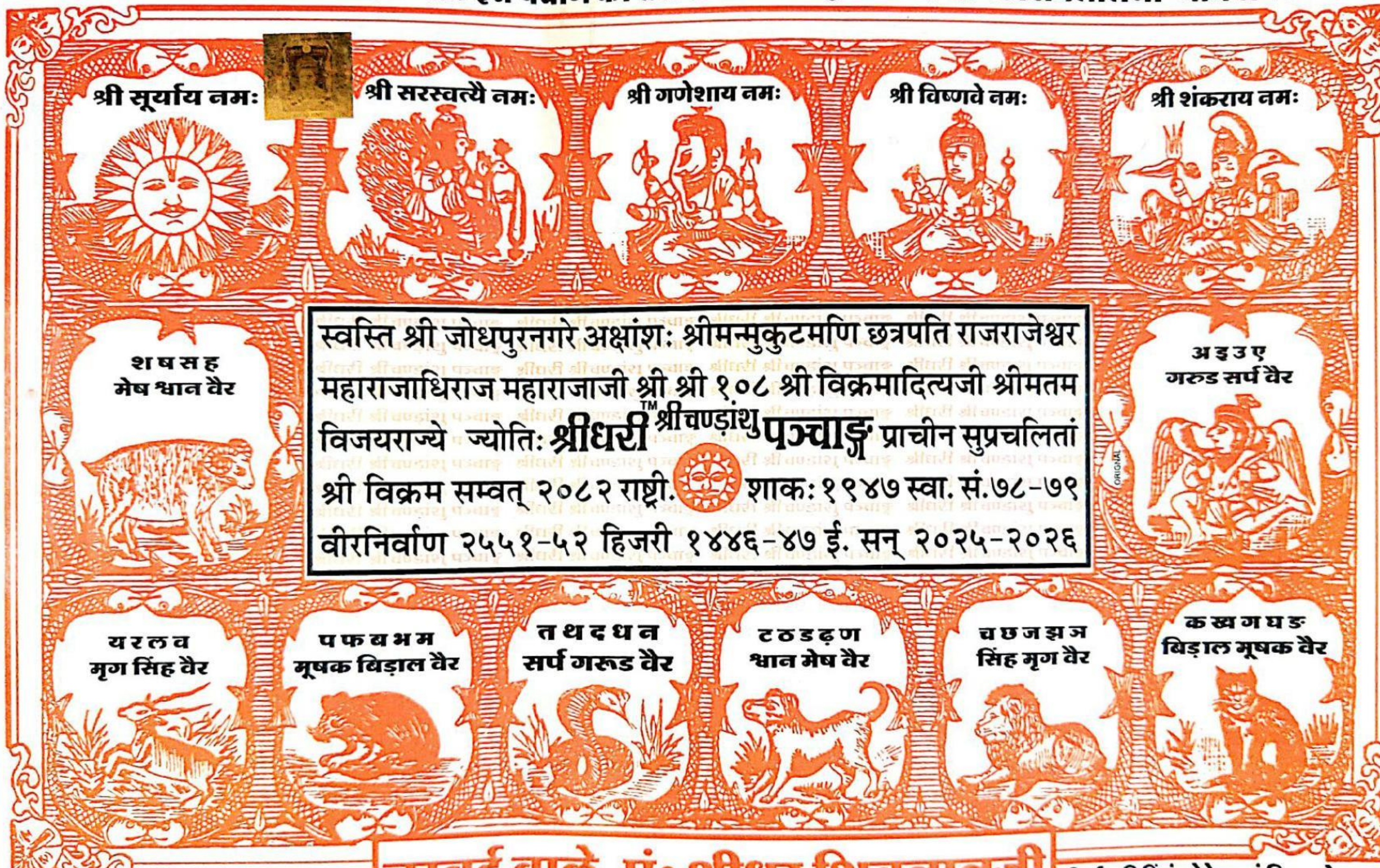

बम्बई वाले-पं० श्रीधर शिवलालजी

अनुभूतिप्रदं नाम ज्योतिषं शास्त्रमुत्तमम्
२१४ वर्षों से निरंतर आपकी सेवा में

निर्गमान्निर्मितं लोके वन्द्यं विजय तेतराम्

website: www.shridhari.com, Email : shridhari1811@gmail.com
फोन : (01463) 244160, 09462504750

शत तुल्य वर्षों से प्रचलित सन्मान्य लोकप्रिय पञ्चाङ्ग मूल्य ११०/- रुपये मात्र

नकली से सावधान : पंचांग खरीदते समय कवर पृष्ठ पर पं. महावीर प्रसाद जी का शुद्ध चित्र एवं श्रीधरी वाला गोल्डन □होलोग्राम अवश्य देखें।

रजि. ट्रेडमार्क नं. २४६३१२८ पञ्चाङ्ग कॉपीराइट नं. L-५४७४०

श्रीधरी पंचांग समझने के लिए संकेताक्षर

स्व. पं. बृजमोहन गौड़

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अक्टूबर, अगस्त, अप्रैल (मास)।
आ. = आर्द्रा (नक्षत्र), आषाढ़, आश्विन (मास)।
अं. = अंग्रेजी (तारीख, मास) अंश। उ. = उपरान्त, उदित, उत्तर। अ. गो. = अन्य गोधूलि (लग्न)।
उ. गो. = उत्तर गोल। उ. भा. = उत्तराभाद्रपद।
पू. भा. = पूर्वाभाद्रपद। ऐं. = ऐन्द्र (योग) क. = कला, कर्क, कन्या (राशि), या. = यावत्
का. = कार्तिक (मास)। क्रा. सा. = क्रान्ति साम्य (महापात)। कृ. = कृतिका (नक्षत्र) कृष्ण पक्ष।

गु. = गुरुवार, गुरु (ग्रह)। गु. दा. = गुरुदान
गो. = गोधूलि, गं. = गंड (योग)। घं. = घंटा, घ. = घटी,
प. = पल। चै. = चैत्र (मास)। चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चं. = चन्द्र (वार), चन्द्र (ग्रह)। ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
जू. = जून (मास)। जु. = जुलाई (मास)।
ज्ये. = ज्येष्ठा (नक्षत्र), ज्येष्ठ (मास)।
ता. = तारीख। दि.ल. = दिवा लग्न। द.गो. = दक्षिण गोलीय
ध. = धनु (राशि), धनिष्ठा (नक्षत्र)। ध्रु. = ध्रुव (योग),
धृ. = धृति (योग)। नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)। नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिध (योग) पल। प्र. = प्रथम, प्रवेश। प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)। फा. = फाल्गुन (मास)। पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पु. = पुष्य (नक्षत्र), पू.षा. = पूर्वाषाढा (नक्षत्र) ब्र. = ब्रह्म (योग)
पू.फा. = पूर्वाफाल्गुनी (नक्षत्र)। बु. = बुध (वार), बुध (ग्रह)
भ. = भद्रा, भरणी (नक्षत्र)। भा. = भाद्रपद (मास) भारतीय (दिनांक)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास)। मा. = मार्गी
मि. = मिथुन (राशि या लग्न), मिनट, मिति

मु. = मुहूर्त, मुसलमानी (दिनांक-मास)
मृ. = मृगशिरा (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)। मे. = मेष (राशि) लग्न
मू. = मूल (नक्षत्र)। मी. = मीन (राशि)। मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मं. = मंगल (वार), मंगल (ग्रह)। रे. = रेवती, या. = यावत
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि। र. = रवि (वार)
रो = रोहिणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
वै. = वैष्णव (संप्रदाय), [illegible] (मास)
वि.मु. = विवाह मुहूर्त, वि[illegible] [illegible]भ (योग)
वि. = विकला, व्र. = [illegible] [illegible]तिपात,
व. = वज्र, वरियान (योग), वणिज (कर[illegible]) [illegible]
सौ. = सौभाग्य (योग)। [illegible]कर्मा (योग) स. = [illegible]वार, सूर्य (ग्रह)
सिं. = सिंह (राशि व लग्न)। सि. = सिद्धि [illegible]), [illegible]र (मास)
स्वा. = स्वाति (नक्षत्र)। स्मा. = स्मार्त्त (सं[illegible])।
श्रा. = श्रावण (मास)। सा. [illegible]ष्य (यो[illegible]) [illegible]सायन
शु. = शुक्रवार, शुक्र (ग्रह), [illegible]क्ल ([illegible]), शुक्ल (पक्ष)
शि. = शिव (योग)। श.व्रा. = ([illegible]से)
श. = शनि (ग्रह), (शनिवार), शतभिषा (नक्षत्र)
हि. = हिन्दी (मास-तारीख) हिजरी। ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण योग
सर्वा. = सर्वार्थ सिद्धि योग। अमृत. = अमृतसिद्धि योग।

नोट:-पंचांग में दिये गये घंटा-मिनटों को निमानुसार जानें। सूर्योदय से दोपहर १२ बजे तक घंटा-मिनट सामान्य रूप से देखें। दोपहर १ बजे को १३ घंटा, २ बजे को १४ घंटा, ३ बजे को १५ घंटा, ४ बजे को १६ घंटा, ५ बजे को १७ घंटा, ६ बजे को १८ घंटा, ७ बजे को १९ घंटा, ८ बजे को २० घंटा, ९ बजे को २१ घंटा, १० बजे को २२ घंटा, ११ बजे को २३ घंटा रात्रि १२ बजे को २४ घंटा, रात्रि १ बजे को २५ घं., २ बजे को २६ घं., ३ बजे को २७ घं., ४ बजे को २८ घं., ५ बजे को २९ घं. तथा अगले दिन सूर्योदय नही हुआ तो ६ बजे को ३० घंटा और ७ बजे को ३१ घंटा जाने। इसी अनुरूप पंचांग में समय दिया गया है।

घटी-पल से घंटा-मिनट बनाने की सारिणी

घटी	पल	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट
१	००	०	२४	८	००	३	१२	१५	००	६	००	२२	००	८	४८
१	३०	०	३६	८	३०	३	२४	१५	३०	६	१२	२२	३०	९	००
२	००	०	४८	९	००	३	३६	१६	००	६	२४	२३	००	९	१२
२	३०	१	००	९	३०	३	४८	१६	३०	६	३६	२३	३०	९	२४
३	००	१	१२	१०	००	४	००	१७	००	६	४८	२४	००	९	३६
३	३०	१	२४	१०	३०	४	१२	१७	३०	७	००	२४	३०	९	४८
४	००	१	३६	११	००	४	२४	१८	००	७	१२	२५	००	१०	००
४	३०	१	४८	११	३०	४	३६	१८	३०	७	२४	२५	३०	१०	१२
५	००	२	००	१२	००	४	४८	१९	००	७	३६	२६	००	१०	२४
५	३०	२	१२	१२	३०	५	००	१९	३०	७	४८	२६	३०	१०	३६
६	००	२	२४	१३	००	५	१२	२०	००	८	००	२७	००	१०	४८
६	३०	२	३६	१३	३०	५	२४	२०	३०	८	१२	२७	३०	११	००
७	००	२	४८	१४	००	५	३६	२१	००	८	२४	२८	००	११	१२
७	३०	३	००	१४	३०	५	४८	२१	३०	८	३६	२८	३०	११	२४

घटी	पल	घंटा	मिनट
२९	००	११	३६
२९	३०	११	४८
३०	००	१२	००

ढैय्या गणना सारिणी

घटी	घंटा	घटी	घंटा
२॥	१	३२॥	१३
५	२	३५	१४
७॥	३	३७॥	१५
१०	४	४०	१६
१२॥	५	४२॥	१७
१५	६	४५	१८
१७॥	७	४७॥	१९
२०	८	५०	२०
२२॥	९	५२॥	२१
२५	१०	५५	२२
२७॥	११	५७॥	२३
३०	१२	६०	२४

घटी पल से घंटा मिनट बनाने की विधि

१ घटी = २४ मिनट। २ घटी = ४८ मिनट। ३० पल = १२ मिनट। १५ पल = ६ मिनट। ७॥ पल = ३ मिनट। २॥ पल = १ मिनट। १ पल = २४ सेकेंड। ६० विपल= १ पल। २॥ विपल = १ सेकेंड। ६० पल = १ घटी। ६० घटी = १ दिन। इसी प्रकार घटी पल में २॥ ढ़ाई का भाग देने से घंटा मिनट प्राप्त होंगे, तथा इनको अभिष्ट दिन के सूर्योदय में जोड़ने पर घंटा-मिनटादि मध्य स्पष्ट समाप्ति काल प्राप्त होंगे।

संपादक:-
पं. आशीष गौड़ (ज्योतिष रत्न)
पुराना शहर, किशनगढ़ (राज.)

-: विषय सूची :-

संकेताक्षर-विषय सूची	१
व्रत-पर्व-त्यौंहार एवं शासकीय अवकाश	२
चोघड़िया, होरा मुहूर्त, मूल विचार, दैनिक चौघड़िया	३-१०
होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांशादि, विवाहादि रेखा सारिणी	११
विभिन्न अक्षांश की लग्न सारिणियां	१२-१८
दशम लग्न सारिणी, चन्द्र स्पष्ट सारिणी, वर्ष प्रवेश सारिणी	१९-२१
अवकहड़ा चक्र, पंचशलाका, सप्तशलाका चक्र	२२-२३
नवजात शिशु के नामाक्षर सारिणी	२४-२७
नक्षत्र कष्टावली, अष्टकूट गुणक्य संख्या सारिणी	२८-२९
वर-वधू नक्षत्र मेलापक सारिणी	३०-३१
अष्टकूट परिहार सूत्रम्, मांगलिक विचार एवं परिहार	३२-३३
घातचक्र, भद्राज्ञान, पाया विचार, शिववास	३४
नवग्रह गुणधर्म, नवग्रह स्वरूप एवं यंत्र	३५-३७
महिराचार्य शिवघटी मुहूर्त्त + शनि परिभ्रमण सूत्रफलम्	३८
दिशाशूलादि, गोकुलनाथ जी का वचनामृत	३९
लाभ-खर्च, विश्वाज्ञान, लक्ष्मीपूजनमुहूर्त्तादि, वर्षफलादि	४०-४३
वार्षिक दिनमान-राशिफल सूत्रम्	४४-४५
वार्षिक विवाहादि मुहूर्त्त एवं ग्रहण विवेचना, राशिनक्षत्र प्रवेशकाल	४६-५८
तिथ्यादि पंचांग २४ पक्ष (घंटा-मिनटादि सहित)	५९-८२
संक्रान्ति फल, गुरू-शनि-राहु-केतु फलम्	८३
दैनिक ग्रहस्पष्ट व ग्रहण विवरण शेष भाग	८४-८९
सूर्य नक्षत्र से रूद्राभिषेक विचार एवं हवन विचार	९०
भावस्थ ग्रहफल सारिणी, द्वादशभावफल, हस्तरेखाज्ञान	९१-९३
विविध आवश्यक मुहूर्त्तादि	९४-९७
अंग्रेजी तारीखों से दशा, विंशोत्तरी महादशा-अष्टोत्तरी दशा	९८-१००
आनन्दादि योग, लग्न संस्कार सारिणी, अक्षांश सारिणी	१०१-१०९
विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त	११०-१२१
सुक्ष्मतम सूर्योदयास्त गणना, पंचांग विभेद विधि	१२२
सूर्यक्रान्ति सारिणी, चर सारिणी, वेलान्तर सारिणी	१२३-१२५
शनि-राहु-केतु राशि-नक्षत्र प्रवेश काल, रवियोग, बिज्ञापन	१२६-१२८

भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय, सुप्रचलित तिथि, वार, नक्षत्र, चन्द्र, व्रत- पर्व-त्योहार आदि देखने हेतु नित्योपयोगी पॉकेट पंचांग

श्रीधरी राजस्थान जंत्री (पॉकेट)

श्रीधरी श्रीजोधपुरी चंडांशु पॉकेट पंचांग

आज ही वाट्सअप पर आर्डर कर मंगवावें।
वाट्सअप मो. नम्बर- +919462504750

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

भारतीय व्रत-पर्व-जयंतियां-त्यौंहार एवं शासकीय अवकाश संवत् २०८२ सनाब्द २०२५-२०२६

व्रत-पर्व	तारीख-माह	वार
❑ चैत्री नवरात्रि प्रारंभ	३० मार्च	रवि
▲ चेतीचंद झूलेलाल जयंती	३० मार्च	रवि
श्री मत्स्य जयंती दशाऽवतारे	३१ मार्च	सोम
❑ श्री गणगौर पूजा	३१ मार्च	सोम
▲ इदुल फितर मीठी ईद	३१ मार्च	सोम
चैत्री दुर्गाष्टमी पूजा	०५ अप्रैल	शनि
▲ श्री राम जं. दुर्गा नवमी पू.	०६ अप्रैल	रवि
▲ श्री महावीर जयंती जैन	१० अप्रैल	गुरू
अनंग त्रयोदशी पर्व	१० अप्रैल	गुरू
▲ ज्येतिबाफूले जयंती	११ अप्रैल	शुक्र
श्री हनुमान प्राकट्योत्सव पर्व	१२ अप्रैल	शनि
वैशाखी पर्व–श्री खालसा जं.	१३ अप्रैल	रवि
मेष संक्रान्ति पुण्य	१३ अप्रैल	रवि
▲ डॉ. अम्बेडकर जन्म	१४ अप्रैल	सोम
गुरू तेग बहादुर जयंती	१८ अप्रैल	शुक्र
गुरू अर्जुनदेव जयंती	२० अप्रैल	रवि
श्री वल्लभाचार्य जयंती वैष्णव	२४ अप्रैल	गुरू
पाराशर ऋषि जयंती	२८ अप्रैल	सोम
श्री छत्रपति शिवाजी जन्म	२९ अप्रैल	मंगल
● श्री परशुराम प्राकट्यो.(राज. में)	२९ अप्रै.	मंगल
अक्षय तृतीया–आखातीज	३० अप्रैल	बुध
श्री आद्य शंकराचार्य जयंती	०२ मई	शुक्र
श्री सूरदास जयंती	०२ मई	शुक्र
श्री रामानुजाचार्य ज. उत्तरभारत में	०३ मई	शनि
कवि टैगोर जयंती	०७ मई	बुध
श्री नृसिंह प्राकट्योत्सव पर्व–मेला	११ मई	रवि
श्री कूर्म जयंती	१२ मई	सोम
❑ श्री बुद्ध जयंती–पीपल पूनम	१२ मई	सोम
रोहिणी रवि–तपनकाल प्रारंभ	२५ मई	रवि
वट सावित्री अमावस्या पूजा	२६ मई	सोम
श्री शनि जयंती पर्व	२७ मई	मंगल
▲ श्री राणा प्रताप जयंती	२९ मई	गुरू
श्रुति पंचमी जैन	३१ मई	शनि
अरण्य षष्ठी	०१ जून	रवि
श्री महेश नवमी–माहेश्वरीय	०४ जून	बुध
❑ श्री गंगादशहरा–स्नान पर्व	०५ जून	गुरू
श्री बटुक भैरव जयंती	०५ जून	गुरू

व्रत-पर्व	तारीख-माह	वार
❑ श्री निर्जला ११ व्रत	०६ जून	शुक्र
▲ बकरा ईद मुस.	०७ जून	शनि
मृगशिरा रवि	०८ जून	रवि
वटसावित्री पूजा व्रत ३ दिन	०८–१०जून	र.–मं.
❑ श्री कबीर जयंती	११ जून	बुध
वर्षा ऋतु प्रारंभ, रविदक्षिणायणे	२१ जून	शनि
विश्व योग दिवस	२१ जून	शनि
गुप्त नवरात्रि प्रारंभ	२६ जून	गुरू
❑ श्री जगन्नाथ रथयात्रापुरी	२७ जून	शुक्र
भड्डुली नवमी	०४ जुलाई	शुक्र
देवशयनी एकादशी व्रत	०६ जुलाई	रवि
▲ मोहर्रम ताजिया–मुस्लिम	०६ जुलाई	रवि
श्री गुरूपूर्णिमा पूजन पर्व	१० जुलाई	गुरू
नागपंचमी–राजस्थाने	१५ जुलाई	मंगल
बालगंगाधर तिलक जयंती	२३ जुलाई	बुध
शहीद चन्द्रशेखर आजाद ज.	२३ जुलाई	बुध
हरियाली अमावस्या पर्व	२४ जुलाई	गुरू
हरियाली तीज–झूला तीज	२७ जुलाई	रवि
नागपंचमी देशाचारीय	२९ जुलाई	मंगल
श्रीकल्की जयंती दशाऽवतारे	३० जुलाई	बुध
गोस्वामी तुलसीदास जयंती	३१ जुलाई	गुरू
▲ रक्षाबंधन भद्रोपरांत	०९ अगस्त	शनि
▲ आदिवासी दिवस	०९ अगस्त	शनि
सातु तीज व्रत पर्व	१२ अगस्त	मंगल
बहुला चतुर्थी व्रत	१२ अगस्त	मंगल
हलचन्दन षष्ठी उबछठ व्रत	१४ अगस्त	गुरू
▲ राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिवस	१५ अगस्त	शुक्र
▲ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वै.	१६ अगस्त	शनि
गोगा नवमी, नन्दोत्सव	१७ अगस्त	रवि
खेड़ापति बालाजी मेला सले.	१८ अगस्त	सोम
बछबारस गौ सेवा संकल्प	२० अगस्त	बुध
श्री पर्युषण पर्व प्रा. श्वे. जैन	२० अगस्त	बुध
सती पूजा अमावस्या अग्रवंशे	२३ अगस्त	शनि
वराह जयंती दशाऽवतारे	२५–२६ अग.	सो./मं
हरितालिका तीज व्रत	२६ अगस्त	मंगल
❑ श्री गणेश ज., संवत्सरी प.	२७ अगस्त	बुध
ऋषि पंचमी पर्व,पर्युषण प्रा.	२८ अगस्त	गुरू

व्रत-पर्व	तारीख-माह	वार
बलदेव छठ, सूर्यषष्ठी	२९ अगस्त	शुक्र
श्रीराधाष्टमी, श्री दधिचि जयंती	३१ अगस्त	रवि
श्री चन्द्र नवमी	०१ सितम्बर	सोम
श्रीरामदेव जं., तेजादशमी	०२ सितम्बर	मंगल
जलझूलनी ११ व्रत फूलडोल	०३ सितम्बर	बुध
श्री वामन जं. दशाऽवतारे	०४ सितम्बर	गुरू
▲ बारहवफात मुस.	०५ सितम्बर	शुक्र
अनन्त चतुर्दशी पर्व	०६ सितम्बर	शनि
महालय श्राद्धपक्षारंभ	०७ सितम्बर	रवि
सर्वपितृ अमावस्या तर्पण	२१ सितम्बर	रवि
▲ नवरात्रि प्रा[illegible]	[illegible]२ सितम्बर	सोम
शहीद भगत[illegible]	[illegible] सितम्बर	रवि
दुर्गाष्टमी पू[illegible]ष्टमी पूजा	३[illegible] सितम्बर	मंगल
☆ बैंक अ[illegible]	[illegible] सितम्बर	मंगल
महानवमी पू[illegible], दुर्गानवमी	०१ अक्टूबर	बुध
▲ विजयादश[illegible] दश[illegible]	०२ अक्टूबर	गुरू
▲ श्री गांधी–[illegible] जयंती	[illegible] अक्टूबर	गुरू
शरद पूर्णिमा मह[illegible]	[illegible]६ अक्टूबर	सोम
❑ श्री वा[illegible]की जयंती	[illegible] अक्टूबर	मंगल
[illegible]–करवा चतुर्थी व्रत	१[illegible] अक्टूबर	शुक्र
[illegible] पूजा	[illegible]३ अक्टूबर	सोम
[illegible]–यमदीपदान	[illegible]८ अक्टूबर	शनि
नर[illegible]चतुर्दशी स्नान	[illegible]० अक्टूबर	सोम
▲ [illegible]ली महालक्ष्मी पूजा	[illegible]	[illegible]
[illegible] स्वामी निर्वाण	[illegible]	[illegible]
▲ अन्नकूट, गोवर्धन पूजा	२२ अक्टूबर	बुध
भाई दूज, यम द्वितीया	२३ अक्टूबर	गुरू
सौभाग्य लाभ पंचमी	२६ अक्टूबर	रवि
सूर्यषष्ठी डालाषष्ठी	२७ अक्टूबर	सोम
गोपाष्टमी गौसेवा संकल्प	३० अक्टूबर	गुरू
देवप्रबोधिनी ११ व्रत	०२ नवम्बर	रवि
वैकुण्ठ चवदश	०४ नवम्बर	मंगल
▲ गुरूनानक जयंती	०५ नवम्बर	बुध
श्री पुष्करराज स्नान मेला	०५ नवम्बर	बुध
श्री काल भैरवाष्टमी	१२ नवम्बर	बुध
मोक्षदा एकादशी व्रत	०१ दिसम्बर	सोम
श्री गीता जयंती पर्व	०१ दिसम्बर	सोम

व्रत-पर्व	तारीख-माह	वार
श्रीदत्त प्रभु जयंती	०४ दिसम्बर	गुरू
श्रीपार्श्वनाथ ज., पौषी दशमी	१४ दिसम्बर	रवि
धनु संक्रान्ति मलमास प्रा.	१५ दिसम्बर	सोम
▲ ईसा जन्म क्रिसमस डे	२५ दिसम्बर	गुरू
▲ गुरूगोविन्द सिंह जयंती	२७ दिसम्बर	शनि
पुत्रदा एकादशी व्रत	३०–३१ दिस.	मं.–बु.
ईस्वी वर्ष पूर्णता	३१ दिसम्बर	बुध
ईस्वी नववर्ष २०२६ प्रारम्भ	०१ जन.२६	गुरू
माघी संकष्ट तिल चतुर्थी व्रत	०६ जनवरी	मंगल
विवेकानन्द–रामानन्दाचार्य ज.	०९ जनवरी	शुक्र
स्वामी विवेकानन्द जन्म ता.से	१२ जनवरी	सोम
❑ लोहड़ी पर्व पंजाब	१३ जनवरी	मंगल
❑ मकर संक्रान्ति पर्व	१४ जनवरी	बुध
गुप्त नवरात्रा प्रारम्भ	१९ जनवरी	सोम
नेताजी सुभाष जयंती	२३ जनवरी	शुक्र
❑ सरस्वती ज. बसंत पंचमी	२३ जनवरी	शुक्र
नर्मदा जयंती, देवनारायण ज.	२५ जनवरी	रवि
▲ राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस	२६ जनवरी	सोम
श्री गांधी पुण्य दिवस	३० जनवरी	शुक्र
❑ विश्वकर्मा ज.,गोरखनाथ ज.	३१ जनवरी	शनि
रामस्नेही जयंती शाहपुरा	३१ जनवरी	शनि
गुरू रविदास जयंती	०१ फरवरी	रवि
▲ महाशिवरात्रि व्रत	१५ फरवरी	रवि
दयानन्द बोधोत्सव	१६ फरवरी	सोम
शिवखप्पर पूजा	१७ फरवरी	मंगल
श्री रामकृष्ण परमहंस जंयती	१९ फरवरी	गुरू
रौद्र संवत्सर ५४वां प्रा.	२४ फरवरी	मंगल
श्री दादूदयाल ज., होलाष्टक प्रा.	२४ फरवरी	मंगल
श्री खाटूश्याम जी मेला	२७ फरवरी	शुक्र
▲ होलिका दहन पर्व	०२ मार्च	सोम
चैतन्य महाप्रभु जंयती	०३ मार्च	मंगल
▲ छारंडी वसन्तोत्सव	०३ मार्च	मंगल
शीलसप्तमी पूजा	१० मार्च	मंगल
शीतलाष्टमी पूजा बासोड़ा	११ मार्च	बुध
दशामाता व्रत	१३ मार्च	शुक्र
पापमोचिनी ११ व्रत	१५ मार्च	रवि
रंगतेरस	१७ मार्च	मंगल
चांद्र वर्ष पूर्ति सम्वत् २०८१	१९ मार्च	गुरू

अवकाश हेतु सूचना- (१) इस चिन्ह ☆ के अवकाश केवल बैंक व्यवस्था में ही मान्य है। (२) इस चिन्ह ❑ के अवकाश सभी प्रांतो में मान्य नहीं। माननीय जिलाधीश महोदय की आज्ञा अनुसार मान्य। (३) ▲ चिन्ह के अवकाश समूचे राज./भारत में मान्य रहेंगे। वर्ष पर्यंत प्रत्येक मास के रविवार एवं द्वितीय शनिवार को शासकीय अवकाश मान्य रहेगा एवं कई प्रान्तों में चारों शनिवार को भी स्वीकृत प्रशासनिक विभागों में अवकाश मान्य रहेगा। (४) कई बार स्थान भेद, चन्द्रदर्शन विभेद वश तथा धर्म सम्प्रदाय तिथि विभेद एवं मतान्तर स्थिति के कारण १ दिन का अन्तर भी मान्य हो सकता है। (५) चन्द्रदर्शन विभेद वश तारीख आगे पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्यौंहारों के दिन में १ दिन का अन्तर संभव है। (६) पाठकगण सरकारी गजट आने पर अवकाश का मिलान अवश्य कर लेवें।

विभिन्न संवत् एवं वर्ष ज्ञानाय परिपत्र

श्री विक्रम संवत् २०८२
श्री राष्ट्रीय शाकः १९४७
श्री वल्लभाब्द ५४७–५४८
श्री ईस्वी सन् २०२५–२६
श्री रामानुजाब्द १००९–१०
श्री रामानन्दाब्द ७२७–२८
श्री बुद्ध संवत् २५६८–६९
मलयालम् वर्ष १७००–१७०१
श्री रामचरणाब्द ३०६–३०७
श्री कृष्ण संवत् ५२५१–५२
श्री निम्बार्काब्द ५१२१–२२
पारसी शहंशाही १३९४–९५
भारत स्वातंत्र्य संवत् ७८–७९
श्री कबीराब्द वर्ष ६२७–२८
श्री फसली बंगाली १४३१–३२
हिजरी मुस्लिम सन् १४४६–४७
श्री खालसा सिक्ख पंथ ३२५–२६
श्री महावीर जैन संवत् २५५१–५२
श्री हरिदासाब्द वृन्दावने ५४६–४७
श्री खरतरगच्छ श्री संघ संवत् १००२
श्री जैन राजेन्द्र गुरू संवत् ११८–११९

दिन का चौघड़िया

६ बजे से प्रातः के समय	चौघ.	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
६ से ७.३०	पहली	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ	शुभ	चंच.	काल
७.३० से ९	दूसरी	चंच.	काल	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ	शुभ
९ से १०.३०	तीसरी	लाभ	शुभ	चंच.	काल	उद्वे.	अमृ.	रोग
१०.३० से १२	चौथी	अमृ.	रोग	लाभ	शुभ	चंच.	काल	उद्वे.
१२ से १.३०	पांचवीं	काल	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ	शुभ	चंच.
१.३० से ३	छठवीं	शुभ	चंच.	काल	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ
३ से ४.३०	सातवीं	रोग	लाभ	शुभ	चंच.	काल	उद्वे.	अमृ.
४.३०से६शाम	आठवीं	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ	शुभ	चंच.	काल

रात का चौघड़िया

६ बजे से रात के समय	चौघ.	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
६ से ७.३०	पहली	शुभ	चंच.	काल	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ
७.३० से ९	दूसरी	अमृ.	रोग	लाभ	शुभ	चंच.	काल	उद्वे.
९ से १०.३०	तीसरी	चंच.	काल	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ	शुभ
१०.३० से १२	चौथी	रोग	लाभ	शुभ	चंच.	काल	उद्वे.	अमृ.
१२ से १.३०	पांचवी	काल	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ	शुभ	चंच.
१.३० से ३	छठवीं	लाभ	शुभ	चंच.	काल	उद्वे.	अमृ.	रोग
३ से ४.३०	सातवीं	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ	शुभ	चंच.	काल
४.३० से ६	आठवीं	शुभ	चंच.	काल	उद्वे.	अमृ.	रोग	लाभ

शुभकार्य हेतु चौघड़िया मुहूर्तः- जब कभी नक्षत्र, वार और योगादि के अनुसार शुभ मुहूर्त नहीं मिले तब चौघड़िया (चौघटिका वेला) का मुहूर्त्त मान्य कहा गया है। इस मुहूर्त्त के अनुसार यात्रा, राजकार्य, अधिकारियों अथवा वांछित उत्तम पुरूषों से संपर्क, वाहन चालन अथवा नये कार्य का आरंभ किया जाना शुभ माना गया है। दिन और रात दोनों को आठ-आठ भागों में विभक्त करने पर दिन के आठ ओर रात के आठ चौघड़िया बन जाते है। स्थुल मान् से एक चौघड़िया १.३० घण्टे का होता है। इसमें अमृत, शुभ और लाभ चौघड़िये शुभ होते है। उद्वेग और चंचल चोघड़िये चिंता देने वाले होते है ओर रोग तथा काल चौघड़िये नेष्ट फल देने वाले माने गये हैं।(इस प्रकार कुल ७ चौघड़िये होते है एक चौघड़िया की आवृत्ति होती है।) दिन का प्रथम चौघड़िया सूर्योदय के साथ तथा रात का चौघड़िया सूर्यास्त के साथ प्रांरभ होता है। तालिकाओं में १२ घण्टे का दिन और १२ घण्टे की रात मान कर मध्यमान से सूर्योदय प्रातः ६ बजे और सूर्यास्त सांय ६ बजे मानते हुए समयावधि दी गई है। चौघड़िया का सही समय जानने के लिए दिनमान अथवा रात्रिमान को ८ का भाग देकर प्रत्येक चौघड़िये का समय निकालकर फिर सूर्योदय अथवा सूर्यास्त में उस अवधि को क्रम से जोड़ते हुए वांछित चौघड़िये का समय प्राप्त किया जा सकता है। ❑❑❑

वार	समय	राहुकाल वेला	समय	गुलिक कालम्	समय	यमगण्डम्
रवि	सायं	०४।३० से ०६।००	दिवा	०३।०० से ०४।३०	दिवा	१२।०० से ०१।३०
सोम	प्रातः	०७।३० से ०९।००	दिवा	०१।३० से ०३।००	प्रातः	१०।३० से १२।००
मंगल	दिवा	०३।०० से ०४।३०	दिवा	१२।०० से ०१।३०	प्रातः	०९।०० से १०।३०
बुध	दिवा	१२।०० से ०१।३०	प्रातः	१०।३० से १२।००	प्रातः	०७।३० से ०९।००
गुरू	दिवा	०१।३० से ०३।००	प्रातः	०९।०० से १०।३०	प्रातः	०६।०० से ०७।३०
शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।००	प्रातः	०७।३० से ०९।००	दिवा	०३।०० से ०४।३०
शनि	प्रातः	०९।०० से १०।३०	प्रातः	०६।०० से ०७।३०	दिवा	०१।३० से ०३।००

आश्लेषा नक्षत्र	
प्रथम-५ घटी	ऐश्वर्य प्राप्ति
द्वितीय- ७ घटी	पिता को कष्ट
तृतीय- २ घटी	माता को कष्ट
चतुर्थ- ३ घटी	कामी
पंचम- ४ घटी	पितृ भक्ति
षष्ठी- ८ घटी	शक्ति सम्पन्न
सप्तम- ११ घटी	स्वतः को दुखदायी
अष्टम- ६ घटी	त्यागी
नवम- ९ घटी	भोगी
दशम- ५ घटी	धनवान

ज्येष्ठा नक्षत्र	
प्रथम-६ घटी	नानी को अशुभ
द्वितीय- ६ घटी	नाना को कष्ट
तृतीय- ६ घटी	मामा को कष्ट
चतुर्थ- ६ घटी	माता को कष्ट
पंचम- ६ घटी	स्वयं को कष्ट
षष्ठी- ६ घटी	कुटुम्बी को कष्ट
सप्तम- ६ घटी	माता-पिता-कुल कष्ट
अष्टम- ६ घटी	बड़े भाई को कष्ट
नवम- ६ घटी	श्वसुर को कष्ट
दशम- ६ घटी	कुटुम्ब को कष्ट

मूल नक्षत्र	
प्रथम-८ घटी	मूल- खराब
द्वितीय-६ घटी	तना- धन हानि
तृतीय-११ घटी	छाल-भ्रातृनाश
चतुर्थ-९ घटी	डालियां-मातृ कष्ट
पंचम-१४ घटी	पत्ते-परिवारक्षय
षष्ठी-६ घटी	पुष्प-ऐश्वर्यप्राप्ति
सप्तम-४ घटी	फल-राजसुख
अष्टम- ३ घटी	शिखा-अल्पायु

ॐ ॐ सर्वकार्यसिद्धि होरा मुहूर्त चक्र ॐ ॐ

घण्टा⇨ वार ⇩	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
सूर्य	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु
चंद्र	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु
मंगल	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु
बुध	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श
गुरू	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू
शुक्र	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं
शनि	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं

ॐ ☆ सर्वकार्यसिद्धि होरा मुहूर्त विचार ॐ ☆

विधिः- सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक है। पाठक इसका प्रयोग कर अपना मनोरथ सफल करेंगें। सात ग्रहों के सात होरे है जो दिन रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य सिद्धि के लिए अशुभ समय में सुसमय सुअवसर प्रदान करते है। प्रत्येक वार को सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा एक घण्टे की होती है। दिन-रात के २४ घण्टों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी यानि एक घण्टा का होता है। इस प्रकार प्रत्येक घण्टे पर होरा बदल जाती है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वराशि के स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा में शुभ कार्यो का त्याग कर देना चाहिये, अन्यथा अशुभ फल प्राप्त होगा। स्वराशि को भिन्न ग्रहों की होरा में कार्य आरम्भ श्रेयस्कर होता है। ❑❑❑

किस ग्रह की होरा में कोनसा कार्य करें- (१) सूर्य की होराः- नौकरी व राजकार्य (चार्ज लेन देन के लिए अच्छा होता है) निविदा कार्य।(२) चन्द की होराः- सर्वसिद्धि कारक है।(३) मंगल की होराः- द्युत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसायटी में जाना, मुकदमा, युद्ध विवाद, कलह आदि के लिए उत्तम है।(४) बुध की होराः- ज्ञानार्जन, कोष संग्रह, नवीन व्यापार करना, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।(५) गुरू की होराः- विवाह संबंधी कार्य एवं बुध की होरा में किये जाने वाले सभी कार्य शुभ होते है।(६) शुक्र की होराः- यात्रा, आभुषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्यवर्धन कार्य व सिनेमा शूटिंग के कार्यो के लिए शुभ होती है।(७) शनि की होराः- द्रव्य संग्रह, लोह लक्खड़, खदान, पैट्रोल, पदार्थ, चमड़ा, योग, साधना, स्थिर कार्यो के लिए शुभ होती है। उदाहरणः- कल्पना कीजिए कि आज सूर्यवार है, किसी व्यापार का आरंभ करना है तो सूर्योदय से तीसरी १०, १७, २४ वीं होरा बुध की है, जिससे संबंधित कार्य किये जा सकते है। इसी प्रकार अन्य कार्यो को करने के लिए होरा मुहूर्त्त का विचार करना चाहिये। २४ घण्टे में कब कोनसी होरा है- जानने के लिए निम्न चक्र देखें। ❑❑❑

मूल नक्षत्र एवं शान्ति विचारः- शांति उपाय अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती ये ६ नक्षत्र मूल नक्षत्र कहलाते है। इन नक्षत्रों में जन्म लेने वाले बालक या बालिका को मूल पड़ने की संज्ञा दी जाती है। ऐसे शिशु का मुख मूल शांति तक पिता को देखना वर्जित है। मूल शांति १२ वें दिन या उसी नक्षत्र के २६, २७, २८वें दिन करना चाहिये। मूल शांति के पहले यदि अभाग्य से पिता की मृत्यु हो जावें तो मूल शांति कराना व्यर्थ है। मूल नक्षत्रों का फलः- मूल नक्षत्रों का फल केवल अशुभ ही नहीं होता है, वरन् शुभ भी होता है। अश्विनी, मघा तथा मूल के प्रथम चरण मे पिता के लिए, द्वितीय चरण माता के लिए, तृतीय चरण धन के लिए अशुभ होता है तथा चतुर्थ चरण शुभ होता है। इसी प्रकार आश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती के प्रथम चरण का फल शुभ तथा द्वितीय चरण धन के लिए, तृतीय चरण माता के लिए और चतुर्थ चरण पिता के लिए अशुभ होता है। मूल की शांति कराने से दोष नष्ट हो जाता है। मूल शांति के पश्चात् पिता शिशु का मुख देखें। बड़े मूलों का घटी के अनुसार भी फलाफल माना गया है जो निम्नानुसार है-सारणी में जो १० भाग दिये गये हे वे आश्लेशा नक्षत्र का समय ६० घटी मानकर २४ घण्टे किये गये है। २४ मिनट=१घटी। यदि सम्पूर्ण अश्लेषा नक्षत्र ६० से अधिक या कम घटीयों का होतो उसी अनुपात से प्रत्येक भाग को घटाया या बढाया जाना चाहिये।

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

अवकहड़ा चक्रः नक्षत्र-राश्यादि स्वामी योनि-वर्ण-वश्यादि बोधक सारिणी

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	राशि स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	युञ्जा	हंसक तत्व	नक्षत्र संज्ञा	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	लोचन	पु. स्त्री.
अश्विनी	चू चे चो ला					अश्व	देव	आदि	पूर्व		क्षिप्र लघु	अश्विनी कुमार	केतु	मन्द	पुरूष
भरणी	ली लू ले लो	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	मनुष्य	मध्य	पूर्व	अग्नि	उग्र क्रूर	यमराज	शुक्र	मध्य	पुरूष
कृत्तिका	अ ० ० ०					मेष	राक्षस	अन्त्य	पूर्व		मिश्र साधारण	अग्नि	सूर्य	सुलोच.	पुरूष
कृत्तिका	० इ उ ए					मेष	राक्षस	अन्त्य	पूर्व		मिश्र साधारण	अग्नि	सूर्य	सुलोच.	पुरूष
रोहिणी	ओ वा वी वु	वृषभ	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	मनुष्य	अन्त्य	पूर्व	पृथ्वी	ध्रुव स्थिर	ब्रह्मा	चन्द्र	अन्ध	पुरूष
मृगशिरा	वे वो ० ०					सर्प	देव	मध्य	पूर्व		मृदु मैत्र	चन्द्रमा	मंगल	मन्द	पुरूष
मृगशिरा	० ० क की					सर्प	देव	मध्य	पूर्व		मृदु मैत्र	चन्द्रमा	मंगल	मन्द	पुरूष
आर्द्रा	कु घ ङ छ	मिथुन	बुध	शूद्र	मानव	श्वान	मनुष्य	आदि	मध्य	वायु	तीक्ष्ण दारुण	शिव	राहु	मध्य	स्त्री
पुनर्वसु	के को ह ०					मार्जा	देव	आदि	मध्य		चर चलं	अदिति	गुरु	सुलोच.	स्त्री
पुनर्वसु	० ० ० ही					मार्जा	देव	आदि	मध्य		चर चलं	अदिति	गुरु	सुलोच.	स्त्री
पुष्य	हू हे हो डा	कर्क	चन्द्र	विप्र	जलचर	मेष	देव	मध्य	मध्य	जल	क्षिप्र लघु	बृहस्पति	शनि	अन्ध	स्त्री
आश्लेषा	डी डू डे डो					मार्जा	राक्षस	अन्त्य	मध्य		तीक्ष दारु	सर्प देवता	बुध	मन्द	स्त्री
मघा	मा मी मू मे					मूषक	राक्षस	अन्त्य	मध्य		उग्र क्रूर	पितर	केतु	मध्य	स्त्री
पूर्वाफाल्गुनी	मो टा टी टू	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	वनचर	मूषक	मनुष्य	मध्य	मध्य	अग्नि	उग्र क्रूर	भग - सूर्य	शुक्र	सुलोच.	स्त्री
उत्तराफाल्गुनी	टे ० ० ०					गौ	मनुष्य	आदि	मध्य		ध्रुव स्थिर	अर्यमा - सूर्य	सूर्य	अन्ध	स्त्री
उत्तराफाल्गुनी	० टो प पी					गौ	मनुष्य	आदि	मध्य		ध्रुव स्थिर	अर्यमा - सूर्य	सूर्य	अन्ध	स्त्री
हस्त	पू ष ण ठ	कन्या	बुध	वैश्य	मानव	महिष	देव	आदि	मध्य	पृथ्वी	क्षिप्र लघु	सूर्य देवता	चन्द्र	मन्द	स्त्री
चित्रा	पे पो ० ०					व्याघ्र	राक्षस	मध्य	मध्य		मृदु मैत्र	त्वष्टा	मंगल	मध्य	स्त्री
चित्रा	० ० रा री					व्याघ्र	राक्षस	मध्य	मध्य		मृदु मैत्र	त्वष्टा	मंगल	मध्य	स्त्री
स्वाति	रू रे रो ता	तुला	शुक्र	शूद्र	मानव	महिष	देव	अन्त्य	मध्य	वायु	चर चल	वायुदेव	राहु	सुलोच.	स्त्री
विशाखा	ती तू ते ०					व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य	मध्य		मिश्र साधारण	इन्द्राग्नि	गुरु	अन्ध	नपु.
विशाखा	० ० ० तो					व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य	मध्य		मिश्र साधारण	इन्द्राग्नि	गुरु	अन्ध	नपु.
अनुराधा	ना नी नू ने	वृश्चिक	मंगल	विप्र	कीट	मृग	देव	मध्य	मध्य	जल	मृदु मैत्र	मित्र	शनि	मन्द	नपु.
ज्येष्ठा	नो या यी यू					मृग	राक्षस	आदि	अन्त्य		तीक्ष दारु	इन्द्र	बुध	मध्य	नपु.
मूल	ये यो भ भी				मानव	श्वान	राक्षस	आदि	अन्त्य		तीक्ष दारु	राक्षस	केतु	सुलोच.	पुरूष
पूर्वाषाढ़ा	भू ध फ ढ	धनु	गुरु	क्षत्रिय		वानर	मनुष्य	मध्य	अन्त्य	अग्नि	उग्र क्रूर	जल	शुक्र	अन्ध	पुरूष
उत्तराषाढ़ा	भे ० ० ०				चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अन्त्य	अन्त्य		ध्रुव स्थिर	विश्वेदेव	सूर्य	मन्द	पुरूष
उत्तराषाढ़ा	० भो जा जी				चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अन्त्य	अन्त्य		ध्रुव स्थिर	विश्वेदेव	सूर्य	मन्द	पुरूष
श्रवण	खी खू खे खो	मकर	शनि	वैश्य		वानर	देव	अन्त्य	अन्त्य	पृथ्वी	चर चल	विष्णु	चन्द्र	सुलोच.	पुरूष
धनिष्ठा	गा गी ० ०				जलचर	सिंह	राक्षस	मध्य	अन्त्य		चर चल	वसु	मंगल	अन्ध	पुरूष
धनिष्ठा	० ० गू गे					सिंह	राक्षस	मध्य	अन्त्य		चर चल	वसु	मंगल	अन्ध	पुरूष
शतभिषा	गो सा सी सू	कुंभ	शनि	शूद्र	मानव	अश्व	राक्षस	आदि	अन्त्य	वायु	चर चल	वरुण	राहु	मन्द	पुरूष
पूर्वाभाद्रपद	से सो द ०					सिंह	मनुष्य	आदि	अन्त्य		उग्र क्रूर	अजपाद	गुरु	मध्य	पुरूष
पूर्वाभाद्रपद	० ० ० दी					सिंह	मनुष्य	आदि	अन्त्य		उग्र क्रूर	अजपाद	गुरु	मध्य	पुरूष
उत्तराभाद्रपद	दू थ झ ञ	मीन	गुरु	विप्र	जलचर	गौ	मनुष्य	मध्य	अन्त्य	जल	ध्रुव स्थिर	अहिर्बुन्ध्य	शनि	सुलोच.	पुरूष
रेवती	दे दो चा ची					गज	देव	अन्त्य	पूर्व		मृदु मैत्र	पूषा	बुध	अन्ध	पुरूष

ग्रहों के अंश कलादि के स्पष्ट द्वारा नक्षत्र चरण प्रवेश काल बोधक सारिणी

सूर्य एवं चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिव्रत का पूरा परिभ्रमण करने में भिन्न-भिन्न समय लेते हैं। क्रान्तिव्रत का मान ३६०° होता है। ३६० अंश में २७ का भाग देने से प्रत्येक नक्षत्र का मध्य मान १३ अंश २० कला होता है तथा प्रत्येक नक्षत्र के ४ चरण होने से प्रत्येक नक्षत्र के एक चरण का मान (१३°-२०′) ÷ ४ = ३°-२०′ होगा, शून्य से प्रारम्भ होकर प्रत्येक ग्रह इसी प्रकार क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०-००-००	अश्विनी (१) मेष	४-००-००	मघा (१) सिंह	८-००-००	मूल (१) धनु
०-०३-२०	"(२)"	४-०३-२०	"(२)"	८-०३-२०	"(२) धनु
०-०६-४०	"(३)"	४-०६-४०	"(३)"	८-०६-४०	"(३)"
०-१०-००	"(४)"	४-१०-००	"(४)"	८-१०-००	"(४)"
०-१३-२०	भरणी (१)"	४-१३-२०	पूफा (१)"	८-१३-२०	पूषा (१)"
०-१६-४०	"(२)"	४-१६-४०	"(२)"	८-१६-४०	"(२)"
०-२०-००	"(३)"	४-२०-००	"(३)"	८-२०-००	"(३)"
०-२३-२०	"(४)	४-२३-२०	"(४)"	८-२३-२०	"(४)"
०-२६-४०	कृत्तिका (१) मेष	४-२६-४०	उफा (१)"	८-२६-४०	उषा (१)"
१-००-००	"(२) वृष	५-००-००	"(२) कन्या	९-००-००	उषा (२) मक
१-०३-२०	"(३)"	५-०३-२०	"(३)"	९-०३-२०	"(३)"
१-०६-४०	"(४)"	५-०६-४०	"(४)"	९-०६-४०	"(४)"
१-१०-००	रोहिणी"(१)"	५-१०-००	हस्ते (१)"	९-१०-००	श्रवण (१)"
१-१३-२०	"(२)"	५-१३-२०	"(२)"	९-१३-२०	"(२)"
१-१६-४०	"(३)"	५-१६-४०	"(३)"	९-१६-४०	"(३)"
१-२०-००	"(४)"	५-२०-००	"(४)"	९-२०-००	"(४)"
१-२३-२०	मृगशिर (१)"	५-२३-२०	चित्रा (१)"	९-२३-२०	धनिष्ठा (१)"
१-२६-४०	"(२)"	५-२६-४०	"(२)"	९-२६-४०	"(२)"
२-००-००	"(३) मिथुन	६-००-००	चित्रा (३) तुला	१०-००-००	"(३) कुम्भे
२-०३-२०	"(४)"	६-०३-२०	"(४)"	१०-०३-२०	"(४)"
२-०६-४०	आर्द्रा (१)"	६-०६-४०	स्वाती (१)"	१०-०६-४०	शतभिषा (१)"
२-१०-००	"(२)"	६-१०-००	"(२)"	१०-१०-००	"(२)"
२-१३-२०	"(३)"	६-१३-२०	"(३)"	१०-१३-२०	"(३)"
२-१६-४०	"(४)"	६-१६-४०	"(४)"	१०-१६-४०	"(४)"
२-२०-००	पुनर्वसु (१)"	६-२०-००	विशाखा (१)"	१०-२०-००	पूभा (१)"
२-२३-२०	"(२)"	६-२३-२०	"(२)"	१०-२३-२०	"(२)"
२-२६-४०	"(३)"	६-२६-४०	"(३)"	१०-२६-४०	"(३)"
३-००-००	पुनर्वसु (४) कर्क	७-००-००	"(४) वृश्चिक	११-००-००	पूभा (४) मीन
३-०३-२०	पुष्ये (१)"	७-०३-२०	अनुराधा (१)"	११-०३-२०	उभा (१)"
३-०६-४०	"(२)"	७-०६-४०	"(२)"	११-०६-४०	"(२)"
३-१०-००	"(३)"	७-१०-००	"(३)"	११-१०-००	"(३)"
३-१३-२०	"(४)"	७-१३-२०	"(४)"	११-१३-२०	उभा (४) मीन
३-१६-४०	अश्ले (१)"	७-१६-४०	ज्येष्ठा (१)"	११-१६-४०	रेवती (१)"
३-२०-००	"(२)"	७-२०-००	"(२)"	११-२०-००	"(२)"
३-२३-२०	"(३)"	७-२३-२०	"(३)"	११-२३-२०	"(३)"
३-२६-४०	अश्ले (४) कर्क	७-२६-४०	ज्येष्ठा (४) वृश्चि.	१२-००-००	अश्वि. (१) मेषे

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

अथ नक्षत्र कष्टावली चक्रम्

नक्षत्र	विष घटी से-तक	चरणागत कष्ट दिन १	२	३	४	जपार्थ मंत्राः	रोग उत्पत्ति कष्ट दिन	जप सं. (सहस्त्र)	दान पदार्थाः	आराध्य वृक्ष
अश्विनी	५०-५४	९	११	१	२०	मृत्युञ्जय मन्त्रजपः	९ दिन	५ सहस्त्र	भोजन दानम्	कुचला वृक्ष
भरणी	२४-२८	०	८०	४०	११	यमायतवेति मन्त्रः	११ दिन	१० सह.	गौअन्न दानम्	आंवला
कृतिका	३०-३४	९	११	१६	२७	अग्निर्मर्धेति मंत्रः	९ दिन	१० सह.	स्वर्ण दानम्	गूलर
रोहिणी	४०-४४	३	९	१८	३०	ब्रह्मयेति मंत्रः	७ दिन	५ सहस्त्र	घृत दानम्	जामून
मृगशिरा	१४-१८	९	५	७	१०	इमं देवेति मंत्रः	एक मास	१० सह.	तिल दानम्	खैरी
आर्द्रा	२१-२५	०	१८	०	०	नमस्तेरूद्रइति मंत्रः	मृत्यु तुल्य	१० सह.	गौ दानम्	कृष्णागुरू
पुनर्वसु	३०-३४	७	१४	२	२१	अदितिद्योरिति मंत्रः	७ दिन	१० सह.	पीतल दानम्	कीकर
पुष्य	२०-२४	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मंत्रः	७ दिन	१० सह.	तेलान्न दानम्	पीपल
आश्लेषा	३२-३६	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेति मंत्रः	मृत्यु तुल्य	१० सह.	गोऽजादि दानम्	नागचम्पा
मघा	३०-३४	१५	७	१७	२०	पितृभ्यइति मंत्रः	२० दिन	१० सह.	वस्त्राज्यदानम्	वटवृक्ष
पू. फा.	२०-२४	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मंत्रः	मृत्यु तुल्य	१० सह.	भोजन दानम्	अशोक वृक्ष
उ. फा.	१८-२२	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मंत्रः	७ दिन	१० सह.	अन्न दानम्	खेजड़ी वृक्ष
हस्त	२१-२५	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवेदेति मंत्रः	१५ दिन	५ सहस्त्र	तैल दानम्	जूही
चित्रा	२०-२४	११	९	९	१६	त्वष्टातुरीगति मंत्रः	११ दिन	१० सह.	दुग्ध दानम्	बिल्व वृक्ष

नक्षत्र	विष घटी से-तक	चरणागत कष्ट दिन १	२	३	४	जपार्थ मंत्राः	रोग उत्पत्ति कष्ट दिन	जप सं. (सहस्त्र)	दान पदार्थाः	आराध्य वृक्ष
स्वाति	१४-१८	६०	१७	३०	०	वायोरप्रेति मंत्रः	मृत्यु तुल्य	१० सह.	गोघृत दानम्	अर्जुन वृक्ष
विशाखा	१४-१८	१५	०	४	१३	इन्द्राग्निइति मंत्रः	१६ दिन	१० सह.	गोस्वर्ण दानम्	नागकेशर
अनुराधा	१०-१४	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मंत्रः	स्थिर रोग	१० सह.	गोघृत दानम्	नागकेशर
ज्येष्ठा	१४-१८	६१	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमिति मंत्रः	मृत्यु तुल्य	५ सहस्त्र	तिल दानम्	नीम वृक्ष
मूल	५६-६०	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मंत्रः	९ दिन	५ सहस्त्र	रजतपात्र दानम्	वेत वृक्ष
पूर्वाषाढ़ा	२४-२८	०	१५	२४	१०	आपोधर्मेति मंत्रः	मृत्यु तुल्य	५ सहस्त्र	गौमुक्ता दानम्	अर्क वृक्ष
उत्तराषाढ़ा	२०-२४	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मंत्रः	एक मास	१० सह.	भोजन दानम्	कटहल वृक्ष
श्रवण	१०-१४	६०	२४	६	९	विष्णोरराटेति मंत्रः	११ दिन	१० सह.	श्रीफल दानम्	श्वेत वृक्ष
धनिष्ठा	१०-१४	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेति मंत्रः	१५ दिन	१० सह.	अश्वान्न दानम्	नारियल वृक्ष
शतभिषा	१८-२२	०	४५	३	२२	वरूणस्योत्तमिति मंत्रः	११ दिन	१० सह.	भोजनान्न दानम्	आम वृक्ष
पू. भाद्र.	१६-२०	०	१२	२१	१९	अजेकचरणोक्त मंत्रः	मृत्यु तुल्य	१० सह.	भोजन दानम्	कदम्ब वृक्ष
उ. भाद्र.	२४-२८	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्येति मंत्रः	७ दिन	१० सह.	अन्न दानम्	मेहंदी वृक्ष
रेवती	३०-३४	१८	१०	९	२०	पूषन्तव वव्रेति मंत्रः	स्थिर रोग	५ सहस्त्र	वृष दानम्	बेर वृक्ष

बम्बई वाले पं. श्रीधर शिवलालजी ज्ञानसागर छापाखाना, पुराना शहर किशनगढ़-सिटी जिला-अजमेर (राज.) फोन- २४४१६०

अथ बृहदद्वादशराशि गुणधर्म विवेचन चक्रम् पञ्चाङ्गे श्रीधरीय

राशि	पुरूष / स्त्री	चरादि	तत्व	पुष्टकृश	पाद	वर्ण	गुण	धातु	शब्द	स्थान	क्रूरादि	बलस	सम / विषम	दिशा	स्त्रीसंग	क्रांति	जाति	उदय	ऋतु	बुरज	साईन	राशि
मेष	पुरूष	चर	अग्नि	दृढ	चतुष्पद	रक्त-लाल	तप्तदेह	पित्त	अतिस्वर	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	पृष्ठोदय	वसन्त	हमल	एरिज	मेष
वृषभ	स्त्री	स्थिर	पृथ्वी	दृढ	चतुष्पद	श्वेत	शीत	वायु	अतिस्वर	समभूमि	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	मध्य	रूक्ष	वैश्य	पृष्ठोदय	ग्रीष्म	सौर	ट्यूरस	वृषभ
मिथुन	पुरूष	द्विस्व.	वायु	मृदु	द्विपद	हरित	तप्त	समधा	दीर्घशब्द	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद	शीर्षोदय	ग्रीष्म	जोबझ	जेमिनी	मिथुन
कर्क	स्त्री	चर	जल	मृदु	अपद	श्वेत	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	पृष्ठोदय	वर्षा	सर्तान्	केन्सर	कर्क
सिंह	पुरूष	स्थिर	अग्नि	दृढ	चतुष्पद	धूम्र-लाल	उष्ण	पित्त	दीर्घशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	शीर्षोदय	वर्षा	अशद	लियो	सिंह
कन्या	स्त्री	द्विस्व.	पृथ्वी	कृश	द्विपद	पांडुरंग	शीत	वायु	अर्धशब्द	समभूमि	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	शीर्षोदय	शरद	संवुला	विर्गो	कन्या
तुला	पुरूष	चर	वायु	दृढ	द्विपद	विचित्र	उष्ण	समधा	शब्दहीन	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	अल्प	स्निग्ध	शूद	शीर्षोदय	शरद	मीझान	लीब्रा	तुला
वृश्चिक	स्त्री	स्थिर	जल	कृश	बहुपद	श्वेत-ताम्र	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	शीर्षोदय	हेमन्त	अक्रव	स्कार्पिओ	वृश्चिक
धनु	पुरूष	द्विस्व.	अग्नि	दृढ	द्विपद	सुवर्ण	उष्ण	पित्त	अतिशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	पृष्ठोदय	हेमन्त	कौश	सेगीटेरी	धनु
मकर	स्त्री	चर	पृथ्वी	दृढ	चतुष्पद	भूरा	शीत	वायु	अतिशब्द	वनचर	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	पृष्ठोदय	शिशिर	जदी	केप्रीकोर्नी	मकर
कुंभ	पुरूष	स्थिर	वायु	दृढ	अपद	कृष्ण	उष्ण	समधा	खंडशब्द	भूमि	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शुद	शीर्षोदय	शिशिर	दलव	एक्वारीस	कुंभ
मीन	स्त्री	द्विस्व.	जल	दृढ	अपद	धूम्र-पीला	शीत	कफ	हीनशब्द	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	उभयोदय	वसन्त	हुत	पिसेस	मीन

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

अष्टकूट-परिहार सूत्रम् (आठों कूटों के परिहारक तत्त्व)

(१.) वर्णः- (1) राशीश मैत्री को (वर कन्या दोनों के राशीश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम)। (2) दोनों का राशीश एक ही हो। (3) नवमांशेश मैत्री हो (दोनों के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों)। (4) दोनों का नवमांशेश एक ही हो। (5) वर के राशीश वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।

(२) वश्यः- (1) राशीश मैत्री हो (दोनों के राशीश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों)। (2) दोनों का राशीश एक ही हो। (3) नवमांशेश मैत्री हो (दोनों के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों)। (4) दोनों का नवमांशेश एक ही हो। (5) योनि शुद्धि (योनिमैत्री) हो।

(३) ताराः- (1) राशीश मैत्री हो (दोनों के राशीश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों। (2) दोनों का राशीश एक ही हो। (3) नवमांशेश मैत्री हो (दोनों के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों)। (4) दोनों का नवमांशेश एक ही हो।

(४) योनिः- (1) राशीशमैत्री हो (दोनों के राशीश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों) (2) दोनों का राशीश एक ही हो। (3) नवमांशेश मैत्री हो (दोनों के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों)। (4) दोनों का नवमांशेश एक ही हो। (5) भकूटशुद्धि (सद्भकूट) हो। (6) वश्य शुद्धि हो।

(५) राशीश मैत्रीः- (1) नवमांशेश मैत्री हो (दोनों के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों)। (2) दोनों का नवमांशेश एक ही हो। (3) एक नक्षत्र भिन्न राशियां हों। (4) भकूट शुद्धि (सद्भकूट) हो।

(६) गणः- (1) राशीशमैत्री हो दोनों के राशीश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र सम हों। (2) दोनों का राशीश एक ही हो। (3) नवमांशेश मैत्री हो (दोनों के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों)। (4) दोनों का नवमांशेश एक ही हो। (5) भकूटशुद्धि (सद्भकूट) हो। (6) यदि वश्य के गुण 2, तारा के गुण 3, योनि के गुण 4, राशीश के गुण 5, भकूट के गुण 7 और नाड़ी के गुण 8 योग 29 गुण मिलने पर भी गणदोष का परिहार हो जाता है।

(७) भकूटः- (1) राशीशमैत्री हो (दोनों के राशीश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों) (2) दोनों का राशीश एक ही हो। (3) नवमांशेश मैत्री हो (दोनों के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों)। (4) दोनों का नवमांशेश एक ही हो।

(८) नाड़ीः- (1) दोनों की राशि एक हो और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों। (2) दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों। (3) दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न भिन्न हों। (4) पादवेध न हो।

(1) राशियों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता के साथ यदि वश्यशुद्धि व ताराशुद्धि में से कोई एक भी मिल जाए तो षडाष्टक का परिहार उत्तम होगा-ऐसा आचार्य कहते हैं।

(2) दोनों के राशीश या नवमांशेश यदि परस्पर मित्र-सम हो तो नवम पञ्चम का परिहार नहीं माना जाता। इसका परिहार तभी माना जाता है जब कि के राशीश परस्पर मित्र हों, नवमांशेश मित्र-मित्र हों या दोनों का नवमांशेश एक ही हो। ध्यान रहेः- नवपञ्चम भकूट में दोनों का राशीश कभी एक नही होता।

(3) उक्त दोषों में नाड़ी दोष को प्रमुखता दी गई है जिसका परिहार होना नितांत आवश्यक है। अन्यथा नाड़ी दोष रहने पर अथवा उसका परिहार न होने पर विवाह सम्बन्ध की अनुमति ज्योतिष शास्त्र कदापि नहीं देता। माने ही वर्ण आदि जानों कूट शुद्ध ही क्यों न हो। उक्त अष्ट कूटों के परिहार मिलने पर प्राप्तांक न्यूनतम अंक में कुछ अंक और जोड़े जाने है तब सपरिहार अष्ट कूट सारणी बनती है जो ही मुक्ति संगठन व उचित परम्परा है। जिसका निर्वाह प्रायः अधिकांश ज्योतिषी नहीं करते।

मंगलिक दोष विचार

निम्नलिखित स्थितियों में कुज दोष (मंगल दोष) माना गया है।

(1) जन्म कुण्डली में 1, 4, 7, 8 या 12 वें भाव में मंगल या अन्य क्रूर ग्रह उपस्थित हो।

(2) चन्द्र कुण्डली से 1, 4, 7, 8 या 12 वें भाव में मंगल या अन्य क्रूर ग्रह उपस्थित हो।

(3) शुक्र से भी कोई मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह 1, 4, 7, 8 या 12 वें हो तो कुज दोष माना गया है।

(4) कुज दोष बनाने वाला ग्रह यदि अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुज दोष का फल अधिक माना गया है।

(5) कुज दोष दाम्पत्य जीवन के लिये अच्छा नही माना गया है।

(6) कही कहीं द्वितीय भावस्थ मंगल या अन्य क्रूर ग्रह को भी कुज दोष में माना गया है।

(7) मंगली योग का वैवाहिक जीवन पर प्रभाव-

1. पति या पत्नि के स्वास्थ्य की हानि। 2. वैवाहिक सुख में कमी अथवा विवाह में विलम्ब। 3. किसी एक की आयु की हानि। 4. शैय्या सुख में कमी।

(8) कन्या को वैधव्य योग।

1. यदि पाप ग्रह अष्टम तथा द्वादश में हो तो विधवा हो।
2. यदि पाप ग्रह लग्न में हो तो विधवा हो।
3. यदि पाप ग्रह लग्न में तथा आठवें हो तो विधवा हो।
4. यदि पाप ग्रह छठे, आठवें या बारहवें हों तो विधवा हो।
5. लग्न तथा चन्द्रमा पापग्रहों के मध्य में हो तो श्वसुर कुल का क्षय हो।
6. वैधव्य के लिये या वैवाहिक जीवन को नष्ट करने वाला ग्रह केवल मंगल ही नहीं है। अपितु अन्य क्रूर ग्रह भी मंगल की तरह वैवाहिक सुख में कमी कर सकते हैं।

संकेत-सदोष वर-वधु गुण मिलान सारिणीयां चार पेजों में दी गई है। सारिणी की स्पष्टता हेतु ऊपर वर की राशि, नक्षत्र चरणाक्षर एवं नक्षत्र चरण दिये गये है। बांयी ओर कन्या की राशि-नक्षत्र चरणाक्षर, एवं नक्षत्र चरण दिये गये हैं। इनके नीचे गुणों की संख्या व दोषो का संकेत दिया गया है। शब्द संकेत- ब-वर्ण दोष, त-तारा दोष, य-योनि दोष, र- राशीश दोष, ग- गण दोष, न- नाड़ी दोष, व-वश्य दोष।

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

मांगलिक दोष परिहार सूत्रम्

कुजदोषवती देया कुजदोषवते किल। नास्ति न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

अर्थ-मंगलीक (मंगल दोषवाली) कन्या, मंगल दोष वाले वर को देने से मंगल का दोष नहीं लगता और कोई अनिष्ट भी नहीं होता। बल्कि वर-वधू का दाम्पत्य सुख बढ़ता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्॥

अर्थ-वर-कन्या की जन्मकुण्डली में अनिष्ट स्थान स्थित शनि, मंगल अथवा उसी के जोड़-तोड़ का अन्य कोई पापग्रह हो और उसका जवाब देने वाला लड़की अथवा लड़के की जन्मकुण्डली में उन्हीं स्थानों में शनि, मंगल अथवा तत्समान अन्य कोई पापग्रह हो तो मंगल का दोष नहीं लगता।

भौमेन सदृशो भौमः पापो तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्ताश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थ- यदि वर अथवा कन्या दोनों की ही कुण्डली में समान भावों में ही मंगल अथवा तत्सदृश अन्य कोई पाप ग्रह हो अर्थात् कन्या की कुण्डली में जिस भाव में मंगल बैठा हो और जिन भावों में अन्य पापग्रह बैठे हों वर की कुण्डली में उन्हीं भावों में यदि उन्हीं के समान अनिष्ट कारक मंगल और अन्य पापग्रह हों तो वह विवाह कल्याण कारक है, पुत्र-पौत्र आदि को देने वाला है और वर-वधू के आयुष्य को बढ़ाने वाला है।

वक्रिणि नीचारिस्थे वार्कस्थे वा न कुजदोषः।

अर्थ- वर-वधू की जन्मकुण्डली के किसी भी अनिष्ट स्थान में स्थित मंगल यदि वक्री हो वा नीच (कर्क राशि) का हो अथवा शत्रु (मिथुन वा कन्या) राशि का हो वा अस्तगत हो तो उस प्रकार का मंगल अनिष्टकारक नहीं होता।

शुभयागादिकर्तृत्वे नाऽशुभं कुरुते कुजः। कुजः कर्कटलग्नस्थो न कदाचन दोषकृत्॥
नीचराशिगतः सोऽयं शत्रुक्षेत्रगतोऽपि च। शुभाऽशुभफलं नैव दद्यादस्तंगतोऽपि च॥

अर्थ- शुभ ग्रहों के साथ सम्बन्ध करने वाला मंगल अशुभकारक नहीं होता। कर्क लग्न में स्थित मंगल कभी भी अनिष्टकारक नहीं होता है। अपने नीच राशि में स्थित हो अथवा शत्रु क्षेत्र (मिथुन वा कन्या राशि) का हो किंवा अस्तगत हो तो शुभ वा अशुभ कोई फल नहीं देता।

तनुधनसुखमदनायुर्लाभव्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्। विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुङ्गमित्रगेहे वा॥

अर्थ- प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश इनमें से किसी एक स्थान में भी मंगल बैठा हो तो वह वर-वधू का विघटन करता है, परन्तु यदि वह अपने घर का हो, उच्च का हो, किंवा मित्रक्षेत्री हो तो दोष कारक नहीं होता।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे। धने मीने घटे चाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥

अर्थ- मेष राशि का मंगल लग्न में, धन का मंगल व्यय स्थान में, वृश्चिक राशि का मंगल चतुर्थ स्थान में, मीन का मंगल सप्तम स्थान में, कुम्भ राशि का मंगल अष्टम स्थान में हो तो मंगल का दोष नहीं लगता।

कुजो जीवसमायुक्तो युक्तो वा शशिना यदा। चन्द्रः केन्द्रगतो वाऽपि तस्य दोषो न मङ्गली॥

अर्थ- जिस वर अथवा कन्या की कुण्डली में चौथे, सप्तम, अष्टम, द्वादश आदि अरिष्ट कारक स्थानों में से किसी एक स्थान में मंगल बृहस्पति के अथवा चन्द्रमा के साथ बैठा हो किंवा चन्द्रमा केन्द्र में हो तो वह मंगल '**मंगली**' दोष वाला नहीं कहा जाता।

चतुः सप्तमगे भौभे मेषकर्कालिनक्रगे। कुजदोषो न तत्र स्यात्स्वोच्चादिराशियोगताः॥

अर्थ-मेष, कर्क, वृश्चिक, और मकर राशि का होकर मंगल चौथे या सातवें स्थान में हो तो स्वक्षेत्री और स्वोच्चराशि के योग से वह मंगलीक जन्य दोष वाला नहीं होता।

केन्द्रे कोणे शुभाढयाश्चेत् त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥

अर्थ- केन्द्र और त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हो तथा ३-६-११ स्थानों में पाप ग्रह हो और सप्तम भाव का स्वामी सप्तम भाव में ही हो तो मंगलीक जन्य दोष से दूषित नहीं होता।

द्वितीये भौमदोषस्तु युग्मकन्यकयोर्विना। द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोर्विना॥
चतुर्थे भौमदोषस्तु मेषवृश्चिकयोर्विना। सप्तमे भौमेदोषस्तु नक्रकर्कटयोर्विना॥
अष्टमे भौमेदोषस्तु धनुर्मीनद्वयोर्विना। कुम्भे सिंहे न दोषः स्याद्विशेषेण कुजस्य च।

अर्थ- द्वितीय स्थान यदि मिथुन और कन्या राशि का हो, बारहवाँ स्थान यदि वृष और कर्क का हो, चतुर्थ स्थान यदि मेष और वृश्चिक का हो, सप्तम स्थान यदि मकर और कर्क का हो, अष्टम स्थान यदि धनु और मीन का हो तो उन-उन स्थानों में बैठे हुए मंगल का दोष नहीं लगता और कुम्भ तथा सिंह राशि यदि अनिष्ट स्थान की होवे तो उस स्थान में भी बैठे हुए मंगल का दोष नहीं लगता।

जामित्रे निधने च पापरहिते युक्ते शुभैर्वीक्षिते। सौशील्यादिपतिव्रता बहुगुणः सीमन्तिनीनां कुले॥
युक्ता ख्यातिभवा स्वभर्तृवशगा भूत्वा चिरं जीवति। यद्वा भाग्यगृहे शुभौ भवति चेत्सत्पुत्रपौत्रान्विता॥

अर्थ- जिस कन्या का सप्तम और अष्टम स्थान पापग्रह रहित हो और उन दोनों स्थानों में शुभग्रह बैठें हो अथवा उन स्थानों को देखते हो तो कन्या अच्छे स्वभाव वाली, पतिव्रता आदि अनेक गुणों वाली, श्रेष्ठ स्त्रियों में अत्यन्त प्रसिद्ध तथा अपने पति के वश में रहकर दीर्घायुष्य वाली होती है और भाग्य (नवम) स्थान में यदि शुभ ग्रह हो तो अच्छे पुत्र और पौत्र से सुखी रहती है।

दम्पत्योर्जन्मकाले व्ययधनहिबुके सप्तमे रन्ध्रलग्ने। लग्नाच्च शुक्रादपि खलु निवसन् भूमिपुत्रस्तयोश्च।
दाम्पत्यं दीर्घकालं सुतधनबहुलं पुत्रलाभश्च सौख्यं। दद्यादेकत्र हीनौ मृतिमखिलभयं पुत्रनाशं करोति॥

अर्थ- यदि वर और वधू दोनों की कुण्डली में लग्न से, चन्द्रमा से और शुक्र से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम और अष्टम एवं द्वादश इन छह स्थानों में से किसी भी एक स्थान में यदि मंगल एक ही प्रकार से बैठा हो अर्थात् वर की कुण्डली में जिस स्थान में बैठा हो उसी स्थान में कन्या की कुण्डली में भी बैठा हो और वधू की कुण्डली में जिस स्थान में बैठा हो वर की कुण्डली में भी उसी स्थान में बैठा हो तो उन दोनों का दाम्पत्य सुख चिरस्थायी रहता है, धन-धान्य-पुत्र-पौत्रादि की अभिवृद्धि होती है और दोनो सदा सुखी रहते है। किन्तु यदि वर-वधू में से किसी एक ही की कुण्डली में उक्त प्रकार से मंगल बैठा हो और उसके जोड़ की दूसरी कुण्डली में उससे भिन्न-भिन्न स्थानों में बैठा हो तो ऊपर लिखे फल से सर्वथा विपरीत समझना चाहिए।

जन्मोत्थञ्च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं। सावित्र्य उत पैप्पलं हि सततया दद्यादिभां वा रह।
सल्लेग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं। दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद् दोषः पुनर्भूभवः॥

अर्थ- जिस किसी कन्या की जन्म कालीन ग्रह संख्या के अथवा प्रश्न लग्न से उसका बालविधवा होना निश्चित हो जाय उस कन्या को सावित्री का अथवा पीपल का व्रत कराकर एकान्त में विष्णु की मूर्ति, पीपल या घट विवाह करने से वैधव्य योग नष्ट हो जाता है।

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

कार्यसिद्धि की यात्रा, उच्चवर्ग से सम्पर्क, न्यायालय-विवाद, मोटर-ट्रक, ट्रेक्टर, स्कूटर, साइकिल, गाड़ी आदि वाहन प्रयोग, रोगादि में घातचन्द्र देखें।

अथ द्वादशाराशिपरत्वेन नवग्रहादि घात चक्रम्

द्यूत प्रवास, मेल मिलाप संपर्क विशिष्ठ यात्रा में वर्ज्य करें। विवाहोपनयन तथा अन्य सभी शुभ मांगलिक कार्य, तीर्थ यात्रा में घात चन्द्र का विचार नहीं करें।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
घात मास	कार्तिक	मंगसर	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनी	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरूष चन्द्र	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री चन्द्र	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

सूर्यादि ग्रह पीड़ासु स्नानर्थमोषधानि

(यथा सिद्धौषधै रोगान्नश्येयुर्मन्त्रतो। तथा स्नान विधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति)

सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेनशिल	पंचगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालती	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
देवदारू	गजमद	रक्त चंदन	अक्षत	पुष्प	मेनशिल	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
रक्त पुष्प	शंख	धमनी	फल	श्वेत	सुवृक्षमूल	लोबान	गजदंत	मुत्थरा
रक्त कनेर	सीपी	रक्त पुष्प	गोराचन	सरसों	केशर	धमनी	कस्तूरी	गजदंत
मुलठी	स्फटिक	सिंगरफ	मधु	मुलेठी	-	सौंफ	मुत्थरा	छागमूत्र
खस	चन्दन	माल	मोती	मधु	-	मुत्थरा	-	-
ईलायची	-	कांगनी	स्वर्ण	मालती	-	खिल्ली	-	-
केशर	-	मोलसिरी	-	-	-	-	-	-

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्त्यर्थ

॥ सामान्यमौषधि स्नानम् ॥

कूट खिली कांगनी लाजवंती (छूईमुई) जब सरसूं देवदारू हल्दी सर्वोषधि लोध इन औषधियों के जल से स्नान करने से ग्रह पीड़ा शरीर कष्ट दूर होवे। तथा ग्रहों के जो भी दान होवे वे करने चाहिये। सत्य वार्ता मानना पूजनीय व्यक्तियों का अनुचरण वन्दना वेद धर्म शाश्वत रूप में मानना, ज्ञानियों से वार्तालाप मन की शुद्धता उत्तम ज्योतिर्विद की सलाह जप दान होम करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (उडद, मूंग, चना, गेंहू, जो, चावल कांगनी से सप्तधान है इनके ग्रहजन्य कष्ट दूर होता है।)

जन्मराशि-प्रचलित नामराशि विचारः- विवाह कार्य, सभी मांगलिक कार्य-मुहूर्त, यात्रा मुहूर्त, दिनमान-ग्रहगोचर गणना दिनदशा हेतु जन्मराशि से ही विचार करना। देश, ग्रामवास नगर घर, युद्ध सेना, न्यायालय-कोर्ट रजिस्ट्रीकरण आदि में नाम राशि की ही मान्यता है, इनमे जन्मराशि का विचार नहीं करना चाहिये। **भद्रावासः-** मुहूर्त्त चिंतामणी एवं ज्योतिषसार के मतानुसार मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक के चन्द्र में भद्रा **स्वर्ग में**, कन्या, तुला, धनु, मकर के चन्द्र में भद्रा **पाताल की** तथा कुंभ, मीन, कर्क, सिंह के चन्द्र में भद्रा **मृत्युलोक** की मानी जाती है। **भद्रापरिहारः-** शुक्लपक्ष की ४-११ तिथि, कृष्ण पक्ष में ३-१० तिथि वाली भद्रा दिन में शुभ होती है। शुक्ल पक्ष की ८-१५ तथा कृष्ण पक्ष की ७-१४ तिथि में रात्रि में भद्रा शुभ है तथा भद्रा भोमवार व्यातीपात, वैधृति, जन्मनक्षत्र तथा ५वीं तारा ये मध्याह्न /दोपहर के पीछे शुभ है। **भद्रा का शुभोपयोगः-** न्यायालय कार्य, विशेष व्यक्ति से सम्पर्क, शत्रु विरोधी कार्य, चिकित्सा एवं डॉ. से सम्पर्क, स्त्री प्रसंग, किसी को मारना, बांधना, विष देना, अग्नि लगाना, अस्त्रफेंकना, उच्चाटन आदि तथा घोड़ा भैंस ऊंट आदि का क्रय विक्रय भद्रा मे शुभ होता है।

पाया विचारः- जन्मकुण्डली के १, ६, ११वें स्थान में चन्द्रमा हो तो स्वर्णपाद। २, ५, ९वें स्थान में हो तो चांदी। ३, ७, १०वें स्थान में हो तो तांबा ४, ८, १२वें स्थान पर हो तो लोहे के पाया से जन्म हुआ जाने।

जन्मनक्षत्र सेः- आर्द्रादशरूपाणां विशाखा नव ताम्रका। रेवतीषट् हैमश्च शेषाः लोहाः प्रकीर्तिता ॥ **अर्थ-** आर्द्रा से दस नक्षत्रों में जन्म हो तो चांदी का पाया। विशाखा से नौ तक तांबे का पाया। रेवती से छः तक सोने का और शेष नक्षत्रों में लोहे का पाया जानना। **अन्य मतानुसार** आर्द्रा से १० नक्षत्र चांदी के पाया, विशाखा से ४ नक्षत्र तक लोहे के पाया, पूषा से ७ नक्षत्र तक तांबे का पाया तथा रेवती से ६ नक्षत्र तक सोने का पाया जानना।

शिववासः- तिथि को दूगना करके ५ और जौड़े, योग में ७ का भाग देवें शेष १ बचे तो कैलाश में सुख, २ गौरी संन्निध में सुख संपन्न, ३ वृषभा-रूढ़ में अभिष्ट सिद्धि, ४ सभा में संतापकारक, ५ भोजन में पीड़ा कारक ६ क्रीड़ा में कष्ट, ० शमशान में मृत्यु होवे जानो। **शिववास शुभ तिथियां**-शुक्ल पक्ष की २-५-६-९-१२-१३ व कृष्ण पक्ष की १-४-५-८-११-१२-३०तिथियां शुभ।

नवीन वर्ष प्रवेश ज्ञानाय वर्ष सारणी

गत वर्ष के वारादि जन्म वारादि ईष्ट में जोड़ देने से वर्ष प्रवेश का इष्ट तथा वारादि होते है।

गता.	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०४	०२	०१	०६	०५	०४	०२
घटी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	१०	४५	२१	५६	३१	०६	४२
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	३०	४५	००	१५	३०	४५	००
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	००	००	००	००	००	००	००

भद्रा मुख, पुच्छ, घटी सूत्रम्

विवरण	शुक्ल पक्ष				कृष्णपक्ष			
भद्रा	उ.	पू.	उ.	पू.	उ.	पू.	उ.	पू.
तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
प्रहर	५	२	७	४	८	३	६	१
आदिमुखघटी	५	५	५	५	५	५	५	५
प्रहर	८	१	६	३	७	२	५	४
अन्तपुच्छघटी	३	३	३	३	३	३	३	३

विधि :- तिथि प्रयोग (आरंभ से अन्त) के घट्यादि पूर्ण मान में ८ का भाग देने से लब्धांक १ प्रहर का मान होगा। पुच्छ घटीकाल शुभ एवं मुख घटी काल नेष्ट मान्य है।

ईशान १४	पूर्व १७	अग्नि १५
उत्तर १५	सर्वध. १३५	दक्षिण २१
वायव्य १९	पश्चिम १८	नैऋत्य १६

सूर्य की संक्रान्ति के इतने दिन ५।७।९।१५।२१। २४ वें दिन भूमिशयन मानते है, सूर्य नक्षत्रात् से ५।७।९।१२।१९।२६ भूशैयनम जाने। ग्रहारंभ, शिलान्यास, कुआ खुदवाने में निषेध है।

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

नवग्रह गुणधर्म विषयक विविधज्ञान चक्रम्

रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाणां
मेष १०	वृषभ ०३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ०५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्च राश्यंश
तुला १०	वृश्चिक ०३	कर्क २८	मीन १५	मकर ०५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीच राश्यंश
सिंह	कर्क	मेष,वृश्चि	कं., मि.	ध., मी.	वृष, तु.	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृही
माणक	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनी	रत्न
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८	ग्रहवर्ष
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	१पाददृष्टि
५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	२पाददृष्टि
४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	३पाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	पूर्णदृष्टि
चं. मं. गु.	र. बु.	र. गु. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्रग्रह
बु.	मं. शु. गु. श.	शु. श.	मं. श. गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रह
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रह
अर्क	पलाश	खदिर	अपामार्ग	पीपल	गूलर	शमी	दुर्वा	कुशा	ग्रहसमि.
मास १	दिन २।	मास १॥	मास १	मास १३	मास १	मास ३०	मास १८	मास १८	राशिभुक्तिमान
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	सर्वदिक्	दिशा
सन्	मून	मार्स	मर्क्युरी	जुपिटर	वीनस	सॅटर्न	डूगोंस	डूगोंस	प्लेनेट
आफ.	महताब	मिरीख	उता.रूद	मुस्तरी	झाहार	झाहल	रास.	जनव.	सितारा
गेहूँ	चावल	मसूर	हरे मूंग	चनादाल	चांवल	उडद	तिल	तिल	दानवस्तु
कमल लालपु.	श्वेत पुष्प	लाल कनेर	सभी पुष्प	पीला पुष्प	श्वेत पुष्प	काला पुष्प	काला पुष्प	काला पुष्प	ग्रहों के पुष्पादि
पशु भू.	जल भू.	दग्धे	श्मशान	देवस्थान	जल भू.	उत्कर	ऊषर	ऊषर	स्थान
अग्नि	वरूण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश	देवता
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षीस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
अस्थि	रक्त	मांस मज्जा	चर्म त्वचा	मेद चर्बी	वीर्य ओज	स्नायु	नस	नस	शरीर धातु

राशि के ऊपर से गोचर एवं कुण्डली के ग्रहों का शुभाऽशुभ फल कोष्टक

राशि	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	स्थानना	हर्ष	शत्रुभय	बंधुलाभ	भय	शत्रुनाश	धननाश	हानि	हानि
वृषभ	भय	वित्तना	धननाश	धनलाभ	धनलाभ	द्रव्यलाभ	धनहानि	वित्तनाश	वित्तनाश
मिथुन	श्रीप्राप्ति	द्रव्यलाभ	श्रीलाभ	क्लेशकर	रोग	वित्तलाभ	धनलाभ	द्रव्यलाभ	द्रव्यलाभ
कर्क	मानभंग	कुक्षिरोग	शत्रुभय	अर्यलाभ	द्रव्यना	धनलाभ	शत्रुभय	वैर	भय
सिंह	दैन्य	कार्यनाश	धनप्राप्ति	शत्रुवृद्धि	सौख्य	पुत्रलाभ	अर्थलाभ	शोक	शोक
कन्या	रिपुनाश	वित्तलाभ	द्रव्यलाभ	स्थान प्रा.	शोक	शत्रुभय	अन्नलाभ	वित्तलाभ	वित्तलाभ
तुला	गमन	धनस्त्रीला	शोक	शरीरपीड़ा	राजमान	शोक	दोषसंग्रह	कलह	कलह
वृश्चिक	पीड़ा	मृत्यु	शत्रुभय	धनलाभ	मृत्यु	अन्नलाभ	शरीरपीड़ा	प्राणनाश	प्राणनाश
धनु	कांतिक्षय	राजभय	कार्यनाश	पीड़ा	सौख्य	वस्त्रलाभ	धननाश	पाप	पाप
मकर	कार्यसिद्धि	महासौख्य	शोक	सौख्य	दैन्य	सौख्य	कर्मलाभ	वैर	वैर
कुंभ	वित्तलाभ	विविधला	वस्त्रलाभ	धनलाभ	द्रव्यलाभ	धनलाभ	द्रव्यलाभ	यश	यश
मीन	हानि	रोगधननाश	रोगधननाश	वित्तनाश	पीड़ा	द्रव्यलाभ	अनर्थ	हानि	हानि

विवाहे रवि चन्द्र शुद्धि चक्र तथा गोचर ग्रहफल शुभ-अशुभ बोधकचक्र

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरूः	शुक्रः	श. रा. के.	ग्रहाः
३।६ १०।११	१।२।३।५।६ ७।९।१०।११	३।६ १०।११	२।६ १०।११	२।५।७ ९।११	१।२।३ ९।११	३।६ १०।११	शुभ स्थान
१।२।५ ७।९	किसी आचार्य ने १२ शुभ माना है	१।२।५ ७।९	१।३।५ ७।९	१।३।६ १०	५।६ ७।१०	१।२।५ ७।९	पुज्य स्थान
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	अपुज्यस्थान

साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया, आश्विन शुक्ल विजयादशमी और कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा ये ४ स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त है। इन मुहूर्त्तों में किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नही होती, चौथा अर्धबली होने से इन्हे साढ़े तीन मुहूर्त्त या अबूझ मुहूर्त्त कहते है।

लोक प्रसिद्ध मुहूर्त्त

१. आषाढ़ शुक्ल भडुली नवमी, २. कार्तिक शुक्ल देवउठनी एकादशी, ३. माघ शुक्ल बसंत पंचमी, ४. फाल्गुन शुक्ल फूलेरा दूज ये चारों मुहूर्त्त लौकिक व्यवहार में प्रसिद्ध अभिष्ट सिद्धदायक माने गये है।

चोरी में गई वस्तु का ज्ञान

अंधलो.	रो	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	मिले पूर्व
मंदलो.	मृ	आ	ह.	ऽनु	उ.	श.	अ.	प्राप्ति दक्षिण
मध्यलो.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	प्राप्ति पश्चिम
सुलोच.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	कुयोग उत्तर

अन्धनक्षत्र में गई वस्तु शीघ्र मिले। मंदनक्षत्र में गई वस्तु ३ दिन में, मध्यनक्षत्र में गई वस्तु ६४ दिन में एवं सुलोचन मे गई वस्तु कभी नही मिले।

बम्बई वाले पं. श्रीधर शिवलालजी
ज्ञानसागर छापाखाना, पुराना शहर, किशनगढ़

काल परिचय :- प्रतिदिन प्रत्येक स्थान का दिनमान न्यूनाधिक होता रहता है। अभीष्ट दिन के दिनमान को ५ भागों में विभाजित करने पर प्रत्येक भाग को जिस नाम से जाना जाता है उसका निम्न विवरण है। १. **प्रातःकाल** २. **संगव काल या पूर्वाह्नकाल** ३. **मध्याह्नकाल** ४. **अपराह्नकाल** ५. **सायंकाल**। दिनमान के १५ भाग करने पर ८वां भाग अभिजित् मुहूर्त्त कहलाता है। और १०वां भाग **विजय मुहूर्त्त** कहलाता है। रात्रिमान के १५ भाग करने पर ३ भाग तक **प्रदोष वेला** और ८ वां भाग **निशीथकाल**, १३वां भाग **ब्रह्ममुहूर्त्त**, १४वां भाग **उषःकाल** और १५ वां भाग **अरूणोदयकाल** कहलाता है। **प्रातःसंध्या** सूर्योदय उपरांत ७२ मि. तक **सायंसंध्या** सूर्यास्त के पश्चात ७२ मिनट तक होती है।

मिहिराचार्य शिवघटी मुहूर्त्त बोधक सारिणी श्रीधरीय

वार	चैत्र, वैशाख, श्रावण, भादवा, माघ, फाल्गुन	वार	ज्येष्ठ-आषाढ़	वार	आसोज, कार्त्तिक, मंगसर, पौष
रवि	दिन- म. ६.४८, अ. १०.० व. २.० शू. ५.१२, अ. ६.० रात्रि- शू. ६. ४८, म. ७.३६ शू. ८.२४, अ. १०.०० शू. १०.४८, व १.१२ शू. ३.३६ म. ४.२४, अ. ६.०	रवि	दिन-अ. ८.२४ व. ११.३६ अ. २.४८ शू. ३.३६ म. ४.२४ शू. ६.० रात्रि- शू. ६.४८ अ. १०.० व. १२.२४ अ. २.४८ व. ४.२४ म. ६.०	रवि	दिन-शू. ७.३६ अ. १०.० व. १२.२४ अ. २.४८ व. ४.२४ अ. ५.१२ शू. ६.० रात्रि- शू. ७.३६ अ. ९.१२ व. ११.३६ अ. २.० शू. ३.३६ व. ६.०
चन्द्र	दिन-अ. ७.३६, व. १०.४८, अ. १.१२, व. ३.३६ अ. ५.१२ शू. ६.० रात्रि- व. ७.३६, म. ९.१२, अ. १०.० व. १.१२ अ. २.४८ शू. ४.२४ व. ५.१२ शू. ६.०	चन्द्र	दिन-अ. ७.३६ व. ९.१२ अ. ११.३६ व. ६.० रात्रि- व. ८.२४ अ. ११.३६ व. २.४८ म. ३.३६ व. ६.०	चन्द्र	दिन- अ. ९.१२ म. १०.४८ शू. १.१२ अ. ३.३६ म. ६.० रात्रि- व. ८.२४ अ. ११.३६ व. २.० अ. ३.३६ शू. ४.२४ व. ६.०
मंगल	दिन-अ. ८.२४ शू. ९.१२ व. १०.० अ. १२.२४ शू. ३.३६ अ. ५.१२ शू. ६.० रात्रि- व. ७.३६ म. ९.१२ अ. १०.० व. १२.२४ अ. २.० शू. २.४८ व. ३.३६ म. ४.२४ अ. ६.०	मंगल	दिन-शू. ७.३६ व. १०.० अ. ११.३६ शू. १.१२ व. ३.३६ शू. ४.२४ अ. ६.० रात्रि- शू. ६.४८ अ. १०.० व. १२.२४ अ. २.४८ व. ५.१२ म. ६.०	मंगल	दिन- अ. ७.३६ व. १०.० अ. १०.४८ शू. १२.२४ म. २.४८ शू. ५.१२ व. ६.० रात्रि- व. ८.२४ अ. ११.३६ व. २.० अ. ३.३६ शू. ४.२४ व. ६.०
बुध	दिन-व. ७.३६ अ. ९.१२ व. ११.३६ अ. १.१२ शू. २.० व. ३.३६ म. ४.२४ अ. ६.० रात्रि- शू. ६.४८ अ. ९.१२ म. १०.४८ व. १२.२४ शू. २.० अ. ६.०	बुध	दिन-शू. ६.४८ म. ८.२४ अ. १०.० व. १२.२४ शू. १.१२ व. २.४८ अ. ५.१२ शू. ६.० रात्रि- व. ७.३६ अ. ९.१२ व. १२.२४ अ. २.४८ शू. ६.०	बुध	दिन- शू. ६.४८ म. ८.२४ अ. ११.३६ व. २.० शू. ५.१२ व. ६.० रात्रि-शू. ६.४८ अ. १०.४८ व. २.० अ. ४.२४ शू. ५.१२ व. ६.०
गुरु	दिन- अ. ८.२४ शू. ९.१२ व. १०.४८ अ. १.१२ व. ४.२४ अ. ६.० रात्रि- व. ७.३६ म. ९.१२ अ. १०.० व. १.१२ अ. २.४८ शू. ४.२४ अ. ६.०	गुरु	दिन-अ. ७.३६ व. १०.० अ. ११.३६ शू. १.१२ व. ३.३६ शू. ४.२४ अ. ६.० रात्रि- व. ९.१२ अ. ११.३६ व. २.० अ. ४.२४ व. ६.०	गुरु	दिन- अ. ६.४८ शू. ८.२४ व. १०.४८ अ. १२.२४ शू. १.१२ व. २.४८ अ. ५.१२ म. ६.० - रात्रि- शू. ७.३६ व. ९.१२ शू. १०.० अ. १२.२४ व. २.४८ शू. ३.३६ व. ६.०
शुक्र	दिन- शू. ६.४८ अ. १.१२ व. ४.२४ अ. ५.१२ शू. ६.० रात्रि- व. ७.३६ शू. ८.२४ अ. १०.४८ व. १.१२ म. ३.३६ शू. ४.२४ अ. ६.०	शुक्र	दिन-अ. ६.४८ व. ७.३६ अ. १०.० व. १२.२४ अ. ३.३६ शू. ४.२४ व. ६.० रात्रि- व. ७.३६ अ. ९.१२ शू. १०.४८ म. ११.३६ व. १.१२ अ. २.४८ शू. ६.०	शुक्र	दिन- व. ९.१२ अ. १०.४८ शू. ११.३६ अ. १२.२४ व. २.० अ. ४.२४ म. ६.० - रात्रि- व. ७.३६ शू. ८.२४ अ. १०.४८ शू. १.१२ म. २.० शू. २.४८ व. ६.०
शनि	दिन- शू. ७.३६ व. ८.२४ शू. ९.१२ अ. १२.२४ शू. १.१२ व. २.० शू. ३.३६ अ. ५.१२ शू. ६.० रात्रि- व. ८.२४ अ. १०.४८ व. १२.२४ शू. २.० अ. ३.३६ शू. ४.२४ अ. ६.०	शनि	दिन- म. ६.४८ शू. ९.१२ अ. १२.२४ व. ४.२४ शू. ६.० रात्रि- शू. ६.४८ व. ८.२४ म. ९.१२ अ. १०.४८ शू. २.४८ अ. ३.३६ व. ४.२४ शू. ५.१२ अ. ६.०	शनि	दिन- शू. ७.३६ व. ९.१२ शू. १०.४८ अ. २.० शू. २.४८ व. ४.२४ शू. ५.१२ म. ६.० - रात्रि- शू. ६.४८ व. ८.२४ अ. १०.४८ व. १२.२४ अ. २.४८ व. ४.२४ अ. ६.०

☞ निम्न मुहूर्त्त का आधार भारतीय माह व वारानुसार है। मिहिराचार्य द्वारा समय को ४ भागो में विभक्त किया है। १. महेन्द्र २. अमृत ३. वक्र ४. शुन्य ये चार काल है। महेन्द्र को सर्वश्रेष्ठ काल माना गया है। इस समयावधि में किये गये कार्यों में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। अमृत काल को भी श्रेष्ठ माना है। वक्रकाल कष्टकारक बाधायुक्त एवं अड़चनो का माना गया है। तथा शून्य काल को नेष्ट अशुभ व्यर्थ माना गया है।

निम्न तालिका में १२ घण्टे का दिन व १२ घण्टे की रात्रि मानकर मध्यमान से सूर्योदय प्रातः ६ बजे तथा सूर्यास्त सायं ६ बजे मानते हुए समयावधि दी गई है। सूक्ष्म गणना हेतु इष्ट दिन के दिनमान या रात्रिमान के कम अधिक होने पर अनुपात से समय न्यूनाधिक करना युक्तियुक्त है। **नोटः** तालिका में **म.-महेन्द्र, अ.-अमृत, व.-वक्र, शू.-शून्य** अक्षरों में दर्शाया गया है। साथ ही इसके समाप्त होने का समय दिया गया है। **उदाहरण**-जैसे रविवार को प्रातः ६ बजे से ६। ४८ तक महेन्द्र काल, ६। ४८ से १०। ०० तक अमृत काल इसी अनुरूप अन्य जाने। इस मुहूर्त में राहु काल के समय का त्याग करना आवश्यक है।

अथ द्वादश राशि मध्ये शनि परिभ्रमण विवेक पाद-वाहन-देह निवास सूत्रफलम्

शनिपानोतिविचार- अपनी जन्मराशि से शनि गोचर भ्रमण करते १२, १, २ स्थान गणनानुगत बने, तो इस स्थिति में उस जातक को साढ़ेसाती ७॥ बृहत्कल्याणी शनि दशा कालांश बनता है। तथा इसी प्रकार जन्म राशि से गणना करते ४-८ स्थान पर शनि राशि भ्रमण बने तो ढैय्या दशा-लघुकल्याणी शनि दशा कालांश बनता है। प्रथम १ शनि पेट पर २ पैरों पर तथा बारहवाँ १२ नैत्रों पर प्रभावशाली रहता है।

शनिपाद ज्ञान- जिस नक्षत्र पर शनि हो उसकी संख्या में अपने जन्म नक्षत्र की संख्या जोड़कर चार ४ का भाग देवें। १ शेष रहते सोने का, २ शेष रहते लोहे का, ३ शेष रहते ताम्बे का तथा शून्य शेष रहे तो चांदी पाद समझें। स्वर्ण पाद से सुख-हानि, लोहपाद से धन द्रव्यनाश, ताम्र-तांबा से सामान्य फलद तथा चांदी पाया शुभ श्रीकार होता है।

शनिवाहन ज्ञान- शनि नक्षत्रचार से अपने जन्म नक्षत्र तक गणना करें, उसमें ९ का भाग देवें। तथा शेष १ रहते गंधर्व, २ शेष से अश्व, ३ शेष से गज,, ४ शेष से मेष, ५ शेष से जम्बूक (सियार) तथा ६ से सिंह, ७ से काग, ८ से मृग तथा ० शून्य ९ शेष रहते मयूर वाहन होगा। इनमें अश्व-गज-मयूर वाहन योगवाही सुखद होता है।

सिद्ध शनि मुद्रिका साढ़े साती एवं ढैय्या प्राप्त करने का एक मात्र विश्वसनीय स्थान
श्रीधरी बम्बई पुस्तकालय, पुराना शहर किशनगढ़ सिटी (राजस्थान)

साढ़े साती ७॥ वर्ष मध्ये शनिनिवास - शनिदेव ३ मास १० दिन मुख पर, १ वर्ष १ मास १० दिन दाहिनी भुजा पर, १० मास दाहिने पैर पर, १० मास बायां वाम पैर तथा १ वर्ष ४ मास २० दिन हृदय पर १ वर्ष १ मास १० दिन वाम बाँयी भुजा पर, १० मास मस्तिष्क सिर पर तथा ३ मास १० दिन बायां वाम नैत्र, ३ मास १० दिन दाहिने नेत्र पर, ६ मास २० दिन गुदा पर निवास करते है। इनका स्थान प्रतिफल यह है कि- मुख वास हानिप्रद, दाहिनी भुजा विजय उत्साह प्रदायक, दाहिनापाद भ्रमण प्रदायक, हृदय निवास, धन धान्य-सम्पदा कारक, बाँयी वाम भुजा पीड़ा विकार प्रदायक, मस्तिष्क शिरवास, शांति विधायक, सौख्यप्रद, नैत्र निवास शुभ फलद तथा गुदा स्थान चिंता, विकार पीड़ा प्रदायक रहता है।

साढ़े साती शनि स्थिति प्रतिफल- जन्म कुण्डली में यदि शनि मित्र राशि, उच्च राशि तथा शुभ ग्रह से संबंधशील हो तो शनि जनित ढैय्या साढ़े साती का कालांश विशेष अशुभ फल का सूचक नहीं, अपितु योगवाही शुभकारक प्रतिफल भी बन पाता है तथा जन्म कुण्डली में चन्द्र तथा शनि अशुभ ग्रहों से युक्त तथा नीच शत्रु राशि में तब भी नेष्टफल सूचक रहता है। यथा अवनति, मानहानि, अपवाद, स्थाननाश, विरोधाभास, कार्य व्यवसाय में न्यृता, हानि शरीर सुख में कमी तथा रोग शोक सहज बन पाता है। व्यर्थ कार्यो में गति, मतिविभ्रम, कोर्ट-कचहरी आदि में यापन, पारिवारिक अशांति, अशोभनीय वार्ता, राजकर्म-भाग्य पक्ष में न्यूनता का प्रारूप सहज बन पाता है। यदि जन्म में लग्न-पंचम-नवम भाव का स्वामी बनते ३-६-११ भाव स्थान में शनि स्थित हो तो उपर्युक्त कुफल में न्यूनता बन कर सुख सम्पदा वृद्धि तथा मनोत्साह, सुखद दिनचर्या-रात्रिचर्या बन पाती है-

चन्द्र बलाबल माह- चन्द्रमा शुक्लपक्ष की १० से लेकर कृष्णपक्ष की ५ तक परिपूर्ण कहलाता है। यवनाचार्यानुसार शुक्लपक्ष की १ से १० तक चन्द्रमा मध्य बली होता है तथा १० से लेकर कृष्णपक्ष की ५ तक पूर्ण बली होता है। एवं कृष्णपक्ष की ३० तक क्षीण बली होता है। शुभग्रह से दृष्ट हो तो सदा बली रहता है। **प्रश्न जन्मपत्रयोः शुभाशुभज्ञान-माह**-यदि शुभग्रह केन्द्र (१,४,७,१०) तथा त्रिकोण ९, ५ भाव में हो और पापग्रह अष्टम भाव छोड़ अन्य स्थानों में हो तो प्रश्नकर्ता की इच्छाओं की पूर्ति होगी।

समस्त शुभकार्यो मे वर्जनीय- जन्म नक्षत्र, जन्म मास, जन्म तिथि, व्यतीपात, भद्रा, वैधृतियोग अमावस्या तिथि, पिता माता के श्राद्ध दिन, तिथिक्षय, तिथिवृद्धि, क्षयमास, कुलिकयोग अर्धयाम अर्धप्रहर तथा महापात योग सभी शुभ कार्यो में वर्जनीय हैं। विष्कुम्भ तथा बज्रयोग की आदि ३ घड़ी (७२ मि.) परिघ योग का पहला आध, शूलयोग की आदि ५ घटी गण्ड अतिगण्ड योग की आदि ६ घटी सर्वथा त्याज्य है। ग्रहण गुरु, शुक्र के बाल वृद्ध अस्त दिन भी निषेध है। **सभी कार्यो में सामान्य लग्न शुद्धि-व्यायाष्टशुद्धौपचये लग्नगे शुभदृग्युते। चंद्रत्रिषड़दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्धयति॥**
भावार्थ-कार्य करने वाले के जन्म लग्न से या जन्म राशि से उपचय ३।६।१०।११ राशि के लग्न तथा लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध (ग्रहों से रहित) लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि अथवा युति तथा चन्द्रमा ३।६।१०।११ स्थान में हो तो ऐसे योग मे सभी कार्यो का करना शुभ होता है। शुभ ग्रह बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र तथा पाप ग्रह रवि, मंगल, शनि, राहु, केतु आदि है।

दिशाशूलदोषचक्रम्

पूर्व
चन्द्र शनि

उत्तर — मंगल बुध

दिशाशूल ले जावो
वामे राहु योगिनी पूठ।
सन्मुख लेवे चन्द्रमा
ल्यावे लक्ष्मी लूट॥

दक्षिण — गुरुवार

रवि शुक्र
पश्चिम

योगिनीवासचक्रम्

ईशान ८/३० — पूर्व १/९ — आग्नेय ३/११

उत्तर २/१०

योगिनी सुखदा वामे
पृष्ठे वांछितदायिनी॥
दक्षिणे धनहंत्री च
सन्मुखे मरणप्रदा॥

दक्षिण ५/१३

वायव्य ७/१५ — पश्चिम ६/१४ — नैऋत्य ४/१२

कालराहुचक्रम्

ईशान रवि — पूर्व शनि — आग्नेय शुक्र

उत्तर रवि

अर्कोत्तरे वायुदिशां च सोमे
भौमे प्रतीच्यां बुधनैर्ऋते च,
याम्ये गुरौवन्हिदिशां च शुक्रे
मंदे च पूर्वे प्रवदंति कालः

दक्षिण गुरु

वायव्य सोम — पश्चिम मंगल — नैऋत्य बुध

नक्षत्रशूलचक्रम्

पूर्व
ज्ये. पूषा. उषा.

उत्तर — पूफा. हस्त विशा.

आग्नेय पूर्व दिग्ज्ञेया
दक्षिणदिक् च नैर्ऋती।
वायवी पश्चिमादिक्
स्यादैशानी च तथोत्तरा॥

दक्षिण — ध. श. पूभा. उभा. रे.

श्र. रोहि. पु.
पश्चिम

यात्रा मे चन्द्र विचार

मषेच सिंहे धनुपूर्व भागे वृषेचकन्या मकरे च याम्ये। युग्मेतुलेकुँभसु पश्चिमायां ककर्लिमीने दिशिचोत्तरास्यां॥

अर्थ- मेष, सिंह, धनु पूर्व। वृष, कन्या, मकर, दक्षिण। मिथुन तुला कुंभ पश्चिमे। कर्क वृश्चिक मीन उत्तर।

फलम- सन्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदा। पृष्ठतः प्राणनाशाय वामे चंद्रे धनक्षयः।

अर्थ- सन्मुख का चन्द्रमा धन दाता, दाहिना सुखदाता। पीठ का प्राणहर्ता और बायां धनहर्ता॥

विशेषः- गोकुलनाथ गोरक्षनाथजी के मतानुसार उपरोक्त यात्रा मुहूर्त्त प्राचीन समय से ही मान्य है। इस मुहूर्त्त को मुहूर्त्तराज कहा गया है। इन मुहूर्त्तों में यात्रा करने वालों को चन्द्रदोष, भद्रा, योगिनी, दिशाशूल, नक्षत्रशूल, काल, घातवार आदि किसी कुयोग का दोष नहीं होता है। यह स्वयं सत्यसिद्ध है। प्रथम बांयी तरफ १२ कोष्ठ में बारह मास के नाम दिये गयें है। नीचे तिथियां दी गई है। आगे मास तिथियों का फल दिया गया है। इसके पश्चात् ४ कोष्ठों में चार पहर का अलग-अलग फल दिया गया है। बाद में चार कोष्ठ में चारों दिशाओं का फल दिया गया है। मासों के नीचे दी गई तिथियां को मास के कृष्ण व शुक्ल दोनों पक्ष की समझनी चाहियें। इनमें १३, १४, १५/३० तिथियां नहीं दी गई है। अतः १३ तिथि का फल ३ तिथि के समान, १४ तिथि का फल ४ तिथि के समान, १५ तिथि का फल ५ तिथि के समान समझना चाहिए। अमावस्या में यात्रा करना वर्जित है। वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव इसी को श्री गोकुलनाथजी का वचनामृत कहते है।

यात्रा मुहूर्त्तः- तिथिः- भद्रादि दोष रहित २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एवं कृष्ण पक्ष प्रतिपदा। **नक्षत्रः**- अश्वि., मृग., पुन., पु., ह., अनु., श्रव., धनि., रेव. विशेष शुभ। रो., तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, ज्ये., मू., शत. मध्यम। स्वा., कृति., आ., वि., चि., आश्ले., मघा, भर. आदि ८ नक्षत्र यात्रा में वर्जित है। **शुभ होराः**- चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र। **श्रेष्ठ चोघड़ियाः**- अमृत, चर, लाभ, शुभ। **शुभ लग्नः**- १, ४, ५, ७, ९, १०वें स्थान में शुभ ग्रह (सप्तम शुक्र नेष्ट)३, ६, १०, ११ स्थानों में पापग्रह हो (दशवें में शनि नेष्ट)। **शुभ चन्द्रः**- जन्मराशि से १, ३, ६, ७, १०, ११ वीं राशि का चन्द्रमा शुभ होता है तथा शुक्ल पक्ष में २, ५, ९वीं राशि का चन्द्रमा शुभ होता है।

गोरख पतड़ा (यात्रा मुहूर्त्त) श्री गोरखनाथ जी का वचनामृत

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग.	तिथियों का फल	प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चिम दिशा	उत्तर दिशा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो।	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र.लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभय जीवहानि पछतावा हो सकुशल घर आवे।	भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धव अर्थपूर्ण हो सकुशल घर आवें।	लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुःख	इष्टला	धन प्रा.
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे।	क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री प्रा.
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ हो, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें।	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्यला	धनप्रा.	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट हो, कदाचित घर आवे।	संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थला.
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्नादि।	विलम्ब	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीव नाश हो।	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशा पूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो।	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगे, यात्रा प्रवास।	लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री प्रा.
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं।	मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्रव्यला	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, लाभ।	मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

दिशाशूल परिहारः- रविवार को तांबुल, सोम को चंदन, मंगल को मट्टी, बुध को पुष्प, गुरू को दही, शुक्र को घृत, शनि को तिलदान कर यात्रा करने से दिशाशूल दोष नहीं लगता है।

शकुन विचारः- यात्रा के समय लोहा, तैल, घास, मठ्ठा, पत्थर, लकड़ी, बिलाव मिले तो अशुभ। दही, चांवल, चांदी, पानी का घड़ा, पुष्प, हंस तथा मुर्दा मिले तो शुभ।

वार शुलः- रात्रि में रवि, गुरू, शुक्र इन वारों का, दिन में सोम, मंगल, शनि इन वारों का दोष नहीं रहता।

विदिशाः- चन्द्रवास, दिशाशूलसमग व नक्षत्रशूल के विचार में आग्नेय कोण की पूर्व में, नैर्ऋत्य की दक्षिण में, वायव्य की पश्चिम में और ईशान की गणना उत्तर दिशा में की जाती है।

卐।। **श्रीमन् महामंगलमूर्त्तयेनमः।।**卐।। **श्री सरस्वत्यै नमो नमः।।**卐 **स जयति सिंधुरवदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम्।। १।। दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपांगनासेवितपादपद्मः। श्री कृष्णचन्द्रः पुरूषोत्तमोऽयं ददातुवः सर्व समीहितं मे।। २।। यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो, बौद्धाबुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः। अर्हन्नित्यथ जैन शासनरताः कर्मेति मीमांसका, सोऽयंवोविदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथोहरिः।। ३।। गणेशादीन् सुरान् सर्वान् नत्वा सूर्यादिखेचरान् तिथिवारादि-पंचांगकालमानं विलिख्यते।। ४।। यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदंति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।। ५।। ग्रहा राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहाराज्यं हरन्ति च। ग्रहैर्व्याप्तमिदं सर्व त्रलोक्यं सचराचरम्।। ६।। स्वस्ति श्री भारत केसरी श्री इन्द्रप्रस्थपति श्री राष्ट्रपति महोदयाः।।** श्रीमन्त स्वस्ति श्री मन्मुकुटमणिः छत्रपतिः श्री **राजराजेश्वर** महाराजा श्री विक्रमादित्य महोदयाः श्रीमतां विजय राज्ये सज्योतिः "**श्री चंडांशु श्रीधर शिवलाल पञ्चाङ्ग**" सन्मान्य सुख्यातम्।। एवं कालक्रमेण अथास्मिन् वर्षे ब्रह्मणोदिनोदयात् **ब्रह्मणो गताब्दाः** १९७२९४९१२६ तथा च **बलिबन्धनतो गताब्दा** १९६०८८९१२६, **श्रीराम-रावणयुद्धतो गताब्दा** ८८०१६७, **कृष्णावतारतो गताब्दा** ५२५१ **कुरूपाण्डवयुद्धतो गताब्दा** ५१२६ एवं युगादि कालांश गति व्यवस्था विषयेऽपि **सत्ययुग प्रमाणं** १७२८००० **त्रेतायुग प्रमाणं** १२९६००० **द्वापर युग प्रमाणं** ८६४००० **कलियुग प्रमाणं** ४३२००० तन्मध्ये गतकलि वर्षाणि ५१२६ एवं विगणनया अनुक्रमे अवशेष **भोग्यकलि वर्षाणि** ४२६८७४ तथा च कल्कि अवतारः कलियुगस्य ८२१ वर्षाऽवशेष काले स्यात् एवं चतुर्युग व्यवस्था मतानुगते अनुक्रमणिका।।

卐 अथास्मिन् **विक्रमाब्दे २०८२ शाके १९४७** एवं देश स्वातंत्र्य वर्ष ७८-७९ गणराज्य वर्ष ७६-७७ तन्मध्ये दशाधिकारिणां मान्यता राजा **सूर्यः**, मंत्री **सूर्य**, सस्येश **बुधः** (पूर्व अन्नाऽधिपः) धान्येश **चन्द्रः** (पश्चादन्नाधिपः) मेघेश **सूर्यः**, रसेश **शुक्रः**, नीरसेश **बुधः**, फलेशः **शनिः**, धनेशः **भौमः**, दुर्गेश रक्षाऽधिपः **शनिः** एते वर्षमध्ये संवत्सरीय **दशाधिकारिणः**।। एवं गणनानुक्रमे विक्रमाब्द २०८१ मध्ये गुरुवत्सरादि विगणना नियामके संवत्सर संख्या **५३ सिद्धार्थीः** नामकीय संवतारंभे गतिशीलः तथा अनुपातिके सौर वर्षीय मानतः फाल्गुन शुक्ल पक्षः ८ कालांशतः संवत्सर संख्या **५४ रौद्रः** नामकीय गतिशीलः। **वर्षनाम मार्गशीर्षः** तथा च चतुर्मेघ गणना नियामके तू **संवर्त्तः** नामक संज्ञकीयः **रोहिणी निवास समुद्रः-संधि** संभागे एवं संहिता मतानुगते **समय निवास वैश्य** गृहे स्यात्। । **समय वाहन अश्वः** तथा च अंगारकीय भौम चतुर्थी १, सोमवती पंचमी १, सूर्य सप्तमी २, सूर्य दशमी १, सोमवती अमावस्या ०, बुधाष्टमी ०, शनैश्चरीय दृष्टिः रचना उत्तर दिशा मध्ये, बुधोदय आश्विन मासीय, उत्पत्ति विश्वा १२३, खपति विश्वा ७५, समय मुहूर्त्ताः ३७५, समय दिनानी ३५५, संवत् विश्वा १२, क्षय तिथयः १६, वृद्धि तिथयः ११ तथा च अगस्त्यः सिंहाऽर्कस्यसप्तांशे उदितं स्यात्।। **वर्षेस्मिन भारतवर्षीय भू संभागे** ग्रहण २ **द्वय चन्द्र ग्रहण दृश्यते। एवं वार्षिक ग्रहतिथ्यादि उपकरणानि।। श्रीरस्तु।। काले वर्षतु पर्जन्यः** पृथ्वी सस्य **शालिनी। देशोऽयं क्षोभ रहितो सुप्रजा सन्तु निर्भयाः।। अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः संत्तुपौत्रिणः। अधनाः सधनाः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।। एवं चराऽचर जड़ चेतनमूर्त्त अमूर्त्त वर्गादि विषये मानसिक शुभ संकल्पः सर्वेषां भूतलस्थानां जीवानां कृते सन्मान्य।। भारते भातु भारती।।** 卐 卐 卐 卐

अथाय व्ययौ (लाभ+खर्च) २०८२ विक्रमाब्दे

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	१४	०८	१४	०८	११	१४	०८	१४	११	०५	०५	११
खर्च	११	०५	०२	१४	११	०२	०५	११	०२	०५	०५	०२

卐 लाभ खर्च फल विवेक 卐

लाभ खर्च के दोनों अंकों का योग करें १ घटावें तथा ८ का भाग देवें। यदि शेष १ रहे तो वर्ष में लाभ रहे, २ शेष में सौख्य प्राप्ति, ३ शेष में क्लेश, ४ में रोग, ५ में अपयश, ६ शेष में सन्मान, ७ शेष मे विजय, लाभ, ८ शेष में हानि, अपव्यय जानना चाहिये। ० शेष रहे तो भी ८ का फल जानना।

अथ विशेष शुभाऽशुभ ज्ञानाय विशिष्ट विंशोपकाः

▲ वर्षा विश्वा ११, धान्य ११, तृण ५, शीत १३, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृष्णा ९, निद्रा १५, आलस्य १५, उद्यम १३, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ९, फल निष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता १३, पाप १५, पुण्य ५, व्याधि ५, व्याधिनाश ३, आचार ३, अनाचार ९, मृत्यु ७, जन्म १७, देशोपद्रव ७, देश स्वास्थ्य १३, चौरभय ३, चौरभयनाश १३, उद्भिज (वृक्ष लता बेलादि) १३, जरायुज (मनुष्य गौ आदि पशु) ३, अण्डज (पक्षी एवं विषजीव) ७, स्वेदज (जू खटमल मच्छर कीट) ११।

▲ **वर्षा विश्वा प्रमाण** ▲ प्रत्येक वर्ष में विंशोपक विश्वाफल गणितागत आते हैं। शुभाऽशुभ हीन वृद्धि फलाशय अनुपात नियम से समझना चाहिये। पूर्ण विश्वा २० होते हैं इसमें अधिकतम १७ विश्वा तथा मध्य ११ विश्वा एवं न्यून ५ विश्वा तक अनुपातिक समझें। तथापि अन्य ग्रज जनित योग-कुयोग का फलाशय भी विचारणीय रहता है। शास्त्र वचन एवं 'बहुविध संचिंत्यदेवज्ञै कथनीयं शुभाऽशुभम्'।

अभिजित मुहूर्त्त

प्रायः शोधित मुहूर्त्त तालिका में अभिजित मुहूर्त्त में कार्य करें एवं लिखा रहता है। उसका अर्थ यह है कि नित्य के १५ मुहूर्त्तों में आठवां ८ अभिजित् संज्ञक शुभफलद है। इष्ट दिन के दिनमान घटि पल को आधा करें तथा ढाई २।। भागित करके घंटा मिनट बनावें। इस दिनार्द्ध घंटा मिनट को सूर्योदय काल में जोड़ें, यह मध्याह्न काल होगा। इस मध्याह्न काल से २४ मिनिट पहले तथा २४ मिनिट बाद का समय अभिजित मुहूर्त्त है। इस मुहूर्त्त वेला का प्रयोग बुधवार के दिन शास्त्र सम्मत नहीं तथा अन्य वारों में कार्य प्रसाधना योग्य।

०७	१२	०१	१४
०२	१३	०८	११
१६	०३	१०	०५
०९	०६	१५	०४

सद्बिुद्धिप्रदे देवि भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी।
मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते।।
नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंख चक्र गदाहस्ते महालक्ष्मी नमोस्तु ते।।

बही खाता निर्माण वा आनयन मुहूर्त्त

(१) स्वस्ति शुभ संवत् २०८२ आश्विन शुक्ल पक्ष १ सोमवार उत्तराफाल्गुनी/हस्त नक्षत्र तारीख २२-०९-२०२५ ई.
(२) आश्विन शुक्ल पक्ष ३ बुधवार चित्रा नक्षत्र तारीख २४-०९-२०२५ ई.
(३) आश्विन शुक्ल पक्ष १० गुरूवार उत्तराषाढ़ा नक्षत्र दिवा ०९।१३ तक रवियोग तारीख ०२-१०-२०२५ ई.
(४) कार्त्तिक कृष्ण पक्ष २ बुधवार अश्विनी नक्षत्र तारीख ०८-१०-२०२५ ई.
(५) कार्त्तिक कृष्ण पक्ष ९ बुधवार पुष्य नक्षत्र दिवा १०।३४ से १२।०० तक तारीख १५-१०-२०२५ ई.
(६) कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १२ शनिवार दिवा १२।२० से धनतेरस पर्व तारीख १८-१०-२०२५ ई.
(७) कार्त्तिक कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार दीपावली पर्व तारीख २१-१०-२०२५ ई.

माघी गुप्त नवरात्रि: माघ शुक्ल पक्ष १ सोमवार तारीख १९-०१-२०२६ ई. प्रात: ०७।३१ से ०८।५० तक अमृत वेला, दिवा १०।१० से ११।२९ तक शुभ वेला, दिवा १२।२७ से ०१।१० तक अभिजित वेला में पूजन एवं घटस्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।

होलिका दहन मुहूर्त्त: फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४ सोमवार तारीख ०२-०३-२०२६ ई. को सायं ०६।३६ से ०९।०० तक होलिका दहन करना श्रेष्ठ रहेगा। जलती हुई होली में विभिन्न नवग्रह दोषो के शमन तथा सुख शान्ति समृद्धि हेतु विशेष मुहूर्त्त में तैयार की गई श्रीधरी नवग्रहशान्ति धूप स्टिक ९ नग, कपूर, गुगल अवश्य डालें। संपर्क सूत्र-मो. 09462504750

।। ॐ श्री गणेशाय नमः।।
श्री वर्ष लग्नम् ०४।१२

भैरव भवानी-संवाद

।। ॐ श्री सरस्वत्यै नमः।।
श्री वर्षेश लग्नम् १०।००

श्री जननी जगदम्बिका, आप विश्व प्रतिपाल। शुभागमन नववर्ष का, विविध योग श्रीपाल।।
अम्बाजी कहे ज्ञान से, सुनिये भैरव मंत्र। जीव प्रजा का कर्मफल, श्रीधर पत्र सुतंत्र।।
सुनो देव! इस सत्र में, श्री भास्कर रविराज। राजतंत्र में विग्रह बनें, गणना नहीं स्वराज।।
सूर्यदेव मंत्री पदे, लक्षण नहीं सुख देश। नीति राज अभिनव गति, लोकतंत्र आदेश।।
अदल-बदल नेता करे, पद प्रलोभ नव लक्ष। देश तत्व की न्यूनता, महिमा स्वार्थ सुदक्ष।।
नेता शासक दलपति, विग्रह विविध प्रकार। दल सत्ता नव चेतना, प्रजा तंत्र अभिसार।।
रोहिणी वास संधि गति, पति मेघ शनि कक्ष। संवत् वासा वैश्य घर, नहीं सुभिक्ष आलक्ष।।
मेघ गाज नभ गर्जना, लक्षण विविध प्रकार। देश-दिशा भू-भेद से, न्यूनाधिक संसार।।
सस्य धान्य नायक अभी, बुध चन्द्र अधिकार। हरित श्वेत क्रांति गति, कृषि क्षेत्र प्रतिचार।।
मेघ पति रवि देवता, दशाधिकारी संग। कृषि खेत खलियान में, उन्नत मानस संग।।
उत्पादन नव योजना, कृषि पक्ष में विस्तार। ऋण प्रदान शासन गति, नीति नव संचार।।
रस नीरस के श्री पति, शुक्र बुध का कक्ष। द्रव्य तेल रस धान्य में, मानस लाभ विपक्ष।।
फल स्वामी शनि देवता, सुख सुभिक्ष गति मंद। उत्पादन की न्यूनता, ऋतु सहित दुःख द्वन्द।।
शनि देव रक्षा पदे, धनाधीश श्री भौम। व्यय विशेष की धारणा, अर्थतंत्र गति होय।।
श्रीधर देखो कथन फल, पण्डित श्री आशीष। श्रीराधा कृष्ण सन्नाम से, सानन्द रहे चहुंदीश।।

प्रमुख त्यौंहारों के पूजनादि शुभ मुहूर्त्त

चैत्री बसंत नवरात्रि: चैत्र शुक्ल पक्ष १ रविवार ता. ३०-०३-२०२५ ई. प्रात: ०८।०७ से दिवा ०१।०७ तक चंचल समगतिक, लाभ-अमृत अभिजित वेला में दुर्गा पूजन एवं घटस्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।

आषाढ़ी गुप्त नवरात्रि :- आषाढ़ शुक्ल पक्ष १ गुरूवार ता. २६-०६-२०२५ ई. प्रात: ०५।५१ से ०७।३३ तक शुभ वेला, दिवा १०।५८ से ०४।०५ तक चंचल समगतिक, लाभ, अमृत, अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।

रक्षाबंधन पर्व मुहूर्त्त :- श्रावण शुक्ल पक्ष १५ शनिवार ता. ०९-०८-२०२५ ई. दिवा ०७।४९ से ०९।२७ तक शुभ वेला, १२।१७ से दिवा ०५।३७ तक अभिजित, चंचल समगतिक, लाभ, अमृत वेला में रक्षासूत्र बंधन श्रेष्ठ रहेगा।

श्रीगणेश पूजन मुहूर्त्त:- भाद्रपद शुक्ल पक्ष ४ बुधवार तारीख २७-०८-२०२५ ई. को मध्याह्न में श्रीगणेश जन्मोत्सव मनाया जाएगा। शास्त्रानुसार श्रीगणेश पूजन का श्रेष्ठ समय मध्याह्न काल (वृश्चिक लग्न सहित) माना गया है। वृश्चिक लग्न दिवा १२।२३ से ०२।३९ तक गणेश पूजन श्रेष्ठ रहेगा।

आश्विन शरद नवरात्रि :- आश्विन शुक्ल पक्ष १ सोमवार ता. २२-०९-२५ ई. का प्रात: ०६।३० से ०८।०० तक अमृत वेला, दिवा ०९।३० से ११।०० तक शुभ वेला, दिवा १२।०६ से १२।५५ तक अभिजित वेला में पूजन एवं घटस्थापना श्रेष्ठ रहेगा।

श्री कुबेर पूजा, धनत्रयोदशी पर्व शुभारंभ-श्री संवत् २०८२ कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १२ शनिवार मानक रचना अनुसार तारीख १८-१०-२०२५ ई. सायं प्रदोष वेला यमदीपदानं एवं श्री पूजन ०६।०३ से ०८।३५ पर्यन्त श्रेष्ठ रहेगा।

श्री महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त्त वेला संवत् २०८२

▲ ***श्री महालक्ष्मी पूजा दीपावली-दीपोत्सव पर्व मुहूर्त वेला***- श्री शुभ संवत् २०८२ कार्त्तिक कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार तिथि मानक रचना अनुसार तारीख २१-१०-२०२५ ई. दिवस वेला पर प्रालेपन गादी स्थापना-स्याही भरना-कलम दवात संवारने हेतु शुभ चौघडिया काल समय अनुसार दिवा ०९। ३३ से १०। ५८ तक चंचल वेला समगतिक मान्य, दिवा १०। ५८ से ०१। ४७ तक लाभ-अमृत वेला, दिवा १२।०० से १२।४५ तक अभिजित वेला, दिवा ०३।११ से ०४।३६ तक शुभ वेला में श्रेष्ठ रहेगा। **श्री पूजन मुहूर्त**- दैनिक लग्न विगणना मान्यता अनुसार सायं गोधूलि प्रदोष वेला का समय मानक सायं सूर्यास्त समय ०६।०० से ०८।३३ रात्रि पर्यन्त तथा स्थिर संज्ञक वृषभ लग्न वेला सायं समय मानक ०७।२५ से ०९।२२ रात्रि पर्यंत तथा अर्धरात्रि स्थिर संज्ञक सिंह लग्न वेला मध्य रात्रि ०१।५३ से ०४।०८ पर्यंत एवं इस सिंह लग्न में कनकधारा स्तौत्र का पठन पाठ विशेष श्रीकारक सिद्ध होता है। प्रकारांतर से पूजन समय परिहार समाधान सूचक वृश्चिक स्थिर लग्न प्रात: ०८।४५ से ११।०२ तक, स्थिर संज्ञक कुंभ लग्न दिवा ०२।४९ से ०४।१९ पर्यंत की समय मान्यता भी सामान्य पक्ष अनुसार व्यवहार जनक है। ▲ ***श्री रोकड़ मिलान लेखन कार्य***- श्री नवकार्य शुभारंभ हेतु कार्त्तिक सुदी १ बुधवार प्रतिपदा तिथि मानक एवं ता. २२-१०-२०२५ ई. प्रात: ०६।४४ से ०९।३३ तक लाभ-अमृत वेला, दिवा १०।५८ से १२।२२ तक शुभ वेला, श्रीकार। ▲ ***श्री शासकीय लेखाबही लेखन कार्य***- (१) चैत्र बदी १ बुधवार उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र प्रात: ०७।३९ से ता. ०४-०३-२०२६ ई. (२) चैत्र बदी २ गुरूवार उत्तराफाल्गुनी/हस्त नक्षत्र ता. ०५-०३-२०२६ ई.। श्रीसुक्तम् एवं कनकधारा स्तौत्र पुस्तक मंगवाना हेतु मो. नं. 09462504750 किशनगढ़ (राज.)

आद्य प्रणेता पं. श्रीधर शिवलाल जी, प्रकाशक एवं मुद्रक पं. इन्द्रमोहन गौड़, पौत्र स्व. पं. महावीर प्रसाद जी गौड़, अध्यक्ष-ज्ञानसागर छापाखाना किशनगढ़ (राज.)

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

अथवर्षफलं संवत्सर राजामन्त्री दशाधिकारिणां प्रतिफलं लिख्यते सं.२०८२

प्राप्तेनूतन वत्सरे प्रतिगृहे कुर्यात् ध्वजारोपणं स्नानं मंगलमाचरेत् द्विजवरै सार्धं सुपूजोत्सवम्। देवानां गुरूयोषितां च शिशवोऽलंकार वस्त्रादिभिः, संपूज्यो गणकः फलं च श्रृणुयात्त स्माच्चलाभप्रदम्।। १।। राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतो मंत्रिश्रवात्कौशलं धान्येशात्कमलास्थिरा च सुरसा वाणी भवेन्मेघपात्। धर्मैबुद्धिरति-स्थिरा रसपते दीर्घायुप्राप्ति-र्भवेत्सस्येशाद्विमला यतः शुभकारी राजा वलिः श्रूयताम।। २।। सरस्वतीं च दैवज्ञं पूजयित्वा विनायकं दैवज्ञ मुखतो भक्त्या श्रृणु वर्षफलं मुदा।। ३।। गणेशादीन् सुरान् सर्वान् नत्वा सूर्यादि खेचरान् संवत्सरफलं वक्ष्ये सर्वेकामार्थ सिद्धये।। ४।। अथ स्वस्ति श्री मन्नृपति विक्रमार्क राज्य समयातीत संवत् २०८२ राष्ट्रीय शाकेः १९४७ तन्मध्ये श्री सिद्धार्थी-५३+रौद्र नाम ५४ संवत्सरस्य फलम् श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे प्रतिफलम्-सिद्धार्थवत्सरे भूयोज्ञान वैराग्ययुक्प्रजाः। सकला वसुधाभाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः।। तथा च श्री रौद्र नाम संवत्सरे प्रतिफलम्-रौद्रेब्दे नृपसंभूतक्षोभक्लेशसमानिने; सततंत्वखिलालोकामध्य सस्यार्घ कष्टयः।।

भावार्थ- इस अभिनव विक्रम संवत् श्री सिद्धार्थी एवं रौद्र नामकीय संवत्सर की गणना से प्रभावशील बना है। तदनुसार संहिता प्रतिफल-सिद्धार्थी नाम संवत्सरे का प्रतिफल यहकि-राजनीति राजतंत्र नवीन गतिविधि का सूत्रपात तथा राष्ट्रीय हित में आचार विचार निर्णय बनते सबल सफल लोकतंत्र राज्य गरिमा का स्वरूप बनें तथा जनसमाज में संक्रामक आदि व्याधि का चलन कलन विशेषकर बन पावें तथा चौर्यकर्म ठगी-लूटपाट-हिंसाजनित विशेष गतिविधि की रचना से भय व्याप्त होवे। भ्रष्ट आचरणशील दल संघटक नेता नायक स्वाभाविक रूप में पराभव पतन का प्रतिफल प्राप्त कर पावें। देश विदेश के राष्ट्र नायक आंतक एवं देशद्रोही समुदाय के उन्मूलन पलायन विनाश हेतु सामुहिक रूप से तत्पर क्रियावान रहेगें। राष्ट्रीय स्तर पर विविध जनकल्याणक मांगलिक योजनाओं का सूत्रपात बने एवं निर्धन मध्यम जन वर्ग समुदाय के विकास उत्थान हेतु अनेक प्रकार के जन कल्याणक रचनात्मक कार्यक्रम का श्रीगणेश बन पावें। श्री रौद्र नाम संवत्सरे का प्रतिफल यह कि देश दिशा भूसंभाग में कहीं विशेष वर्षा सजल बाढ़ रूपक रचना तथा किसी देश संभाग में सामान्य तथा कतिपय भागों में सामान्य से न्यून वर्षा गति। सजल विशेष तथा अल्प जल गति से दुर्भिक्ष की अभिवृद्धि, राष्ट्रीय, उत्पत्ति-उत्पादन एवं विविध औद्योगिक विकास में अनुपातिक न्यूनता बनें। राष्ट्रनायक, राजनैतिक दलों में आपसी मनमुटाव विरोध का चलन कलन बनें। चौर्यकर्मशील द्वारा ठगी, लूटपाट, हिंसा जनित, विशेष गतिविधि की रचना से भय व्याप्त बनें। केन्द्र शासन सरकार पर विविध समस्या का स्वरूप असामयिक विघटित बने साथ ही राष्ट्रीय अखण्डता विषयक त्रोटक का प्रारूप प्रतीत होवें। विविध प्रान्तीय सरकार स्तर पर भी सुयोगद विकास एवं व्यवस्थित कार्य रचना का प्रारूप नहीं बन पावें। विशिष्ट अधिकारी वर्ग, सचिव, राजपत्रित अधिकारी, राजदूत, अधिशासी अभियंता विविध योजना आयोग के अध्यक्ष आदि पर प्रताड़ना विघटित बन पावें। केन्द्र शासन में वैचारिक गतिरोध तथा नायक नेतागण अशोभनीय व्यवहार गतिरत बन पावें। आतंकवाद हिंसा का गतिक्रम चरितार्थ रहे।

वर्षेश राजा-सूर्यः तत् फलम्- सूर्ये नृपे स्वल्प जलाः पयोदाः धान्यं तथाऽल्पं फलमल्प वृक्षाः। अल्प प्रयोगेषु जनेषु पीड़ा चौराग्नि शंका च भयं नृपाणाम्।। मेघा स्वल्पोदका धान्यं स्वल्पं स्वल्पफलां द्रुमाः। चौराग्नि भूपति भास्करे भूपतौ सति।।१।।

• **भावार्थ-** इस वर्ष का प्रमुख अधिनायक पदभार राजा पद विश्व प्रबोधक सूर्यनारायण के हस्तगत बना है। संहिता सूत्रानुसार इनके प्रभाव से फल, फूल, कृषि उत्पादन, साग, सब्जी आदि कन्दमूल उत्पत्ति पैदावार में श्रम साधना विशेष की रचना एवं व्यवधान बन पावें तथा कृषि विकास प्रसाधना हेतु विशेष साधना कार्य प्रभार गति की परिस्थिति बन पावें। भूमण्डलीन तपन परिताप में विशेषकर अभिवृद्धि एवं अग्निवात प्रसार जनित कुयोग साथ ही जंगल, वन सम्पदा में क्षति, विस्फोटक परिस्थिति का प्रतिफल प्रतीत होवें। यातायात, असुविधा, मार्ग अवरोध, दुर्घटना, विघटन तथा हरण-करण का प्रारूप विशेषकर रहे। लूटपाट, चौर्यकर्म गति में अभिवृद्धि में जन मानस मध्य यातना, प्रपीड़ा का अनुभव बनें। पशुवर्ग एवं जन समाज मध्य संक्रामक आदि-व्याधि का चलन-कलन और विविध संज्ञा के बुखार, ज्वर, अतिसार, नेत्र व्याधि, अस्ति भंग, चोट-मोच त्रोटक आदि से यातना का प्रारूप सहज भाव से चरितार्थ होवें। साथ ही शासन तथा प्रजा गण के मध्य विरोधाभास आन्दोलन आदि की संरचना बन पावें। राष्ट्रीय राजनेता दलनेता नायक एवं विविध संभागीय दिशा-निदेशक मध्य वैचारिक द्वन्द मतभेद-विभेद से विषम परिस्थिति की गतिविध तथा सत्ता संघर्ष, परिवर्तन, गठबंधन, राजतंत्र में न्यूनता आदि उपलक्षण भी बन पावें।

वर्ष मन्त्री सूर्यस्तस्यफलम् -रविरमात्ये भुवि रोग पीड़ा देशेषु सर्वत्र चरन्ति तीड़ा। रसेषु धान्येषु महर्धता स्याच्छलानि लोके च सुरा विनाश्या।।२।।

भावार्थ-इस वर्ष का प्रधानमंत्री पदभार विश्व प्रबोधक, सूर्यनारायण के हस्तगत बना है। संहिता सूत्र फलाशय यह कि जनमानस के मध्य नित्य की दिनचर्या रात्रिचर्या में व्यवधान बनें, व्यावहारिक दृष्टिकोण से अथवा स्वास्थ्य आरोग्य विषयक, न्यूनतावश जीवन गतिक्रम में विबाधा एवं स्त्री-पुरूष, बाल, युवक, वृद्ध में शारीरिक तथा मानसिक प्रपीड़ा में सहज भाविक अभिवृद्धि। नेत्र, अस्थि, मस्तिष्क, ज्वर, पित्त जनित विकार आदि का उद्भव तथा वाहनादि से संघात चोट, मोच आदि का प्रतिफल विशेषकर चरितार्थ बनें। कृषि सम्पदा उत्पत्ति-उत्पादन में कृमि, जन्तु, विषाक्त कीट, टिड्डी आदि में विबाधा एवं पर्यावरण ऋतु जनित विषमतावश भी कुप्रभाव बन पावें। रस वर्गीय पदार्थ एवं नित्य उपयोगी दलहन-तिलहन धान्य आदि में उन्नत भाव की रचना तथा आपूर्ति हेतु शासन प्रशासकीय विभाग को श्रम साधना विशेष बनें एवमेंव राजनेता, दलनेता, जननायक, अनुशासक, अधिशाषी, अभियन्ता वर्ग में दैविक, सात्विक सम्पदा की न्यूनता तथा आसूरी-तामसी स्वार्थ परायण मनोवृत्ति का चलन-कलन विशेषकर बन पावें। चौपाया पशुधन परिपालन में श्रम साधना विशेष एवं विविध रोग व्याधि का चलन-कलन बनते पशुधन हानि।

सस्येश बुधः तथा धान्येश चन्द्रस्तस्यफलम् -सजला वसुधा सर्वा भय नाशः सुखी जनः चणकादीनि धान्यानि सस्यानामधिपे। चन्द्रे धान्यश्वरे धान्यं सुलभं जायते दखिलम। द्विजगोकुल वृद्धिश्च राजानों मुंदितास्तथा ।।३-४।।

भावार्थ-प्रथम खरीफ फसल के स्वामी चन्द्रसुत बुधदेव को प्राप्त है तथा शीतकालीन रबी फसल के अधिपति अमृत रश्मि प्रसारक चन्द्रदेव के हस्तगत बना है। दशाधिकारी संसद चयन में सस्य धान्य पद विभाग सौम्य संज्ञा के ग्रहो के अधिकार में बना है। यह जीव प्रजा के भाग्य से सुखद है, सुख संचारक प्रतिफल सूचक है एवं प्रतिफल यह कि कृषि विकास तथा कृषि उपकरणो हेतु शासकीय सुविधा योगदान विशेषकर प्राप्त होवे। राष्ट्रीय बैंक माध्यम से हरित श्वेत क्रांति विकास अभियान गत आर्थिक मद ऋण प्रदायगी-अदायिगी सुविधा में विशेष अभिवृद्धि। कृषि विश्वविद्यालय की नीति-निदेशक अधिनायक गण नवीनतम कृषि रचना विकास प्रक्रिया विधि का सन्मार्ग प्रचारित करने में सक्षम रहेगें। कृषक समुदाय में अभिनव कृषि प्रणाली ज्ञान-विज्ञान विकास हेतु शासकीय कृषि भवन मंत्रालय द्वारा प्रचार-प्रसार का योगदान एवं समुन्नत फसल सुरक्षा के लिए उत्तम बीज तथा कीटनाशक नवीनतम औषधि रासायनिक पदार्थ द्रव्य उपकरणों का चरितार्थ बनें

मेघेश सूर्यस्तस्य फलं- सूर्ये मेघाधिपतेः जाते स्वल्पतोय प्रदाघनाः। स्वल्पं धान्यं भवेल्लोके भयं च भूतले सदा।।५।।

भावार्थ- इस वर्ष मेघ पर्जन्य नायक पदभार विश्व प्रबोधक सूर्यनारायण के हस्तगत बना है। संहिता प्रतिफल यह कि मेघ मण्डल मानसून की रचना तो विशेषकर बनें, परन्तु जलवृष्टि की संरचना जलधारा वेग सुवेग में न्यूनता तथा पर्यावरण जनित विकार विशेष गतिशील बनते भूमण्डलीय तापमान परिताप में विगत समय अपेक्षा अनुपातिक अभिवृद्धि एवं राष्ट्रीय जल समस्या समाधान में न्यूनता तथा जलप्रदायगी वितरण प्रणाली हेतु प्रान्तीय स्तर पर वैचारिक गतिरोध एवं जन आन्दोलन परिदृश्य की रचना बन पावें तथा जल विषयक समस्या का गतिक्रम बनें।

रसेशः शुक्रः तथा निरसेश बुधस्यफलं- सुगंधवस्तूनि सिते रसेशे निर्गन्ध वस्तूनि रसादिकानि। क्षीराणी सर्वाणि च कन्द मूल फलानि पुष्पाणि बहुनि तानि।। चित्र वस्त्रादिकं चैव शंख चन्दन पूर्वकम्। अर्द्य वृद्धि प्रजायेत नीरसेशो बुधोयादि।।६-७।।

भावार्थ- इस वर्ष रसनायक पदभार दैत्यगुरू शुक्रदेव को तथा नीरसेश पदभार सैन्य नायक बुधदेव को प्राप्त हुआ है। संहिता फलाशय यह कि रस वर्गीय पदार्थ वस्तु का उत्पादन समुचित बनें। इत्र, सुगंधित तेल, स्प्रै, दूध आदि कार्य व्यवसाय में लाभद श्रीकार। चन्दन, कपूर, गुलाब, केवड़ा, चमेली आदि के पुष्प विशेष उत्पन्न होवें। कन्द पदार्थ यथा अदरक, रतालू, प्याज, आलू, लहसुन, शकरकन्द, अरबी, मूली, गाजर, जमीकन्द, सूरण आदि की पैदावार भी सार्थक बन पावें। चन्दन, सूत, कपास, वस्त्रादि के भावों में उन्नत धारणा। मोती, सीप, शंख आदि का कार्य व्यवसाय लाभद बनें। विविध फलों की उत्पत्ति उत्पादन में जन मानस की अभिरूचि विशेष बनें। फल व्यवसाय कारक वर्ग को सुलाभ निर्यात में अभिवृद्धि। साथ ही पेट्रोल,डीजल, क्रूड आयल, विविध खाद्य तेल की आपूर्ति में राष्ट्रीय नीति-रीति सार्थक फलद बन पावें।

फलेश शनिस्तस्यफलंः-यदि शनिः फलहा भवेज्जनित पुष्प गणस्य द्रुमः सदा। हिम भयं वरतस्कर जन्तु भीर्जन पदो गदराशि महाकुला।।८।।

भावार्थ- इस वर्ष के फलपति नायक पद भार मंद गति प्रदान शनिदेव के हस्तगत ही बना है। प्राकृतिक नियामक से शनि फलपति बनने पर सुकाल से दुष्काल की रचना बन पाती है। विविध पौधे वृक्ष लता बेलादि में पुष्प विकास उद्भव तो बनेगा परन्तु निष्फलता विखण्डन निपात आदि की रचना ही सहज बन पावें। हिम तुषार प्रपात वायु वेग विशेष तथा शीत जनित प्रक्रिया एवं ऋतु जनित विषमता से उत्पादन में न्यूनता बनें। विविध फल फूलो के व्यापार व्यवसाय में तेजी का गतिक्रम सहज भाव से बनेगा। तस्कर चौर्यकर्मशील प्रधान वर्ग आदि से भी जनमानस तथा जीवनीय सुख संतोष की रचना न्यूनता बनें।

धनेश भौमस्तस्यफलं- असममोल्यकरो धरणी सुतः शरदितापकरस्तुष धान्यहृत। सहसिमासि भवेद्विगुणं तदा नरपतिर्जन शोक विधायकः।।९।।

भावार्थ- इस वर्ष के धनसम्पदा, वित्त विभाग का कार्यभार पद भूमिसुत मंगलदेव के हस्तगत बना है। इनके नैसर्गिक प्रभाव से राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी अर्थवित्त तंत्र में नवीन नीति-रीति का सूत्रपात आर्थिक संतुलन में विषमता विबाधा तथा मुद्रा कोषालय बैंक आदि में अभिनव व्यवस्था नीति सूत्र आचरण संहिता का निर्धारण चरितार्थ बनें तथा आर्थिक वित्त तंत्र विषयक गोलमाल घोटाला काण्ड आदि की रचना प्रायः बनें एवं जनमानस में आर्थिक लेन-देन धन व्यवहार में न्यूनता का असर भी बनेगा। विश्व बैंक तथा ऋण अनुदान धन प्रदाता केन्द्र आदि में व्यवहारिक विषमता का प्रारूप एवं व्यापार व्यवसाय में विबाधा बनते आयात-निर्यात व्यवहार गति में समयोचित प्रतिफल लाभांश में न्यूनता बने। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष विकास संघ विश्व बैंक आदि की मनोत्साहवृत्ति धारणा भारत भूभाग हेतु मनोत्साहवर्धक सहायक सहयोगात्मक प्रतीत नहीं होवें। राष्ट्रीय टेक्सकर नीति-रीति में अभिवृद्धि एवं भारतीय जनमानस में आक्रोश की रचना विभावना बन पावें तथा कर संग्रह हेतु भी नवीन आचरण नीति नियामक की रचना चरितार्थ बनें।

दुर्गेश रक्षानायक शनिस्तस्य फलम्- रवि सुते गढ़ पालिनी विग्रहे सकल देशगताश्चलिता जना। विविध वैरि विशेषित नागराः कृषिधनं शतभैर्मुषितं भुति।।१०।।

भावार्थ- इस वर्ष का रक्षा नायक जल-थल-नभ आदि का कार्य प्रभारक शनिदेव को प्राप्त हुआ है। इनके प्रभाव से देश-देशान्तर में हिंसक वार्ताओं में गतिमति विशेष आतंकवादी मनोवृति में अभिवृद्धि एवं अशांति अराजकता का विस्तार बनें। विविध विस्फोटक कार्य रचना से जनधन की क्षति एवं जन मानस में भय आपदा चरितार्थ बनें। साथ ही देश-विदेश भू-संभाग में सीमा विवाद सैन्य संघर्ष राजनैतिक पद पतन पराभव की रचना बने एवं जन मानस आरक्षण, भाषा, भूषा, जाति, धर्म, प्रान्त विभेद आदि विषयक को लेकर विवाद विग्रह आन्दोलन आदि कुचक्र से ग्रसित बन पावें। अभिप्रायः यह कि विश्वव्यापी शांति सुरक्षा सुभिक्ष उत्पादन एवं जनकल्याणक योजना विकास रचना में न्यूनता रहें।

वर्षनाम मार्गशीर्षस्तस्य फलम्- सौम्य वर्षत्वल्पवृष्टि सस्यहानिरनेकधा। राजानो युद्ध निरताश्चन्योन्यं वधकांक्षिणः।।

भावार्थ- यह विक्रम वर्ष बृहस्पति चलन कलन नियामक से मार्गशीर्ष संज्ञा का वर्ष चरितार्थ है फलाशय यह कि मार्गशीर्ष संज्ञा का गुरूवत्सर नेष्टफल सूचक हिंसक तत्व की अभिवृद्धि तथा कतिपय राष्ट्रनायको में पारस्परिक मतभेद वृद्धि बनते युद्ध द्वन्द नरसंहार अस्त्र-शस्त्र सैनिक गतिविधि चरितार्थ बनें। विश्वव्यापी अर्थतंत्र हेतु विश्व स्तर पर नवीन अर्थ नीति रीति योजना का सूत्रपात बनें।

रोहिणी निवास सन्धि भागीय तत् फलम्- खण्ड वृष्टिश्च सन्धिषु।

समय निवास वैश्य गृहे-तत्फलम्- खण्डवृष्टिः सर्वधान्यमहर्घं स्याद् वणिगवेश्मनि संस्थिते। चतुर्मेघ नाम संवर्त्त संज्ञकीय स्यात्संवर्त्तो जल पूरितः।।

भावार्थ-रोहिणी रमण गणना चक्रानुसार रोहिणी निवास सन्धि भाग का तथा वैश्य सदन संवत् निवास तथा चतुर्मेघ गणना नियामक अनुसार संवर्त्त संज्ञा का मेघ गतिशील रहेगा। इन उपकरण रचना अनुसार मेघगाज प्रवर्षण रचना मानसून संचार ऋतु गर्जना देश भू-भेद से न्यूनाधिक खण्ड गतिक रचना। आंशिक संभाग में सजल रूप तथा विशेषकर भूसंभाग में खण्डः सामान्य गतिक रचना रहें।

नील मेघानामः फलम्- सस्पयोदिशतिगोकुलपूर्णवस्त्रताखिलम् मही परिपूर्णा। नीलनाम्नि जल देव जल वृष्टिर्जायते सकल मानवतुष्टि।।

भावार्थः- नवमेघ गणना चक्रानुसार गणितागत इस वर्ष नील नाम संज्ञा का मेघ ही बना है। वर्ष शास्त्रानुसार वर्षा की दृष्टि से अनुकूल रहे। मेघ गाज प्रवर्षण रचना संचार ऋतु गर्जना समायोचित एवं अनुकूल सार्थक फलद बन पावें। नद-नदियों जलाशय सरोवर कूप बांध आदि का प्रारूप आनुपातिक पूरक बनते जल समाधान बने। कृषि विकास उत्पादन में वृद्धि दुग्ध उत्पादन अनुकूल बनें।

वर्षेऽस्मिन् स्तम्भ चतुष्के-जल+तृण+वायु+अन्न इन ४ स्तंभ का गणितागत प्रतिफल यह कि चैत्र सुदी १ प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का भोग ८१ प्रतिशत आसन्न जल स्तम्भ का पूर्णतया बना है। वैशाख सुदी १ प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का भोग १०० प्रतिशत होने के कारण तृण स्तम्भ पूर्ण बना है। ज्येष्ठ सुदी १ प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र का भोग ११ प्रतिशत होने के कारण वायु स्तम्भ का मानक न्यून बना है। आषाढ़ सुदी १ प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का भोग २२ प्रतिशत होने के कारण अन्न स्तम्भ का मानक सामान्य न्यून बना है। इसके अनुसार जल-तृण नामक संज्ञा की उपलब्धता प्रभावशील रहेगी एवं वायु तथा अन्न नामक संज्ञा के स्तम्भ सामान्य रहेगें।

वर्ष रक्षार्थे चत्वारि दुर्गाणि आरक्षण तंत्र-वर्ष में गोचर ग्रह जनित कुयोग निवारण हेतु तथा सुयोग अभिवृद्धि विषयक ४ आर्षमान दुर्ग स्तंभ का गतिक्रम यह कि (१) वैशाख सुदी ३ को रोहिणी नक्षत्र का भोग ६४ प्रतिशत है यह उपलक्षक सुभिक्ष रचना हेतु शुभ उत्तम उपलक्षक मान्य है (२) श्रावण सुदी पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का भोग ६६ प्रतिशत होने से यह भावी उत्पत्ति उत्पादन हेतु शुभ उत्तम उपलक्षक मान्य है (३) कार्त्तिक सुदी पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का अभाव है यह भावी शीतकाल हेतु शुभसूचक नहीं है (४) पौष बदी अमावस्या को मूल नक्षत्र का भोग ३२ प्रतिशत तुल्य होने से भावी सुभिक्ष रचना हेतु सामान्य फल सूचक है। ।। शुभ मिति।।

✯ पं. श्रीधर शिवलाल पञ्चाङ्ग सुरिभिः स्तुतं। तदिदं कृष्णगढ़ नगरे आशीष गौड़ कृतम्।। ✯

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

विक्रम सम्वत् २०८२ शाकः १९४७ विवाहलग्नानि रेखासहितानि च तथोपनयन विविध मुहूर्त्तादयः

सर्वं विघ्नहरं देवं सर्वविघ्न विवर्जितम्। सर्वसिद्धिप्रदातारं वन्देहं गणनायकम्॥ लम्बोदरं नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय। निर्विघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ नमस्ते ब्रह्मरुपाय विष्णुरूपाय ते नमः। नमस्ते रुद्ररुपाय करिरुपाय ते नमः॥ विश्वस्वरूपरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे। भक्तिप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय महागणपतये नमः॥

卐 गुरु शुक्रास्त कालांश समय शुद्धि विवेचना 卐

(१) मीन संक्रान्ति-मलमास- संवत् २०८१ फाल्गुन शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार तारीख १४-०३-२०२५ से संवत् २०८२ वैशाख कृष्ण पक्ष १ रविवार तारीख १३-०४-२०२५ पर्यन्त मान्य होगा। **(२) गुरू अस्तोदय**- संवत् २०८२ आषाढ़ कृष्ण पक्ष १ गुरूवार ता. १२-०६-२०२५ से गुरू तारा अस्त रचना का बनते भावी आषाढ़ शुक्ल पक्ष १० शनिवार ता. ०५-०७-२०२५ को गुरू तारा उदित स्वरूप का रहेगा। **(३) श्रीहरि-देवशयन**- संवत् २०८२ आषाढ़ शुक्ल पक्ष ११ रविवार तारीख ०६-०७-२०२५ से कार्त्तिक शुक्ल पक्ष १० शनिवार तारीख ०१-११-२०२५ पर्यन्त देवशयन कालांश एवं श्रावण बदी ६ बुधवार ता. १६-०७-२०२५ से मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १२ रविवार ता. १६-११-२०२५ पर्यंत कर्क से तुला संक्रांति कालांश। **(४) महालय श्राद्ध पक्ष** - संवत् २०८२ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ रविवार तारीख ०७-०९-२०२५ से आश्विन कृष्ण पक्ष ३० रविवार तारीख २१-०९-२०२५ पर्यन्त श्राद्ध पितृपक्ष कालांश नेष्ट सूचक। **(५) धनु संक्रान्ति-मल मास**- संवत् २०८२ पौष कृष्ण पक्ष ११ सोमवर तारीख १५-१२-२०२५ से प्रारंभ होकर भावी माघ कृष्ण पक्ष ११ बुधवार तारीख १४-०१-२०२६ पर्यन्त कुमूहूर्त सूचक नेष्ट कालांश। **(६) शुक्र अस्तोदय**- संवत् २०८२ पौष कृष्ण पक्ष ११ सोमवार तारीख १५-१२-२०२५ से शुक्र तारा अस्त रचना का बनते फाल्गुन कृष्ण पक्ष १ सोमवार ता. ०२-०२-२०२६ को शुक्र तारा उदित स्वरूप का रहेगा। **(७) होलाष्टक**- संवत् २०८२ फाल्गुन शुक्ल पक्ष ८ मंगलवार तारीख २४-०२-२०२६ से फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४ सोमवार तारीख ०२-०३-२०२६ पर्यन्त विवाह मुहूर्त आदि शुभ मांगलिक कार्य रचना शोधन हेतु कालांश मान्य नहीं। **(८) मीन संक्रांति मलमास कालांश**- संवत् २०८२ चैत्र कृष्ण पक्ष १० शनिवार तारीख १४-०३-२०२६ से संवत् २०८३ वैशाख कृष्ण पक्ष १२ मंगलवार तारीख १४-०४-२०२६ पर्यन्त मान्य होगा। **(९) गुरु-शुक्र बाल्यत्व-वृद्धत्व काल**- गुरू व शुक्र के अस्त से तीन दिन पूर्व वृद्धत्व कालांश एवं उदय से तीन दिन बाद तक बाल्यत्व कालांश शुभ कार्यो हेतु वर्जित है। **(१०) गोधूलिक वेला लग्न**- गोधूलिक वेला के लग्न गुरुवार को सूर्यास्त होने पर तथा शनिवार को सूर्य साक्षी रहते पाणिग्रहण शुभ रहता है। अन्यथा गोधूलि-गोरज वेला का प्रतिफल निष्फल ही बन पाता है अतः विवाहादि पूजा कर्म गोधूलि समय से १ घंटा पूर्व मे ही समाधित कर लेना योग्य सूत्र है एवं जिन ग्रहों के (दा.) दानतः अथवा (पू.) अर्थात पूज्य उल्लेख किया गया हो उस दिवस पर अभिष्ट ग्रह के दान-पूजा आदि उपकरणों द्वारा कार्य सम्पन्न करना भी योग्य सूत्र हैं। **(११) क्रान्ति-साम्य**- महापात विकास गणितागत सुक्ष्म रचना अनुसार मान्य किया जाता है, इस पक्ष विषयक सूर्य-चन्द्र की राश्यात्मक स्थिति को मान्य नहीं किया है। **(१२) गोधूलि-दिवा-रात्रि लग्न**- इन विवाह मुहूर्त्तों में दिवा-गोधूलि-रात्रि इन ३ वेला की गणना मान्यता की गई है। अपनी अपनी कार्य सुविधा मान्यता एवं देशाचार-कुलाचार अनुसार समाधान करना भी सन्मार्ग सूचक सूत्र। दिवा लग्न हेतु शास्त्रीय व्यवधान विशेष नहीं यथा सूत्र विवाह पद्धति मध्ये-दिवा सूर्यमवलोक्य रात्रौ ध्रुवं च विपश्य। अर्थात् दिवा लग्न भी कार्य समाधान सूचक तथा रात्रि लग्न वेला पाठान्तर वैशेषिक मान्यता अनुरूप है। देवशयन कालांश के लग्न मुहूर्त्त तथा कात्यायनोक्त नक्षत्रचतुष्टयी के विवाह मुहूर्त्त भी युग धर्मानुकूल जन सुविधार्थ प्रस्तुत है। इनका सदुपयोग-कार्य व्यवहार भी देशकाल परिस्थिति एवं निज कुलज शाखा प्रशाखा-देशाचार-कुलाचार मान्यतानुसार समुचित है। साथ ही गत वर्षो से आगामी संवत् के आषाढ़ माह पर्यन्त संभावित विवाह लग्नों का भी समावेश किया गया है।

विक्रम संवत् २०८२ शाके: १९४७ विवाहलग्नानि रेखासहितानि च तथोपनयन विविध मुहूर्त्तादयः

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
वैशाख कृष्ण १	सोम	१४-०४-२५	स्वाति	रेखा ७ ।।।ऽ।ऽऽ।।	तुला	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ०९।५३ से १२।०७ लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ०९।१३ से ११।२९ गु. ७ पू. भान्तमपि
वैशाख कृष्ण ३	बुध	१६-०४-२५	अनुराधा	रेखा ८ ।ऽ।।।ऽ।।।।	वृश्चिक	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ११ कुम्भ रात्रि ०३।०९ से ०४।४०
वैशाख कृष्ण ५	शुक्र	१८-०४-२५	मूल	रेखा ६ ।।।ऽऽ।ऽ।ऽ	धनु	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ११ कुम्भ रात्रि ०३।०२ से ०४।३२ दग्धा परिहारः
वैशाख कृष्ण ६	शनि	१९-०४-२५	मूल	रेखा ७ ।।।।ऽ।।ऽ।ऽ	धनु	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ०९।३४ से १०।२१ चं. ७ पू. दग्धा परिहारः भान्तमपि
वैशाख कृष्ण ७	रवि	२०-०४-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा ७ ।।।ऽ।ऽ।ऽ।।	मकर	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ०८।५० से ११।०६ गु. ७ पू. लग्न ११ कुम्भ रात्रि ०२।५४ से ०४।२४ गुरू पादवेधाऽभावः

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
वैशाख कृष्ण १२	शुक्र	२५-०४-२५	उत्तराभाद्रपद	रेखा ७ ।।ऽ।ऽऽ।।।।	मीन	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ०९।३९ से ११।२३
वैशाख शुक्ल २	मंगल	२९-०४-२५	रोहिणी	रेखा ९ ।।।।।ऽ।।।।	वृषभ	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ०८।१३ से १०।२९ चन्द्र गुरू ७ पूज्य लग्न ११ कुम्भ रात्रि ०२।१७ से ०३।४७
वैशाख शुक्ल ३	बुध	३०-०४-२५	रोहिणी	रेखा ९ ।।।।।ऽ।।।।	वृषभ	मेष	वृषभ	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा ०६।५३ से ०८।४९ चन्द्र १ परिहारः लग्न ३ मिथुन दिवा ०८।४९ से ११।०३
वैशाख शुक्ल ३	बुध	३०-०४-२५	मृगशिरा	रेखा ९ ।।ऽ।।।।।।।	वृषभ	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ०८।०९ से १०।२५ चं. गु. ७ पूज्य
वैशाख शुक्ल ८	सोम	०५-०५-२५	मघा	रेखा ९ ऽ।।।।।।।।।	सिंह	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ०७।४९ से १०।०५ गु. ७ पू. लग्न ११ कुम्भ रात्रि ०१।५३ से ०३।२३ चं. ७ पू. गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः
वैशाख शुक्ल ९	मंगल	०६-०५-२५	मघा	रेखा ९ ऽ।।।।।।।।।	सिंह	मेष	वृषभ	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा ०६।२९ से ०८।२५ लग्न ३ मिथुन दिवा ०८।२५ से १०।३९ गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः
वैशाख शुक्ल १०	बुध	०७-०५-२५	उत्तराफाल्गुनी	रेखा ७ ।।ऽ।ऽ।ऽ।।।	सिंह	मेष	वृषभ	वि. लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ०७।४१ से ०९।५८ केतु युति परिहारः गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः
वैशाख शुक्ल ११	गुरू	०८-०५-२५	उत्तराफाल्गुनी	रेखा ७ ।।ऽ।ऽ।ऽ।।।	कन्या	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ०७।३७ से ०९।०७ भान्तमपि केतु युति परिहारः गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः
ज्येष्ठ कृष्ण ५	शनि	१७-०५-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा ७ ।।।ऽ।ऽ।ऽ।।	धनु	वृषभ	मिथुन	वि. लग्न गोधूलि लग्न ९ धनु रात्रि ०९।२० से ११।२३ गु. ७ पू. मं. ८ परिहारः गु. पादवेधाऽभावः
ज्येष्ठ शुक्ल २	बुध	२८-०५-२५	मृगशिरा	रेखा ९ ।।ऽ।।।।।।।	वृषभ	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ०६।५९ से ०९।१३
ज्येष्ठ शुक्ल २	बुध	२८-०५-२५	मृगशिरा	रेखा ८ ।।ऽ।।ऽ।।।।	मिथुन	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ९ धनु रात्रि ०९।०८ से १०।३९ चं. गु. ७ पू. मं. ८ परिहारः
ज्येष्ठ शुक्ल ६	रवि	०१-०६-२५	मघा	रेखा ६ ऽ।।।ऽऽऽ।।	सिंह	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ९ धनु रात्रि ०९।३७ से १०।२३ गु. ७ पू. लग्न १ मेष रात्रि ०३।०५ से ०४।४३ श. १२ पू.
ज्येष्ठ शुक्ल ७	सोम	०२-०६-२५	मघा	रेखा ६ ऽ।।।ऽऽऽ।।	सिंह	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ०६।३९ से ०८।५२
ज्येष्ठ शुक्ल ७	सोम	०२-०६-२५	मघा	रेखा ८ ऽ।।।।।।ऽ।।	सिंह	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न गोधूलि लग्न ९ धनु रात्रि ०८।१५ से १०।१९ गु. ७ पू. तिथ्यंतमपि, भान्तमपि
ज्येष्ठ शुक्ल ९	बुध	०४-०६-२५	उत्तराफाल्गुनी	रेखा ७ ।।ऽ।ऽऽ।।।।	कन्या	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ९ धनु रात्रि ०८।११ से १०।१५ गु. ७ पू. केतु युति परिहारः
ज्येष्ठ शुक्ल १२	शनि	०७-०६-२५	स्वाति	रेखा ८ ऽ।।।ऽ।।।।।	तुला	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि ०२।४१ से ०४।१९ चं. ७ श. १२ पू.
ज्येष्ठ शुक्ल १२	रवि	०८-०६-२५	स्वाति	रेखा ८ ।।।।ऽ।ऽ।।।	तुला	वृषभ	मिथुन	वि. लग्न ३ मिथुन दिवा ०८।१६ से ०८।२९ ल. ४ कर्क दिवा ०८।२९ से १०।४७ तिथ्यंतमपि
मार्गशीर्ष शुक्ल २	शनि	२२-११-२५	मूल	रेखा ८ ।।।ऽ।ऽ।।।।	धनु	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न ७ तुला रात्रि ०४।१७ से ०६।३५ गु. पाद वेधाऽभावः
मार्गशीर्ष शुक्ल ३	रवि	२३-११-२५	मूल	रेखा ८ ।।।ऽ।ऽ।।।।	धनु	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १०।५५ से १२।४० गु. पाद वेधाऽभावः गु. ७ पू.
मार्गशीर्ष शुक्ल ५	मंगल	२५-११-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा ६ ।ऽ।।ऽ।ऽऽ।।	मकर	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ०९।१७ से २३।३५ चं. ७ पू.
मार्गशीर्ष शुक्ल १०	रवि	३०-११-२५	उत्तराभाद्रपद	रेखा ८ ।।।।।।।ऽ।ऽ	मीन	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १०।२८ से १२।१३ गु. ७ पू. लग्न ४ कर्क रात्रि ०८।५८ से ०९।३० तिथ्यंतमपि दग्धा परिहारः तथा रेखा ९ वि. लग्न ४ कर्क रात्रि ०९।३० से ११।१६
मार्गशीर्ष शुक्ल १४	गुरू	०४-१२-२५	रोहिणी	रेखा ७ ऽ।।।ऽ।।ऽ।।	वृषभ	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ०८।४३ से ११।०० तिथिक्षयः चांवल अनुदानतः परिहारः
पौष कृष्ण ७	गुरू	११-१२-२५	उत्तराफाल्गुनी	रेखा ९ ।।।।।।।ऽ।।	सिंह	वृश्चिक	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला रात्रि ०३।५६ से ०५।२१
पौष कृष्ण ८	शुक्र	१२-१२-२५	उत्तराफाल्गुनी	रेखा ८ ।।।।।ऽ।ऽ।।	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर दिवा १०।२१ से ११।२६ अत्यावश्यके

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
फाल्गुन कृष्ण ८	मंगल	१०-०२-२६	अनुराधा	रेखा ९ IIIIIIISII	वृश्चिक	मकर	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा १२।०६ से ०२।०३ लग्न ७ तुला रात्रि ११।०५ से ०१।२२
फाल्गुन शुक्ल ४	शनि	२१-०२-२६	रेवती	रेखा ९ IIIIISIIII	मीन	कुम्भ	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा ०१।०१ से ०१।१८
चैत्र कृष्ण ७	मंगल	१०-०३-२६	अनुराधा	रेखा ९ ISIIIIIIII	वृश्चिक	कुम्भ	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा १२।४१ से ०२।२६ चं. ६ परिहार:
चैत्र कृष्ण ८	बुध	११-०३-२६	मूल	रेखा ८ IIISIIISII	धनु	कुम्भ	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर रात्रि ०३।४८ से ०५।३२ गु. पाद वेधाऽभाव: शु. ३ पू.
चैत्र कृष्ण ९	गुरू	१२-०३-२६	मूल	रेखा ८ IIISIIISII	धनु	कुम्भ	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष दिवा ०८।३० से ०९।५८ गु. पाद वेधाऽभाव:

कात्यायनोक्त विशेष-४ नक्षत्रीय विवाह मुहूर्त्त सवंत् २०८२ मध्ये

शुभविवाह

चित्रा-श्रवण-धनिष्ठाऽश्विन्याधिकानि चत्वारि तथाऽपि खलग्रहयुतं वर्ज्यं सूत्रानुगत अश्विनी-चित्रा-श्रवण-धनिष्ठा आदि ४ नक्षत्रीय विवाह लग्न शोधन निज शाखा प्रशाखा विशेष अनुसार ही मान्य तदनुसार अभिलेखन।

शुभविवाह

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
वैशाख कृष्ण ८	सोम	२१-०४-२५	श्रवण	रेखा ७ ISIISIISII	मकर	मेष	वृषभ	वि. लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ०८।४६ से ११।०२ गु. ७ पू. लग्न ११ कुम्भ रात्रि ०२।५० से ०४।२०
वैशाख कृष्ण ९	मंगल	२२-०४-२५	श्रवण	रेखा ६ ISIISSISII	मकर	मेष	वृषभ	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा ०७।२५ से ०९।२२
वैशाख कृष्ण ९	मंगल	२२-०४-२५	धनिष्ठा	रेखा ८ IIIIISISII	मकर	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ०८।४१ से १०।५८ गु. ७ पू.
ज्येष्ठ कृष्ण ५	रवि	१८-०५-२५	श्रवण	रेखा ९ SIIIIIIIII	मकर	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न गोधूलि लग्न ९ धनु रात्रि ०९।१६ से ११।१९ गु. ७ पू. लग्न १ मेष रात्रि ०४।०१
								से ०५।४३ श. १२ पूज्य रात्रि ०३।५० उ. राज पंचक रेखा ८
मार्गशीर्ष शुक्ल ५	मंगल	२५-११-२५	श्रवण	रेखा १० IIIIIIIIII	मकर	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न ७ तुला रात्रि ०४।०६ से ०५।२६ रात्रि ०५।२६ उ. महापात:

शुभविवाह विशेष संभागीय विवाह मुहूर्त्ता: संवत् २०८२ मध्ये शुभविवाह

सिंध-पंजाब-काश्मीर-हिमाचल प्रदेश प्रांतीय संभागों में देशाचार-लोकाचार नियामक स्थिति वश देवशयन चातुर्मास कालांश में भी विवाह लग्न आदि सम्पन्न होते हैं। जन समाज एवं पण्डित गणों द्वारा कार्य सम्पन्न होते हैं। इस पक्ष हेतु बृहद देवज्ञरंजन नामक शास्त्रीय निबंध ग्रन्थ में वचन प्रमाण भी प्राप्त हैं। यथा-प्रमाणं ग्रामवचनं विवाहादौ-तथात्यये। यत: परम्परायातं धर्मं वदन्ति ते खलु॥ देशाचारस्ता-वदादौ विचिन्त्यो देशे-देशे या स्थिति सैव कार्या॥

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
श्रावण कृष्ण १	शुक्र	११-०७-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा ७ ISIISISIII	मकर	मिथुन	मिथुन	वि. लग्न १ मेष रात्रि १२।२९ से ०२।०७ श. १२ पू. लग्न २ वृषभ रात्रि ०२।०७ से ०४।०४
श्रावण कृष्ण २	शनि	१२-०७-२५	श्रवण	रेखा ८ IIIIISISII	मकर	मिथुन	मिथुन	वि. लग्न १ मेष रात्रि १२।२५ से ०२।०३ श. १२ पू. लग्न ०२ वृषभ रात्रि ०२।०३ से ०४।०१
श्रावण कृष्ण ३	रवि	१३-०७-२५	धनिष्ठा	रेखा ७ IIISSSIIII	मकर	मिथुन	मिथुन	विवाह लग्न ४ कर्क दिवा ०६।५३ से ०८।३१ बु. पाद वेधाऽभाव:
श्रावण कृष्ण ३	रवि	१३-०७-२५	धनिष्ठा	रेखा ८ IIISSIIIII	कुम्भ	मिथुन	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि १२।५० से ०१।५९ श. १२ पू. लग्न २ वृषभ रात्रि ०१।५९ से
								०३।५६ बु. पाद वेधाऽभाव:
श्रावण कृष्ण ८	शुक्र	१८-०७-२५	अश्विनी	रेखा ८ IIIIISISII	मेष	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ०१।४० से ०२।१४ भान्तमपि
श्रावण कृष्ण १०	रवि	२०-०७-२५	रोहिणी	रेखा ८ IIIIISISII	वृषभ	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि ११।५४ से ०१।३२ श. १२ पू. लग्न २ वृषभ रात्रि ०१।३२ से
								०३।२९ चं. १ परिहार: लग्न ३ मिथुन रात्रि ०३।२९ से ०५।४६
श्रावण कृष्ण ११	सोम	२१-०७-२५	मृगशिरा	रेखा ८ IISIIIISII	वृषभ	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि ११।५० से ०१।२८ श. १२ पू. लग्न २ वृषभ रात्रि ०१।२८ से
								०३।२५ चं. १ परिहार: लग्न ३ मिथुन रात्रि ०३।२५ से ०५।४२
श्रावण शुक्ल २	शनि	२६-०७-२५	मघा	रेखा ९ ISIIIIIIII	सिंह	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ०४।०६ से ०४।५१

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
श्रावण शुक्ल ४	सोम	२८-०७-२५	उत्तराफाल्गुनी	रेखा ६ ।।ऽ।।ऽऽऽ।।	सिंह/कन्या	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ०१।०१ से ०२।५८ मं. युति परिहारः
श्रावण शुक्ल ४	सोम	२८-०७-२५	उत्तराफाल्गुनी	रेखा ६ ।।ऽ।।ऽ।ऽ।।	कन्या	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ०२।५८ से ०५।११ मं. युति परिहारः
श्रावण शुक्ल ७	गुरू	३१-०७-२५	स्वाति	रेखा ८ ।ऽ।।।।।ऽ।।	तुला	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ०२।४६ से ०४।५१
श्रावण शुक्ल ८	शुक्र	०१-०८-२५	स्वाति	रेखा ८ ।ऽ।।।ऽ।ऽ।।	तुला	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ०२।४२ से ०३।४१ भान्तमपि
श्रावण शुक्ल ९	रवि	०३-०८-२५	अनुराधा	रेखा ९ ।।।।।।।ऽ।।	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा ११।४० से १२।३०
श्रावण शुक्ल ९	रवि	०३-०८-२५	अनुराधा	रेखा ८ ।।।।।ऽ।ऽ।।	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा १२।३० से ०१।५७ गोधूलि लग्न १ मेष रात्रि ११।०१ से १२।३८
								चं. ८ परिहारः शु. ३ श. १२ पू. लग्न २ वृषभ रात्रि १२।३८ से ०२।३४ चं. ७ पू. लग्न ३
								मिथुन रात्रि ०२।३४ से ०४।४७ चं. ६ परिहारः
श्रावण शुक्ल १३	गुरू	०७-०८-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा १० ।।।।।।।।।।	धनु/मकर	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न गोधूलि लग्न २ वृषभ रात्रि १२।२२ से ०२।१८
श्रावण शुक्ल १४	शुक्र	०८-०८-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा १० ।।।।।।।।।।	मकर	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा ११।२० से ०१।३८
श्रावण शुक्ल १४	शुक्र	०८-०८-२५	श्रवण	रेखा ७ ।।।।ऽऽ।ऽ।।	मकर	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ०१।५३ से ०२।१५ लग्न ३ मिथुन रात्रि ०२।१५ से ०४।२८
श्रावण शुक्ल १५	शनि	०९-०८-२५	श्रवण	रेखा ७ ।।।।ऽऽ।ऽ।।	मकर	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा ११।१६ से ०१।३४
भाद्रपद कृष्ण ४	बुध	१३-०८-२५	रेवती	रेखा ८ ।।।।ऽ।।ऽ।।	मीन	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ११।५८ से ०१।५५ लग्न ३ मिथुन रात्रि ०१।५५ से ०४।०८
भाद्रपद कृष्ण ९	रवि	१७-०८-२५	रोहिणी	रेखा ७ ।।।।।।ऽऽ।ऽ	वृषभ	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ०१।४२ से ०१।३९ चं. १ परिहारः दग्धा परिहारः
भाद्रपद कृष्ण ९	रवि	१७-०८-२५	रोहिणी	रेखा ८ ।।।।।।।ऽ।ऽ	वृषभ	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ०१।३९ से ०२।५० दग्धा परिहारः
भाद्रपद शुक्ल १	रवि	२४-०८-२५	उत्तराफाल्गुनी	रेखा ९ ऽ।।।।।।।।।	सिंह	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ०२।०६ से ०३।२४ लग्न ४ कर्क रात्रि ०३।२४ से ०५।४२
भाद्रपद शुक्ल २	सोम	२५-०८-२५	उत्तराफाल्गुनी	रेखा ८ ऽ।।।।ऽ।।।।	कन्या	सिंह	मिथुन	वि. लग्न ७ तुला दिवा १०।१३ से १२।३१ लग्न २ वृषभ रात्रि ११।११ से ०१।०७ शु. ३ पू.
								लग्न ३ मिथुन रात्रि ०१।०७ से ०३।२१ लग्न ४ कर्क रात्रि ०३।२१ से ०३।५० भान्तमपि
भाद्रपद शुक्ल ५	गुरू	२८-०८-२५	स्वाति	रेखा ८ ऽ।।।।ऽ।।।।	तुला	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि १२।५६ से ०३।०९ लग्न ४ कर्क रात्रि ०३।०९ से ०५।२७
भाद्रपद शुक्ल ९	सोम	०१-०९-२५	मूल	रेखा ७ ।।।ऽ।ऽ।।।ऽ	धनु	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि १२।४० से ०२।५३ चं. ७ पू. दग्धा परिहारः गु. पाद वेधाऽभावः
भाद्रपद शुक्ल १२	गुरू	०४-०९-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा ८ ।।।।ऽऽ।।।।	मकर	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा ०९।३४ से ११।५१
भाद्रपद शुक्ल १२	गुरू	०४-०९-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा ९ ।।।।ऽ।।।।।	मकर	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि १०।३१ से ११।४४ शु. ३ पू.
भाद्रपद शुक्ल १३	शुक्र	०५-०९-२५	श्रवण	रेखा ८ ऽ।।ऽ।।।।।।	मकर	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा ०९।३० से ११।४७ बु. पाद वेधाऽभावः
भाद्रपद शुक्ल १४	शनि	०६-०९-२५	धनिष्ठा	रेखा ७ ।।।ऽऽऽ।।।।	कुम्भ	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि १०।२३ से १०।५६ शु. पाद वेधाऽभावः
आश्विन शुक्ल ४	शुक्र	२६-०९-२५	अनुराधा	रेखा १० ।।।।।।।।।।	वृश्चिक	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि १०।०९ से ११।०१ चं. ७ पू. लग्न ३ मिथुन रात्रि ११।०१ से
								०१।१४ चं. ६ परिहारः शु. ३ पू. लग्न ४ कर्क रात्रि ०१।१४ से ०३।३२
आश्विन शुक्ल ९	बुध	०१-१०-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा ८ ।।।।ऽ।ऽ।।।	मकर	कन्या	मिथुन	वि. लग्न २ वृषभ रात्रि ०८।४४ से १०।४१ लग्न ४ कर्क रात्रि १२।५४ से ०३।१२ चं. ७ पू.
आश्विन शुक्ल १०	गुरू	०२-१०-२५	श्रवण	रेखा ८ ।।।।।ऽ।ऽ।।	मकर	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न ९ धनु दिवा १२।१७ से ०२।२० गु. ७ पू. लग्न २ वृषभ रात्रि ०८।४० से १०।३७
								लग्न ४ कर्क रात्रि १२।५० से ०३।०८
आश्विन शुक्ल ११	शुक्रः	०३-१०-२५	धनिष्ठा	रेखा १० ।।।।।।।।।।	मकर/कुंभ	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ०८।३६ से १०।३३ लग्न ३ मिथुन रात्रि १०।३३ से १२।४६
आश्विन शुक्ल १५	मंगल	०७-१०-२५	रेवती	रेखा ६ ।।।ऽऽऽ।ऽ।।	मीन	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न ९ धनु दिवा ११।५७ से ०२।०० शु. पादवेधाऽभावः गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
कार्त्तिक कृष्ण ५	शनि	११-१०-२५	रोहिणी	रेखा ७ ।ऽ।।।ऽ।ऽ।।	वृषभ	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर दिवा ०२।०७ से ०३।२० मं. १० पू. भान्तमपि
कार्त्तिक कृष्ण ५	शनि	११-१०-२५	मृगशिरा	रेखा ७ ऽ।।।।ऽ।ऽ।।	वृ./मि.	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ०८।०४ से १०।०१ चं. १ परिहारः लग्न ३ मिथुन रात्रि १०।०१
								से १२।१४ लग्न ४ कर्क रात्रि १२।१४ से ०२।३२ शु. ३ पू.
कार्त्तिक शुक्ल १	बुध	२२-१०-२५	स्वाति	रेखा १० ।।।।।।।।।।	तुला	तुला	कर्क	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ०९।१८ से ११।३१ लग्न ४ कर्क रात्रि ११।३१ से ०१।४९
								भान्तमपि शु. ३ पू.
कार्त्तिक शुक्ल ३	शुक्र	२४-१०-२५	अनुराधा	रेखा ९ ।।।।।ऽ।।।।	वृश्चिक	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।५३ से ०२।३८
कार्त्तिक शुक्ल ३	शुक्र	२४-१०-२५	अनुराधा	रेखा १० ।।।।।।।।।।	वृश्चिक	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ११।२३ से ०१।४१ शु. ३ पू.
कार्त्तिक शुक्ल ६	सोम	२७-१०-२५	मूल	रेखा ८ ।।।ऽ।।।ऽ।।	धनु	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।४१ से ०१।२८ गु. पाद वेधाऽभावः भान्तमपि
कार्त्तिक शुक्ल ६	मंगल	२८-१०-२५	उत्तराषाढ़ा	रेखा ७ ।।।।ऽऽ।ऽ।।	मकर	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ११।०७ से ०१।२५ चं. ७ शु. ३ पू.
कार्त्तिक शुक्ल ८	गुरू	३०-१०-२५	धनिष्ठा	रेखा ८ ।ऽ।।।ऽ।।।।	मकर	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि १०।५९ से ०१।१७ चं. ७ शु. ३ पू.
कार्त्तिक शुक्ल ९	शुक्र	३१-१०-२५	धनिष्ठा	रेखा ८ ।ऽ।।।ऽ।।।।	कुम्भ	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा ०१।५० से ०२।१० गु. ७ पू.
कार्त्तिक शुक्ल ११	रवि	०२-११-२५	उत्तराभाद्रपद	रेखा ७ ऽ।।।।।ऽ।।ऽ	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि १०।४७ से ११।१०
कार्त्तिक शुक्ल ११	रवि	०२-११-२५	उत्तराभाद्रपद	रेखा ८ ऽ।।।।।।।।ऽ	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ११।१० से ०१।०५
कार्त्तिक शुक्ल १३	सोम	०३-११-२५	उत्तराभाद्रपद	रेखा ८ ऽ।।।।।।।।ऽ	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।१४ से ०१।३८ गु. ७ पू. दग्धा परिहारः
कार्त्तिक शुक्ल १३	सोम	०३-११-२५	रेवती	रेखा ८ ।ऽ।।।ऽ।।।।	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि १०।४३ से ०१।०१
कार्त्तिक शुक्ल १४	मंगल	०४-११-२५	रेवती	रेखा ८ ।ऽ।।।ऽ।।।।	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।१० से १२।३५ भान्तमपि
मार्गशीर्ष कृष्ण २	शुक्र	०७-११-२५	रोहिणी	रेखा ७ ।।।।ऽऽऽ।।।	वृषभ	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।३५ से ०१।४२ गु. ७ पू.
मार्गशीर्ष कृष्ण ३	शनि	०८-११-२५	मृगशिरा	रेखा ९ ऽ।।।।।।।।।	मिथुन	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा ११।५४ से ०१।३८ गु. ७ पू.
मार्गशीर्ष कृष्ण ८	बुध	१२-११-२५	मघा	रेखा ८ ।।।।।ऽ।ऽ।।	सिंह	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि १०।०८ से १२।२६

आगामी वि. संवत् २०८३ शाकः १९४८ मध्ये शुभ विवाह मुहूर्त्ताः

आगामी नवीन विक्रम संवत् २०८३ शाके १९४८ के अन्तर्गत आषाढ़ शुक्ल पक्ष देवशयनी एकादशी पर्यन्त विवाह मुहूर्त्त प्रकाशित किये जा रहे है। ये सभी मुहूर्त्त संभावित संक्षिप्त संकेत-सूचना मात्र है। अतः विशेष विवरण हेतु आगामी संवत् २०८३ के नवीन श्रीधरी पंचांग में ही स्पष्ट दिया जावेगा। अतः विद्वगण अपने विवेक से मुहूर्त्तों का अवलोकन कर उपयोग में लेवें।

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
वैशाख शुक्ल ३	सोम	२०-०४-२६	रोहिणी	रेखा १० ।।।।।।।।।।	वृषभ	मेष	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ चं. १ परिहारः लग्न ३ मिथुन मं. १० पू. लग्न ४ कर्क दिवा १२।४४ या.
वैशाख शुक्ल ३	सोम	२०-०४-२६	रोहिणी	रेखा ९ ।।।।।ऽ।।।।	वृषभ	मेष	मिथुन	विवाह लग्न ४ कर्क दिवा १२।४४ उ.
वैशाख शुक्ल ५	मंगल	२१-०४-२६	मृगशिरा	रेखा ७ ऽ।।।।ऽ।ऽ।।	वृषभ	मेष	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ चं. १ परिहारः लग्न ३ मिथुन मं. १० पू. लग्न ४ कर्क दिवा १२।३२ या.
वैशाख शुक्ल ५	मंगल	२१-०४-२६	मृगशिरा	रेखा ६ ऽ।।।।ऽऽऽ।।	वृ./मि.	मेष	मिथुन	विवाह लग्न ४ कर्क दिवा १२।३२ उ. ०१।१८ या.
वैशाख शुक्ल ५	मंगल	२१-०४-२६	मृगशिरा	रेखा ७ ऽ।।।।।ऽऽ।।	मिथुन	मेष	मिथुन	विवाह लग्न ४ कर्क दिवा ०१।१८ उ.
वैशाख शुक्ल १०	रवि	२६-०४-२६	मघा	रेखा ७ ।ऽऽ।।ऽ।।।।	सिंह	मेष	मिथुन	वि. लग्न २ वृषभ लग्न ३ मिथुन मं. १० पू. लग्न ४ कर्क केतु युति परिहारः गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण ४	मंगल	०५-०५-२६	मूल	रेखा ८ ।।।ऽ।।।ऽ।।	धनु	मेष	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर गुरू पाद वेधाऽभावः

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
प्र. ज्येष्ठ कृष्णा ४	बुध	०६-०५-२६	मूल	रेखा ८ ।।।ऽ।।।ऽ।।	धनु	मेष	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन चं. ७ पू. गुरू पाद वेधाऽभाव:
प्र. ज्येष्ठ कृष्णा ५	गुरू	०७-०५-२६	उत्तराषाढ़ा	रेखा ६ ऽऽ।।ऽ।।।।ऽ	धनु	मेष	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर रात्रि ०१।२६ या. दग्धा परिहार:
प्र. ज्येष्ठ कृष्णा ६	शुक्र	०८-०५-२६	उत्तराषाढ़ा	रेखा ६ ऽऽ।।ऽ।।।।ऽ	धनु	मेष	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ लग्न ४ कर्क चं. ७ पू. दिवा. १२।२२ या.
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल ५	शुक्र	१९-०६-२६	मघा	रेखा ७ ।ऽऽ।।ऽ।।।।	सिंह	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न २ वृषभ शु. ३ पू. केतु युति परिहार
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल ६	शनि	२०-०६-२६	मघा	रेखा ७ ।ऽऽ।।ऽ।।।।	सिंह	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क दिवा ०९।२६ या. केतु युति परिहार:
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल ९	मंगल	२३-०६-२६	हस्त	रेखा ८ ऽ।।।।।।ऽ।।	कन्या	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल १२	शुक्र	२६-०६-२६	अनुराधा	रेखा ६ ऽऽ।।ऽऽ।।।।	वृश्चिक	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न १ मेष चं. ८ परिहार: रात्रि ०१।२८ उ.
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल १३	शनि	२७-०६-२६	अनुराधा	रेखा ६ ऽऽ।।ऽऽ।।।।	वृश्चिक	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल १४	रवि	२८-०६-२६	मूल	रेखा ७ ।।।ऽ।ऽ।ऽ।।	धनु	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न १ मेष बुध पाद वेधाऽभाव: गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभाव:
आषाढ़ कृष्णा ६	सोम	०६-०७-२६	उत्तराभाद्रपद	रेखा ८ ऽ।।।।ऽ।।।।	मीन	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न १ मेष श. १२ पू. रात्रि ०१।४२ उ.
आषाढ़ कृष्णा ७	मंगल	०७-०७-२६	उत्तराभाद्रपद	रेखा ८ ऽ।।।।ऽ।।।।	मीन	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क

आगामी वि. संवत् २०८३ शाकः १९४८ मध्ये कात्यायनोक्त विवाह मुहूर्त्ता:

मास-पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	लत्तादिदोष-रेखाऐं	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	✿ विवाह लग्न समय दिवा-रात्रि, पूजा एवं दानादि उपकरण ✿
वैशाख शुक्ल १३	बुध	२९-०४-२६	चित्रा	रेखा ७ ।।।।ऽऽऽ।।।	कन्या	मेष	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर
वैशाख शुक्ल १४	गुरू	३०-०४-२६	चित्रा	रेखा ७ ।।।।ऽऽऽ।।।	कन्या	मेष	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ लग्न ३ मिथुन मं. १० पू. लग्न ४ कर्क
प्र. ज्येष्ठ कृष्णा ८	रवि	१०-०५-२६	धनिष्ठा	रेखा ८ ऽ।।।।।।ऽ।।	म./कु.	मेष	मिथुन	वि. लग्न २ वृषभ लग्न ४ कर्क दिवा १२।१३ या. लग्न १० मकर रात्रि १२।५० या. भान्तमपि
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल ९	मंगल	२३-०६-२६	चित्रा	रेखा ८ ।।।।।ऽऽ।।।	तुला	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न १ मेष चं. ७ श. १२ पू.
द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल १०	बुध	२४-०६-२६	चित्रा	रेखा ८ ।।।।।ऽऽ।।।	तुला	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क
आषाढ़ कृष्णा ३	शुक्र	०३-०७-२६	धनिष्ठा	रेखा ६ ।।।ऽऽऽ।ऽ।।	कुम्भ	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न १ मेष शु. पाद वेधाऽभाव:
आषाढ़ कृष्णा ४	शनि	०४-०७-२६	धनिष्ठा	रेखा ६ ।।।ऽऽऽ।ऽ।।	कुम्भ	मिथुन	कर्क	विाह लग्न ४ कर्क शु. पाद वेधाऽभाव:
आषाढ़ कृष्णा ९	गुरू	०९-०७-२६	अश्विनी	रेखा ७ ऽ।।।।ऽ।ऽ।।	मेष	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क

संकल्प- ॐ विष्णु: विष्णु: विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वन्मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपुनीते भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे कुमारिकानामक्षेत्रे पुष्करारण्ये गंगायमुनयो: पश्चिमे तटे नर्मदाया उत्तरे तटे अमुकनाम्नि नगरे अमुक विक्रम संवत्सरे अमुक शालिवाहनशकाब्दे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे-करणे च (अमुक राशिस्थितै सूर्ये अमुकराशिस्थिते चन्द्रे शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथा यथा राशि स्थानस्थितेषु सत्सु) एवं गुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नौऽमुकनामाहं (अमुकनाम्नो यजमानस्य प्रतिनिधित्वेन वा) मम आत्मन: रोगदोष कष्टपीड़ानिवारणार्थ-अलक्ष्मी-निवारणार्थ (त्याग करके पुन: जल लेकर बोलें) श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फल प्राप्तयर्थ सपरिवारस्य मम (यजमानस्य वा) द्विपदचतुष्पद सहितस्य क्षेमाभयायुरारोग्यैश्वर्याभिबृद्ध यर्थसमस्त मंगला-वाप्त्यर्थ भगवद्भक्तिबृद्ध यर्थ यथामिलितोपचारदव्यै: गणपतिकुलदेवी नवग्रह-कलश स्थापन-पुर्वकं अमुकदेवता पूजनमहं करिष्ये (यजमान के लिए करे तो करिष्यामि बोलना चाहिये)।

प्रकाशक :- बम्बई वाले पं. श्रीधर शिवलालजी ज्ञानसागर छापाखाना, पुराना शहर पो.- किशनगढ़ -सिटी जिला- अजमेर (राजस्थान) ३०५८०२ मोबाईल नं. 09462504750

यज्ञोपवीत मुहूर्त्ताः

चैत्र शुक्ल पक्षे

५ बुधे रोहिण्यां ल. २ दिवा ०८।५० उ. तारीख ०२-०४-२०२५ ई.
१० चन्द्रे आश्लेषायां ल. २+अभिजिति तारीख ०७-०४-२०२५ ई. नक्षत्र वृद्धि
१२ बुधे पूफायां ल. २ दिवा ०९।५७ उ. तारीख ०९-०४-२०२५ ई.

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३+अभिजिति ता.१४-०४-२५

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. २,३ तारीख ३०-४-२५ ई.
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. ०१-०५-२५ ई.
५ शुक्रे आर्द्रायां ल.२+अभिजिति ता.०२-०५-२५
१० बुधे पूफायां ल. २,३ तारीख ०७-०५-२०२५
११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ. तारीख ०८-०५-२०२५ ई. केतु युति परिहारः

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे

५ सूर्ये उषायां ल. ३+अभिजिति ता. १८-०५-२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ ता. २८-०५-२०२५ ई.
३ गुरौ आर्द्रायां अभिजिति ता. २९-०५-२५ ई.
१२ सूर्ये स्वात्यां ल. ३ अभिजिति दिवा १२।४२ या. तारीख ०८-०६-२०२५ ई.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

३ सूर्ये मूले अभिजिति तारीख २३-११-२०२५ ई. गुरू पादवेधाऽभावः आवश्यके
१० सूर्ये उभायां अभिजिति तारीख ३०-११-२०२५ ई. आवश्यके

फाल्गुन शुक्ल पक्षे

२ गुरौ पूभायां ल. २+अभिजिति ता. १९-०२-२६
३ शुक्रे उभायां ल. २+अभिजिति तारीख २०-०२-२०२६ पापग्रह शनियुतिः

चैत्र कृष्ण पक्षे

२ गुरौ उफायां ल. चिं. दिवा ०८।१८ या. तारीख ०५-०३-२०२६ ई.

गृहारम्भ मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३+अभिजिति ता. १४-०४-२०२५

वैशाख शुक्ल पक्षे

११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ. ता. ०८-०५-२०२५ ई. केतु युति परिहारः

श्रावण कृष्ण पक्षे

२ शनौ उषायां ल. चिंतन दिवा ०६।३६ या. तारीख १२-०७-२०२५ ई.

भाद्रपद कृष्ण पक्षे

२ चन्द्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा ०१।०१ या. तारीख ११-०८-२०२५ ई.

भाद्रपद शुक्ल पक्षे

१२ गुरौ उषायां अभिजिति तारीख ०४-०९-२०२५ ई.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

२ शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति दिवा १२।३५ उ. तारीख ०७-११-२०२५ ई.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२।२९ उ. तारीख २८-११-२०२५ ई.

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चिन्तन दिवा ११।४६ या. तारीख ०५-१२-२०२५ ई.
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति तारीख ०५-१२-२५ ई.
२ शनौ मृगशिरायां ल.चि. दिवा ०८।४९ या. तारीख ०६-१२-२०२५ ई.

चैत्र कृष्ण पक्षे

१ बुधे उफायां ल. २ तारीख ०४-०३-२०२६ ई.
२ गुरौ उफायां ल. चिन्तन दिवा ०८।१८ या. तारीख ०५-०३-२०२६ ई.

नवीन गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्षे

१२ शुक्रे उभायां ल. ३ तारीख २५-०४-२०२५ ई.

वैशाख शुक्ल पक्षे

११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ. तारीख ०८-०५-२०२५ ई. केतु युति परिहारः

पौष कृष्णपक्षे

८ शुक्रे उफायां अभिजिति ता. १२-१२-२०२५ ई.

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

९ बुधे अनुराधायां ल.चिं. दिवा ०९।५९ उ. १०।५३ या. तारीख ११-०२-२०२६ ई. मासान्तः

सामान्य गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्षे

११ गुरौ शतभिषायां ल. २ तारीख २४-०४-२०२५

वैशाख शुक्ल पक्षे

६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ. तारीख ०३-०५-२०२५ ई.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

१२ शनौ स्वात्यां ल. चि. दिवा ०९।४० उ. ११।१७ या. तारीख ०७-०६-२०२५ ई.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

७ गुरौ धनिष्ठायां अभिजिति ता. २७-११-२०२५ ई.
८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२।२९ उ. तारीख २८-११-२०२५ ई.

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३+अभिजिति तारीख १४-०४-२५
७ सूर्ये उषायां अभिजिति तारीख २०-०४-२०२५ ई. गुरू पादवेधाऽभावः
८ चन्द्रे उषायां ल. २+अभिजिति दिवा १२।३७ या. ता. २१-०४-२०२५ ई. गुरू पादवेधाऽभावः
११ गुरौ शतभिषायां ल. २ तारीख २४-०४-२०२५ ई.
१२ शुक्रे उभायां ल. ३ तारीख २५-०४-२०२५ ई.

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. २,३ तारीख ३०-०४-२०२५ ई.
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. ०१-०५-२०२५ ई.
६ शनौ पुनर्वसौ ल. २,३ अभिजिति दिवा १२।३४ या. तारीख ०३-०५-२०२५ ई.
६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ. तारीख ०३-०५-२०२५ ई.
७ सूर्ये पुष्ये दिवा ०७।१९ या. ल. चि. ता. ०४-०५-२५
११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ. तारीख ०८-०५-२०२५ ई. केतु युति परिहारः

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे

५ सूर्ये उषायां ल. ३+अभिजिति ता. १८-०५-२५
१३ सूर्ये अश्विन्यां ल. ३ तारीख २५-०५-२०२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ तारीख २८-०५-२०२५
५ शनौ पुष्ये ल. ३ तारीख ३१-०५-२०२५ ई.
१२ शनौ स्वात्यां ल. चि. दिवा ०९।४० उ. ११।१७ या. तारीख ०७-०६-२०२५ ई.
१२ सूर्ये स्वात्यां ल. ३ अभिजिति दिवा १२।४२ या. तारीख ०८-०६-२०२५ ई.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

२ शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति दिवा १२।३५ उ. तारीख ०७-११-२०२५ ई.
६ चन्द्रे पुनर्वसौ अभिजिति तारीख १०-११-२०२५
११ शनौ उफायां अभिजिति तारीख १५-११-२०२५ ई. मासान्तः
१२ सूर्ये हस्ते अभिजिति ता. १६-११-२५ संक्रांतिः

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति तारीख २१-११-२०२५ ई. आवश्यके
६ बुधे श्रवणे दिवा ११।१२ उ. ता. २६-११-२०२५
७ गुरौ धनिष्ठायां अभिजिति तारीख २७-११-२०२५
८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२।२९ उ. तारीख २८-११-२०२५ ई.
१० सूर्ये उभायां अभिजिति तारीख ३०-११-२५ ई.

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चिं. दिवा ११।४६ या. तारीख ०५-१२-२०२५ ई.
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ०५-१२-२५ ई.
२ शनौ मृगशिरायां ल.चिं. दिवा ०८।४९ या. तारीख ०६-१२-२०२५ ई.
८ शुक्रे उफायां अभिजिति तारीख १२-१२-२०२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

६ शनौ चित्रायां अभिजिति तारीख ०७-०२-२०२६
९ बुधे अनुराधायां ल.चिं. दिवा ०९।५९ उ. १०।५३ या. तारीख ११-०२-२०२६ ई. मासान्तः

फाल्गुन शुक्ल पक्षे

३ शुक्रे उभायां ल. २+अभिजिति तारीख २०-०२-२०२६ ई. पाप ग्रह शनि युति

चैत्र कृष्ण पक्षे

१ बुधे उफायां ल. २ तारीख ०४-०३-२०२६ ई.
२ गुरौ उफायां ल. चिंतन दिवा ०८।१८ या. तारीख ०५-०३-२०२६ ई.

दक्षिणायने तु उग्रदेवानां प्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति तारीख २१-११-२५ ई. आवश्यके
६ बुधे श्रवणे ल. चिं. दिवा ११।१२ उ. तारीख २६-११-२०२५ ई.
७ गुरौ धनिष्ठायां अभिजिति ता. २७-११-२०२५ ई.
८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२।२९ उ. तारीख २८-११-२०२५ ई.
१० सूर्ये उभायां अभिजिति ता. ३०-११-२०२५ ई.

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल. चिं. दिवा ११।४६ या. तारीख ०५-१२-२०२५ ई.
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ०५-१२-२५ ई.
२ शनौ मृगशिरायां ल. चिं. दिवा ०८।४९ या. तारीख ०६-१२-२०२५ ई.
८ शुक्रे उफायां अभिजिति ता. १२-१२-२०२५ ई.

द्विरागमन मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३ अभिजिति ता. १४-०४-२५
८ चन्द्रे उषायां ल. २ अभिजिति दिवा १२।३७ या. तारीख २१-०४-२०२५ ई. गुरू पादवेधाऽभावः
११ गुरौ शतभिषायां ल. २ ता. २४-०४-२०२५ ई.
१२ शुक्रे उभायां ल. ३ तारीख २५-०४-२०२५ ई.

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. २,३ तारीख ३०-०४-२०२५ ई.
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति तारीख ०१-०५-२५
११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ. तारीख ०८-०५-२०२५ ई. केतु युति परिहारः

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ तारीख २८-०५-२०२५ ई.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां अभि. ता. २१-११-२५ आवश्यके
६ बुधे श्रवणे ल. चिं. दिवा ११।१२ उ. ता. २६-११-२५
७ गुरौ धनिष्ठायां अभिजिति तारीख २७-११-२०२५
८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२।२९ उ. तारीख २८-११-२०२५ ई.

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चिं. दिवा ११।४६ या. तारीख ०५-१२-२०२५ ई.
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति तारीख ०५-१२-२०२५
८ शुक्रे उफायां अभिजिति तारीख १२-१२-२०२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

९ बुधे अनुराधायां ल.चिं. दिवा ०९।५९ उ. १०।५३ या. तारीख ११-०२-२०२६ ई. मासान्तः
११ शुक्रे मूले ल.चिं. दिवा ०९।३५ या. तारीख १३-०२-२०२६ ई. गुरू पादवेधाऽभावः

फाल्गुन शुक्ल पक्षे

३ शुक्रे उभायां ल. २ अभिजिति तारीख २०-०२-२०२६ ई. पापग्रह शनि युतिः

चैत्र कृष्ण पक्षे

१ बुधे उफायां ल. २ तारीख ०४-०३-२०२६ ई.
२ गुरौ उफायां ल.चिं. दिवा ०८।१८ या. ता. ०५-०३-२६

मशीनरी शुभारंभ मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३+अभिजिति ता. १४-०४-२५ ई.
११ गुरौ शतभिषायां ल.चिं. तारीख २४-०४-२५ ई.

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. ३ तारीख ३०-०४-२०२५ ई.
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. ०१-०५-२०२५ ई.
६ शनौ पुनर्वसौ ल. ३+अभिजिति दिवा १२।३४ या. तारीख ०३-०५-२०२५ ई.
६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ. तारीख ०३-०५-२०२५ ई.
७ सूर्ये पुष्ये दिवा ०७।१९ या. ल. चिं. तारीख ०४-०५-२०२५ ई.

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे

२ बुधे ज्येष्ठायां ल.चिं. दिवा ११।४७ उ. तारीख १४-०५-२०२५ ई. संक्रांतिः

३ गुरौ ज्येष्ठायां ल. ३+अभिजिति तारीख १५-०५-२५
१३ सूर्ये अश्विन्यां ल. ३ तारीख २५-०५-२०२५ ई.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ तारीख २८-०५-२०२५ ई.
५ शनौ पुष्ये ल. ३ तारीख ३१-०५-२०२५ ई.
१२ शनौ स्वात्यां ल.चिं. दिवा ०९।४० उ. ११।१७ या. तारीख ०७-०६-२०२५ ई.
१२ सूर्ये स्वात्यां ल. ३ अभिजिति दिवा १२।४२ या. तारीख ०८-०६-२०२५ ई.

श्रावण कृष्ण पक्षे

२ शनौ श्रवणे अभिजिति तारीख १२-०७-२०२५ ई.
३ सूर्ये श्रवणे ल. चिंतन दिवा ०६।५३ या. तारीख १३-०७-२०२५ ई.
३ सूर्ये धनिष्ठायां अभिजिति तारीख १३-०७-२०२५
७ गुरौ रेवत्यां अभिजिति तारीख १७-०७-२०२५ ई. पापग्रह केतु वेधः
११ चन्द्रे रोहिण्यां अभिजिति तारीख २१-०७-२५ ई.

श्रावण शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे पुष्ये अभिजिति ता. २५-०७-२५ आवश्यके
६ बुधे हस्ते ल. ७ ता. ३०-०७-२५ पाप ग्रह शनि वेधः
९ सूर्ये अनुराधायां अभिजिति ता. ०३-०८-२०२५ ई.
१० चन्द्रे अनुराधायां ल.चिं. दिवा ०९।१३ या. तारीख ०४-०८-२०२५ ई.
१० चन्द्रे ज्येष्ठायां अभिजिति तारीख ०४-०८-२०२५ ई. बुध पादवेधाऽभावः
१५ शनौ श्रवणे ल. ७ अभिजिति तारीख ०९-०८-२५

भाद्रपद कृष्ण पक्षे

१ सूर्ये धनिष्ठायां ल. ७+अभिजिति ता. १०-०८-२०२५
२ चन्द्रे शतभिषायां ल. ७+अभिजिति दिवा ०१।०१ या. तारीख ११-०८-२०२५ ई.
४ बुधे रेवत्यां ल. ७ तारीख १३-०८-२०२५ ई. तिथि क्षयः चांवल अनुदानतः परिहारे
६ गुरौ रेवत्यां ल. चिंतन दिवा ०९।०६ या. तारीख १४-०८-२०२५ ई.
१० चन्द्रे मृगशिरायां ल.चिंतन दिवा ०६।२३ या. तारीख १८-०८-२०२५ ई.
१२ बुधे पुनर्वसौ ल. ७ तारीख २०-०८-२०२५ ई.

भाद्रपद शुक्ल पक्षे

५ गुरौ स्वात्यां ल. ७ अभिजिति दिवा ०८।४४ उ. तारीख २८-०८-२०२५ ई.
६ शुक्रे स्वात्यां ल.चिं. दिवा ११।३९ या. तारीख २९-०८-२०२५ ई.
१३ शुक्रे श्रवणे ल. ७ अभिजिति ता. ०५-०९-२५

आश्विन शुक्ल पक्षे

५ शनौ अनुराधायां ल. ९ अभिजिति ता. २७-०९-२५
६ सूर्ये ज्येष्ठायां ल. ९ अभिजिति ता. २८-०९-२५
१० गुरौ श्रवणे ल. ९ अभिजिति ता. ०२-१०-२०२५
११ शुक्रे श्रवणे ल.चिं. दिवा ०६।५९ या. तारीख ०३-१०-२०२५ ई.
१२ शनौ धनिष्ठायां ल.चिं. दिवा ०९।०९ या. तारीख ०४-१०-२०२५ ई.

कार्त्तिक कृष्ण पक्षे

६ सूर्ये मृगशिरायां ल.चिं. दिवा १०।५५ या. तारीख १२-१०-२०२५ ई.
७ चन्द्रे पुनर्वसौ ल. ९ अभिजिति दिवा १२।२७ उ. तारीख १३-१०-२०२५ ई.
९ बुधे पुष्ये ल. ९ दिवा १२।०० या. ता. १५-१०-२५

कार्त्तिक शुक्ल पक्षे

१ बुधे स्वात्यां ल. १० ता. २२-१०-२५ आवश्यके
३ शुक्रे अनुराधायां ल. १०+अभिजिति तारीख २४-१०-२०२५ ई.
५ सूर्ये ज्येष्ठायां ल.चिं. दिवा १०।४७ या. तारीख २६-१०-२०२५ ई.
८ गुरौ श्रवण ल.चिं. दिवा १०।०७ या. तारीख ३०-१०-२०२५ ई.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

२ शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति दिवा १२।३५ उ. तारीख ०७-११-२०२५ ई.
६ चन्द्रे पुनर्वसौ ल. १० अभिजिति ता. १०-११-२५
१२ सूर्ये हस्ते ल. १० अभिजिति तारीख १६-११-२०२५ ई. संक्रांति

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां ल. १० अभिजिति तारीख २१-११-२०२५ ई. आवश्यके
२ शनौ ज्येष्ठायां ल. १० अभिजिति ता. २२-११-२५

६ बुधे श्रवणे ल. १० दिवा ११।१२ उ. ता. २६-११-२५
७ गुरौ धनिष्ठायां ल. १० अभिजिति ता. २७-११-२५
८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२। २९ उ. तारीख २८-११-२०२५ ई.

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल. १० दिवा ११।४६ या. तारीख ०५-१२-२०२५ ई.
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ०५-१२-२०२५
२ शनौ मृगशिरायां ल.चिं. दिवा ०८।४९ या. ता. ०६-१२-२०२५ ई.

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

६ शनौ चित्रायां अभिजिति ता. ०७-०२-२०२६ ई.
९ बुधे अनुराधायां ल.चिं. दिवा ०९।५९ उ. १०।५३ या. तारीख ११-०२-२०२६ ई. मासान्तः
९ बुधे ज्येष्ठायां ल.चिं. दिवा १०।५३ उ. तारीख ११-०२-२०२६ ई. मासान्तः
१० गुरौ ज्येष्ठायां अभिजिति दिवा १२। २३ उ. तारीख १२-०२-२०२६ ई. संक्रांति

चैत्र कृष्ण पक्षे

८ बुधे ज्येष्ठायां ल. १ तारीख ११-०३-२०२६ ई.

विपणि-व्यापार मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्षे

७ सूर्ये उषायां अभिजिति तारीख २०-०४-२०२५ ई. गुरू पादवेधाऽभावः
८ चन्द्रे उषायां ल. २ अभिजिति दिवा १२। ३७ या. तारीख २१-०४-२०२५ गुरू पादवेधाऽभावः
१२ शुक्रे उभायां ल. ३ तारीख २५-०४-२०२५ ई.

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. २,३ तारीख ३०-०४-२०२५
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. ०१-०५-२०२५
६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ. तारीख ०३-०५-२०२५ ई.
७ सूर्ये पुष्ये दिवा ०७।१९ या. ल.चिं. ता. ०४-०५-२५
११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ. तारीख ०८-०५-२०२५ केतुयुति परिहारः

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे

५ सूर्ये उषायां ल. ३ अभिजिति ता. १८-०५-२०२५
१३ सूर्ये अश्विन्यां ल. ३ तारीख २५-०५-२०२५ ई.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ तारीख २८-०५-२०२५ ई.
५ शनौ पुष्ये ल. ३ तारीख ३१-०५-२०२५ ई.

श्रावण कृष्ण पक्षे

२ शनौ उषायां ल.चि. दिवा ०६।३६ ता. १२-०७-२५
७ गुरौ रेवत्यां अभि. ता. १७-०७-२५ पापग्रह केतु वेधः
११ चन्द्रे रोहिण्यां अभिजिति तारीख २१-०७-२०२५

श्रावण शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे पुष्ये अभिजिति ता. २५-०७-२५ आवश्यके
६ बुधे हस्ते ल.चिं. ता. ३०-०७-२५ पाप ग्रह शनि वेधः
९ सूर्ये अनुराधायां अभिजिति ता. ०३-०८-२०२५ ई.
१० चन्द्रे अनुराधायां ल. चिं. दिवा ०९।१३ या. तारीख ०४-०८-२०२५ ई.

भाद्रपद कृष्ण पक्षे

४ बुधे रेवत्यां ल.चिं. तारीख १३-०८-२०२५ ई. तिथि क्षयः चांवल अनुदानतः परिहारे
६ गुरौ रेवत्यां ल.चिं. दिवा ०९।०६ या. ता. १४-०८-२५
१० चन्द्रे मृगशिरायां ल.चिं. दिवा ०६।२३ या. तारीख १८-०८-२०२५ ई.

भाद्रपद शुक्ल पक्षे

२ चन्द्रे उफायां अभिजिति तारीख २५-०८-२०२५
१२ गुरौ उषायां अभिजिति तारीख ०४-०९-२०२५

आश्विन शुक्ल पक्षे

१ चन्द्रे उफायां ल.चिं. दिवा ११।२४ या. तारीख २२-०९-२०२५ ई. आवश्यके
५ शनौ अनुराधायां ल. ९ अभिजिति ता. २७-०९-२५
१० गुरौ उषायां ल.चिं. दिवा ०९।१३ या. तारीख ०२-१०-२०२५ ई.

कार्त्तिक कृष्ण पक्षे

६ सूर्ये मृगशिरायां ल. चिं. दिवा १०।५५ या. तारीख १२-१०-२०२५ ई.
९ बुधे पुष्ये ल. ९ दिवा १२।०० या. ता. १५-१०-२५
१३ सूर्ये उफायां अभिजिति दिवा ०१।५२ या. तारीख १९-१०-२०२५ ई.

कार्त्तिक शुक्ल पक्षे

३ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति तारीख २४-१०-२०२५
७ बुधे उषायां ल.चिं. दिवा ०९।२४ या. ता. २९-१०-२५
१३ चन्द्रे उभायां अभिजिति तारीख ०३-११-२५ ई.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

२ शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति दिवा १२।३५ उ. तारीख ०७-११-२०२५ ई.
११ शनौ उफायां अभिजिति ता. १५-११-२५ मासान्तः
१२ सूर्ये हस्ते अभिजिति ता. १६-११-२०२५ संक्रांति

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २१-११-२५ आव.
१० सूर्ये उभायां अभिजिति तारीख ३०-११-२०२५

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चिं. दिवा ११।४६ या. तारीख ०५-१२-२०२५ ई.
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति तारीख ०५-१२-२०२५
२ शनौ मृगशिरायां ल.चि. दिवा ०८।४९ या. तारीख ०६-१२-२०२५ ई.
८ शुक्रे उफायां अभिजिति तारीख १२-१२-२०२५ ई.

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

६ शनौ चित्रायां अभिजिति तारीख ०७-०२-२०२६
९ बुधे अनुराधायां ल.चिं. दिवा ०९।५९ उ. १०।५३ या. तारीख ११-०२-२०२६ ई. मासान्तः

फाल्गुन शुक्ल पक्षे

३ शुक्रे उभायां ल. २ अभिजिति तारीख २०-०२-२०२६ ई. पापग्रह शनि युतिः

चैत्र कृष्ण पक्षे

१ बुधे उफायां ल. २ तारीख ०४-०३-२०२६ ई.
२ गुरौ उफायां ल. चिं. दिवा ०८।१८ या. ता. ०५-०३-२६

साक्षेप विवाह मुहूर्त संवत् २०८२

श्रीधरी पंचांग में उपरोक्त मुहूर्त्त शास्त्रीय समीक्षा द्वारा शुद्ध दिये गये है। जिन मुहूर्त्तों में दोष परिलक्षित हुऐ है उन्हे यहां साक्षेपयुक्त (अशुद्ध) विवाह मुहूर्त्तों में दिया गया है। विद्वजनों के अनुरोध को मध्यनजर रखते हुऐ साक्षेपयुक्त (अशुद्ध) विवाह मुहूर्त्तों का स्तंभ प्रकाशित किया गया है। तथा विद्वजन, निर्णायकगण अपनी सुविधा, देशकाल परिस्थिति अनुरूप अपने विवेक से मुहूर्त्तों का चयन करें। कृपया अभिलेखन तथा शास्त्रीय मर्यादा पर अवश्य ध्यान देकर निर्णय लेवें।

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ सूर्ये चित्रायां/स्वात्यां तारीख १३-०४-२०२५ ई. संक्रांति
१३ शनौ उभायां/रेवत्यां/ अश्विन्यां ता. २६-०४-२५ क्षीण चन्द्रः
३० सूर्ये अश्विन्यां तारीख २७-०४-२०२५ ई. क्षीण चन्द्रः

वैशाख शुक्ल पक्षे

४ गुरौ मृगशिरायां ता. ०१-०५-२०२५ भद्रा, लग्नाऽभावः
११ गुरौ हस्ते ता. ०८-०५-२५ शुक्र तथा पाप ग्रह शनिवेधः
१२ शुक्रे हस्ते ता. ०९-०५-२५ शुक्र तथा पाप ग्रह शनिवेधः
१२ शुक्रे चित्रायां ता. ०९-०५-२०२५ पाप ग्रह राहु वेधः
१३ शनौ चित्रायां ता. १०-०५-२०२५ पाप ग्रह राहु वेधः
१३ शनौ स्वात्यां ता. १०-०५-२५ लग्नाऽभावः व्यतीपातः
१४ सूर्ये स्वात्यां तारीख ११-०५-२०२५ भद्रा व्यतीपात
१५ चन्द्रे स्वात्यां तारीख १२-०५-२०२५ ई. भद्रा

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे

१ भौमे अनुराधायां तारीख १३-०५-२०२५ ई. मासान्तः
२ बुधे अनुराधायां तारीख १४-०५-२०२५ ई. संक्रांति
३ गुरौ मूले तारीख १५-०५-२०२५ ई. भद्रा, मृत्युपंचकः
४ शुक्रे मूले तारीख १६-०५-२०२५ ई. मृत्युपंचकः
५ सूर्ये उषायां तारीख १८-०५-२०२५ ई. लग्नाऽभावः
६ चन्द्रे श्रवणे तारीख १९-०५-२०२५ ई. लग्नाऽभावः
८ भौमे धनिष्ठायां तारीख २०-०५-२०२५ ई. लग्नाऽभावः
१० गुरौ उभायां ता. २२-०५-२०२५ पाप ग्रह शनि युतिः
११ शुक्रे उभा. ता. २३-०५-२०२५ ई. पाप ग्रह शनि युतिः
११ शुक्रे रेवत्यां ता. २३-०५-२०२५ पाप ग्रह केतु वेधः
१२ शनौ रेवत्यां ता. २४-०५-२०२५ पाप ग्रह केतु वेधः
१२ शनौ अश्विन्यां ता. २४-०५-२५ लग्नाऽभावः क्षीणचन्द्रः
१३ सूर्ये अश्विन्यां तारीख २५-०५-२०२५ ई. क्षीण चन्द्रः
१४ चन्द्रे रोहिण्यां तारीख २६-०५-२०२५ ई. क्षीण चन्द्रः
३० भौमे रोहिण्यां/मृगशिरायां ता. २७-०५-२५ क्षीणचन्द्रः

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

८ भौमे उफायां तारीख ०३-०६-२०२५ ई. मृत्युपंचकः
९ बुधे हस्ते ता. ०४-०६-२५ लग्नाऽभावः पाप ग्रह शनिवेधः
१० गुरौ हस्ते ता. ०५-०६-२५ पाप ग्रह शनिवेधः व्यतीपातः
११ शुक्रे हस्ते ता. ०६-०६-२५ व्यतीपातः पापग्रह शनिवेधः
११ शुक्रे चित्रायां तारीख ०६-०६-२०२५ ई. लग्नाऽभावः भद्रा पाप ग्रह राहु वेधः
१२ शनौ चित्रायां ता. ०७-०६-२०२५ पाप ग्रह राहुः वेधः

अग्रे गुरू अस्तः तदग्रे देवशयन कालांशः

आषाढ़ शुक्ल पक्षे

१४ बुधे मूले तारीख ०९-०७-२०२५ पाप ग्रह सूर्य वेधः
१५ गुरौ उषायां तारीख १०-०७-२०२५ ई. वैधृतिः

श्रावण कृष्ण पक्षे

२ शनौ उषायां तारीख १२-०७-२०२५ ई. लग्नाऽभावः
३ सूर्ये श्रवणे तारीख १३-०७-२०२५ ई. लग्नाऽभावः

४ चन्द्रे धनिष्ठायां तारीख १४-०७-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
५ भौमे उभायां तारीख १५-०७-२०२५ ई. मासान्त:
६ बुधे उभायां/रेवत्यां ता. १६-०७-२०२५ ई. संक्रांति
७ गुरौ रेवत्यां ता. १७-०७-२०२५ ई. पाप ग्रह केतु वेध:
७ गुरौ अश्विन्यां तारीख १७-०७-२०२५ ई. मृत्यु पंचक:
११ चन्द्रे रोहिण्यां तारीख २१-०७-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
१२ भौमे मृगशिरायां ता. २२-०७-२५ लग्नाऽभाव: क्षीण चन्द्र:

श्रावण शुक्ल पक्षे

३ सूर्ये मघायां तारीख २७-०७-२०२५ ई. मृत्यु पंचक:
५ भौमे हस्ते ता. २९-०७-२०२५ ई. पाप ग्रह शनि वेध:
६ बुधे हस्ते तारीख ३०-०७-२०२५ ई. पाप ग्रह शनि वेध:
६ बुधे चित्रायां ता. ३०-०७-२०२५ ई. पाप ग्रह राहु वेध:
७ गुरौ चित्रायां ता. ३१-०७-२०२५ ई. पाप ग्रह राहु वेध:
१० चन्द्रे अनुराधायां ता. ०४-०८-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
११ भौमे मूले तारीख ०५-०८-२०२५ ई. भद्रा वैधृति:
१२ बुधे मूले तारीख ०६-०८-२०२५ ई. मृत्यु पंचक:
१५ शनौ धनिष्ठायां ता. ०९-०८-२०२५ पाप ग्रह सूर्य वेध:

भाद्रपद कृष्ण पक्षे

१ सूर्ये धनिष्ठायां ता. १०-०८-२०२५ पाप ग्रह सूर्य वेध
३ भौमे उभायां ता. १२-०८-२०२५ पाप ग्रह शनि युति:
४ बुधे उभायां तारीख १३-८-२०२५ पाप ग्रह शनि युति:
६ गुरौ रेवत्यां तारीख १४-०८-२०२५ लग्नाऽभाव:
६ गुरौ अश्विन्यां ता. १४-०८-२५ भुजंगपात: पापग्रह केतुवेध:
७ शुक्रे अश्विन्यां तारीख १५-०८-२०२५ ई. भुजंग पात: पाप ग्रह केतु वेध: मासान्त:
८ शनौ रोहिण्यां तारीख १६-०८-२०२५ ई. संक्रान्ति
९ सूर्ये मृगशिरायां तारीख १७-०८-२५ ई. मृत्यु पंचक:
१० चन्द्रे मृगशिरायां तारीख १८-०८-२०२५ मृत्युपंचक
१४ शुक्रे मघायां तारीख २२-०८-२०२५ ई. क्षीण चन्द्र:
३० शनौ मघायां तारीख २३-०८-२०२५ ई. क्षीण चन्द्र:

भाद्रपद शुक्ल पक्षे

२ चन्द्रे हस्ते तारीख २५-८-२०२५ ई. पाप ग्रह शनिवेध:
३ भौमे हस्ते तारीख २६-८-२०२५ ई. पाप ग्रह शनि वेध:
३ भौमे चित्रायां तारीख २६-८-२५ ई. पाप ग्रह केतु वेध:
४ बुधे चित्रायां तारीख २७-०८-२०२५ ई. पाप ग्रह राहु: वेध: महापात:
५ गुरौ चित्रायां ता. २८-०८-२५ पापग्रह राहु:वेध: लग्नाऽभाव:
६ शुक्रे स्वात्यां तारीख २९-०८-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
७ शनौ अनुराधायां ता. ३०-०८-२०२५ लग्नाऽभाव: वैधृति:
८ सूर्ये अनुराधायां ता. ३१-०८-२५ लग्नाऽभाव: वैधृति भद्रा
१० भौमे मूले ता. ०२-०९-२५ लग्नाऽभाव: गुरूपादवेध:
११ बुधे उषायां तारीख ०३-०९-२०२५ लग्नाऽभाव: भद्रा
१२ गुरौ श्रवणे तारीख ०४-०९-२०२५ ई. बुध पाद वेध:
१३ शुक्रे धनिष्ठायां तारीख ०५-०९-२०२५ ई. मृत्यु पंचक:

तदग्रे श्राद्ध पक्ष:

आश्विन शुक्ल पक्षे

१ चन्द्रे उफायां/हस्ते तारीख २२-०९-२०२५ ई. क्षीण चन्द्र: पाप ग्रह शनि वेध:
२ भौमे हस्ते तारीख २३-०९-२०२५ ई. पाप ग्रह शनि वेध:
२ भौमे चित्रायां तारीख २३-०९-२०२५ पाप ग्रह राहु: वेध:
३ बुधे चित्रायां तारीख २४-०९-२०२५ पाप ग्रह राहु वेध:
३ बुधे स्वात्यां तारीख २४-०९-२०२५ ई. लग्नाऽभाव: वैधृति:
३ गुरौ स्वात्यां तारीख २५-०९-२०२५ ई. वैधृति:
५ शनौ अनुराधायां ता. २७-०९-२५ लग्नाऽभाव: मृत्यु पंचक
६ सूर्ये मूले तारीख २८-०९-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
७ चन्द्रे मूले तारीख २९-०९-२०२५ ई. लग्नाऽभाव: भद्रा
१० गुरौ उषायां तारीख ०२-१०-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
११ शुक्रे श्रवणे तारीख ०३-१०-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
१२ शनौ धनिष्ठायां तारीख ०४-१०-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
१३ सूर्ये उभायां तारीख ०५-१०-२०२५ ई. पापग्रह सूर्यवेध:
१४ चन्द्रे उभायां ता. ०६-१०-२५ पाप ग्रह सूर्य वेध: भद्रा
१४ चन्द्रे रेवत्यां तारीख ०६-१०-२०२५ ई. मृत्यु पंचक
१५ भौमे अश्विन्यां ता. ०७-१०-२५ पाप ग्रह केतु: वेध:

कार्त्तिक कृष्ण पक्षे

२ बुधे अश्विन्यां तारीख ०८-१०-२०२५ ई. पाप ग्रह केतु वेध:
४ शुक्रे रोहिण्यां तारीख १०-१०-२०२५ ई. व्यतीपात:
६ सूर्ये मृगशिरायां ता. १२-१०-२०२५ परिघार्ध: लग्नाऽभाव:
१० गुरौ मघायां तारीख १६-१०-२०२५ ई. मासान्त:
११ शुक्रे मघायां तारीख १७-१०-२०२५ ई. संक्रान्ति
१२ शनौ उफायां तारीख १८-१०-२०२५ ई. क्षीण चन्द्र:
१३ सूर्ये उफायां/हस्ते तारीख १९-१०-२०२५ क्षीण चन्द्र:
१४ चन्द्रे हस्ते/चित्रायां तारीख २०-१०-२०२५ क्षीण चन्द्र:
३० भौमे चित्रायां/स्वात्यां ता. २१-१०-२०२५ क्षीण चन्द्र:

कार्त्तिक शुक्ल पक्षे

२ गुरौ अनुराधायां तारीख २३-१०-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
४ शनौ अनुराधायां तारीख २५-१०-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
५ सूर्ये मूले ता. २६-१०-२०२५ गुरू पाद वेध: लग्नाऽभाव:
७ बुधे उषायां तारीख २९-१०-२०२५ ई. भद्रा लग्नाऽभाव:
७ बुधे श्रवणे तारीख २९-१०-२०२५ ई. भुजंग पात:
८ गुरौ श्रवणे तारीख ३०-१०-२०२५ ई. भुजंग पात:
१४ भौमे अश्विन्यां ता. ०४-११-२५ पाप ग्रह केतु वेध भद्रा
१५ बुधे अश्विन्यां ता. ०५-११-२५ पाप ग्रह केतु वेध: भद्रा

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

१ गुरौ रोहिण्यां तारीख ०६-११-२०२५ ई. परिघार्ध:
२ शुक्रे मृगशिरायां तारीख ०७-११-२०२५ ई. भद्रा
९ गुरौ मघायां तारीख १३-११-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
१० शुक्रे उफायां तारीख १४-११-२०२५ ई. भद्रा वैधृति:
११ शनौ उफायां/हस्ते तारीख १५-११-२०२५ मासान्त:
१२ सूर्ये हस्ते/चित्रायां ता. १६-११-२५ संक्रांति क्षीण चन्द्र:
१३ चन्द्रेचित्रायांता.१७-११-२५ई.पापग्रह राहुवेध: क्षीणचन्द्र:
१३ चन्द्रे स्वात्यां तारीख १७-११-२०२५ ई. क्षीणचन्द्र:
१३ भौमे स्वात्यां तारीख १८-११-२०२५ ई. क्षीणचन्द्र:
१४ बुधे स्वात्यां तारीख १९-११-२०२५ ई. क्षीणचन्द्र:
३० गुरौ अनुराधायां तारीख २०-११-२०२५ ई. क्षीणचन्द्र:

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां तारीख २१-११-२०२५ क्षीण चन्द्र:
४ चन्द्रे उषायां तारीख २४-११-२०२५ ई. अल्प रेखा ५
६ बुधे श्रवणे/धनिष्ठायां ता. २६-११-२५ महापात: मृत्यु पंचक:
७ गुरौ धनिष्ठायां ता. २७-११-२५ लग्नाऽभाव: मृत्यु पंचक:
९ शनौ उभायां तारीख २९-११-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
१० शनौ रेवत्यां तारीख ३०-११-२०२५ ई. लग्नाऽभाव:
११ चन्द्रे रेवत्यां तारीख ०१-१२-२०२५ ई. व्यतीपात: भद्रा
११ चन्द्रे अश्विन्यां ता. ०१-१२-२०२५ ई. पाप ग्रह केतु वेध:
१२ भौमे अश्विन्यां ता. ०२-१२-२०२५ ई. पाप ग्रह: केतु वेध:

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहि./मृग. ता. ०५-१२-२५ लग्नाऽभाव: मृत्यु पंचक:
२ शनौ मृगशिरायां ता. ०६-१२-२५ मृत्यु पंचक: अल्प रेखा ५
५ भौमे मघायां तारीख ०९-१२-२०२५ ई. वैधृति:
६ बुधे मघायां तारीख १०-१२-२०२५ ई. वैधृति: लग्नाऽभाव:

तदग्रे शुक्रास्त: एवं मल मास:

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

५ शुक्रे हस्ते तारीख ०६-०२-२०२६ ई. पापग्रह शनिवेध:
५ शुक्रे चित्रायां तारीख ०६-०२-२६ ई. भुजंग पात:
६ शनौ चित्रायां ता. ०७-०२-२०२६ ई. भुजंगपात: महापात:
६ शनौ स्वात्यां ता. ०७-०२-२०२६ ई. पापग्रह राहुवेध:
७ सूर्ये स्वात्यां ता. ०८-०२-२०२६ ई. पाप ग्रह राहु वेध:
९ बुधे अनुराधायां तारीख ११-०२-२०२६ ई. लग्नाऽभाव:
१० गुरौ मूले तारीख १२-०२-२०२६ ई. संक्रांति
११ शुक्रे मूले ता. १३-०२-२६ लग्नाऽभाव: गुरू पाद वेध:
१२ शनौ उषायां तारीख १४-०२-२०२६ ई. क्षीण चन्द्र:
१३ सूर्ये उषायां/श्रवणे ता. १५-०२-२०२६ ई. क्षीणचन्द्र:
१४ चन्द्रे श्रवणे/धनिष्ठायां ता. १६-०२-२६ क्षीणचन्द्र:
३० भौमे धनिष्ठायां तारीख १७-०२-२०२६ ई. क्षीण चन्द्र:

फाल्गुन शुक्ल पक्षे

२ गुरौ उभायां ता. १९-०२-२०२६ ई. पाप ग्रह शनि युति:
३ शुक्रे उभायां ता. २०-०२-२०२६ ई. पाप ग्रह शनियुति:
३ शुक्रे रेवत्यां ता. २०-०२-२०२६ ई. लग्नाऽभाव: भद्रा
४ शनौ अश्विन्यां ता. २१-०२-२०२६ ई. पाप ग्रह केतुवेध:
५ सूर्ये अश्विन्यां ता. २२-०२-२०२६ ई. पाप ग्रह केतु वेध:

तदग्रे होलाष्टक:

चैत्र कृष्ण पक्षे

१ बुधे उफायां ता. ०४-०३-२६ मृत्यु पंचक: भुजंग पात:
२ गुरौ उफायां तारीख ०५-०३-२०२६ ई. भुजंग पात:
२ गुरौ हस्ते तारीख ०५-०३-२०२६ ई. पाप ग्रह शनि वेध:
३ शुक्रे हस्ते ता. ०६-०३-२०२६ ई. पाप ग्रह शनिवेध: भद्रा
३ शुक्रे चित्रायां ता. ०६-०३-२०२६ ई. पाप ग्रह सूर्य वेध:
४ शनौ चित्रायां ता. ०७-०३-२०२६ ई. पाप ग्रह सूर्य वेध:
४ शनौ स्वात्यां ता. ०७-०३-२०२६ ई. पाप ग्रह राहु वेध:
५ सूर्ये स्वात्यां ता. ०८-०३-२०२६ ई. पाप ग्रह राहु वेध:
६ चन्द्रे अनुराधायां ता. ०९-०३-२०२६ ई. लग्नाऽभाव: भद्रा
१० शुक्रे उषायां तारीख १३-०३-२०२६ ई. मासान्त:
१० शनौ उषायां/श्रवणे तारीख १४-०३-२०२६ संक्रांति:

तदग्रे मीन संक्रांति

वास्तुचक्र शुद्धि रहित व भूशयन सहित गृहारंभ मुहूर्त्ता:

संकेत: गत वर्षों से वृषचक्र रहित एवं भूशयन सहित गृहारंभ एवं कलशचक्र शुद्धि रहित गृहप्रवेश के साक्षेप (अशुद्ध) मुहूर्त्तों का भी समावेश किया जा रहा है, अत: विद्वगण अपने विवेक एवं समयानुकूल देशकाल परिस्थिति अनुरूप उपयोग में लेवें।

वैशाख कृष्ण पक्षे

८ चन्द्रे उषायां ल. २ अभिजिति दिवा १२।३७ या. तारीख २१-०४-२०२५ ई. गुरू पाद वेधाऽभाव:
११ गुरौ शतभिषायां ल. २ तारीख २४-०४-२०२५ ई.
१२ शुक्रे उभायां ल. ३ तारीख २५-०४-२०२५ ई.

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. २, ३ तारीख ३०-०४-२०२५ ई.
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति तारीख ०१-०५-२०२५ ई.
६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ. ता. ०३-०५-२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ तारीख २८-०५-२०२५ ई.
५ शनौ पुष्ये ल. ३ तारीख ३१-०५-२०२५ ई.
१२ शनौ स्वात्यां ल. चि. दिवा ०९।४० उ. ११।१७ या. तारीख ०७-०६-२०२५ ई.

श्रावण कृष्ण पक्षे

७ गुरौ रेवत्यां अभिजिति ता. १७-०७-२५ पाप ग्रह केतु वेध:

११ चन्द्रे रोहिण्यां अभिजिति तारीख २१-०७-२०२५ ई.

श्रावण शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे पुष्ये अभिजिति तारीख २५-०७-२०२५ आवश्यके
६ बुधे हस्ते ल. चिं. ता. ३०-०७-२०२५ पाप ग्रह शनि वेधः
१० चन्द्रे अनुराधायां ल.चिं. दिवा ०९।१३ या. तारीख ०४-०८-२०२५ ई.

भाद्रपद कृष्ण पक्षे

४ बुधे रेवत्यां ल. चिं. तारीख १३-०८-२०२५ ई. तिथिक्षयः चांवल अनुदानतः परिहारे
६ गुरौ रेवत्यां ल.चिं. दिवा ०९।०६ या. ता. १४-०८-२५
१० चन्द्रे मृग. ल. चिं. दिवा ०६।२३ या. ता. १८-०८-२५

भाद्रपद शुक्ल पक्षे

२ चन्द्रे उफायां अभिजिति तारीख २५-०८-२०२५ ई.
५ गुरौ स्वात्यां अभिजिति दिवा ०८।४४ उ. ता. २८-०८-२५
६ शुक्रे स्वात्यां ल. चिं. दिवा ११।३९ या. ता. २९-०८-२५

आश्विन शुक्ल पक्षे

१ चन्द्रे उफायां ल. चिं. दिवा ११।२४ या. तारीख २२-०९-२०२५ ई. आवश्यके
५ शनौ अनुराधायां ल. ९ अभिजिति ता. २७-०९-२०२५
१० गुरौ उषायां ल.चिं. दिवा ०९।१३ या. ता. ०२-१०-२५
१२ शनौ धनि. ल.चिं. दिवा ०९।०९ या. ता. ०४-१०-२५

कार्त्तिक कृष्ण पक्षे

९ बुधे पुष्ये ल. ९ दिवा १२।०० या. ता. १५-१०-२०२५ ई.

कार्त्तिक शुक्ल पक्षे

१ बुधे स्वात्यां ल. चिं. ता. २२-१०-२०२५ ई. आवश्यके
३ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २४-१०-२०२५ ई.
७ बुधे उषायां ल.चिं. दिवा ०९।२४ या. ता. २९-१०-२५
१३ चन्द्रे उभायां अभिजिति तारीख ०३-११-२०२५ ई.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

११ शनौ उफायां अभिजिति ता. १५-११-२०२५ ई. मासान्तः

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २१-११-२०२५ आवश्यके
७ गुरौ धनिष्ठायां अभिजिति तारीख २७-११-२०२५ ई.

पौष कृष्ण पक्षे

८ शुक्रे उफायां अभिजिति तारीख १२-१२-२०२५ ई.

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

६ शनौ चित्रायां अभिजिति तारीख ०७-०२-२०२६ ई.
९ बुधे अनुराधायां ल.चिं. दिवा ०९।५९ उ. १०।५३ या. तारीख ११-०२-२०२६ ई. मासान्तः

कलशचक्र शुद्धि रहित गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३ अभिजिति तारीख १४-०४-२०२५ ई.
८ चन्द्रे उषायां ल. २ अभिजिति दिवा १२।३७ या. तारीख २१-०४-२०२५ ई. गुरू पादवेधाऽभावः

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. २, ३ तारीख ३०-०४-२०२५ ई.
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति तारीख ०१-०५-२०२५ ई.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ तारीख २८-०५-२०२५ ई.
५ शनौ पुष्ये ल. ३ तारीख ३१-०५-२०२५ ई.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २१-११-२५ आवश्यके

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चिं. दिवा ११।४६ या. ता. ०५-१२-२५
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति तारीख ०५-१२-२०२५ ई.
२ शनौ मृग. ल.चिं. दिवा ०८।४९ या. ता. ०६-१२-२०२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

६ शनौ चित्रायां अभिजिति तारीख ०७-०२-२०२६ ई.

फाल्गुन शुक्ल पक्षे

३ शुक्रे उभायां ल. २ अभिजिति तारीख २०-०२-२०२६ ई. पापग्रह शनि युतिः

चैत्र कृष्ण पक्षे

१ बुधे उफायां ल. २ तारीख ०४-०३-२०२६ ई
२ गुरौ उफायां ल.चिं. दिवा ०८।१८ या. ता. ०५-०३-२०२६

खग्रास चन्द्रग्रहण संवत् २०८२ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ रविवार तारीख ०७-०९-२०२५ ई.

समय	स्पर्श	सम्मिलन	मध्य	उन्मीलन	मोक्ष	पर्व
घटी	३८	४१	४३	४४	४७	०८
पल	५३	३३	१५	१८	३८	४५
घन्टा	२१	२३	२३	२४	२५	०३
मिनिट	५७	०१	४२	२३	२७	३०

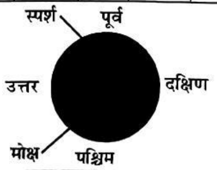

वि. संवत् २०८२ मध्ये ग्रहण विवरण

इस वर्ष संवत् २०८२ के अन्तर्गत भू-मण्डलीय ग्रहण गणना नियामक से चार ग्रहण का प्रारूप गणितागत प्राप्त हो रहा है इनमें से दो सूर्यग्रहण वं दो चन्द्रग्रहण होंगें, परन्तु भारतीय भू-भाग में दोनों चन्द्रग्रहण दृश्य होगें तथा दोनों सूर्यग्रहण दृश्य नहीं होंगें। भारत में अदृश्य ग्रहण हेतु वेध-सूतक-स्नान-दान-पुण्य-कर्म-यम-नियम एवं जप अनुष्ठान हेतु मान्यता नहीं होगी। इसी विषय में धर्म शास्त्रीय वचन विशेष यह है कि द्विपान्तरे ग्रहण सत्वेऽपिदर्शन योग्यत्वायान्न पुण्यकालः।।

(१) खग्रास चन्द्रग्रहण-संवत् २०८२ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ रविवार ता. ०७-०९-२०२५ ई. को खग्रास चन्द्र ग्रहण दृश्यमान होगा। ग्रहण का विरल छायाँ में प्रवेश रात्रि ०८।५८ बजे, स्पर्श रात्रि ०९।५७ बजे, मोक्ष रात्रि ०१।२७ बजे एवं विरल छायाँ से निर्गम रात्रि ०२।२५ बजे होगा। ग्रहण का सूतक दिवा १२।५० बजे से प्रारंभ होगा। यह ग्रहण उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, ग्रीनलैंड को छोड़ कर सम्पूर्ण विश्व में दृश्य होगा। ग्रहण विवरण-यह चन्द्र ग्रहण शतभिषा नक्षत्र एवं कुम्भ राशि मंडल पर मान्य है अतः इन राशि नक्षत्र वालों को ग्रहण दर्शन नहीं करना चाहिए। अपितु अपने इष्ट देव की आराधन गुरू मन्त्र जप एवं धार्मिक ग्रन्थ का पठन-मनन करना चाहिए। मेष, वृषभ, कन्या, धनु राशि हेतु शुभ सुखद फल मिथुन, सिंह, तुला, मकर राशि हेतु सामान्य मध्यम फल, कर्क, वृश्चिक, कुम्भ, मीन राशि हेतु नेष्ट अशुभ दर्शन करना योग्य नहीं। इस चन्दग्रहण से अकाल छूत की बीमारी, तूफान, हवा में आंधी और मनुष्यों में हानिकारक प्रभाव हो। कलिंग, बंगाल, मगध, सूरत, म्लेच्छ, सुबीर दरद और शक देश का नाश, स्त्रियों के गर्भ का नाश और सुभिक्ष हो। रस, गुड़, शक्कर, खांड, सरसों, अलसी, तेल, तिल, पोस्ता, रत्न, चित्र, विचित्र वस्तु, मणिक, धातु, तेल, आंवला, पत्र, मूल, दाल, मद्य, ज्वार, बाजरा, जावित्री, धान्य, देवदारू, दवा, फल, पुष्प, जल में होने वाली वस्तु शंख, सीप, पंसारी का सामान, काले उड़द, नकली सिल्क, लोहा, बिजली का सामान, शेयर आदि में तेजी आवें।

(२) खंडग्रास सूर्यग्रहण- संवत् २०८२ आश्विन कृष्ण पक्ष ३० रविवार ता. २१-०९-२५ ई. को खंडग्रास सूर्यग्रहण दृश्यमान होगा। भारतीय समय से इसका स्पर्श रात्रि ११।०० तथा मोक्ष रात्रि ०३।२४ बजे होगा। यह ग्रहण साउथ पेसिफिक, अन्टार्कटिका में खंडग्रास के रूप में दृश्य होगा। चूंकि यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। इससे भारत में ग्रहण से सम्बन्धित वेध-सूतक-स्नान-दान-पुण्य-कर्म-यम-नियम मान्य नहीं होगें।

(३) कंकणाकृति सूर्यग्रहण-संवत् २०८२ फाल्गुन कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार ता. १७-०२-२०२६ ई. कंकणाकृति सूर्यग्रहण दृश्यमान होगा। भारतीय समय से इसका स्पर्श दिवा ०५।१३ बजे व मोक्ष ०६।११ बजे होगा। यह ग्रहण साउथर्न ओसियान, अन्टार्कटिका, मेडागास्कर, बोस्तवान, तंजानिया में दृश्य होगा। चूंकि यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। इससे भारत में ग्रहण से सम्बन्धित वेध-सूतक-स्नान-दान-पुण्य-कर्म-यम-नियम मान्य नहीं होगें।

(४) खग्रास/ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण- संवत् २०८२ फाल्गुन शुक्ल पक्ष १५ मंगलवार तारीख ०३-०३-२०२६ ई. को खग्रास-ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण भूमण्डल पर दृश्यमान होगा। चन्द्रग्रहण का विरल छायाँ में प्रवेश दिवा ०२।१४ बजे, स्पर्श दिवा ०३।२० बजे, सम्मिलन दिवा ०४।३५ बजे, मध्य सायं ०५।१९ बजे, उन्मीलन सायं ०५।३३ बजे, मोक्ष सायं ०६।४७ बजे, विरल छायाँ निर्गम सायं ०७।५३ बजे, यद्यपि ग्रहण के स्पर्शादि काल दिन में आ रहे है इससे यह ग्रहण भारत में चन्द्रोदय से पूर्व ही प्रारंभ हो जायेगा। अतः सम्पूर्ण भारत में ग्रस्तोदित ग्रहण ही दृश्य होगा। जहां चंद्रोदय होता जायेगा और वहां ग्रहण दर्शन होता जायेगा। जोधपुर का चन्द्रोदय सायं ०६।४५ तथा ग्रहण का मोक्ष सायं ०६।४७ बजे यहाँ सिर्फ २ मि. के लिए ग्रहण दृश्य होगा। इसके अतिरिक्त स्कर्दू, पठानकोट, जलंधर, दिल्ली, अलवर, बांदीकुई, गंगापुर सिटी, श्योपुर, छबडा, ब्यावरा, सीहोर, टिमरनी, अंजनगांव, दर्यापुर, मुर्तिजापुर, कारंजा, गिरोली, शेंदुर्जना, ककडदाटी, मुलाबा,

निवागा, ताम्सा, पेठउमरी, राहेर, बिलोली, तम्लुर, पितलम, नाग्धारा, रेगोडे, वात्पाल्ली, मोमिनमो, विक्रबाद, मुजाहिदपुर, हनवाडा, अद्दक्कल, कोठकोटा, पुल्लुर, कुर्नोल, रंगापुरम, बेलुम, पुलिवेंदुला, गन्दलापेंट, पेद्दपलें, रमसामुद्रम, मुल्बागल, पचम्पाली, कंजानुर आदि इन नगरो से पूर्वी क्षेत्र में एक अंगुल से अधिक ग्रहण दृश्य होगा जहां ग्रहण से सम्बन्धित वेध-सूतक-स्नान-दान-पुण्य-कर्म-नियम मान्य होगें तथा उपरोक्त नगरों से पश्चिम के नगरों में तथा अजमेर, इन्दौर, उज्जैन, नीमच आदि क्षेत्रों में यह ग्रहण एक अंगुल से कम दृश्य होगा इससे ग्रहण से सम्बन्धित वेध-सूतक-स्नान-दान-पुण्य-कर्म-नियम मान्य नहीं होगें। फिर भी यदि कोई चाहे कि सूतक यम नियम का पालन करना है तो ऐसी स्थिति में सूतक का प्रारंभ प्रातः ०९।४५ से मान्य रहेगा तथा सायं ०६।४७ बजे ग्रहण मोक्ष होने पर स्नानादि करे। बाड़मेर जैसलमेर, मध्य एवं पश्चिमी गुजरात, पाकिस्तान में यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा इन क्षेत्रों में यह मांद्य रूप में दृश्य होगा। इससे इन क्षेत्रों में ग्रहण से संबंधित वेध-सूतक-स्नान-दान-पुण्य-कर्म-यम नियम मान्य नहीं होगें। यह ग्रहण बाड़मेर, जैसलमेर, मध्य पश्चिमी गुजरात को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में दृश्य होगा।

यह चन्द्रग्रहण पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र एवं सिंह राशि मण्डल पर मान्य है। अतः इन राशि नक्षत्र वालों को ग्रहण दर्शन नहीं करना चाहिए। अपितु अपने इष्टदेव की आराधना-गुरू मंत्र जप एवं धार्मिक ग्रन्थ का मनन-पठन करना चाहिए। उक्त ग्रहण मिथुन-तुला-वृश्चिक-मीन राशि वाले जातकों हेतु शुभ सूचक रहेगा। वृषभ-सिंह-कन्या-मकर राशि वाले जातकों हेतु नेष्ट अशुभ कारक रहेगा। मेष-कर्क-धनु-कुंभ राशि वाले जातक हेतु सामान्य मध्यम प्रतिफल कारक रहेगा। फाल्गुन मास में ग्रहण होने से बंगाल, अश्मक, अवन्ती और मेकल आदि देशवासियों को पीड़ा, नर्तकी, उत्तम धान्य तथा उत्तम स्त्री, धनुष क्षत्रिय और तपस्वियों को पीड़ा कारक रहेगा। पुलिंद अर्थात् भिलकगण मेकल अर्थात् विन्ध्याचल के रहने वाले सत्व युक्त राजा के तुल्य मनुष्य, राजा, वन में रहने वालों हेतु भी अनुकूल नहीं रहेगा।

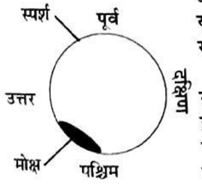

उक्त ग्रहण अफ्रिका, नार्वे, पोलेण्ड, ग्रीस, फ्रांस, युनाईटेड, किंगडम, टर्की, इटली, स्पेन, युक्रेन, रोमानिया, जर्मनी, पुर्तगाल, स्वीडन, फिनलैंड, सीरिया आदि को छोडकर सम्पूर्ण विश्व में दृश्यमान होगा।

यद्यपि शास्त्रोक्त मुहूर्त्त शोधन एवं पंचांग गणना में पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी मानवीय भूलवश, दृष्टिदोषवश, कम्प्युटर तकनिकी वश किसी प्रकार की अशुद्धि रह गयी हो तो विद्वगण स्वयं ठीक कर लेवें। इस हेतु गणितकर्त्ता व प्रकाशक जवाबदार नहीं होगा। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र किशनगढ़ होगा। .... प्रकाशक

दीपावली एवं होली पर्व निर्णय

दीपावली पर्व निर्णय- कार्त्तिक कृष्ण पक्ष की प्रदोष व्यापिनी अमावस्या को दीपावली मनाई जाती है इस हेतु शास्त्र वचन है कि- (१.) प्रदोष व्यापिनी अमावस्या ग्रहण करना (२.) दोनों दिन प्रदोष व्यापिनी हों तो दूसरी लेना (३.) दोनों दिन न हों तो दूसरी ग्रहण करना (४.) प्रथम दिन ही प्रदोष व्यापिनी हों तो पहले दिन लेना (५.) प्रथम दिन ही प्रदोष व्यापिनी अमावस्या हों परन्तु दुसरे दिन अमावस्या साढ़ेतीन प्रहर से अधिक हों एवं प्रतिपदा वृद्धि गामिनी हों तो प्रथम दिन प्रदोष व्यापिनी अमावस्या छोड़कर दुसरे दिन कि ग्रहण करना चाहिये। इस वर्ष पांचवी स्थिति निर्मित हो रही है अर्थात् प्रथम दिन चतुर्दशी वाले दिन अमावस्या सम्पूर्ण प्रदोष को व्याप्त कर रही है परन्तु दुसरे दिन अमावस्या साढ़ेतीन प्रहर से अधिक है एवं प्रतिपदा वृद्धिगामिनी है इससे चतुर्दशी को छोड़कर उदय व्यापिनी अमावस्या अर्थात् कार्त्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या मंगलवार दिनांक २१.१०.२०२५ ई. को ही दीपावली मनाई जाना शास्त्रोक्त है इस सम्बन्ध में धर्मसिन्धु में पुरुषार्थ चिंतामणि का वचन निम्न है।- एवमुभयत्र प्रदोषव्याप्त्यभावेपि पुरुषार्थचिंतामणौ तु पूर्वत्रैव व्याप्तिरिति पक्षे परत्र यामत्रयाधिकव्यापिदर्शे दर्शापेक्षया प्रतिपवृद्धिसत्त्वे लक्ष्मी-पूजादिकमपि परत्रैवेत्युक्तम्॥ एतन्मते उभयत्र प्रदोषाव्याप्ति पक्षेपि परत्र दर्शस्य सार्धयामत्रयाधिकव्याप्तित्वात्परैव युक्तेति भाति॥

होली पर्व निर्णय- इस वर्ष होली पर्व ०२ मार्च २०२६ को मान्य रहेगी। धर्मशास्त्रानुसार प्रथम दिन पूर्णिमा प्रदोष व्यापिनी हों एवं द्वितीय दिन प्रदोष व्यापिनी न हों परन्तु दुसरे दिन पूर्णिमा साढ़ेतीन प्रहार से अधिक हो एवं प्रतिपदा वृद्धिगामिनी हों तो प्रथम दिन प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को छोड़कर दुसरे दिन होलिका दहन मान्य होगा। यथा- यदि पूर्णिमा परदिने सार्धत्रियामा ततोधिका वा तत्परदिने च प्रतिपद्वृद्धिगामिनी तदा परदिने प्रतिपदी प्रदोषव्यापिन्यां होलिका।। परन्तु यहाँ पर द्वितीय दिन में चन्द्रग्रहण है इससे होलिका का दहन प्रथम दिन ही होगा अर्थात् फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४ सोमवार दिनांक ०२-०३-२०२६ ई. को होगा, चूँकि इस दिन भद्रा रहेगी भद्रा के सम्बन्ध में शास्त्रों में लिखा गया है कि यदि भद्रा निशीथ के बाद तक रहे तो भद्रा में ही प्रदोष के समय भद्रा का मुख छोड़कर होलिका दहन किया जायेगा। इस वर्ष प्रदोष में भद्रा का मुख नहीं रहेगा इससे प्रदोष वेला में ही होलिका का दहन करना शास्त्रोक्त है।

विवाहे रवि-चन्द्र-गुरू त्रिबल शुद्धि चक्रम्

ग्रहाः	वरस्य रविः	उभयो चन्द्रः	कन्यायां गुरूः
शुभ स्थान	३-६-१०-११	१-२-३-५-६ ७-९-१०-११	२-५-७-९-११
पूज्य स्थान	१-२-५-७-९	१२वां चन्द्र वर को श्रेष्ठ है	१-३-६-१०
अपूज्य स्थान	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२

विवाह मुहूर्त्त शुद्धि हेतु वर-कन्या को चन्द्रबल, वर को सूर्य बल तथा कन्या को गुरू बल का विचार करें। इसकी गणना वर-कन्या की राशि से की जाती है।

अग्निवास ज्ञान सारिणी

पक्ष	तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शुक्ल पक्ष	१	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	२	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	३	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	४	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	५	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	६	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	७	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	८	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	९	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	११	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१२	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१३	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१४	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१५	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
कृष्ण पक्ष	१	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	२	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	३	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	४	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	५	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	६	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	७	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	८	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	३०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल

ग्रहों के राशि नक्षत्र प्रवेशकाल एवं वक्री-मार्गी, उदय-अस्त गति ज्ञान चक्रम् संवत् २०८२ शाकः१९४७ सन् २०२५-२६

निरयन सूर्य राशि-नक्षत्र प्रवेश काल

तारीख	राशि	नक्षत्रचरण	घंटा-मि.
३१ मार्च	मीन	रेवती १	१४।००
१३ अप्रैल	मेष	अश्विनी १	२७।२२
२७ अप्रैल	मेष	भरणी १	१९।११
११ मई	मेष	कृतिका १	१३।१८
१४ मई	वृषभ	कृतिका २	२४।१२
२५ मई	वृषभ	रोहिणी १	०९।३१
०८ जून	वृषभ	मृगशिरा १	०७।१८
१५ जून	मिथुन	मृगशिरा ३	०६।४४
२२ जून	मिथुन	आर्द्रा १	०६।२०
०५ जुलाई	मिथुन	पुनर्वसु १	२९।४८
१६ जुलाई	कर्क	पुनर्वसु ४	१७।३२
१९ जुलाई	कर्क	पुष्य १	२९।२२
०२ अगस्त	कर्क	आश्लेषा १	२८।०८
१६ अगस्त	सिंह	मघा १	२५।५२
३० अगस्त	सिंह	पू.फा. १	२१।४४
१३ सितम्बर	सिंह	उ.फा. १	१५।४१
१६ सितम्बर	कन्या	उ.फा. २	२५।४७
२७ सितम्बर	कन्या	हस्त १	०७।०७
१० अक्टूबर	कन्या	चित्रा १	२०।१२
१७ अक्टूबर	तुला	चित्रा ३	१३।४६
२३ अक्टूबर	तुला	स्वाति १	३०।४०
०६ नवम्बर	तुला	विशाखा १	१४।५२
१६ नवम्बर	वृश्चिक	विशाखा ४	१३।३७
१९ नवम्बर	वृश्चिक	अनुराधा १	२०।५६
०२ दिसम्बर	वृश्चिक	ज्येष्ठा १	२५।१४
१५ दिसम्बर	धनु	मूल १	२८।१९
२८ दिसम्बर	धनु	पू.षा. १	३०।३०
११ जन.२६	धनु	उ.षा. १	०८।३६
१४ जनवरी	मकर	उ.षा. २	१५।०७
२४ जनवरी	मकर	श्रवण १	१०।५०
०६ फरवरी	मकर	धनिष्ठा१	१४।०५
१२ फरवरी	कुम्भ	धनिष्ठा ३	२८।१०
१९ फरवरी	कुम्भ	शतभिषा १	१८।३४
०४ मार्च	कुम्भ	पू.भा.१	२४।५५
१४ मार्च	मीन	पू.भा. ४	२५।०४
१८ मार्च	मीन	उ.भा. १	०९।२१

* मंगल राशि-नक्षत्र प्रवेश काल *

तारीख	राशि	नक्षत्रचरण	घंटा-मि.
०२ अप्रैल	कर्क	पुनर्वसु ४	२५।२९
११ अप्रैल	कर्क	पुष्य १	३०।०३
१२ मई	कर्क	आश्लेषा १	०८।३२
०६ जून	सिंह	मघा १	२६।०८
३० जून	सिंह	पू.फा. १	२०।१६
२३ जुलाई	सिंह	उ.फा. १	०८।३५
२८ जुलाई	कन्या	उ.फा. २	१९।५७
१३ अगस्त	कन्या	हस्त १	२२।३१
०३ सितम्बर	कन्या	चित्रा १	१७।५३
१३ सितम्बर	तुला	चित्रा ३	२१।२१
२३ सितम्बर	तुला	स्वाति १	२०।५६
१३ अक्टूबर	तुला	विशाखा १	०९।१६
२७ अक्टूबर	वृश्चिक	विशाखा ४	१५।४१
०१ नवम्बर	वृश्चिक	अनुराधा १	०८।१६
०६ नवम्बर	वृश्चिक	अनुराधा २ अ	२३।५२
१९ नवम्बर	वृश्चिक	ज्येष्ठा १	१९।२८
०७ दिसम्बर	धनु	मूल १	२०।१७
२५ दिसम्बर	धनु	पू.षा. १	१२।१३
११ जन.२६	धनु	उ.षा.१	२१।०८
१५ जनवरी	मकर	उ.षा. २	२८।२६
२८ जनवरी	मकर	श्रवण १	२४।३६
१४ फरवरी	मकर	धनिष्ठा १	२४।३६
२३ फरवरी	कुम्भ	धनिष्ठा ३	११।५०
०३ मार्च	कुम्भ	शतभिषा १	२२।५५

* बुध राशि-नक्षत्र प्रवेश काल *

तारीख	राशि	नक्षत्रचरण	घंटा-मि.
०३ अप्रैल	मीन	पू.भा.४	१८।४२
०६ अप्रैल	मीन	पू.भा. ४ उ	२९।२४
०७ अप्रैल	मीन	पू.भा. ४ मा	१६।३८
११ अप्रैल	मीन	उ.भा. १	१७।२९
२७ अप्रैल	मीन	रेवती १	१५।२९
०६ मई	मेष	अश्विनी १	२८।०६
१४ मई	मेष	भरणी १	२५।०१
१५ मई	मेष	भरणी १ अ	२९।०५
२१ मई	मेष	कृतिका १	२२।१७
२३ मई	वृषभ	कृतिका २	१२।५९
२७ मई	वृषभ	रोहिणी १	२९।०४
०३ जून	वृषभ	मृगशिरा १	०६।५५
०६ जून	मिथुन	मृगशिरा ३	०९।२६
०८ जून	मिथुन	मृगशिरा ४ उ	२०।२३
०९ जून	मिथुन	आर्द्रा १	१४।५६
१६ जून	मिथुन	पुनर्वसु १	१७।०२
२२ जून	कर्क	पुनर्वसु ४	२१।३१
२४ जून	कर्क	पुष्य १	२९।०२
०६ जुलाई	कर्क	आश्लेषा १	२९।४४
१८ जुलाई	कर्क	आश्लेषा २ व	१०।१४
१८ जुलाई	कर्क	आश्लेषा २ अ	२०।२८
२९ जुलाई	कर्क	पुष्य ४	१६।२४
१० अगस्त	कर्क	पुष्य ३ व	२९।०७
११ अगस्त	कर्क	पुष्य ३ मा	१२।५९
२१ अगस्त	कर्क	आश्लेषा १	२८।२०
३० अगस्त	सिंह	मघा १	१६।४१
०२ सितम्बर	सिंह	मघा २ अ	२९।३४
०६ सितम्बर	सिंह	पू.फा. १	१६।४२
१३ सितम्बर	सिंह	उ.फा. १	१६।०१
१५ सितम्बर	कन्या	उ.फा. २	११।०७
२० सितम्बर	कन्या	हस्त १	२४।५२
२८ सितम्बर	कन्या	चित्रा १	२३।०५
०२ अक्टूबर	तुला	चित्रा ३	२७।४३
०६ अक्टूबर	तुला	चित्रा ४ उ	१९।०४
०७ अक्टूबर	तुला	स्वाति १	१२।१७
१६ अक्टूबर	तुला	विशाखा १	१९।०५
२४ अक्टूबर	वृश्चिक	विशाखा ४	१२।३७
२७ अक्टूबर	वृश्चिक	अनुराधा १	०९।३१
०९ नवम्बर	वृश्चिक	अनुराधा ३ व	२४।३०
१२ नवम्बर	वृश्चिक	अनुराधा ३ अ	१८।४१
२० नवम्बर	वृश्चिक	विशाखा ४	२८।१४
२३ नवम्बर	तुला	विशाखा ३	२०।०७
२६ नवम्बर	तुला	विशाखा ३ उ	३०।०१
२९ नवम्बर	तुला	विशाखा ३ मा	२३।०८
०६ दिसम्बर	वृश्चिक	विशाखा ४	२०।४४
०९ दिसम्बर	वृश्चिक	अनुराधा १	२६।२७
१९ दिसम्बर	वृश्चिक	ज्येष्ठा १	३०।०८
२८ दिसम्बर	धनु	मूल १	३१।२३
२९ दिसम्बर	धनु	मूल १ अ	२५।३०
०६ जन. २६	धनु	पू.षा. १	२३।५९
१५ जनवरी	धनु	उ.षा. १	०९।१८
१७ जनवरी	मकर	उ.षा. २	१०।२२
२३ जनवरी	मकर	श्रवण १	१०।२३
३० जनवरी	मकर	धनिष्ठा १	२७।२४
०३ फरवरी	कुम्भ	धनिष्ठा ३	२१।५२
०७ फरवरी	कुम्भ	शतभिषा १	१६।३०
०८ फरवरी	कुम्भ	शतभिषा १ उ	१८।१७
१५ फरवरी	कुम्भ	पू.भा. १	२१।४०
२६ फरवरी	कुम्भ	पू.भा. ३ व	१२।१७
२७ फरवरी	कुम्भ	पू.भा. ३ अ	२७।५५
१० मार्च	कुम्भ	शतभिषा ४	०७।५६
१४ मार्च	कुम्भ	शतभिषा ४ उ	१२।४०

* गुरू राशि-नक्षत्र प्रवेश काल *

तारीख	राशि	नक्षत्रचरण	घंटा-मि.
१० अप्रैल	वृषभ	मृगशिरा १	१८।५१
२८ अप्रैल	वृषभ	मृगशिरा २	१८।१०
१४ मई	मिथुन	मृगशिरा ३	२२।३४
२९ मई	मिथुन	मृगशिरा ४	२८।४५
१२ जून	मिथुन	मृगशिरा ४ अ	२३।२९
१३ जून	मिथुन	आर्द्रा १	२३।२७
२८ जून	मिथुन	आर्द्रा २	१४।०७
०५ जुलाई	मिथुन	आर्द्रा २ उ	२९।२९
१३ जुलाई	मिथुन	आर्द्रा ३	०७।०३
२८ जुलाई	मिथुन	आर्द्रा ४	०८।५७
१२ अगस्त	मिथुन	पुनर्वसु १	२९।०४
३० अगस्त	मिथुन	पुनर्वसु २	१०।४४
१९ सितम्बर	मिथुन	पुनर्वसु ३	१३।०८
१८ अक्टूबर	कर्क	पुनर्वसु ४	१९।४७
११ नवम्बर	कर्क	पुनर्वसु ४ व	२१।५१
०५ दिसम्बर	मिथुन	पुनर्वसु ३	१७।२४
०४ जन. २६	मिथुन	पुनर्वसु २	१८।४६
३० जनवरी	मिथुन	पुनर्वसु १	११।५५
११ मार्च	मिथुन	पुनर्वसु १ मा	०९।०१

* शुक्र राशि-नक्षत्र प्रवेश काल *

तारीख	राशि	नक्षत्रचरण	घंटा-मि.
३१ मार्च	मीन	पू.भा. ४	२८।४७
१३ अप्रैल	मीन	पू.भा. ४ मा	०६।३२
२५ अप्रैल	मीन	उ.भा. १	२३।३०
१६ मई	मीन	रेवती १	१२।४५
३१ मई	मेष	अश्विनी १	११।३२
१३ जून	मेष	भरणी १	२१।१२
२६ जून	मेष	कृत्तिका १	१२।१६
२९ जून	वृषभ	कृत्तिका २	१४।०९
०८ जुलाई	वृषभ	रोहिणी १	१६।२४
२० जुलाई	वृषभ	मृगशिरा १	१२।५५
२६ जुलाई	मिथुन	मृगशिरा ३	०८।५६
३१ जुलाई	मिथुन	आर्द्रा १	२७।४४
१२ अगस्त	मिथुन	पुनर्वसु १	१४।०७
२० अगस्त	कर्क	पुनर्वसु ४	२५।१९
२३ अगस्त	कर्क	पुष्य १	२०।३६
०३ सितम्बर	कर्क	आश्लेषा १	२३।५१
१४ सितम्बर	सिंह	मघा १	२४।१६
२५ सितम्बर	सिंह	पू.फा. १	२२।१०
०६ अक्टूबर	सिंह	उ.फा. १	१८।०५
०९ अक्टूबर	कन्या	उ.फा. २	१०।४७
१७ अक्टूबर	कन्या	हस्त १	१२।१८
२७ अक्टूबर	कन्या	चित्रा १	२९।१०
०२ नवम्बर	तुला	चित्रा ३	१३।१४
०७ नवम्बर	तुला	स्वाति १	२१।०६
१८ नवम्बर	तुला	विशाखा १	१२।१८
२६ नवम्बर	वृश्चिक	विशाखा ४	११।२२
२८ नवम्बर	वृश्चिक	अनुराधा १	२७।००
०९ दिसम्बर	वृश्चिक	ज्येष्ठा १	१७।२८
१५ दिसम्बर	वृश्चिक	ज्येष्ठा ३ अ	१४।५१
२० दिसम्बर	धनु	मूल १	०७।४५
३० दिसम्बर	धनु	पू.षा. १	२२।००
१० जन. २६	धनु	उ.षा. १	१२।२१
१२ जनवरी	मकर	उ.षा. २	२७।५८
२० जनवरी	मकर	श्रवण १	२६।४९
३१ जनवरी	मकर	धनिष्ठा १	१७।३६
०२ फरवरी	मकर	धनिष्ठा १ उ	३०।१०
०५ फरवरी	कुम्भ	धनिष्ठा ३	२५।११
११ फरवरी	कुम्भ	शतभिषा १	०८।५१
२१ फरवरी	कुम्भ	पू.भा. १	२४।३६
०१ मार्च	मीन	पू.भा. ४	२४।५७
०४ मार्च	मीन	उ.भा. १	१७।०९
१५ मार्च	मीन	रेवती १	१०।३७

शनि-राहु-केतु शेष भाग पृष्ठ सं. १२६ देखें......

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

चैत्र शुक्ल पक्षः विक्रम संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति		विविधतारीखें बं. चैत्र	मु. चैत्र	भा. चैत्र	अं. मार्च
प्रवर्ध	१	र	१५	३८	१२	५०	रे	२५	०१	१६	३५	ऐं	२८	१७	ब	१५	३८	३०	३८	०६	३५	०६	५०	मे. १६/३५	११	१५	११	४३	५९	१८	१७	२९	०९	३०
राक्षस	२	चं	०६	३५	०९	१२	अ	१७	५९	१३	४५	वै	१८	०१	कौ	०६	३५	३०	४२	०६	३४	०६	५०	मेष	११	१६	११	०१	५९	१६	१८	श१	१०	३१
क्षय	३	चं	५७	५३	२९	४३	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
मूसल	४	मं	५०	०१	२६	३३	भ	११	२६	११	०७	वि/प्री	०८/५८	०८/५६	व	२३	५१	३०	४६	०६	३३	०६	५१	वृ. १६/३०	११	१७	१८	१७	५९	१३	१९	०२	११	अ१
सिद्धि	५	बु	४३	१७	२३	५०	कृ	०५	४६	०८	५०	आ	५०	४६	ब	१६	३०	३०	५०	०६	३२	०६	५१	वृषभ	११	१८	१७	३०	५९	११	२०	०३	१२	०२
उत्पात	६	गु	३७	५९	२१	४२	रो/मृ	०१/५८	२०/२२	०७/२९	०२/५१	सौ	४३	४७	कौ	१०	२७	३०	५४	०६	३०	०६	५२	मि. १८/२२	११	१९	१६	४२	५९	०९	२१	०४	१३	०३
पद्म	७	शु	३४	१९	२०	१३	आ	५७	०८	२९	२१	शो	३८	०९	ग	०५	५७	३०	५७	०६	२९	०६	५२	मिथुन	११	२०	१५	५१	५९	०७	२२	०५	१४	०४
छत्र	८	श	३२	२७	११	२७	पुन	५७	३९	२९	३२	अ	३३	५७	वि	०३	११	३१	०१	०६	२८	०६	५३	क. २३/२५	११	२१	१४	५७	५९	०४	२३	०६	१५	०५
श्रीवत्स	९	र	३२	२१	११	२४	पु	५९	५४	३०	२५	सु	३१	०९	बा	०२	१२	३१	०५	०६	२७	०६	५३	कर्क	११	२२	१४	०१	५९	०२	२४	०७	१६	०६
सौम्य	१०	चं	३३	५६	२०	०१	आ	६०	००	-	-	धृ	२९	४१	तै	०२	५८	३१	०९	०६	२६	०६	५४	कर्क	११	२३	१३	०३	५९	०१	२५	०८	१७	०७
ए. व्रत	११	मं	३७	०१	२१	१३	आ	०३	४५	०७	५५	शू	२९	२३	व	०५	१९	३१	१३	०६	२५	०६	५४	सिं. ०७/५५	११	२४	१२	०३	५८	५७	२६	०९	१८	०८
चर	१२	बु	४१	१९	२२	५६	म	०८	५३	०९	५७	गं	३०	०३	ब	०९	०३	३१	१६	०६	२४	०६	५५	सिंह	११	२५	११	००	५८	५५	२७	१०	१९	०९
प्रदोष	१३	गु	४६	३५	२५	०१	पूफा	१५	०४	१२	२५	वृ	३१	२९	कौ	१३	५२	३१	२०	०६	२३	०६	५५	क. ११/०५	११	२६	०९	५५	५८	५३	२८	११	२०	१०
शुभ	१४	शु	५२	३०	२७	२२	उफा	२२	०१	१५	१०	ध्रु	३३	२८	ग	१९	३०	३१	२४	०६	२२	०६	५६	कन्या	११	२७	०८	४८	५८	५१	२९	१२	२१	११
पूर्णिमा	१५	श	५८	४८	२९	५२	ह	२९	२७	१८	०८	व्या	३५	४८	वि	२५	३८	३१	२८	०६	२१	०६	५६	कन्या	११	२८	०७	३९	५८	४९	३०	१३	२२	१२

३० मार्च से १२ अप्रैल सन् २०२५ ई. तक

बसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे तथा च उत्तरगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

चन्द्रदर्शनं नवरात्रि प्रारंभ घटस्थापना श्री गौतम जयंती गुड़ी पड़वा **A**
रेवत्यां रविः १४।०० गणगौरी पूजा मेला श्री मत्स्य जयंती सिंजारा **C**
A चेटीचंड श्री झूलेलाल ज. ज्योतिष दिवस पंचक १६।३५ या. **B**
भ. १६।०५ उ. २६।३३ या. श्री गणेश दमनक चतुर्थी व्रतं सर्वा. ११।०७ **D**
श्रीपंचमी सर्वा.३०।३० या. कर्के भौमः २५।२९ **D** उ. अप्रैल मास ४ ता. ३० प्रा.
स्कंदषष्ठी पूभायां बुधः १८।४२ **H** प्रारंभ नवपद ओली आराधना पूर्ण **I**
भ. २०।१३ उ. नवपद ओली आराधना प्रारंभ नवपद पूजा प्रारंभ जैन
भ. ०७।४५ या. अशोकाष्टमी श्रीदुर्गाष्टमी पूजा **I** सिद्धाचल यात्रा जैन
श्रीरामनवमी व्रतं दुर्गानवमी पूजा नवरात्रि विधान पूर्ण श्री स्वामी **E**
श्री धर्मराज दशमी विश्व स्वास्थ्य दिवस मार्गी बुधः १६।३८
भ. ०८।३३ उ. २१।१३ या. कामदा ११ व्रतं सर्वे. लक्ष्मीकांत दोलोत्सव **F**
हरिदमनोत्सवः विष्णुद्वादशी **G** जन्म उभायां बुधः १७।२९ पुष्ये भौमः ३०।०३
प्रदोष व्रतं अनंग त्रयोदशी श्री महावीर ज. जैन मृगशिरायां १ गुरूः १८।५१
भ. २७।२२ उ. श्रीनृसिंह दोलोत्सवः दमनक चतुर्दशी ज्योतिबाफूले **G**
भ. १६।३६ या. पूर्णिमा व्रतं श्री हनुमान ज. संतपीपा ज. वैशाख स्नान **H**

गोचर ग्रहाः

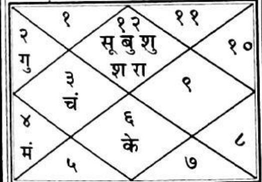

चैत्र शु. पक्षे ८ शनौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०२	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	२१	२०	००	०२	२२	०१	००	०२	०२
क.	१४	०५	४४	५३	२४	४३	४५	१८	१८
वि.	५७	१६	४४	४१	११	३२	२३	३५	३५
ग	५९	७९३	२१	१०	०१	१८	०७	०३	०३
ति	०४	३३	१०	५१	४८	११	०५	११	११
मा/व	मा	मा	मा	व	मा	व	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	रेवती २	पुनर्व. १	पुनर्व. ४	पू.भा.४	रोहि.४	पू.भा.४	पू.भा.४	पू.भा. ४	उ.फा.२

✮ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✮

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मार्च	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
३०	०७।१७	०८।५५	१०।५२	१३।०५	१५।२३	१७।३९	१९।५४	२२।११	२४।२८	२६।३१	२८।१६	२९।४६
३१	०७।१३	०८।५१	१०।४८	१३।०१	१५।१९	१७।३५	१९।५०	२२।०७	२४।२४	२६।२८	२८।१२	२९।४२
अ१	०७।१०	०८।४७	१०।४४	१२।५७	१५।१५	१७।३१	१९।४६	२२।०३	२४।२०	२६।२४	२८।०८	२९।३८
०२	०७।०६	०८।४४	१०।४०	१२।५३	१५।११	१७।२७	१९।४२	२१।५९	२४।१६	२६।२०	२८।०४	२९।३४
०३	०७।०२	०८।४०	१०।३६	१२।४९	१५।०७	१७।२३	१९।३८	२१।५६	२४।१२	२६।१६	२८।०[illegible]	२९।३०
०४	०६।५८	०८।३६	१०।३२	१२।४५	१५।०३	१७।१९	१९।३४	२१।५२	२४।०८	२६।१२	२७।५६	२९।२६
०५	०६।५४	०८।३२	१०।२८	१२।४२	१४।५९	१७।१५	१९।३०	२१।४८	२४।०४	२६।०८	२७।५२	२९।२२
०६	०६।५०	०८।२८	१०।२४	१२।३८	१४।५५	१७।११	१९।२६	२१।४४	२४।००	२६।०४	२७।४८	२९।१८
०७	०६।४६	०८।२४	१०।२०	१२।३४	१४।५२	१७।०७	१९।२२	२१।४०	२३।५६	२६।००	२७।४४	२९।१४
०८	०६।४२	०८।२०	१०।१७	१२।३०	१४।४८	१७।०३	१९।१८	२१।३६	२३।५३	२५।५६	२७।४०	२९।१०
०९	०६।३८	०८।१६	१०।१३	१२।२६	१४।४४	१६।५९	१९।१४	२१।३२	२३।४९	२५।५२	२७।३६	२९।०७
१०	०६।३४	०८।१२	१०।०९	१२।२२	१४।४०	१६।५६	१९।११	२१।२८	२३।४५	२५।४८	२७।३३	२९।०३
११	०६।३०	०८।०८	१०।०५	१२।१८	१४।३६	१६।५२	१९।०७	२१।२४	२३।४१	२५।४४	२७।२९	२८।५९
१२	०६।२७	०८।०४	१०।०१	१२।१४	१४।३२	१६।४८	१९।०३	२१।२०	२३।३७	२५।४१	२७।२५	२८।५५

ईदुलफित्र ईद पूभायां शुक्रः २८।४७ **E** नारायण ज. बुधोदय पू. २१।२४ रविपुष्यः ०६।२७ उ. ३०।२५ या. सर्वा. ०६।२७ उ. ३०।२५ या. **F** सर्वा. ०६।२५ उ. ०७।५५ या.

ग्रहग्रोचरीय फलम्

प्रातः चैत्र वैशाख में, वन पक्षी ध्वनि धीर। मधुर बोल सुहावने, श्रावण वर्षे नीर।। बिना ऋतु फल-फूल ही धरा मध्य जिस भाग। शकुन श्रीधरी शास्त्र का, सुख सुभिक्ष नहीं राग।। सुदी चैत्र की प्रतिपदा दशमी तक दिन लक्ष। मेघ गाज वर्षा यदि ऋतु वर्षा नहीं दक्ष।। चैत्र बदी की पंचमी, मेघ गाज नभ संग। व्यापारे मंदी गति, निर्धन पक्ष सुरंग।। कृष्णा एकम चैत्र की, वर्षा बादल गाज। सावन भादव में नहीं, फिर वर्षा का साज।। तेरस ग्यारस पूर्णिमा, चैत्र सुदी का पक्ष। हिमपात आंधी पवन, मेघ गाज नव कक्ष। चैत्र उजाली पंचमी, दिनभर बादल छांव। गेहूँ जौ संग्रह भला, सावन तेजी भाव। चैत्र सुदी पांचे दिना, मेघ झूके आकाश। सभी वस्तु सस्ती बिके फल जानो दो मास।। युति योग भृगु सूर्य का, देव सौम्य युति संग। तेजी दलहन दाल में, तिलहन तेज कुरंग।। योग-कुयोग लिखे सभी, गोचर गणना लक्ष। श्रीधर तथ्य विचारिये, भावी रचना दक्ष।। **B** चैत्री नववर्ष प्रारंभ संवत् २०८२ प्रा. ध्वजारोपण चांद्र संवत्सर प्रा. **C** शव्वाल मास १० मुस.

गोचर ग्रहाः

चै. शु. पक्षे १५ शनौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०५	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	२८	१७	०३	०३	२३	००	०१	०१	०१
क.	०७	०५	१९	३०	३४	२६	३४	५६	५६
वि.	३९	४१	२३	१८	५१	११	२४	२०	२०
ग	५८	७४०	२३	२५	१०	०१	०६	०३	०३
ति	५९	४४	१६	१०	३१	१८	५३	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	रेवती ४	हस्त ३	पुनर्व. ४	उ.भा.१	मृगशि.१	पू.भा.४	पू.भा.४	पू.भा.४	उ.फा.२

वैशाख कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति	विविध तारीखें बं. वैशा.	मु. शव्वाल	भा. चैत्र	अं. अप्रैल	❀❀ १३ अप्रैल से २७ अप्रैल सन् २०२५ ई. तक ❀❀ बसंत-ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे तथा च उत्तरगोलीय (इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।)
पद्म	१	र	६०	००	-	-	चि	३७	०७	२१	११	ह	३८	१८	बा	३२	०२	३१	३१	०६	२०	०६	५७	तु. ०७/३१	११	२९	०६	२८	५८ ४७	०१	१४	२३	१३	अश्विन्यां रविः २७।२२ मेषेऽर्कः २७।२२ बं. वैशाख मास श्री महावीर **A**
छत्र	१	चं	०५	१६	०८	२६	स्वा	४४	४६	२४	१४	व	४०	४७	कौ	०५	१६	३१	३५	०६	१९	०६	५७	तुला	००	००	०५	१५	५८ ४५	०२	१५	२४	१४	डॉ. अम्बेडकर ज. १३४ वीं **B** १९३२ प्रा. वैशाखी पर्व मार्गी शुक्रः ०६।३२
श्रीवत्स	२	मं	११	३४	१०	५६	वि	५२	११	२७	११	सि	४३	०६	ग	११	३४	३१	३९	०६	१८	०६	५७	वृ. २०/२७	००	०१	०४	००	५८ ४३	०३	१६	२५	१५	भ. २४।०८ उ. **A** रथयात्रा महावीर जी जैन खालसा ज. फसली सन् **B**
चौथव्रत	३	बु	१७	३१	१३	१८	अ	५९	०५	२९	५५	व्य	४५	०२	वि	१७	३१	३१	४२	०६	१७	०६	५८	वृश्चिक	००	०२	०२	४३	५८ ४१	०४	१७	२६	१६	भ. १३।१८ या. वैशाखी चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि २२।११ सर्वार्थ. **C**
कालदंड	४	गु	२२	४९	१५	२४	ज्ये	६०	००	-	-	व	४६	२५	बा	२२	४९	३१	४६	०६	१६	०६	५९	वृश्चिक	००	०३	०१	२४	५८ ३९	०५	१८	२७	१७	**C** ०६।१७ उ. २९।५५ या. अमृत. ०६।१७ उ. २९।५५ या. **E** मास. प्रा.
चर	५	शु	२७	११	१७	०८	ज्ये	०५	१४	०८	२१	प	४७	००	तै	२७	११	३१	४९	०६	१५	०६	५९	ध. ०८/२१	००	०४	००	०४	५८ ३८	०६	१९	२८	१८	श्री मलूकदास जी ज. वृन्दावने गुड फ्राइडे **D** सा. पुण्य त्रिस्तु. जैन
गद	६	श	३०	२०	१८	२२	मू	१०	१७	१०	२१	शि	४६	३५	व	३०	२०	३१	५३	०६	१४	०७	००	धनु	००	०४	५८	४१	५८ ३६	०७	२०	२९	१९	भ. १८।२२ उ. वृषभे भानुः २५।२७ ग्रीष्म ऋतु प्रा. श्री जयंत सेन सूरि म. **D**
शुभ	७	र	३१	५९	१९	०१	पूषा	१३	५७	११	४८	सि	४४	५८	वि	०१	२३	३१	५७	०६	१३	०७	००	म. १८/०४	००	०५	५७	१८	५८ ३४	०८	२१	३०	२०	भ. ०६।४७ या. इस्टर संडे गुरू अर्जुनदेव ज. सर्वा. ११।४८ उ. ३०।१३ या.
मृत्यु	८	चं	३१	५६	१८	५९	उषा	१६	०२	१२	३७	सा	४१	५९	बा	०२	१२	३२	००	०६	१३	०७	०१	मकर	००	०६	५५	५२	५८ ३३	०९	२२	वै१	२१	शीतला पूजा बूढ़ा बासोड़ा सर्वा. १२।३७ उ. ३०।१२ या. रा. वैशाख **E**
लुम्बक	९	मं	३०	०४	१८	१३	श्र	१६	२१	१२	४४	शु	३७	३४	तै	०१	१५	३२	०४	०६	१२	०७	०१	कुं. २४/३१	००	०७	५४	२५	५८ ३१	१०	२३	०२	२२	भ. २१।३४ उ. विश्व वसुंधरा दिवस पंचक २४।३१ उ.
मित्र	१०	बु	२६	२३	१६	४४	ध	१४	५२	१२	०८	शु	३१	४१	वि	२६	२३	३२	०७	०६	११	०७	०२	कुंभ	००	०८	५२	५६	५८ ३०	११	२४	०३	२३	भ. १६।४४ या. सूच्यते-उ. अर्थात् उपरांत (से) या. अर्थात् यावत् (तक)
ए. व्रत	११	गु	२०	५७	१४	३३	श	११	३९	१०	४९	ब्र	२४	२४	बा	२०	५७	३२	११	०६	१०	०७	०२	मी. २७/२६	००	०९	५१	२६	५८ २८	१२	२५	०४	२४	वरूथिनी एकादशी व्रतं सर्वेषाम् श्रीवल्लभाचार्य जयंती
प्रदोष	१२	शु	१४	००	११	४५	पूभा	०६	५२	०८	५४	ऐं	१५	५४	तै	१४	००	३२	१४	०६	०९	०७	०३	मीन	००	१०	४९	५४	५८ २६	१३	२६	०५	२५	प्रदोष व्रतं श्री सेन जयंती उभायां शुक्रः २३।३०
धूम्र	१३	श	०५	५०	०८	२८	उभा/रे	००/५३	४८/४७	०६/२७	२७/३९	वै/वि	०६/५६	२३/०७	व	०५	५०	३२	१७	०६	०८	०७	०३	मे. २७/३९	००	११	४८	२०	५८ २५	१४	२७	०६	२६	भ. ०८।२८ उ. १८।४१ या. मास शिवरात्रि पंचक २७।३९ या.
क्षय	१४	श	५६	४५	२८	५०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०० ००	००	००	००	००	चतुर्दशी तिथिक्षयः **F** ०६।०७ उ. २४।३९ या. रेवत्यां बुधः १५।२९
अमावस	३०	र	४७	१५	२५	०१	अ	४६	१९	२४	३९	प्री	४५	२९	च	२२	०३	३२	२१	०६	०७	०७	०४	मेष	००	१२	४६	४५	५८ २३	१५	२८	०७	२७	देवपितृकार्ये अमावस्या श्री शुकदेव ज. भरण्यां रविः १९।११ सर्वा. **F**

गोचर ग्रहाः

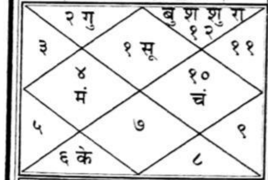

वै. कृ. पक्षे ८ चन्द्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	०९	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	०६	०६	०६	०१	२५	०१	०२	०१	०१
क.	५५	०८	५८	३९	१२	३६	३४	२७	२७
वि.	५२	०६	०२	१९	५४	२५	५१	४३	४३
ग	५८	८४९	२५	५८	११	१८	०६	०३	०३
ति	३३	१६	३१	१०	१९	२२	३२	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	अश्वि.३	उ.भा.३	पुष्य २	उ.भा.२	मृगशि.१	पू.भा.४	पू.भा.४	पू.भा.४	उ.फा.२

✵ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✵

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
अप्रै.	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
१३	३०।१९	०८।०१	०९।५७	१२।१०	१४।२८	१६।४४	१८।५९	२१।१७	२३।३३	२५।३७	२७।२१	२८।५१
१४	३०।१५	०७।५७	०९।५३	१२।०७	१४।२४	१६।४०	१८।५५	२१।१३	२३।२९	२५।३३	२७।१७	२८।४७
१५	३०।११	०७।५३	०९।५०	१२।०३	१४।२१	१६।३६	१८।५१	२१।०९	२३।२६	२५।२९	२७।१३	२८।४३
१६	३०।०७	०७।४९	०९।४६	११।५९	१४।१७	१६।३२	१८।४७	२१।०५	२३।२२	२५।२५	२७।०९	२८।४०
१७	३०।०३	०७।४५	०९।४२	११।५५	१४।१३	१६।२[illegible]	१८।४४	२१।०१	२३।१८	२५।२१	२७।०६	२८।३६
१८	३०।०१	०७।४१	०९।३८	११।५१	१४।०९	१६।२५	१८।४०	२०।५७	२३।१४	२५।१८	२७।०२	२८।३२
१९	२९।५६	०७।३८	०९।३४	११।४७	१४।०५	१६।२१	१८।३६	२०।५४	२३।१०	२५।१४	२६।५८	२८।२८
२०	२९।५२	०७।३४	०९।३०	११।४३	१४।०२	१६।१७	१८।३२	२०।५०	२३।०६	२५।१०	२६।५४	२८।२४
२१	२९।४८	०७।३०	०९।२६	११।३९	१३।५७	१६।१३	१८।२८	२०।४६	२३।०२	२५।०६	२६।५०	२८।२०
२२	२९।४४	०७।२५	०९।२२	११।३५	१३।५३	१६।०९	१८।२४	२०।४१	२२।५८	२५।०२	२६।४६	२८।१६
२३	२९।३९	०७।२१	०९।१८	११।३१	१३।४९	१६।०५	१८।२०	२०।३७	२२।५४	२४।५७	२६।४२	२८।१२
२४	२९।३५	०७।१७	०९।१४	११।२७	१३।४५	१६।०१	१८।१६	२०।३३	२२।५०	२४।५३	२६।३८	२८।०८
२५	२९।३१	०७।१३	०९।१०	११।२३	१३।४१	१५।५६	१८।१२	२०।२९	२२।४६	२४।४९	२६।३३	२८।०४
२६	२९।२७	०७।०९	०९।०६	११।१९	१३।३७	१५।५२	१८।०७	२०।२५	२२।४२	२४।४५	२६।२९	२७।५९
२७	२९।२३	०७।०५	०९।०१	११।१५	१३।३३	१५।४८	१८।०३	२०।२१	२२।३७	२४।४१	२६।२५	२७।५५

शेयर बाजार, वायदा बाजार की जानकारी हेतु **श्रीधरी तेजी मंदी रिपोर्ट** सन् 2025 की मंगवाकर लाभ उठायें।

मेष संक्रान्ति फलम्

वैशाख कृष्ण पक्षें १ सूर्यें मेषेऽर्कः प्रा. (स्टे. टा. २७।२२) वा. ३ न. ४ अस्य पुण्यकालः पर दिने सोमवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च रण संभागीय रचना गति। वार नामः घोरा-अनुसूचित जन जाति, वयोवृद्ध, निर्धन, आदिवासी, सुदूर जंगल-पर्वत निवासी हेतु शासकीय सुलाभ नवीन योजना। नक्षत्र नाम महोदरी-तस्कर, लोभी-प्रलोभी, प्रवंचक, धूर्त, चौर्यकर्मशील, संग्राहक, ठग पक्ष हेतु दिशापथ सूचक शुभ फलद। रात्रि ३ या. व्या. अभिनेता चलचित्र निर्माता, नर्तक, वादक, गायक हेतु कष्टद प्रभार सूचक। दक्षिणे गमन, नैर्ऋत्यां दृष्टिः। संक्रांति वास निवास शाह वैश्य गृहे। कौलव करणे वाहन वराह उपवाहन वृषभ हरित वस्त्र खड्गायुध, ताम्रपात्र भिक्षान्न भक्षण, चंदन लेपन, सर्पजाति, बकुलपुष्प, मुक्ताभूषण, हरित कंचुकी, गतालकाऽवस्था, उतिष्ठा, मुहूर्त-१५ धान्य गल्ला उन्नत भाव। शक्कर, घी, रसायन, द्रव्य, ताम्बा, खोपरा, गोला, मिर्च, मसूर, मेहंदी, हरे मूंग, सौंफ, धनियां, इत्र, चंदन, मोती, हरावस्त्र, बैल उन्नत धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स पश्चिमे, राहू दक्षिणे, मूल पाताले।

गोचर ग्रहाः

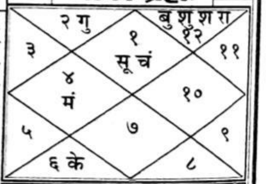

वै. कृ. पक्षे ३० सूर्ये स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	००	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	१२	०१	०९	१६	२६	०३	०३	०१	०१
क.	४६	१०	३४	०९	२१	५३	१३	०८	०८
वि.	४५	१७	२६	१२	५१	२४	३१	३८	३८
ग	५८	९१४	२६	७३	११	२८	०६	०३	०३
ति	२३	५७	४९	५०	४७	३९	१५	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	अश्वि.४	अश्वि.१	पुष्य २	उ.भा.४	मृगशि.१	उ.भा.१	पू.भा.४	पू.भा.४	उ.फा.२

वैशाख शुक्ल पक्षः विक्रम संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति	गति	विविधतारीखें बं. वैशा.	मु. जिल्का.	भा. वैशा.	अं. अप्रैल	२८ अप्रैल से १२ मई सन् २०२५ ई. तक ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे तथा च उत्तरगोलीय इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।
चर	१	चं	३७	४२	२१	११	भ	३८	४८	२१	३८	आ	३४	५०	किं	१२	२८	३२	२४	०६	०७	०७	०४	वृ. २६/५४	००	१३	४५	०८	५८	२१	१६	२९	०८	२८	चन्द्रदर्शनं पाराशर ऋषि ज. मतान्तरे उभायां १ शनिः ०६।१७ **F** रविः १३।१८
गद	२	मं	२८	३५	१७	३२	कृ	३१	४४	१८	४७	सौ	२४	३०	बा	०३	०५	३२	२८	०६	०६	०७	०५	वृषभ	००	१४	४३	२९	५८	१९	१७	जि१	०९	२९	श्री शिवाजी ज. ४१८वीं श्री परशुराम जयंती सर्वा. ०६।०६ उ. १८।४७ या. **A**
शुभ	३	बु	२०	१९	१४	१३	रो	२५	३३	१६	१८	शो	१४	५१	ग	२०	१९	३२	३१	०६	०५	०७	०५	मि. २७/१५	००	१५	४१	४८	५८	१७	१८	०२	१०	३०	भ. २४।४४ उ. अक्षय तृतीया आखातीज वर्षीतप पारणा पालीताणा **B**
मृत्यु	४	गु	१३	२०	११	२४	मृ	२०	४२	१४	२१	अं/सु	०६/५८	१५/५६	वि	१३	२०	३२	३४	०६	०४	०७	०६	मिथुन	००	१६	४०	०५	५८	१५	१९	०३	११	म१	भ. ११।२४ या. अस्तं अगस्तः ०७।०४ विश्व श्रम दिवस मई मास ५ ता. ३१ प्रा.
पद्म	५	शु	०७	५९	०९	१५	आ	१७	३२	१३	०४	धृ	५३	११	बा	०७	५९	३२	३७	०६	०३	०७	०६	मिथुन	००	१७	३८	२०	५८	१३	२०	०४	१२	०२	श्री सूरदास ज. श्री आद्य शंकराचार्य ज. १२३७वीं श्री रामानुजाचार्य ज. **C**
छत्र	६	श	०४	३४	०७	५२	पुन	१६	१९	१२	३४	शू	४९	०५	तै	०४	३४	३२	४०	०६	०३	०७	०७	क. ०६/३७	००	१८	३६	३४	५८	११	२१	०५	१३	०३	श्री गंगासप्तमी गंगोत्पत्ति **B** जैन हस्तिनापुर सर्वा. ०६।०५ उ. ३०।०४ या.
श्रीवत्स	७	र	०३	१४	०७	१९	पु	१७	०९	१२	५४	गं	४६	३९	व	०३	१४	३२	४४	०६	०२	०७	०७	कर्क	००	१९	३४	४५	५८	०९	२२	०६	१४	०४	भ. ०७।१९ उ. १९।२२ या. सर्वा. ०६।०२ उ. १२।५४ या. रविपुष्य **D**
सौम्य	८	चं	०३	५८	०७	३६	आ	२०	००	१४	०१	वृ	४५	४६	ब	०३	५८	३२	४७	०६	०१	०७	०८	सिं. १४/०१	००	२०	३२	५४	५८	०७	२३	०७	१५	०५	देवी बगलामुखी जयंती श्री जानकी नवमी **D** ०६।०२ उ. १२।५४ या.
कालदंड	९	मं	०६	३६	०८	३९	म	२४	३९	१५	५२	ध्रु	४६	१३	कौ	०६	३६	३२	५०	०६	०१	०७	०८	सिंह	००	२१	३१	०१	५८	०५	२४	०८	१६	०६	अश्विन्यां मेषे बुधः २८।०६ **C** सर्वा. १३।०४ उ. ३०।०३ या. **H** भौमः ०८।३२
सुस्थिर	१०	बु	१०	५१	१०	२०	पूफा	३०	४३	१८	१७	व्या	४७	४२	ग	१०	५१	३२	५३	०६	००	०७	०९	क. २४/५८	००	२२	२९	०७	५८	०३	२५	०९	१७	०७	भ. २३।२२ उ. कवि टैगोर जयंती श्री महावीर स्वामी केवलज्ञान जैन
ए.व्रत	११	गु	१६	१६	१२	३०	उफा	३७	४८	२१	०७	ह	४९	५४	वि	१६	१६	३२	५६	०५	५९	०७	१०	कन्या	००	२३	२७	१०	५८	०२	२६	१०	१८	०८	भ. १२।३० या. मोहिनी ११ व्रतं सर्वे. विश्व रेडक्रास दि. चतुर्विध संघ **E**
प्रदोष	१२	शु	२२	२५	१४	५७	ह	४५	२६	२४	०९	व	५२	२८	बा	२२	२५	३२	५९	०५	५९	०७	१०	कन्या	००	२४	२५	१२	५८	०१	२७	११	१९	०९	प्रदोष व्रतं **G** ज. वैशाख स्नान पूर्ण देवयानी यात्रा सांभरलेक आश्लेषायां **H**
काण	१३	श	२८	५१	१७	३०	चि	५३	१३	२७	१५	सि	५५	०७	तै	२८	५१	३३	०२	०५	५८	०७	११	तु. १३/४२	००	२५	२३	१२	५७	५८	२८	१२	२०	१०	सर्वा. २७।१५ उ. २९।५७ या. **A** जिल्काद मास ११ मुस. **E** स्थापना दि. जैन
लुम्बक	१४	र	३५	१३	२०	०२	स्वा	६०	००	–	–	व्य	५७	३८	ग	०२	०४	३३	०५	०५	५७	०७	११	तुला	००	२६	२१	१०	५७	५६	२९	१३	२१	११	भ. २०।०२ उ. श्री नृसिंह प्राक्ट्योत्सव विश्व मातृ दिवस कृतिकायां **F**
पूर्णिमा	१५	चं	४१	१३	२२	२६	स्वा	००	५१	०६	१७	व	५९	५०	वि	०८	१७	३३	०७	०५	५७	०७	१२	वृ. २६/२७	००	२७	१९	०६	५७	५५	३०	१४	२२	१२	भ. ०९।१६ या. पूर्णिमा व्रतं पीपल पूर्णिमा व्रतं श्री कूर्म ज. श्री बुद्ध **G**

गोचर ग्रहाः

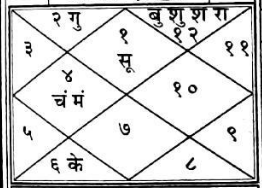

वै. शु. पक्षे ८ चन्द्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	०३	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	२०	२५	१३	२७	२७	०८	०४	००	००
क.	३२	३१	१४	०१	५८	२१	०२	४३	४३
वि.	५४	२५	२८	२८	०८	१७	०७	१२	१२
ग	५८	७५०	२८	९०	१२	३९	०५	०३	०३
ति	०७	०६	२०	५६	१८	०६	५०	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	भरणी ३	आश्ले. ३	पुष्य ३	रेवती ४	मृगशि. २	उ.भा. २	उ.भा. १	पू.भा. ४	उ.फा. २

✲ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✲

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
अप्रै.	रात्रि	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
२८	२९।१९	०७।०१	०८।५७	११।११	१३।२८	१५।४४	१७।५९	२०।१७	२२।३३	२४।३७	२६।२१	२७।५१
२९	२९।१५	०६।५७	०८।५३	११।०७	१३।२४	१५।४०	१७।५५	२०।१३	२२।२९	२४।३३	२६।१७	२७।४७
३०	२९।११	०६।५३	०८।४९	११।०३	१३।२०	१५।३६	१७।५१	२०।०९	२२।२५	२४।२९	२६।१३	२७।४३
म१	२९।०७	०६।४९	०८।४५	१०।५९	१३।१६	१५।३२	१७।४७	२०।०५	२२।२१	२४।२५	२६।०९	२७।३९
०२	२९।०३	०६।४५	०८।४१	१०।५५	१३।१२	१५।२८	१७।४३	२०।०१	२२।१७	२४।२१	२६।०५	२७।३५
०३	२८।५९	०६।४१	०८।३७	१०।५१	१३।०८	१५।२४	१७।३९	१९।५७	२२।१३	२४।१७	२६।०१	२७।३१
०४	२८।५५	०६।३७	०८।३३	१०।४७	१३।०४	१५।२०	१७।३५	१९।५३	२२।०९	२४।१३	२५।५७	२७।२७
०५	२८।५१	०६।३३	०८।२९	१०।४३	१३।००	१५।१६	१७।३१	१९।४९	२२।०५	२४।०९	२५।५३	२७।२३
०६	२८।४७	०६।२९	०८।२५	१०।३९	१२।५७	१५।१२	१७।२७	१९।४५	२२।०१	२४।०५	२५।४९	२७।१९
०७	२८।४३	०६।२५	०८।२२	१०।३५	१२।५३	१५।०८	१७।२३	१९।४१	२१।५८	२४।०१	२५।४५	२७।१५
०८	२८।३९	०६।२१	०८।१८	१०।३१	१२।४९	१५।०४	१७।१९	१९।३७	२१।५४	२३।५७	२५।४१	२७।१२
०९	२८।३५	०६।१७	०८।१४	१०।२७	१२।४५	१५।००	१७।१६	१९।३३	२१।५०	२३।५३	२५।३८	२७।०८
१०	२८।३१	०६।१३	०८।१०	१०।२३	१२।४१	१४।५७	१७।१२	१९।२९	२१।४६	२३।४९	२५।३४	२७।०४
११	२८।२८	०६।०९	०८।०६	१०।१९	१२।३७	१४।५३	१७।०८	१९।२५	२१।४२	२३।४६	२५।३०	२७।०१
१२	२८।२४	०६।०६	०८।०२	१०।१५	१२।३३	१४।४९	१७।०४	१९।२२	२१।३८	२३।४२	२५।२६	२६।५६

ग्रहगोचरीय फलम्

कृष्ण पक्ष वैशाख का, एकादशी तिथि दक्ष। मेघ गाज से मानिये, भावी वर्षा सुभिक्ष।। प्रातः चैत्र वैशाख में, वन पक्षी ध्वनी धीर। मधुर बोल सुहावने, श्रावण वर्षे नीर।। बिना ऋतु फल-फूल ही, धरा मध्य जिस भाग। शकुन श्रीधरी शास्त्र का, सुख सुभिक्ष नहीं राग। भरणी गत रवि योग जब, मेघ गाज आकाश। सुख-सुभिक्ष की न्यूनता, गणना शास्त्र विकास।। कृष्ण पक्ष वैशाख का, तिथि अष्टमी का संग। मेघ गाज नभ बिजली, भावी सुखद सुरंग। सुदी ग्यारस से त्रयोदशी, शुक्ल पक्ष वैशाख मेघ गाज रचना गति, भावी कष्ट प्रशाख।। तिथि आठै वैशाख बदी, बिजली गर्जना होय। संवत् अच्छा जानिये, संशय करो न कोय।। कृष्ण पक्ष वैशाख का, तिथि पड़वा का संग। सुदी वैशाख की पूर्णिमा, वर्षा मेघ गति संग। रवि संक्रमण रवि दिवस, नेता दलपति द्वन्द। पद प्रलोभ की भावना, तंत्र लोक भी मंद। कृष्ण पक्ष वैशाख का, एकादशी तिथि दक्ष। मेघ गाज से मानिये, भावी वर्ष सुभिक्ष। अक्षय तृतीया शुक्ल की, रोहिणी सुयोग। सुख सुविधा की प्रचूरता, श्रीधर कथन सुयोग। वैशाख कृष्ण अमावस्या, रेवती पक्ष सुभिक्ष। रोहिणी योग दुर्भिक्ष का, मध्यम अश्विनी पक्ष। भरणी व्याधि जानिये, कृतिका से जल अल्प। यान खान घटना विविध, श्रीधर शकुन सुकल्प।।

गोचर ग्रहाः

वै. शु. पक्षे. १५ चन्द्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	०६	०३	००	०१	११	११	११	०५
अं.	२७	१९	१६	०८	२९	१३	०४	००	००
क.	११	३६	३६	११	२५	१६	४१	२०	२०
वि.	०६	३७	११	४७	२८	३०	३९	५७	५७
ग	५७	७४४	२९	१०४	१२	४५	०५	०३	०३
ति	५५	११	२६	५०	४१	५६	२४	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	कृति. १	स्वाति ४	पुष्य ४	अश्वि. ३	मृगशि. २	उ.भा. ३	उ.भा. १	पू.भा. ४	उ.फा. २

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः विक्रम संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	सूर्यस्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	गति	बं. वैशा.	मु. जिलकद	भा. वैशा.	अं. मई
श्रीवत्स	१	मं	४६	४०	२४	३६	वि	०८	०३	०९	०९	प	६०	००	बा	१४	०२	३३	१०	०५	५६	०७	१२	वृश्चिक	००	२८	१७	०१	५७	५३	३१	१५	२३	१३
सौम्य	२	बु	५१	२५	२६	३०	अ	१४	३९	११	४७	प	०१	३६	तै	११	०९	३३	१३	०५	५६	०७	१३	वृश्चिक	००	२९	१४	५५	५७	५२	ज्ये१	१६	२४	१४
कालदंड	३	गु	५५	२१	२८	०३	ज्ये	२०	३१	१४	०८	शि	०२	४७	व	२३	३०	३३	१६	०५	५५	०७	१३	ध. १४/०८	०१	००	१२	४७	५७	५१	०२	१७	२५	१५
चौथव्रत	४	शु	५८	१९	२९	१४	मू	२५	३३	१६	०८	सि	०३	१९	ब	२६	५८	३३	१८	०५	५५	०७	१४	धनु	०१	०१	१०	३७	५७	४९	०३	१८	२६	१६
मातंग	५	श	६०	००	-	-	पूषा	२९	३५	१७	४४	सा	०३	०७	कौ	२९	२४	३३	२१	०५	५४	०७	१४	म. २४/०४	०१	०२	०८	२६	५७	४८	०४	१९	२७	१७
अमृत	५	र	००	११	०५	५८	उषा	३२	२८	१८	५३	शु/शु	०२/५९	०२/५७	तै	००	११	३३	२३	०५	५४	०७	१५	मकर	०१	०३	०६	१४	५७	४७	०५	२०	२८	१८
सिद्धि	६	चं	००	४७	०६	१२	श्र	३४	०२	१९	३०	ब्र	५६	४६	व	००	४७	३३	२६	०५	५३	०७	१५	मकर	०१	०४	०४	०१	५७	४६	०६	२१	२९	१९
क्षय	७	चं	५९	५८	२९	५२	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
उत्पात	८	मं	५७	३८	२८	५६	ध	३४	०९	१९	३२	ऐं	५२	२३	बा	२९	००	३३	२८	०५	५३	०७	१६	कुं. ०७/३६	०१	०५	०१	४७	५७	४५	०७	२२	३०	२०
मानस	९	बु	५३	४५	२७	२२	श	३२	४५	१८	५८	वै	४६	४५	तै	२५	५४	३३	३०	०५	५२	०७	१७	कुंभ	०१	०५	५९	३२	५७	४४	०८	२३	३१	२१
मुद्गर	१०	गु	४८	२२	२५	१३	पूभा	२९	४८	१७	४७	वि	३९	५३	व	२१	१५	३३	३३	०५	५२	०७	१७	मी. १२/०८	०१	०६	५७	१५	५७	४३	०९	२४	ज्ये१	२२
ए.व्रत	११	शु	४१	३७	२२	३०	उभा	२५	२७	१६	०२	प्री	३१	५२	ब	१५	०९	३३	३५	०५	५२	०७	१८	मीन	०१	०७	५४	५८	५७	४२	१०	२५	०२	२३
प्रदोष	१२	श	३३	४४	१९	२१	रे	१९	५३	१३	४८	आ	२२	५३	कौ	०७	४८	३३	३७	०५	५१	०७	१८	मे. १३/४८	०१	०८	५२	४०	५७	४१	११	२६	०३	२४
आनन्द	१३	र	२५	०२	१५	५२	अ	१३	२४	११	१२	सौ	१३	०९	व	२५	०२	३३	३९	०५	५१	०७	१९	मेष	०१	०९	५०	२०	५७	४०	१२	२७	०४	२५
चर	१४	चं	१५	५४	१२	१२	भ/कृ	०६/५९	२३/१५	०८/२९	२४/३३	शो/अ	०२/५२	५८/४०	श	१५	५४	३३	४१	०५	५१	०७	१९	वृ. १३/४१	०१	१०	४८	००	५७	३८	१३	२८	०५	२६
अमावस	३०	मं	०६	४५	०८	३२	रो	५२	३१	२६	५१	सु	४२	३९	ना	०६	४५	३३	४३	०५	५०	०७	२०	वृषभ	०१	११	४५	३८	५७	३७	१४	२९	०६	२७

(दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. के)

१३ मई से २७ मई सन् २०२५ ई. तक

ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे तथा च उत्तरगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

जिनवर व्रतं जैन विश्व एकता दिवस E करवीर व्रतं रोहिण्यां बुधः २९।०४
श्री नारद ज. वीणादानं वृषभेऽर्कः २४।१२ सर्वा. अमृत. ०५।५६ उ. **A**
भ. १५।१९ उ. २८।०३ या. **बुधास्त पूर्वे** २२।०५ **B** भरण्यां बुधः २५।०१
ज्येष्ठ चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि २२।४९ रेवत्यां शुक्रः १२।४५
A ११।४७ या. बं. ज्येष्ठ मास प्रा. मृगशिरायां ३ मिथुने गुरूः २२।३४ **B**
सर्वा. ०५।५४ उ. १८।५३ या. पूभायां ३ कुंभे राहुः उफायां १ सिंहे केतु १७।१२
भ. ०६।१२ उ. १८।०७ या. सर्वार्थसिद्धि योग ०५।५३ उ. १९।३० या.
D रोहिणी तपनकाल प्रारंभ सर्वार्थसिद्धि योग ०५।५१ उ. ११।१२ या.
श्री दादूदयाल पुण्यः कालाष्टमी पंचक ०७।३६ उ. मिथुने भानुः २४।२५
कृतिकायां बुधः २२।१७ **C** १६।०२ उ. २९।५१ या. वृषभे बुधः १२।५९
भ. १४।२२ उ. २५।१३ या. रा. ज्येष्ठ मास प्रारंभ
अपरा ११ व्रतं स्मार्त्त वैष्णव सर्वार्थ. १६।०२ उ. २९।५१ या. अमृत. **C**
अपरा एकादशी व्रतं निम्बार्क शनि प्रदोष व्रतं पंचक १३।४८ या.
भ. १५।५२ उ. २६।०३ या. **मास शिवरात्रि** रोहिण्यां रविः ०९।३१ **D**
सर्वा. २९।३३ उ. २९।५० या. **पितृकार्ये अमावस्या वटसावित्री पूजा**
देवकार्ये अमावस्या भावुका ३० श्री शनि ज. श्री संत ज्ञानेश्वर ज. E

गोचर ग्रहाः

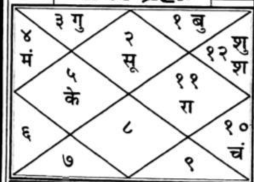

ज्ये. कृ. पक्षे ८ भौमे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०९	०३	००	०२	११	११	१०	०४
अं.	०५	२८	२०	२३	०१	१९	०५	२९	२९
क.	०१	५०	३५	१३	०८	४५	२३	५५	५५
वि.	४७	२३	४२	५४	१७	४०	०१	३०	३०
ग	५७	८०७	३०	१२०	१३	५१	०४	०३	०३
ति	४५	०७	३३	२९	०३	४८	५२	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	कृत्ति. ३	धनि. २	आश्ले. २	भरणी ३	मृगशि. ३	रेवती १	उ.भा. १	पू.भा. ३	उ.फा. १

✲ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✲

ता. मई	मेष रात्रि	वृषभ प्रातः	मिथुन प्रातः	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चि. सायं	धनु रात्रि	मकर रात्रि	कुंभ रात्रि	मीन रात्रि
१३	२८।२०	०६।०२	०७।५८	१०।१२	१२।३०	१४।४५	१७।००	१९।१८	२१।३४	२३।३८	२५।२२	२६।५२
१४	२८।१६	०५।५८	०७।५५	१०।०८	१२।२६	१४।४१	१६।५६	१९।१४	२१।३१	२३।३४	२५।१८	२६।४९
१५	२८।१२	०५।५४	०७।५१	१०।०४	१२।२२	१४।३८	१६।५३	१९।१०	२१।२७	२३।३०	२५।१५	२६।४५
१६	२८।०९	०५।५०	०७।४७	१०।००	१२।१८	१४।३४	१६।४९	१९।०७	२१।२३	२३।२७	२५।११	२६।४१
१७	२८।०५	०५।४७	०७।४४	०९।५७	१२।१५	१४।३०	१६।४५	१९।०३	२१।२०	२३।२३	२५।०७	२६।३७
१८	२८।०१	०५।४३	०७।४०	०९।५३	१२।११	१४।२७	१६।४२	१८।५९	२१।१६	२३।१९	२५।०४	२६।३४
१९	२७।५८	०५।३९	०७।३६	०९।४९	१२।०७	१४।२३	१६।३८	१८।५६	२१।१२	२३।१६	२५।०१	२६।३०
२०	२७।५४	०५।३६	०७।३२	०९।४६	१२।०४	१४।१९	१६।३४	१८।५२	२१।०९	२३।१२	२४।५६	२६।२६
२१	२७।५०	०५।३२	०७।२९	०९।४२	१२।०१	१४।१५	१६।३०	१८।४८	२१।०५	२३।०८	२४।५३	२६।२३
२२	२७।४६	०५।२८	०७।२४	०९।३८	११।५६	१४।११	१६।२६	१८।४४	२१।००	२३।०४	२४।४८	२६।१८
२३	२७।४२	०५।२४	०७।२०	०९।३३	११।५१	१४।०७	१६।२२	१८।४०	२०।५६	२३।०१	२४।४४	२६।१४
२४	२७।३८	०५।२०	०७।१६	०९।२९	११।४७	१४।०३	१६।१८	१८।३५	२०।५२	२२।५६	२४।४०	२६।१०
२५	२७।३३	०५।१६	०७।१२	०९।२५	११।४३	१३।५९	१६।१४	१८।३१	२०।४८	२२।५१	२४।३६	२६।०६
२६	२७।२९	०५।११	०७।०८	०९।२१	११।३९	१३।५४	१६।०९	१८।२७	२०।४४	२२।४७	२४।३१	२६।०२
२७	२७।२५	०५।०७	०७।०४	०९।१७	११।३५	१३।५०	१६।०५	१८।२३	२०।४०	२२।४३	२४।२७	२५।५७

वृषभ संक्रान्ति फलम्

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे २ बुधे वृषभेऽर्कः प्र. (स्टे. टा. २४।१२) वा. ४ न. ४ अस्य पुण्यकालः पर दिने गुरूवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः। वार नाम मंदाकिनी-राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, विविध दलपति, राजनेता, अधीक्षक वर्ग हेतु सुखद। नक्षत्रनाम-राक्षसी, श्रमजीवी, निर्धन परिवार, जनजाति, व्यवसायहीन समुदाय हेतु मनोत्साह वर्धक। रात्रि २ या. व्या. तमोगुण प्रधान विस्फोटक कर्त्ता, देशद्रोही, आतंक प्रसारक, हिंसाशील वर्ग हेतु कष्टद प्रभारक। पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टि, संक्रांति वास निवास माली गृहे, गर करणे, वाहन गज, उपवाहन खर, रक्त वस्त्र, धनुषायुध, लौह पात्र, पय भक्षण, गौरोचन लेपन, पशुजाति, बिल्वपुष्प, कुक्कुट भूषण, श्वेत कंचुकी, प्रोढ़ाऽवस्था, उपविष्टा मुहूर्त्त-१५ धान्य गल्ला उन्नत भाव, असगंध, चांदी, सोना, मशीनरी, कलपूर्जे, हल्दी, मसूर, मिर्च, लहसुन, पोस्ता, सूत, कपास, चावल, सफेद रंग वस्तु, सुगंधित द्रव्य, सरिया, लोहा, इस्पात, लाल वस्त्र, गधा, हाथी, कंदमूल पदार्थ कार्य व्यवसाय लाभद भावी उन्नत भाव गति। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स उत्तरे, राहु पश्चिमे, मूल पाताले।

गोचर ग्रहाः

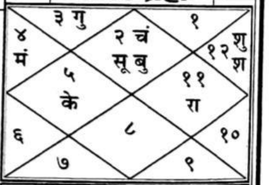

ज्ये. कृ. पक्षे ३० भौमे स्टै. टा. प्रा. ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०१	०३	०१	०२	११	११	१०	०४
अं.	११	०९	२४	०७	०२	२६	०५	२९	२९
क.	४५	५८	१२	५१	४०	००	५५	३३	३३
वि.	३८	१५	२०	३६	२५	२१	३१	१५	१५
ग	५७	९००	३१	१३०	१३	५५	०४	०३	०३
ति	३७	४२	२७	३६	१८	३७	२०	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	रोहि. १	कृत्ति. ४	आश्ले. ३	कृत्ति. ४	मृगशि. ३	रेवती ३	उ.भा. १	पू.भा. ३	उ.फा. १

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः विक्रम संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल
क्षय	१	मं	५८	०२	२९	०३	०	००	००	००	००	०	००	००	०	००	००
अमृत	२	बु	५०	१२	२५	५५	मृ	४६	३८	२४	२९	धृ	३३	१६	बा	२३	५९
काण	३	गु	४३	४२	२३	१९	आ	४२	०२	२२	३९	शू	२४	५२	तै	१६	४६
लुम्बक	४	शु	३८	५४	२१	२३	पुन	३९	०९	२१	२९	गं	१७	४७	व	११	०४
मित्र	५	श	३६	०६	२०	१६	पु	३८	१५	२१	०७	वृ	१२	१५	ब	०७	१४
वज्र	६	र	३५	२७	२०	००	आ	३९	२८	२१	३७	ध्रु	०८	२५	कौ	०५	३०
ध्वांक्ष	७	चं	३६	५६	२०	३५	म	४२	४६	२२	५६	व्या	०६	१८	ग	०५	५६
धूम्र	८	मं	४०	२०	२१	५७	पूफा	४७	५४	२४	५९	ह	०५	४८	वि	०८	२५
प्रवर्ध	९	बु	४५	१५	२३	५५	उफा	५४	२७	२७	३६	व	०६	३९	बा	१२	३८
राक्षस	१०	गु	५१	०९	२६	१६	ह	६०	००	-	-	सि	०८	३२	तै	१८	०७
ए. व्रत	११	शु	५७	३०	२८	४९	ह	०१	५३	०६	३४	व्य	११	००	व	२४	१८
काण	१२	श	६०	००	-	-	चि	०९	३८	०९	४०	व	१३	४१	ब	३०	३९
प्रदोष	१२	र	०३	४५	०७	१८	स्वा	१७	१४	१२	४२	प	१६	१३	बा	०३	४५
मित्र	१३	चं	०९	३०	०९	३७	वि	२४	१७	१५	३१	शि	१८	२०	तै	०९	३०
वज्र	१४	मं	१४	२९	११	३६	अ	३०	३३	१८	०२	सि	१९	५०	व	१४	२९
पूर्णिमा	१५	बु	१८	३३	१३	१४	ज्ये	३५	५५	२०	११	सा	२०	३७	ब	१८	३३

योगाः	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति		विविध तारीखें बं. ज्येष्ठ	मु. ज़िल्का.	भा. ज्येष्ठ	अं. मई
क्षय	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
अमृत	३३	४५	०५	५०	०७	२०	मि. १३/३७	०१	१२	४३	१५	५७	३६	१५	३०	०७	२८
काण	३३	४७	०५	५०	०७	२१	मिथुन	०१	१३	४०	५१	५७	३५	१६	जि१	०८	२९
लुम्बक	३३	४९	०५	५०	०७	२१	क. १५/४२	०१	१४	३८	२६	५७	३३	१७	०२	०९	३०
मित्र	३३	५०	०५	४९	०७	२२	कर्क	०१	१५	३५	५९	५७	३२	१८	०३	१०	३१
वज्र	३३	५२	०५	४९	०७	२२	सिं. २१/३७	०१	१६	३३	३१	५७	३१	१९	०४	११	जू१
ध्वांक्ष	३३	५३	०५	४९	०७	२३	सिंह	०१	१७	३१	०२	५७	२९	२०	०५	१२	०२
धूम्र	३३	५५	०५	४९	०७	२३	सिंह	०१	१८	२८	३२	५७	२८	२१	०६	१३	०३
प्रवर्ध	३३	५६	०५	४९	०७	२३	क. ०७/३५	०१	१९	२६	००	५७	२७	२२	०७	१४	०४
राक्षस	३३	५८	०५	४९	०७	२४	कन्या	०१	२०	२३	२७	५७	२६	२३	०८	१५	०५
ए. व्रत	३३	५९	०५	४९	०७	२४	तु. २०/०७	०१	२१	२०	५३	५७	२५	२४	०९	१६	०६
काण	३४	००	०५	४९	०७	२५	तुला	०१	२२	१८	१७	५७	२४	२५	१०	१७	०७
प्रदोष	३४	०१	०५	४९	०७	२५	तुला	०१	२३	१५	४१	५७	२३	२६	११	१८	०८
मित्र	३४	०२	०५	४९	०७	२६	वृ. ०८/५१	०१	२४	१३	०४	५७	२२	२७	१२	१९	०९
वज्र	३४	०३	०५	४९	०७	२६	वृश्चिक	०१	२५	१०	२५	५७	२१	२८	१३	२०	१०
पूर्णिमा	३४	०४	०५	४९	०७	२६	ध. २०/११	०१	२६	०७	४६	५७	२०	२९	१४	२१	११

२८ मई से ११ जून सन् २०२५ ई. तक
ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे तथा च उत्तरगोलीय
इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

A पुण्य श्री याज्ञवल्क्य ज. विश्व पर्यावरण दिवस सघनां वृक्षारोपण **B**
चन्द्रदर्शनं सर्वा. ०५।५० उ. २४।२९ या. **B** संकल्पे देशे ग्रामे
रंभा तृतीया महाराणा प्रताप ज. सर्वा. २२।३९ उ. जिल्हज मास १२ मुस.
भ. १०।१५ उ. २१।२३ या. सर्वा. २१।२९ या.
श्रुतिपंचमी जैन मेषे अश्विन्यां शुक्रः ११।३२
सांई टेऊंराम पु. अरण्यषष्ठी विन्ध्यवासिनी **C**
भ. २०।३५ उ. **D** पुण्य जोधपुर मिथुने बुधः ०१।२६ मघायां सिंहे भौमः २६।०८
भ. ०९।११ या. मृगशिरायां बुधः ०६।५५ **C** पूजा जून मास ६ ता. ३० प्रा.
श्री महेश नवमी माहेश्वरी वंशीय सर्वा. २७।३६ उ. २९।४९ या.
श्री गंगादशहरा बटुक भैरव ज. श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा आचार्य श्री राम शर्मा **A**
भ. १५।३२ उ. २८।४९ या. निर्जला ११ व्रतं स्मार्त्त वैष्णव गुरू अचलदास **D**
निर्जला एकादशी व्रतं निम्बार्क सर्वा. ०९।४० उ. २९।४९ या. बकराईद
प्रदोष व्रतं मृगशिरायां रविः ०७।१८ वट सावित्री व्रत प्रा. बुधोदय प. २०।२३
सर्वा. १५।३१ उ. २९।४९ या. आर्द्रायां बुधः १४।५६
भ. ११।३६ उ. २४।२८ या. वट सावित्री व्रतं पूर्णता ज्येष्ठ पूर्णिमा व्रतं
पूर्णिमा पुण्य श्री कबीर जयंती श्रुति पूर्णिमा पर्व जैन

गोचर ग्रहाः

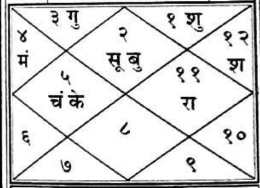

ज्ये. शु. पक्षे ८ भौमे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०४	०३	०१	०२	००	११	१०	०४
अं.	१८	१६	२७	२३	०४	०२	०६	२९	२९
क.	२८	४३	५४	१२	१४	३८	२४	११	११
वि.	३२	४७	५४	०८	०७	५०	११	००	००
ग	५७	७३३	३२	१३०	१३	५८	०३	०३	०३
ति	२८	०८	१४	१२	२९	३३	४६	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	रोहि.३	पू.फा.२	आश्ले.४	रोहि.४	मृगशि.४	अश्वि.१	उ.भा.१	पू.भा.३	उ.फा.१

✵ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✵

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मई	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि
२८	२७।२१	२८।५१	०६।५१	०९।१३	११।३१	१३।४६	१६।०१	१८।१९	२०।३५	२२।३९	२४।२३	२५।५३
२९	२७।१७	२८।५५	०६।५५	०९।०९	११।२६	१३।४२	१५।५७	१८।१५	२०।३१	२२।३५	२४।१९	२५।४९
३०	२७।१३	२८।५१	०६।५१	०९।०५	११।२२	१३।३८	१५।५३	१८।११	२०।२७	२२।३१	२४।१५	२५।४५
३१	२७।०९	२८।४७	०६।४७	०९।००	११।१८	१३।३४	१५।४९	१८।०७	२०।२३	२२।२७	२४।११	२५।४१
जू१	२७।०५	२८।४३	०६।४३	०८।५६	११।१४	१३।३०	१५।४५	१८।०३	२०।१९	२२।२३	२४।०७	२५।३७
०२	२७।०१	२८।३९	०६।३९	०८।५२	११।१०	१३।२६	१५।४१	१७।५९	२०।१५	२२।१९	२४।०[illegible]	२५।३३
०३	२६।५७	२८।३५	०६।३५	०८।४८	११।०६	१३।२२	१५।३७	१७।५५	२०।११	२२।१५	२३।५९	२५।२९
०४	२६।५३	२८।३१	०६।३१	०८।४४	११।०२	१३।१८	१५।३३	१७।५१	२०।०७	२२।११	२३।५५	२५।२५
०५	२६।४९	२८।२७	०६।२७	०८।४१	१०।५८	१३।१४	१५।२९	१७।४७	२०।०३	२२।०७	२३।५१	२५।२१
०६	२६।४५	२८।२३	०६।२३	०८।३७	१०।५४	१३।१०	१५।२५	१७।४३	१९।५९	२२।०३	२३।४७	२५।१७
०७	२६।४१	२८।१९	०६।२०	०८।३३	१०।५०	१३।०६	१५।२१	१७।३९	१९।५६	२१।५९	२३।४३	२५।१३
०८	२६।३७	२८।१५	०६।१६	०८।२९	१०।४७	१३।०२	१५।१७	१७।३५	१९।५२	२१।५५	२३।३९	२५।१०
०९	२६।३३	२८।११	०६।१२	०८।२५	१०।४३	१२।५८	१५।१४	१७।३१	१९।४८	२१।५१	२३।३६	२५।०६
१०	२६।३०	२८।०७	०६।०८	०८।२१	१०।३९	१२।५५	१५।१०	१७।२७	१९।४४	२१।४८	२३।३२	२५।०२
११	२६।२६	२८।०४	०६।०४	०८।१७	१०।३५	१२।५१	१५।०६	१७।२४	१९।४०	२१।४४	२३।२८	२४।५८

ग्रहगोचरीय फलम्

वार पांच बुध देव के, व्यापारे मंदी लक्ष। संस्था सेवा वर्ग की, जन सेवा में दक्ष।। रवि संक्रमण बुध दिवस, श्रीधर गणना लक्ष। तेल गुड़ रस खाण्ड में, तेजी का ही पक्ष।। मृगशिरा वायु का चलन, दिशा धार नभ वात। मेघ गाज वर्षा भवन, आर्द्रा सूर्य निपात।। ज्येष्ठ बदी पंचमी के दिना, पवन चले दक्षिण। तिल तेल घृत कीजिए, संग्रह आश्विन मास।। सर्व तपे जो रोहिणी, सर्व तपे जो मूल। पड़वा तपे जो ज्येष्ठ की, निपजे धान्य समूल।। जेठ अमावस पूर्णिमा बादल हो आकाश। भयकारी वायु बहे, तो वर्षा का हो नाश।। ज्येष्ठ मास का तपना, सुख सुभिक्ष अपना।। मेघ गाज की रचना, दुःखद दुविधा का सपना।। ज्येष्ठ में आर्द्रा से चित्रा नखत विचार। मेघ गाज से आपदा, भावी कष्ट निहार।। श्रवण धनिष्ठा जेठ बदी, मेघ गाज आकाश। नहीं वर्षे वर्षा अधिक, वर्षे वर्षा का नाश।। आठे चौदसा जेठ बदी, चाले दखिना बाय। वर्षा ऋतु में समझ लो, उत्तम जल बरसाय।। जेठ बदी एकादशी, द्वादशी बादल गाज। शुभ संवत वर्षा घनी मंदा बिके अनाज।। जेठ बदी एकम पड़ै, रवि मंगल बुधवार। संक्रामक रोगों का, रहे गर्म बाजार।।

गोचर ग्रहाः

ज्ये. शु. पक्षे १५ बुधे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०७	०४	०२	०२	००	११	१०	०४
अं.	२६	२२	०२	०९	०६	१०	०६	२८	२८
क.	०७	२९	१५	५१	०२	३६	५१	४५	४५
वि.	४६	२७	३८	३१	३१	५३	५७	३३	३३
ग	५७	७३५	३३	११६	१३	६१	०३	०३	०३
ति	२०	२८	०२	१६	३७	१२	०५	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	मृगशि.१	ज्येष्ठा २	मघा १	आर्द्रा १	मृगशि.४	अश्वि.४	उ.भा.२	पू.भा.३	उ.फा.१

आषाढ़ कृष्ण पक्षः विक्रम संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७																		दिनमान		स्टैण्डर्ड टाईम				चन्द्र राशि प्रवेश काल	दैनिक सूर्यस्पष्ट						विविध तारीखें			
																				सूर्योदय		सूर्यास्त		स्टै. टा.	प्रातः ५घं.३०मि. के						बं.	मु.	भा.	अं.
योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.	रा. घं. मि.	रा.	अं.	क.	वि.	गति					
धूम्र	१	गु	२१	३९	१४	२८	मू	४०	२१	२१	५७	शु	२०	४०	कौ	२१	३९	३४	०५	०५	४९	०७	२७	धनु	०१	२७	०५	०६	५७	१९	३०	१५	२२	१२
प्रवर्ध	२	शु	२३	४६	१५	१९	पूषा	४३	५०	२३	२१	शु	१९	५८	ग	२३	४६	३४	०५	०५	४९	०७	२७	म. २१/३८	०१	२८	०२	२५	५७	१९	३१	१६	२३	१३
चौथव्रत	३	श	२४	५६	१५	४७	उषा	४६	२३	२४	२२	ब्र	१८	३०	वि	२४	५६	३४	०६	०५	४९	०७	२७	मकर	०१	२८	५९	४४	५७	१८	३२	१७	२४	१४
गद	४	र	२५	०७	१५	५२	श्र	४७	५७	२५	००	ऐं	१६	१६	बा	२५	०७	३४	०७	०५	४९	०७	२८	मकर	०१	२९	५७	०२	५७	१८	आ१	१८	२५	१५
शुभ	५	चं	२४	१८	१५	३२	ध	४८	३२	२५	१४	वै	१३	१४	तै	२४	१८	३४	०७	०५	४९	०७	२८	कुं. १३/१०	०२	००	५४	२०	५७	१७	०२	१९	२६	१६
मृत्यु	६	मं	२२	२५	१४	४७	श	४८	०१	२५	०२	वि	०९	२२	व	२२	२५	३४	०७	०५	४९	०७	२८	कुंभ	०२	०१	५१	३७	५७	१७	०३	२०	२७	१७
पद्म	७	बु	१९	२५	१३	३५	पूभा	४६	२४	२४	२३	प्री/आ	०४/५८	३७/५७	ब	१९	२५	३४	०८	०५	४९	०७	२८	मी. १८/३५	०२	०२	४८	५४	५७	१७	०४	२१	२८	१८
छत्र	८	गु	१५	१६	११	५६	उभा	४३	३९	२३	१७	सौ	५२	२१	कौ	१५	१६	३४	०८	०५	५०	०७	२९	मीन	०२	०३	४६	११	५७	१७	०५	२२	२९	१९
श्रीवत्स	९	शु	१०	०१	०९	५०	रे	३९	४८	२१	४५	शो	४४	५२	ग	१०	०१	३४	०८	०५	५०	०७	२९	मे. २१/४५	०२	०४	४३	२८	५७	१६	०६	२३	३०	२०
सौम्य	१०	श	०३	४३	०७	११	अ	३५	०१	१९	५०	अ	३६	३८	वि	०३	४३	३४	०८	०५	५०	०७	२९	मेष	०२	०५	४०	४४	५७	१६	०७	२४	३१	२१
क्षय	११	श	५६	३५	२८	२८	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
कालदंड	१२	र	४८	५१	२५	२३	भ	२९	३१	१७	३९	सु	२७	४८	कौ	२२	४६	३४	०८	०५	५०	०७	२९	वृ. २३/०४	०२	०६	३८	०१	५७	१६	०८	२५	आ१	२२
प्रदोष	१३	चं	४०	४९	२२	१०	कृ	२३	३६	१५	१७	धृ	१८	३७	ग	१४	५१	३४	०८	०५	५०	०७	३०	वृषभ	०२	०७	३५	१७	५७	१६	०९	२६	०२	२३
मातंग	१४	मं	३२	५३	१९	००	रो	१७	३९	१२	५४	शू	०९	२२	वि	०६	४९	३४	०८	०५	५१	०७	३०	मि. २३/४६	०२	०८	३२	३३	५७	१६	१०	२७	०३	२४
अमावस	३०	बु	२५	२७	१६	०२	मृ	१२	०४	१०	४१	गं/वृ	००/५२	२३/००	ना	२५	२७	३४	०७	०५	५१	०७	३०	मिथुन	०२	०९	२९	४८	५७	१५	११	२८	०४	२५

१२ जून से २५ जून सन् २०२५ ई. तक

ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः रवि उत्तरा-दक्षिणायणे तथा च उत्तरगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

अस्तं गुरूः पश्चिमे २३।२१ गुरू हरगोविन्द सिंह जयंती
भ. २७।३६ उ. आर्द्रायां १ गुरूः २३।२७ भरण्यां शुक्रः २१।१२
भ. १५।४७ या. **आषाढ़ी चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि** २२।११ सर्वार्थ. **A**
पितृ दिवस फादर्स डे मिथुनेऽर्कः ०६।४४ बंगला आषाढ़ मास प्रारंभ
पंचक १३।१० **उ.** पुनर्वसौ बुधः १७।०२ **A** २४।२२ उ. २९।४९ या.
भ. १४।४७ उ. २६।१५ या. **C** ०८।१२ **रवि दक्षिणायणे वर्षा ऋतु प्रारंभ**
रानी झांसी पुण्यः B २१।४५ या. **E** आषाढ़ मास प्रा. कर्के बुधः २१।३१
सर्वार्थसिद्धि योग २३।१७ उ. **सूच्यते- सर्वा. अर्थात् सर्वार्थसिद्धि योग**
भ. २०।३७ उ. **पंचक** २१।४५ **या.** सर्वा. २१।५० या. अमृत. ०५।५० उ. **B**
भ. ०७।११ या. **योगिनी ११ व्रतं स्मार्त्त विश्व योग दिवस** कर्के भानुः **C**
D स्त्री. पु. वाहन मूषक वर्षा मध्यम आम केरी त्याग नियम प्रा. जैन रा. **E**
योगिनी ११ व्रतं वैष्णव निम्बार्क आर्द्रायां रविः ०६।२० संग चं. चं. **D**
भ. २२।१० उ. **सोम प्रदोष व्रतं मास शिवरात्रि** सर्वा. १५।१७ उ. २१।५१ या.
भ. ०८।३४ या. पुष्ये बुधः २१।०२ **सूच्यते- भ. अर्थात् भद्रा**
आषाढ़ी देवपितृकार्ये अमावस्या सर्वार्थसिद्धि. ०५।५१ उ. १०।४१ या.

गोचर ग्रहाः

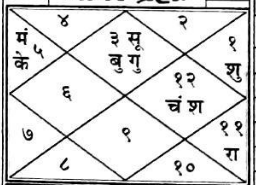

आ. कृ. पक्षे ८ गुरौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३०मि.									
ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	११	०४	०२	०२	००	११	१०	०४
अं.	०३	०६	०६	२४	०७	१८	०७	२८	२८
क.	४६	१७	४२	१५	५१	५४	१४	२०	२०
वि.	११	२१	२६	५४	४७	०६	०२	०७	०७
ग	५७	८४२	३३	९७	१३	६३	०२	०३	०३
ति	१७	३१	४५	१०	४२	१८	२१	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	मृगशि. ४	उ.भा. १	मघा ३	पुनर्व. २	आर्द्रा १	भरणी २	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. १

✯ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✯

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
जून	रात्रि	रात्रि	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि
१२	२६।२२	२८।०१	०६।००	०८।१४	१०।३१	१२।४७	१५।०२	१७।२०	१९।३६	२१।४०	२३।२४	२४।५४
१३	२६।१८	२७।५६	०५।५७	०८।१०	१०।२८	१२।४३	१४।५८	१७।१६	१९।३३	२१।३६	२३।२०	२४।५०
१४	२६।१४	२७।५२	०५।५३	०८।०६	१०।२४	१२।४०	१४।५५	१७।१२	१९।२९	२१।३२	२३।१७	२४।४७
१५	२६।११	२७।४९	०५।४९	०८।०२	१०।२०	१२।३६	१४।५१	१७।०८	१९।२५	२१।२९	२३।१३	२४।४३
१६	२६।०७	२७।४५	०५।४५	०७।५९	१०।१६	१२।३२	१४।४७	१७।०५	१९।२१	२१।२५	२३।०९	२४।३९
१७	२६।०३	२७।४१	०५।४१	०७।५५	१०।१३	१२।२८	१४।४३	१७।०१	१९।१८	२१।२१	२३।०५	२४।३६
१८	२६।०१	२७।३७	०५।३८	०७।५१	१०।०९	१२।२५	१४।४०	१६।५७	१९।१४	२१।१८	२३।०२	२४।३२
१९	२५।५६	२७।३४	०५।३४	०७।४८	१०।०५	१२।२१	१४।३६	१६।५४	१९।१०	२१।१४	२२।५८	२४।२८
२०	२५।५२	२७।३०	०५।३०	०७।४४	१०।०२	१२।१७	१४।३२	१६।५०	१९।०७	२१।१०	२२।५४	२४।२५
२१	२५।४९	२७।२७	०५।२७	०७।४०	०९।५८	१२।१४	१४।२९	१६।४६	१९।०३	२१।०७	२२।५१	२४।२१
२२	२५।४५	२७।२३	०५।२३	०७।३६	०९।५४	१२।१०	१४।२५	१६।४२	१८।५९	२१।०३	२२।४७	२४।१७
२३	२५।४०	२७।१८	०५।१९	०७।३२	०९।५०	१२।०६	१४।२१	१६।३८	१८।५५	२०।५८	२२।४३	२४।१३
२४	२५।३६	२७।१४	०५।१५	०७।२८	०९।४६	१२।०२	१४।१७	१६।३४	१८।५१	२०।५४	२२।३९	२४।०९
२५	२५।३२	२७।१०	०५।११	०७।२४	०९।४२	११।५८	१४।१३	१६।३०	१८।४७	२०।५०	२२।३५	२४।०५

सौंठ, तम्बाकू, चाय, रोली, चंदन, केसर, दाना मेथी, सरसों, हल्दी, तुअर, चना, चांदी सोना, घोड़ा उन्नत धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स उत्तरे, राहू पश्चिमे, मूल स्वर्गे।

मिथुन संक्रान्ति फलम्

आषाढ़ कृष्णा पक्षे ४ सूर्ये मिथुनेऽर्कः प्र. (स्टे. टा. ०६।४४) वा. ५ न. ५ अस्य पुण्यकालः अद्यैव रवि वासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च रण संभागीय रचना गति। वार नाम घोरा-आदिवासी, अल्पसंख्यक, निर्धन, असहाय, वयोवृद्ध, अनुसूचित जाति वर्ग हेतु शासकीय नवीन योजना लाभ। नक्षत्र नाम-महोदरी, तस्कर, लोभी, प्रलोभी, प्रवंचक, धूर्त, चौर्यकर्मशील, संग्राहक ठग पक्ष, हेतु दिशा पथ सूचक शुभ फलद। दिवा १ याम् व्यापिनी सुरक्षा अधिकारी, आरक्षी नायक, सेनापति, राष्ट्रीय विकास व्याख्याता, लेखक, शिक्षक, गुप्तचर विभाग पद विशेष पर प्रभारक कष्टद। दक्षिणे गमन, नैऋत्यां दृष्टिः। संक्रांति वास निवास शाह वैश्य गृहे, बालव करणे, वाहन व्याघ्र, उपवाहन अश्व, पीत वस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जातिपुष्प, कंकण भूषण, पर्णकंचुकी, कुमार्याऽवस्था उपविष्टा मुहूर्त्त-३० धान्य गल्ला स्थिर सम भाव। सुगंधी पदार्थ, गरम मसाला,

गोचर ग्रहाः

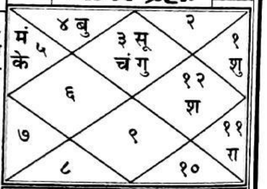

आ. कृ. पक्षे ३० बुधे स्टै. टा. प्रा. ५ घं. ३० मि.									
ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	०२	०४	०३	०२	००	११	१०	०४
अं.	०९	०३	१०	०३	०९	२५	०७	२८	२८
क.	२९	३०	०६	२१	१३	१७	२६	०१	०१
वि.	४८	३३	११	३१	५१	०८	४०	०३	०३
ग	५७	८७१	३४	८२	१३	६४	०१	०३	०३
ति	१५	४७	१७	०३	४३	३३	४८	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	आर्द्रा १	मृगशि. ४	मघा ४	पुष्य १	आर्द्रा १	भरणी ४	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. १

आषाढ़ शुक्ल पक्षः वि. संवत् २०८२ रा. शाकः१९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति	गति	खं.	मु.	भा.	अं.
काण	१	गु	१८	५५	१३	२५	आ	०७	१८	०८	४७	ध्रु	४४	३२	ब	१८	५५	३४	०७	०५	५१	०७	३०	क. २५/४०	०२	१०	२७	०४	५७	१५	१२	२९	०५	२६
लुम्बक	२	शु	१३	४१	११	२०	पुन	०३	४६	०७	२२	व्या	३८	१६	कौ	१३	४१	३४	०६	०५	५२	०७	३०	कर्क	०२	११	२४	१९	५७	१५	१३	मो१	०६	२७
मित्र	३	श	१०	०७	०९	५५	पु	०१	५०	०६	३६	ह	३३	२८	ग	१०	०७	३४	०६	०५	५२	०७	३०	कर्क	०२	१२	२१	३३	५७	१४	१४	०२	०७	२८
वज्र	४	र	०८	२७	०९	१५	आ	०१	४५	०६	३४	व	३०	१६	वि	०८	२७	३४	०५	०५	५२	०७	३०	सिं. ०९/३४	०२	१३	१८	४८	५७	१४	१५	०३	०८	२९
ध्वांक्ष	५	चं	०८	५०	०९	२४	म	०३	४१	०७	२१	सि	२८	४०	बा	०८	५०	३४	०४	०५	५३	०७	३०	सिंह	०२	१४	१६	०२	५७	१३	१६	०४	०९	३०
धूम्र	६	मं	११	११	१०	२१	पूफा	०७	३३	०८	५४	व्य	२८	३४	तै	११	११	३४	०४	०५	५३	०७	३०	क. १५/२४	०२	१५	१३	१५	५७	१३	१७	०५	१०	जु१
प्रवर्ध	७	बु	१५	१४	११	५९	उफा	१३	०५	११	०७	व	२९	४३	व	१५	१४	३४	०३	०५	५३	०७	३०	कन्या	०२	१६	१०	२८	५७	१३	१८	०६	११	०२
राक्षस	८	गु	२०	३४	१४	०७	ह	१९	५३	१३	५१	प	३१	४५	ब	२०	३४	३४	०२	०५	५४	०७	३०	तु. २७/१९	०२	१७	०७	४१	५७	१२	१९	०७	१२	०३
मुसल	९	शु	२६	३६	१६	३२	चि	२७	२०	१६	५०	शि	३४	१३	कौ	२६	३६	३४	०१	०५	५४	०७	३०	तुला	०२	१८	०४	५३	५७	१२	२०	०८	१३	०४
सिद्धि	१०	श	३२	४३	१८	५९	स्वा	३४	५३	१९	५१	सि	३६	४३	ग	३२	४३	३४	००	०५	५४	०७	३०	तुला	०२	१९	०२	०५	५७	१२	२१	०९	१४	०५
ए. व्रत	११	र	३८	२२	२१	१६	वि	४१	५८	२२	४२	सा	३८	५१	व	०५	३७	३३	५८	०५	५५	०७	३०	वृ. १६/०१	०२	१९	५९	१७	५७	१२	२२	१०	१५	०६
मानस	१२	चं	४३	०९	२३	११	अ	४८	११	२५	१२	शु	४०	१८	ब	१०	५३	३३	५७	०५	५५	०७	३०	वृश्चिक	०२	२०	५६	२९	५७	१२	२३	११	१६	०७
प्रदोष	१३	मं	४६	४८	२४	३९	ज्ये	५३	१९	२७	१५	शु	४०	५३	कौ	१५	०७	३३	५६	०५	५६	०७	३०	ध. २७/१५	०२	२१	५३	४०	५७	११	२४	१२	१७	०८
केतु	१४	बु	४९	१४	२५	३७	मू	५७	१५	२८	५०	ब्र	४०	३२	ग	१८	१०	३३	५४	०५	५६	०७	३०	धनु	०२	२२	५०	५२	५७	११	२५	१३	१८	०९
पूर्णिमा	१५	गु	५०	२६	२६	०७	पूषा	५९	५९	२९	५६	ऐं	३९	१२	वि	१९	५८	३३	५३	०५	५६	०७	३०	धनु	०२	२३	४८	०३	५७	१२	२६	१४	१९	१०

२६ जून से १० जुलाई सन् २०२५ ई. तक
वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च उत्तरगोलीय
इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

चन्द्रदर्शनं गुप्त नवरात्रि विधान प्रा. विश्व नशा निवारण दिवस सर्वा. **A**
जगन्नाथ रथयात्रा पुरी सर्वा. ०७।२२ या. मोहर्रम मास १ हिजरी नववर्ष **B**
भ. २१।२१ उ. **E** सं.ग.चं. सू. स्त्री. नपु. वाहन अश्व वर्षा मध्यम कतलरात मुस.
भ. ०१।१५ या. वृषभे शुक्रः १४।०१ **A** ०८।४७ उ. कृतिकायां शुक्रः १२।१६
स्कन्द कुमार षष्ठी सांई टेऊँराम जन्म पूफायां भौमः २०।१६ **B** १४४७ प्रा.
विवस्वत् सप्तमी महावीर स्वामी गर्भ कल्याणक जैन डॉ. चिकित्सक **C**
भ. ११।५१ उ. २५।०० या. आचार्य विद्याचंद्र सूरि पुण्य त्रि. स्तु. जैन **D**
मेहंदी रात मुस. **D** चौमासी अष्टाह्निका प्रा. सर्वा. ११।०७ उ. २१।५४ या.
विवेकानन्द पुण्यः भडुली नवमी पर्व **C** दिवस जुलाई मास ७ ता. ३१ प्रा.
उदितं गुरूः पूर्वे २१।२१ सर्वा. ०५।५४ उ. ११।५१ या. पुनर्वसौ रविः २१।४८ **E**
भ. ०८।१० उ. २१।१६ या. देवशयनी ११ व्रतं सर्वे. चातुर्मास प्रा. **F**
सर्वा. ०५।५५ उ. २५।१२ या. **G** परीक्षा सन्यासी चातुर्मास प्रा. व्यास **H**
भौम प्रदोष व्रतं कल्याण विजय गणिवर्य पुण्य जैन रोहिण्यां शुक्रः १६।२४
भ. २५।३७ उ. चौमासी अष्टाह्निका पूर्ण **H** पीठ पूजा चातुर्मास प्रा. जैन
भ. १६।५६ या. गुरू पूर्णिमा व्रतं कोकिला व्रतं शिवशयनोत्सवः वायु **G**

गोचर ग्रहाः

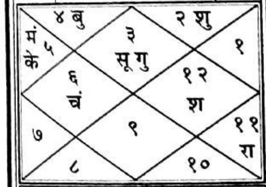

आ. शु. पक्षे ८ गुरौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	०५	०४	०३	०२	०१	११	१०	०४
अं.	१७	११	१४	१३	११	०३	०७	२७	२७
क.	०७	११	४२	०१	०३	५८	३८	३५	३५
वि.	४१	२१	५४	२७	२६	३२	००	३६	३६
गति	५७ १२	७१३ १०	३४ ५६	५१ २४	१३ ३८	६५ ५६	०० ५८	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	आर्द्रा ४	हस्त ३	पू.फा. १	पुष्य ३	आर्द्रा २	कृति. ३	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. १

✲ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✲

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
जुला.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि
२६	२५।५८	२७।०६	२९।०३	०७।२०	०९।३८	११।५३	१४।०८	१६।२६	१८।४३	२०।४६	२२।३१	२४।०१
२७	२५।२४	२७।०२	२८।५९	०७।१६	०९।३४	११।४९	१४।०४	१६।२२	१८।३९	२०।४२	२२।२६	२३।५७
२८	२५।२०	२६।५८	२८।५५	०७।१२	०९।३०	११।४५	१४।००	१६।१८	१८।३५	२०।३८	२२।२२	२३।५३
२९	२५।१६	२६।५४	२८।५१	०७।०८	०९।२६	११।४१	१३।५६	१६।१४	१८।३१	२०।३४	२२।१८	२३।४९
३०	२५।१२	२६।५०	२८।४७	०७।०४	०९।२२	११।३७	१३।५२	१६।१०	१८।२७	२०।३०	२२।१४	२३।४५
जु१	२५।०८	२६।४६	२८।४३	०७।०१	०९।१८	११।३३	१३।४८	१६।०६	१८।२३	२०।२६	२२।१०	२३।४१
०२	२५।०४	२६।४२	२८।३९	०६।५६	०९।१४	११।२९	१३।४४	१६।०२	१८।१९	२०।२२	२२।०७	२३।३७
०३	२५।००	२६।३८	२८।३५	०६।५२	०९।१०	११।२६	१३।४१	१५।५८	१८।१५	२०।१८	२२।०३	२३।३३
०४	२४।५६	२६।३४	२८।३१	०६।४८	०९।०६	११।२२	१३।३७	१५।५४	१८।११	२०।१४	२१।५९	२३।२९
०५	२४।५२	२६।३०	२८।२७	०६।४४	०९।०२	११।१८	१३।३३	१५।५०	१८।०७	२०।१०	२१।५५	२३।२५
०६	२४।४९	२६।२६	२८।२३	०६।४०	०८।५८	११।१४	१३।२९	१५।४६	१८।०३	२०।०६	२१।५१	२३।२१
०७	२४।४५	२६।२३	२८।१९	०६।३६	०८।५४	११।१०	१३।२५	१५।४२	१७।५९	२०।०३	२१।४७	२३।१७
०८	२४।४१	२६।१९	२८।१५	०६।३२	०८।५०	११।०६	१३।२१	१५।३८	१७।५५	१९।५९	२१।४३	२३।१३
०९	२४।३७	२६।१५	२८।११	०६।२८	०८।४६	११।०२	१३।१७	१५।३५	१७।५१	१९।५५	२१।३९	२३।०९
१०	२४।३३	२६।११	२८।०७	०६।२५	०८।४२	१०।५८	१३।१३	१५।३१	१७।४७	१९।५१	२१।३५	२३।०५

ग्रहगोचरीय फलम्

वार पाँच गुरू देव के नीति न्याय अवरोध। दिशा पश्चिम दुःख आपदा, विग्रह प्रांत विरोध।। चक्रवात आंधी पवन, सागर देश विदेश।। संहारक रचना गति, जन धन मध्य विशेष।। आर्द्रा भरे खादरा, पुनर्वसु भरे तड़ाग। शकुन लक्ष श्रीधर शास्त्र का, बहुविध करे प्रयाग।। साढ़ बदी चौदस दिना, होय रोहिणी योग। करफ्यू अरू कंट्रोल से, दुःख पावें सब लोग।। साढ़ बदी प्रतिपदा को, वर्षा बादल गाज। अनावृष्टि दो मास तक, महंगा बिकै अनाज।। साढ़ लागते चतुर्थी के, दिन परै तुषार। उत्तम वर्षा से सभी, सुख पावैं संसार।। बदी पंचमी साढ़ में निर्मल रहै आकाश। ना बादल ना बिजली, कृषि का निश्चय नास।। साढ़ बदी आठैं अगर चंदा जोय। वर्षा ऋतु में जानिये, भारी वर्षा होय।। साढ़ सुदी में चौथ को, बिजली वर्षा गाज। उत्तम वर्षा समझिये, उपजै खूब अनाज।। साढ़ सुदी पांचै दिना, पच्छम धनुष दिखाय। पच्छम का वायु चलै, जल बरसै झड़ लाय।। साढ़ सुदी आठै अगर, निर्मल रहे आकाश। चंद्रदेव दे दर्श तो, है वर्षा का नाश।। पूनम नौमी साढ़ सुदी, निर्मल निशा मयंक। दुर्भिक्ष निश्चय जानिये, दुःखै भूखै रंक।।

F विष्णु शयनोत्सवः जिनदत्त सूरि पुण्यः दादामेला अजमेर आश्लेषायां बुधः २१।४४ ताजिया मुस.

गोचर ग्रहाः

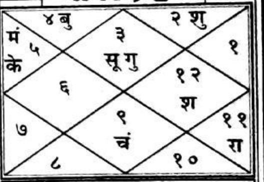

आ. शु. पक्षे १५ गुरौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	०८	०४	०३	०२	०१	११	१०	०४
अं.	२३	१३	१८	१८	१२	११	०७	२७	२७
क.	४८	४१	४८	४६	३८	४३	४२	१३	१३
वि.	०३	०४	५६	१५	३६	१२	४१	२१	२१
गति	५७ १२	७६४ ५०	३५ २६	३४ ३५	१३ ३२	६६ ५८	०० १६	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	पुनर्व. २	पू.षा. १	पू.फा. २	आश्ले. १	आर्द्रा २	रोहि. १	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. १

श्रावण कृष्ण पक्षः विक्रम संवत् २०८२ रा. शाक: १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट (प्रातः ५घं.३०मि. के) रा.	अं.	क.	वि.	गति		विविध तारीखें बं. आषा.	मु. मोहर्र	भा. आषा.	अं. जुलाई
आनन्द	१	शु	५०	३०	२६	०९	उषा	६०	००	-	-	वै	३६	५८	बा	२०	३६	३३	५१	०५	५७	०७	२९	म. १२/०९	०२	२४	४५	१५	५७	१२	२७	१५	२०	११
राक्षस	२	श	४९	३४	२५	४७	उषा	०१	३७	०६	३६	वि	३३	५५	तै	२०	०९	३३	५०	०५	५७	०७	२९	मकर	०२	२५	४२	२६	५७	१२	२८	१६	२१	१२
गद	३	र	४७	४३	२५	०३	श्र	०२	१८	०६	५३	प्री	३०	०७	व	१८	४४	३३	४८	०५	५८	०७	२९	कुं. १८/५३	०२	२६	३९	३९	५७	१२	२९	१७	२२	१३
चौथव्रत	४	चं	४५	०५	२४	००	ध	०२	०७	०६	४९	आ	२५	३९	ब	१६	२९	३३	४६	०५	५८	०७	२९	कुंभ	०२	२७	३६	५१	५७	१३	३०	१८	२३	१४
मृत्यु	५	मं	४१	४२	२२	४०	शत./पूभा	०१/५९	०९/२९	०६/२९	२६/४७	सौ	२०	३४	कौ	१३	२८	३३	४४	०५	५९	०७	२९	मी. २३/५८	०२	२८	३४	०४	५७	१३	३१	१९	२४	१५
लुम्बक	६	बु	३७	३८	२१	०२	उभा	५७	०८	२८	५०	शो	१५	५५	ग	०९	४४	३३	४३	०५	५९	०७	२८	मीन	०२	२९	३१	१७	५७	१४	श्रा१	२०	२५	१६
मित्र	७	गु	३२	५५	१९	१०	रे	५४	०९	२७	३९	अ	०८	४३	वि	०५	२०	३३	४१	०६	००	०७	२८	मे. २७/३९	०३	००	२८	३१	५७	१५	०२	२१	२६	१७
वज्र	८	शु	२७	३५	१७	०२	अ	५०	३५	२६	१४	सु/धृ	०२/५४	००/५०	बा	००	१९	३३	३९	०६	००	०७	२८	मेष	०३	०१	२५	४६	५७	१५	०३	२२	२७	१८
ध्वांक्ष	९	श	२१	४५	१४	४३	भ	४६	३२	२४	३८	शू	४७	१६	ग	२१	४५	३३	३६	०६	०१	०७	२७	मेष	०३	०२	२३	०२	५७	१६	०४	२३	२८	१९
धूम्र	१०	र	१५	३१	१२	१४	कृ	४२	११	२२	५३	गं	३९	२७	वि	१५	३१	३३	३४	०६	०१	०७	२७	वृ. ०६/१२	०३	०३	२०	१८	५७	१७	०५	२४	२९	२०
ए. व्रत	११	चं	०९	०५	०९	३९	रो	३७	४४	२१	०७	वृ	३१	३२	बा	०९	०५	३३	३२	०६	०२	०७	२६	वृषभ	०३	०४	१७	३५	५७	१८	०६	२५	३०	२१
प्रदोष	१२	मं	०२	४०	०७	०६	मृ	३३	२७	१९	२५	ध्रु	२३	४५	तै	०२	४०	३३	३०	०६	०२	०७	२६	मि. ०८/१५	०३	०५	१४	५३	५७	१८	०७	२६	३१	२२
क्षय	१३	मं	५६	३५	२८	४०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
मूसल	१४	बु	५१	०७	२६	२९	आ	२९	३९	१७	५४	व्या	१६	१८	वि	२३	४४	३३	२७	०६	०३	०७	२६	मिथुन	०३	०६	१२	११	५७	१९	०८	२७	श्रा१	२३
अमावस	३०	गु	४६	३५	२४	४१	पुन	२६	४२	१६	४४	ह	०९	२८	च	१८	४२	३३	२५	०६	०३	०७	२६	क. १०/५९	०३	०७	०९	३०	५७	२०	०९	२८	०२	२४

११ जुलाई से २४ जुलाई सन् २०२५ ई. तक

वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च उत्तरगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

विश्व जनसंख्या दिवस हिण्डोले प्रारंभ B २१।०७ उ. ३०।०२ या.
अशून्य शयन व्रतारंभः फल द्वितीया सर्वार्थसिद्धि.०६।३६ उ. २९।५८ या.
भ. १३।२८ उ. २५।०३ या. **पंचक** १८।५३ **उ. वक्री शनिः** ०९।३८
श्रावणी चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि २२।१० **C** मास प्रा. उफायां भौम: ०८।३५
नागपंचमी मरूस्थलीय बंगालेऽपि मंगलागौरी व्रत सर्वा. २९।४७ उ. **A**
भ. २१।०२ उ. **कर्केऽर्कः** १७।३२ बं. श्रावण मास प्रारंभ **A** २९।५९ या.
भ. ०८।०८ या. सर्वार्थ. ०६।०० उ. **पंचक** २७।३९ **या.**
सर्वा. २६।१४ या. वक्री बुध: १०।१४ **बुधास्त पश्चिमे** २०।२८
भ. २५।२९ उ. **पुष्ये रविः** २९।२२ संग. चं. चं. स्त्री. पु. वाहन चातक वर्षा श्रेष्ठ
भ. १२।१४ या. मृगशिरायां शुक्रः १२।५५ पूभायां २ राहुः पूफायां ४ केतु: १४।५१
कामदा एकादशी व्रतं सर्वेषाम् सर्वा. ०६।०२ उ. ३०।०२ या. अमृत. **B**
भ. २८।४० उ. **भौम प्रदोष व्रतं मंगलागौरी व्रतं** सिंहे भानुः १८।५९
D या. सर्वार्थसिद्धि ०६।०३ उ. ३०।०४ या. अमृत. १६।४४ उ. ३०।०४ या.
भ. १५।३२ या. **श्री तिलक एवं आजाद ज. मास शिवरात्रि** रा. श्रावण **C**
देवपितृकार्ये हरियाली अमावस्या गुरूपुष्य योग १६।४४ उ. ३०।०४ **D**

गोचर ग्रहाः

श्रा. कृ. पक्षे ८ शुक्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	००	०४	०३	०२	०१	११	१०	०४
अं.	०१	०१	२३	२१	१४	२०	०७	२६	२६
क.	२५	०५	३४	२१	२६	४२	४२	४७	४७
वि.	४६	०६	२८	३२	१२	४२	००	५५	५५
ग	५७	८५१	३६	०१	१३	६८	००	०३	०३
ति	१६	१०	०१	२८	२०	०१	३३	११	११
मा/व	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	पुनर्वसु ४	अश्वि. १	पू.फा. ४	आश्ले. २	आर्द्रा ३	रोहि. ४	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. १

✵ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✵

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
जुला	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि
११	२४।२९	२६।०७	२८।०४	०६।२१	०८।३९	१०।५४	१३।०९	१५।२७	१७।४३	१९।४७	२१।३१	२३।०१
१२	२४।२५	२६।०३	२८।०१	०६।१७	०८।३५	१०।५०	१३।०५	१५।२३	१७।४०	१९।४३	२१।२७	२२।५७
१३	२४।२१	२५।५९	२७।५६	०६।१३	०८।३१	१०।४६	१३।०१	१५।१९	१७।३६	१९।३९	२१।२३	२२।५४
१४	२४।१७	२५।५५	२७।५२	०६।०९	०८।२७	१०।४३	१२।५८	१५।१५	१७।३२	१९।३५	२१।२०	२२।५०
१५	२४।१४	२५।५१	२७।४८	०६।०५	०८।२३	१०।३९	१२।५४	१५।११	१७।२८	१९।३१	२१।१६	२२।४६
१६	२४।१०	२५।४८	२७।४४	०६।०१	०८।१९	१०।३५	१२।५०	१५।०७	१७।२४	१९।२८	२१।१२	२२।४२
१७	२४।०६	२५।४४	२७।४०	०५।५७	०८।१५	१०।३१	१२।४६	१५।०४	१७।२०	१९।२४	२१।०८	२२।३८
१८	२४।०२	२५।४०	२७।३६	०५।५४	०८।११	१०।२७	१२।४२	१५।०१	१७।१६	१९।२०	२१।०४	२२।३४
१९	२३।५८	२५।३६	२७।३३	०५।५०	०८।०८	१०।२३	१२।३८	१४।५६	१७।१३	१९।१६	२१।००	२२।३०
२०	२३।५४	२५।३२	२७।२९	०५।४६	०८।०४	१०।१९	१२।३४	१४।५२	१७।०९	१९।१२	२०।५६	२२।२७
२१	२३।५०	२५।२८	२७।२५	०५।४२	०८।०१	१०।१६	१२।३१	१४।४८	१७।०५	१९।०८	२०।५३	२२।२३
२२	२३।४७	२५।२४	२७।२१	०५।३८	०७।५६	१०।१२	१२।२७	१४।४४	१७।०१	१९।०५	२०।४९	२२।१९
२३	२३।४३	२५।२१	२७।१७	०५।३४	०७।५२	१०।०८	१२।२३	१४।४०	१६।५७	१९।०१	२०।४५	२२।१५
२४	२३।३९	२५।१७	२७।१३	०५।३०	०७।४८	१०।०४	१२।१९	१४।३७	१६।५३	१८।५७	२०।४१	२२।११

कर्क संक्रान्ति फलम्

श्रावण कृष्ण पक्षे ६ बुधे कर्केऽर्कः प्र. (स्टे.टा. १७।३२) वा. ४ न. ५ अस्य पुण्यकालः अद्यैव बुधवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च वापी कूप संभागीय रचना गति। वार नाम मंदाकिनी-राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, विविध दलपति, राजनेता, अधीक्षक वर्ग हेतु सुखद। नक्षत्र नाम-मंदा धर्मोपदेशक, कथावाचक, व्याख्याता, लेखक, पत्रकार, शिक्षक वर्ग हेतु सुखद मनोत्साह वर्धक। दिवा ४ याम् व्यापिनी निर्धन, वयोवृद्ध, असहाय, जंगल-पर्वतवासी, अल्पसंख्यक वर्ग हेतु कष्टद प्रभारक। पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टि संक्रांति वास निवास मालीगृहे, वणिज करणे वाहन महिष, उपवाहन उष्ट्र, श्याम वस्त्र, तोमरायुध, खप्पर पात्र, दधिभक्षण, अलक्तलेपन, मृगजाति, अर्कपत्र पुष्प, मणिभूषण, पांडुकंचुकी, प्रगल्भाऽवस्था, उपविष्टा मुहूर्त्त-४५ धान्य गल्ला स्थिर समभाव तरल द्रव्य, विष पदार्थ, रसायन, कालीमिर्च, उड़द, कलौंजी, अजवाइन, जीरा, अफीम, तिल, मशीनरी, कलपूर्जे, लोहा, इस्पात, घी, दही, दूध कालेवस्त्र, ऊँट, भेड़-बकरी, कार्य व्यवसाय लाभप्रद भावी उन्नत धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स उत्तरे, राहु पश्चिमे, मूल भूमौ।

गोचर ग्रहाः

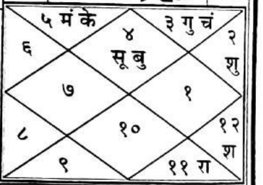

श्रा. कृ. पक्षे ३० गुरौ स्टै. टा. प्रा. ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	०२	०४	०३	०२	०१	११	१०	०४
अं.	०७	२६	२७	२०	१५	२७	०७	२६	२६
क.	०९	४८	११	००	४५	३२	३७	२८	२८
वि.	३०	०२	३८	३७	४७	३६	१५	५०	५०
ग	५७	८३२	३६	२९	१३	६८	०१	०३	०३
ति	२०	५५	२७	२३	०९	४२	०८	११	११
मा/व	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	पुष्य २	पुनर्वसु २	उ.फा. १	आश्ले. २	आर्द्रा ३	मृग. २	उ.भा. २	पू.भा. २	पू.फा. ४

श्रावण शुक्ल पक्षः वि. संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७																		दिनमान		स्टैण्डर्ड टाईम				चन्द्र राशि प्रवेश काल	दैनिक सूर्यस्पष्ट						विविधतारीखें बं. मु. भा. अं.				✿✿ २५ जुलाई से ९ अगस्त सन् २०२५ ई. तक ✿✿ वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च उत्तरगोलीय — इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।
योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	सूर्योदय		सूर्यास्त		स्टै. टा.	प्रातः ५घं.३०मि. के						श्राव.	मोहर्रं.	श्राव.	जुला.	
																				घं.	मि.	घं.	मि.	रा. घं. मि.	रा.	अं.	क.	वि.	गति						
उत्पात	१	शु	४३	२०	२३	२३	पु	२४	५३	१६	०१	व / सि	०३ / ५८	३१ / ४०	किं	१४	४६	३३	२३	०६	०४	०७	२५	कर्क	०३	०८	०६	५०	५७	२०	१०	२९	०३	२५	नक्तव्रतारंभः E राष्ट्रीय अगस्त क्रांति दिवस सर्वार्थ. १४।२४ या.
मानस	२	श	४१	३६	२२	४२	आ	२४	३०	१५	५२	व्य	५५	०४	बा	१२	१५	३३	२०	०६	०४	०७	२४	सिं. १५/५२	०३	०९	०४	११	५७	२१	११	३०	०४	२६	चन्द्रदर्शनं सिंजारा श्री करपात्रि ज. श्री देवपुरी पुण्यः कैलाश सीकर A
मुद्गर	३	र	४१	३५	२२	४२	म	२५	४६	१६	२३	व	५२	५१	तै	११	२१	३३	१८	०६	०५	०७	२४	सिंह	०३	१०	०१	३२	५७	२२	१२	स१	०५	२७	स्वर्णगौरी हरियाली तीज मधुश्रवा तीज झूला तीज सफर मास २ मुस.
केतु	४	चं	४३	१९	२३	२५	पूफा	२८	४६	१७	३६	प	५२	०१	व	१२	१३	३३	१५	०६	०५	०७	२३	क. २४/००	०३	१०	५८	५३	५७	२२	१३	०२	०६	२८	भ. १०।५८ उ. २३।२५ या. वरद विनायक दुर्वा चतुर्थी व्रतं श्रमण B
धाता	५	मं	४६	४४	२४	४७	उफा	३३	२५	१९	२८	शि	५२	२७	ब	१४	४९	३३	१२	०६	०६	०७	२३	कन्या	०३	११	५६	१५	५७	२३	१४	०३	०७	२९	नागपंचमी देशाचारीय मंगलागौरी व्रतं पुष्ये बुधः १६।२४
आनन्द	६	बु	५१	३०	२६	४२	ह	३९	२७	२१	५३	सि	५३	५५	कौ	१८	५७	३३	१०	०६	०६	०७	२२	कन्या	०३	१२	५३	३८	५७	२३	१५	०४	०८	३०	वर्णषष्ठी श्री कल्की जयंती सर्वा. ०६।०६ उ. २१।५३ या.
चर	७	गु	५७	११	२८	५९	चि	४६	२८	२४	४२	सा	५६	०३	ग	२४	१५	३३	०७	०६	०७	०७	२१	तु. ११/१५	०३	१३	५१	०१	५७	२४	१६	०५	०९	३१	भ. २८।५९ उ. श्री तुलसी ज. शीलसप्तमी सिंधु आर्द्रायां शुक्रः २७।४४
गद	८	शु	६०	००	-	-	स्वा	५३	५३	२७	४१	शु	५८	२७	वि	३०	११	३३	०४	०६	०७	०७	२१	तुला	०३	१४	४८	२५	५७	२४	१७	०६	१०	अ१	भ. १८।११ या. दुर्गाष्टमी सिंधु अगस्त मास ८ ता. ३१ प्रारंभ
शुभ	८	श	०३	११	०७	२४	वि	६०	००	-	-	शु	६०	००	ब	०३	११	३३	०१	०६	०८	०७	२०	वृ. २३/५३	०३	१५	४५	४९	५७	२५	१८	०७	११	०२	आश्लेषायां रविः २८।०८ संग. चं. सू. स्त्री. नपु. वाहन खर वर्षा मध्यम
उत्पात	९	र	०८	५६	०९	४३	वि	०१	०७	०६	३५	शु	००	४०	कौ	०८	५६	३२	५८	०६	०८	०७	१९	वृश्चिक	०३	१६	४३	१४	५७	२६	१९	०८	१२	०३	B तपस्या प्रा. वन महोत्सव दि. कन्यायां भौमः १९।५७ मनसापूर्ण महादेव व्रतं प्रा.
मानस	१०	चं	१३	५४	११	४२	अ	०७	४०	०९	१३	ब्र	०२	२०	ग	१३	५४	३२	५५	०६	०९	०७	१९	वृश्चिक	०३	१७	४०	४०	५७	२६	२०	०९	१३	०४	भ. २४।३२ उ. सर्वा. ०६।०९ उ. ०९।१३ या. A (राज.) मिथुने शुक्रः ०८।५६
ए. व्रत	११	मं	१७	३९	१३	१३	ज्ये	१३	०४	११	२३	ऐं	०३	०७	वि	१७	३९	३२	५२	०६	०९	०७	१८	ध. ११/२३	०३	१८	३८	०६	५७	२७	२१	१०	१४	०५	भ. १३।१३ या. पवित्रा एकादशी व्रतं सर्वेषाम् C जैन सर्वा. १४।२८ उ.
प्रदोष	१२	बु	१९	५८	१४	०९	मू	१७	०६	१३	००	वै	०२	४९	बा	१९	५८	३२	४९	०६	१०	०७	१७	धनु	०३	१९	३५	३३	५७	२८	२२	११	१५	०६	प्रदोष व्रतं विष्णुपवित्रार्पण दधिभक्षण व्रतारंभ
धाता	१३	गु	२०	४६	१४	२८	पूषा	१९	३८	१४	०१	वि / प्री	०१ / ५८	२० / ४१	तै	२०	४८	३२	४८	०६	१०	०७	१७	म. २०/११	०३	२०	३३	०१	५७	२९	२३	१२	१६	०७	D दि. अमरनाथ यात्रा पूर्ण प्रतापमल पुण्य स्था. जैन पंचक २६।११ उ.E
आनन्द	१४	शु	२०	०५	१४	१३	उषा	२०	४४	१४	२८	आ	५४	५५	व	२०	०५	३२	४३	०६	११	०७	१६	मकर	०३	२१	३०	३०	५७	३०	२४	१३	१७	०८	भ. १४।१३ उ. २५।५३ या. पूर्णिमा व्रतं मरूधर केसरी मिश्रमल जन्म दि. C
पूर्णिमा	१५	श	१८	०५	१३	२५	श्र	२०	३२	१४	२४	सौ	५०	१०	ब	१८	०५	३२	४०	०६	११	०७	१५	कु. २६/११	०३	२२	२७	५९	५७	३१	२५	१४	१८	०९	पूर्णिमा पुण्य रक्षाबंधन कोकिला व्रतं पूर्णता श्रावणी उपाकर्म संस्कृत D

गोचर ग्रहाः

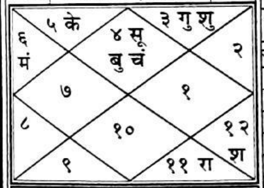

श्रा. शु. पक्षे ८ शुक्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	०६	०५	०३	०२	०२	११	१०	०४
अं.	१४	०९	०२	१४	१७	०६	०७	२६	२६
क.	४८	०२	०५	४७	२९	४५	२५	०३	०३
वि.	२५	३१	०७	०६	५०	०३	२४	२४	२४
गति	५७ २४	७९१ ३१	३६ ५९	४३ ५८	१२ ४९	६१ ३०	०१ ५५	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	पुष्य ४	स्वाति १	उ.फा. २	पुष्य ४	आर्द्रा ४	आर्द्रा १	उ.भा. २	पू.भा. २	पू.फा. ४

✡ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✡

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
जुला.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि
२५	२३।२५	२५।१३	२७।०९	२९।२३	०७।४४	१०।००	१२।१५	१४।३३	१६।४९	१८।५३	२०।३७	२२।०७
२६	२३।३१	२५।०९	२७।०५	२९।१९	०७।४०	०९।५६	१२।११	१४।२९	१६।४५	१८।४९	२०।३३	२२।०३
२७	२३।२७	२५।०५	२७।०२	२९।१५	०७।३७	०९।५२	१२।०७	१४।२५	१६।४२	१८।४५	२०।२९	२१।५९
२८	२३।२३	२५।०१	२६।५८	२९।११	०७।३३	०९।४८	१२।०३	१४।२१	१६।३८	१८।४१	२०।२५	२१।५५
२९	२३।१९	२४।५७	२६।५४	२९।०७	०७।२९	०९।४४	११।५९	१४।१७	१६।३४	१८।३७	२०।२१	२१।५२
३०	२३।१५	२४।५३	२६।५०	२९।०३	०७।२५	०९।४०	११।५६	१४।१३	१६।३०	१८।३३	२०।१८	२१।४८
३१	२३।११	२४।४९	२६।४६	२८।५९	०७।२१	०९।३७	११।५२	१४।०९	१६।२६	१८।२९	२०।१४	२१।४४
अ१	२३।०८	२४।४५	२६।४२	२८।५५	०७।१७	०९।३३	११।४८	१४।०५	१६।२२	१८।२५	२०।१०	२१।४०
०२	२३।०४	२४।४२	२६।३८	२८।५१	०७।१३	०९।२९	११।४४	१४।०१	१६।१८	१८।२२	२०।०६	२१।३६
०३	२३।०१	२४।३८	२६।३४	२८।४७	०७।०९	०९।२५	११।४०	१३।५७	१६।१४	१८।१८	२०।०२	२१।३२
०४	२२।५६	२४।३४	२६।३०	२८।४३	०७।०५	०९।२१	११।३६	१३।५४	१६।१०	१८।१४	१९।५८	२१।२८
०५	२२।५२	२४।३०	२६।२६	२८।४०	०७।०१	०९।१७	११।३२	१३।५०	१६।०६	१८।१०	१९।५४	२१।२४
०६	२२।४८	२४।२६	२६।२२	२८।३६	०६।५७	०९।१३	११।२८	१३।४६	१६।०२	१८।०६	१९।५०	२१।२०
०७	२२।४४	२४।२२	२६।१८	२८।३२	०६।५४	०९।०९	११।२४	१३।४२	१५।५८	१८।०२	१९।४६	२१।१६
०८	२२।४०	२४।१८	२६।१५	२८।२८	०६।५०	०९।०५	११।२०	१३।३८	१५।५५	१७।५८	१९।४२	२१।१२
०९	२२।३६	२४।१४	२६।११	२८।२४	०६।४६	०९।०१	११।१६	१३।३४	१५।५१	१७।५४	१९।३८	२१।०८

ग्रहगोचरीय फलम्

देव शनि की वक्रता, तेजी सूत कपास। दलहन में मंदी नहीं, गणना गणित विकास।। युति योग गुरू शुक्र का, राजतंत्र अधिभार। नायक सत्ता न्यूनता, दल विरोध अभिसार।। मेघ गाज नभ गर्जना, ऋतु विषम प्रतिचार। हिम तुषार पर्व क्षति, फसल कोप गतिचार।। रवि संक्रमण बुध दिवस, श्रीधर गणना लक्ष। तेल गुड़ रस खांड में तेजी का ही पक्ष।। नौमी सावन बदी में शनिवारी संताप। मंत्री मंडल भंग हो, कार्त्तिक आपै आप।। सावन बदी एकादशी, रोहिणी संवत् जान। मृगशिर में दुर्भिक्ष का, सब लक्षण अनुमान।। सावन साहै शनैश्चर, पृथ्वी हो जलपूर। चौदस आर्द्रा अन्न को, संग्रह करो जरूर।। सावन लागत प्रथम दिन, उगत न दिखे भानु। वर्षा ऋतु वर्षा बहुत, उत्तम संवत जानु। सावन पहिले पाख में, अश्विनी बरसे मेह। सुन्दर संवत् होयगा, करौ न कुछ संदेह।। सावन कृतिका नखत में, यदि वर्षा हो जाय। चार मास वर्षा घनी, मंदा धान्य बिकाय। सावन रोहिणी नखत में, यदि जल न वर्षाय। यह लक्षण दुर्भिक्ष का, हाहाकार मचाय।। सावन में वर्षे नहीं, चित्रा स्वाति विशाख। नदी किनारे घर करो, पानी के अभिलाष।।

गोचर ग्रहाः

श्रा. शु. पक्षे १५ शनौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	०९	०५	०३	०२	०२	११	१०	०४
अं.	२२	१८	०७	१०	१९	१६	०७	२५	२५
क.	२७	२०	०२	१९	१०	०३	०७	३७	३७
वि.	५९	३८	४८	४२	५७	३८	३६	५८	५८
गति	५७ ३१	८१२ २०	३७ ३०	११ ५५	१२ २४	७० १४	०२ ३७	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	आश्ले. २	श्रवण ३	उ.फा. ४	पुष्य ३	आर्द्रा ४	आर्द्रा ३	उ.भा. २	पू.भा. २	पू.फा. ४

भाद्रपद कृष्ण पक्षः वि. संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति	गति	विविध तारीखें बं.	मु.	भा.	अं.
मातंग	१	र	१४	५८	१२	११	ध	११	१३	१३	५३	शो	४४	३६	कौ	१४	५८	३२	३७	०६	१२	०७	१४	कुम्भ	०३	२३	२५	३०	५७	३२	२६	१५	१९	१०
अमृत	२	चं	१०	५६	१०	३४	श	१७	०१	१३	००	अ	३८	२४	ग	१०	५६	३२	३४	०६	१२	०७	१४	मी. ३०/१०	०३	२४	२३	०२	५७	३३	२७	१६	२०	११
चौथव्रत	३	मं	०६	१२	०८	४१	पूभा	१४	०९	११	५२	सु	३१	४३	वि	०६	१२	३२	३१	०६	१२	०७	१३	मीन	०३	२५	२०	३५	५७	३४	२८	१७	२१	१२
लुम्बक	४	बु	००	५९	०६	३७	उभा	१०	४९	१०	३३	धृ	२४	४१	बा	००	५९	३२	२७	०६	१३	०७	१२	मीन	०३	२६	१८	०९	५७	३६	२९	१८	२२	१३
क्षय	५	बु	५५	२८	२८	२४	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
मित्र	६	गु	४९	४६	२६	०८	रे	०७	११	०९	०६	शू	१७	२६	ग	२२	३७	३२	२४	०६	१३	०७	११	मे. ०१/०६	०३	२७	१५	४५	५७	३७	३०	१९	२३	१४
वज्र	७	शु	४४	०१	२३	५०	अ/भ	०३/५९	२५/४०	०७/३०	३६/०६	गं	१०	०६	वि	१६	५२	३२	२१	०६	१४	०७	१०	मेष	०३	२८	१३	२३	५७	३९	३१	२०	२४	१५
केतु	८	श	३८	२२	२१	३५	कृ	५६	०१	२८	३९	वृ/ध्रु	०२/५५	४७/३४	बा	११	१०	३२	१७	०६	१४	०७	०९	वृ. ११/४४	०३	२९	११	०१	५७	४०	भा१	२१	२५	१६
धाता	९	र	३२	५५	१९	२५	रो	५२	३७	२७	१८	व्या	४८	३३	तै	०५	३६	३२	१४	०६	१५	०७	०८	वृषभ	०४	००	०८	४२	५७	४२	०२	२२	२६	१७
आनन्द	१०	चं	२७	४९	१७	२३	मृ	४९	३७	२६	०६	ह	४१	५१	व	००	१९	३२	११	०६	१५	०७	०८	मि. १४/४०	०४	०१	०६	२४	५७	४४	०३	२३	२७	१८
ए. व्रत	११	मं	२३	१३	१५	३३	आ	४७	१०	२५	०८	व	३५	३५	बा	२३	१३	३२	०७	०६	१६	०७	०७	मिथुन	०४	०२	०४	०७	५७	४५	०४	२४	२८	१९
प्रदोष	१२	बु	१९	१७	१३	५९	पुन	४५	२७	२४	२७	सि	२९	५३	तै	१९	१७	३२	०४	०६	१६	०७	०६	क. १८/३५	०४	०३	०१	५३	५७	४७	०५	२५	२९	२०
शुभ	१३	गु	१६	१२	१२	४५	पु	४४	४०	२४	०९	व्य	२४	५३	व	१६	१२	३२	००	०६	१७	०७	०५	कर्क	०४	०३	५९	३९	५७	४८	०६	२६	३०	२१
मृत्यु	१४	शु	१४	०९	११	५६	आ	४४	५९	२४	१७	व	२०	४५	श	१४	०९	३१	५७	०६	१७	०७	०४	सिं. २४/१७	०४	०४	५७	२८	५७	५०	०७	२७	३१	२२
अमावस	३०	श	१३	१८	११	३७	म	४६	३३	२४	५५	प	१७	३५	ना	१६	१८	३१	५३	०६	१८	०७	०३	सिंह	०४	०५	५५	१७	५७	५१	०८	२८	भा१	२३

१० अगस्त से २३ अगस्त सन् २०२५ ई. तक

वर्षा-शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च उत्तरगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

अशून्यशयन व्रतं पूर्ण मेवाड़ भूषण प्रतापमल मा. सा. पुण्य जैन बुधोदय **A**
भ. २१।४० उ. फल द्वितीया **A** पूर्वे २९।०७ मार्गी बुधः १२।५९
भ. ०८।४१ या. कज्जली तीज सातु तीज बहुला चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय **B**
श्रमण तपस्या पूर्ण जैन हस्ते भौमः २२।३१ **C** २९।०४ पुनर्वसौ शुक्रः १४।०७
B रात्रि २१।१७ रा. युवा दिवस सर्वा. ११।५२ उ. ३०।१३ या. पुनर्वसौ १ गुरूः **C**
भ. २६।०८ उ. हलचन्दन षष्ठी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि २२।२७ पंचक ०९।०६ **D**
भ. १२।५९ या. स्वतंत्रता दिवस श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रतं स्मार्त्त सर्वा. ०७।३६ या.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतं वैष्णव-निम्बार्क दुर्वाष्टमी मघायां रविः २५।५२ **E**
गोगानवमी नंद महोत्सवः **G** ०६।१७ उ. २४।०९ या. आश्लेषायां बुधः २८।२०
भ. ०६।२३ उ. १७।२३ या. खेड़ापति बालाजी मेला सलेमाबाद सर्वा. **F**
अजा एकादशी व्रतं सर्वेषाम् **F** अमृत. ०६।१५ उ. २६।०६ या.
प्रदोष व्रतं गोवत्स पूजा बछबारस पर्युषण पर्व प्रा. जैन कर्के शुक्रः २५।११
भ. १२।४५ उ. २४।१८ या. मास शिवरात्रि गुरू पुष्य सुयोग सर्वा. अमृत. **G**
पितृकार्ये अमावस्या कन्यायां भानुः २६।०४ शरद ऋतु प्रारंभ मणिधारी **H**
देवकार्ये शनैश्चरी कुशोत्पाटनी अमावस्या पिठोरी ३० सती पूजा अग्रवंशे **I**

गोचर ग्रहाः

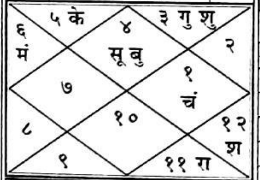

भा. कृ. पक्षे ८ शनौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	००	०५	०३	०२	०२	११	१०	०४
अं.	२९	२६	११	११	२०	२४	०६	२५	२५
क.	११	१८	२६	१९	३६	१७	४७	१५	१५
वि.	०१	४०	३९	२८	३२	१२	३१	४३	४३
गति	५७ ४०	८५१ ३२	३७ ५७	३६ ५२	११ ५९	७० ५२	०३ ११	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	आर्द्रा ४	भरणी ४	हस्त १	पुष्य ३	पुनर्व. १	पुनर्व. २	उ.भा. २	पू.भा. २	पू.फा. ४

✵ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✵

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
अग.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि
१०	२२।३२	२४।१०	२६।०७	२८।२०	०६।४२	०८।५७	११।१२	१३।३०	१५।४७	१७।५०	१९।३४	२१।०५
११	२२।२८	२४।०६	२६।०३	२८।१६	०६।३८	०८।५३	११।०८	१३।२६	१५।४३	१७।४६	१९।३०	२१।०१
१२	२२।२४	२४।०२	२५।५९	२८।१२	०६।३४	०८।४९	११।०४	१३।२२	१५।३९	१७।४२	१९।२७	२०।५७
१३	२२।२०	२३।५८	२५।५५	२८।०८	०६।३०	०८।४६	११।०१	१३।१८	१५।३५	१७।३८	१९।२३	२०।५३
१४	२२।१६	२३।५४	२५।५१	२८।०४	०६।२६	०८।४२	१०।५७	१३१४	१५।३१	१७।३४	१९।१९	२०।४९
१५	२२।१२	२३।५०	२५।४७	२८।००	०६।२२	०८।३८	१०।५३	१३।१०	१५।२७	१७।३०	१९।१५	२०।४५
१६	२२।०८	२३।४६	२५।४३	२७।५६	०६।१८	०८।३४	१०।४९	१३।०६	१५।२३	१७।२६	१९।११	२०।४१
१७	२२।०४	२३।४२	२५।३९	२७।५२	०६।१४	०८।३०	१०।४५	१३।०२	१५।१९	१७।२२	१९।०७	२०।३७
१८	२२।००	२३।३८	२५।३५	२७।४८	०६।१०	०८।२६	१०।४१	१२।५८	१५।१५	१७।१८	१९।०३	२०।३३
१९	२१।५७	२३।३४	२५।३१	२७।४४	०६।०६	०८।२२	१०।३७	१२।५४	१५।११	१७।१५	१८।५९	२०।२९
२०	२१।५३	२३।३०	२५।२७	२७।४०	०६।०२	०८।१८	१०।३३	१२।५०	१५।०७	१७।११	१८।५५	२०।२५
२१	२१।४९	२३।२६	२५।२३	२७।३६	०५।५८	०८।१४	१०।२९	१२।४६	१५।०३	१७।०७	१८।५१	२०।२१
२२	२१।४५	२३।२२	२५।१९	२७।३२	०५।५४	०८।१०	१०।२५	१२।४२	१४।५९	१७।०३	१८।४७	२०।१७
२३	२१।४१	२३।१८	२५।१५	२७।२८	०५।५०	०८।०६	१०।२१	१२।३८	१४।५५	१६।५९	१८।४३	२०।१३

सिंह संक्रान्ति फलम्

भाद्रपद कृष्ण पक्षे ८ शनौ सिंहेऽर्कः प्र. (स्टे. टा. २५।५२) प्र. वा. ४ न. ५ अस्य पुण्यकालः परदिने रविवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च भवन संभागीय रचना गति। वारनाम-राक्षसी, आदिवासीजन, सुदूर जंगल पर्वत निवासी, जनजाति, अनुसूचित अल्पसंख्यक वर्ग हेतु सुखद। नक्षत्रनाम-मिश्रा शासकीय पशुधन विकास योजना, पशु कल्याण केन्द्र वृद्धि, दुग्ध संग्राहक वर्ग को लाभद सुयोग। रात्रि ३ या. व्या. अभिनेता, चलचित्र निर्माता, नर्तक, वादक, गायक हेतु कष्टद प्रभार सूचक। उत्तरे गमन, ईशान दृष्टिः संक्रांति वास निवास दुष्टजन-पापात्मा गृहे, तैतिल करणे वाहन गर्दभ, उपवाहन मेष, श्वेत वस्त्र, दंडायुध, कांस्यपात्र, पक्वान्न भक्षण, मृतिका लेपन, पक्षी जाति, केतकी पुष्प, प्रवाल भूषण, भुर्जपत्र कंचुकी, सुप्तावस्था मुहूर्त्त-३० धान्य गल्ला स्थिर सम भाव। सूखा मेवा, खोपरा, बूरा, श्रीफल, मावा, गुड़, शक्कर, घी, भूगत खनिज वस्तु, मादक पदार्थ, मूंगा, तांबा, इमारती लकड़ी, जंगल वस्तु, भोजपत्र, कांसा फूल, ईंट, मिठाई, भावी तेजी की रचना। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स पूर्वे, राहु उत्तरे, मूल स्वर्गे। **D** या. सर्वा. ०६।१३ उ. **E** सिंहऽर्कः २५।५२ संग. चं. चं. स्त्री. पु. वाहन मण्डुक

गोचर ग्रहाः

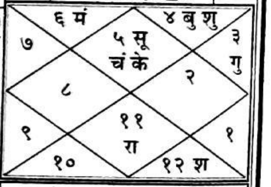

भा. कृ. पक्षे ३० शनौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	०४	०५	०३	०२	०३	११	१०	०४
अं.	०५	०२	१५	१७	२१	०२	०६	२४	२४
क.	५५	५०	५३	५९	५८	३५	२३	५३	५३
वि.	१७	५६	४३	४५	५६	००	४१	२७	२७
गति	५७ ५१	७७५ ५८	३८ २५	८२ ०१	११ २९	७१ २६	०१ ४१	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	मघा २	मघा १	हस्त २	आर्द्रा १	पुनर्व. १	पुनर्व. ४	उ.भा. १	पू.भा. २	पू.फा. ४

वर्षा श्रेष्ठ बं. भाद्रपद मास प्रा. सर्वा. अमृत. २८।३९ उ. ३०।१५ या. **H** जिन चन्द्र सूरी दादा मेला देहली जैन **I** लोहार्गल यात्रा नक्त व्रत पूर्णता रा. भाद्रपद मास प्रा. पुष्ये शुक्रः २०।३६

भाद्रपद शुक्ल पक्षः विक्रम संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

२४ अगस्त से ७ सितम्बर सन् २०२५ ई. तक
शरद् ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च उत्तरगोलीय
इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति	भाद.	सफर	भाद.	अगस्त	
छत्र	१	र	१३	४७	११	४९	पूफा	४९	३०	२६	०६	शि	१५	२९	ब	१३	४७	३१	५०	०६	१८	०७	०२	सिंह	०४	०६	५३	०८	५७ ५३	०९	२९	०२	२४	चन्द्रदर्शनं सर्वा. २६।०६ उ. ३०।१८ या. उदितं अगस्तः १५।०२
श्रीवत्स	२	चं	१५	४२	१२	३५	उफा	५३	४८	२७	५०	सि	१४	२९	कौ	१५	४२	३१	४६	०६	१८	०७	०१	क. ०८/२१	०४	०७	५१	०१	५७ ५४	१०	र१	०३	२५	बाबा रामदेव दूज श्री वराह ज. पश्चिम भारते तैलाधर तपस्या प्रा. जैन **A**
सौम्य	३	मं	१९	०१	१३	५५	ह	५९	२४	३०	०४	सा	१४	३४	ग	१९	०१	३१	४३	०६	१९	०७	००	कन्या	०४	०८	४८	५५	५७ ५५	११	०२	०४	२६	भ. २६।४७ उ. हरितालिका तीज व्रतं श्री वराह ज. मध्य एवं पूर्वी भारते
कालदंड	४	बु	२३	३४	१५	४५	चि	६०	००	-	-	शु	१५	३७	वि	२३	३४	३१	३९	०६	१९	०६	५९	तु. ११/२१	०४	०९	४६	५०	५७ ५७	१२	०३	०५	२७	भ. १५।४५ या. श्री गणेश चतुर्थी चतडा चौथ संवत्सरी पर्व जैन
चर	५	गु	२९	०४	१७	५७	चि	०६	००	०८	४४	शु	१७	२६	बा	२९	०४	३१	३५	०६	२०	०६	५८	तुला	०४	१०	४४	४७	५७ ५८	१३	०४	०६	२८	ऋषिपंचमी व्रतं गर्ग-अंगिरा ऋषि जयंती पर्युषण पर्व प्रा.दिगम्बर जैन
गद	६	शु	३५	०६	२०	२२	स्वा	१३	१६	११	३९	ब	११	४२	कौ	०२	०३	३१	३२	०६	२०	०६	५७	तुला	०४	११	४२	४५	५७ ५९	१४	०५	०७	२९	श्री बलदेव छठ सूर्य षष्ठी रा. खेल दिवस **A** रविउल अव्वल मास ३ मुस.
शुभ	७	श	४१	०७	२२	४७	वि	२०	४२	१४	३७	ऐं	२२	०२	ग	०८	०८	३१	२८	०६	२१	०६	५६	वृ. ०७/५३	०४	१२	४०	४४	५८ ०१	१५	०६	०८	३०	भ. २२।४७ उ. मुक्ता भरण सप्तमी पूफायां रविः २१।४४ संग.सू.सू.स्त्री. **B**
मृत्यु	८	र	४६	३३	२४	५८	अ	२७	४६	१७	२७	वै	२४	०५	वि	१३	५६	३१	२५	०६	२१	०६	५५	वृश्चिक	०४	१३	३८	४५	५८ ०२	१६	०७	०९	३१	भ. ११।५५ या. श्री दधीचि जयंती राधाष्टमी महालक्ष्मी व्रतारंभ
पद्म	९	चं	५०	५५	२६	४४	ज्ये	३३	५४	१९	५५	वि	२५	२५	बा	१८	५४	३१	२१	०६	२१	०६	५४	ध. ११/५५	०४	१४	३६	४७	५८ ०३	१७	०८	१०	सि१	श्रीचन्द नवमी अदुःख नवमी श्रीमद्भागवत सप्ताह प्रारंभ सितम्बर **C**
छत्र	१०	मं	५३	४९	२७	५३	मू	३८	४३	२१	५१	प्री	२५	४४	तै	२२	३४	३१	१७	०६	२२	०६	५३	धनु	०४	१५	३४	५०	५८ ०५	१८	०९	११	०२	मेला रामदेव जी, तेजा दशमी धूपदशमी जैन महालक्ष्मी व्रत पूर्णता **D**
ए. व्रत	११	बु	५५	०१	२८	२२	पूषा	४१	५६	२३	०८	आ	२४	४७	व	२४	३८	३१	१३	०६	२२	०६	५२	म. २१/२१	०४	१६	३२	५५	५८ ०६	१९	१०	१२	०३	भ. १६।१३ उ. २८।२२ या. पद्मा जलझूलनी ११ व्रतं स्मार्त्त वैष्णव **E**
सौम्य	१२	गु	५४	२५	२८	०९	उषा	४३	२३	२३	४४	सौ	२२	२७	ब	२४	५६	३१	१०	०६	२३	०६	५१	मकर	०४	१७	३१	०१	५८ ०८	२०	११	१३	०४	पद्मा जलझूलनी एकादशी व्रतं निम्बार्क वामन जयंती श्रवण द्वादशी
प्रदोष	१३	शु	५२	०६	२७	१४	श्र	४३	०९	२३	३८	शो	१८	४३	कौ	२३	२८	३१	०६	०६	२३	०६	४९	मकर	०४	१८	२९	०९	५८ ०९	२१	१२	१४	०५	प्रदोष व्रतं सर्वा. ०६।२३ उ. २३।३८ या. शिक्षक दिवस हस्ति मुनि **F**
प्रवर्ध	१४	श	४८	१६	२५	४२	ध	४१	२१	२२	५६	अ	१३	४०	ग	२०	२१	३१	०२	०६	२३	०६	४८	कुं. ११/२१	०४	१९	२७	१८	५८ ११	२२	१३	१५	०६	भ. २५।४२ उ. अनन्त चतुर्दशी व्रतं गणेश विसर्जन पंचक ११।२१ उ. **G**
पूर्णिमा	१५	र	४३	०८	२३	३९	श	३८	१४	२१	४१	सु	०७	२६	वि	१५	५०	३०	५९	०६	२४	०६	४७	कुंभ	०४	२०	२५	२९	५८ १२	२३	१४	१६	०७	भ. १२।४४ या. पूर्णिमा व्रतं-पूर्णिमा श्राद्ध महालय श्राद्धारंभ कुमारीणां **H**

गोचर ग्रहाः

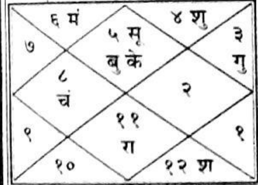

भा. शु. पक्षे ८ सूर्ये स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	०७	०५	०४	०२	०३	११	१०	०४
अं.	१३	१०	२१	००	२३	१२	०५	२४	२४
क.	३८	४२	०२	५८	२८	०८	५२	२८	२८
वि.	४५	३२	५२	२५	३१	३०	३२	०१	०१
ग	५८	७२९	३८	१११	१०	७२	०४	०३	०३
ति	०२	५१	५६	३५	४९	००	०८	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	पूफा.१	अनुरा.१	हस्त ४	मघा १	पुनर्व.३	पुष्य ३	उ.भा.१	पू.भा.२	पू.फा.४

✵ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✵

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
अग.	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं
२४	२१।३७	२३।१५	२५।११	२७।२४	२९।४२	०८।०२	१०।१७	१२।३४	१४।५१	१६।५५	१८।३९	२०।०९
२५	२१।३३	२३।११	२५।०७	२७।२१	२९।३८	०७।५८	१०।१३	१२।३१	१४।४७	१६।५१	१८।३५	२०।०५
२६	२१।२९	२३।०७	२५।०३	२७।१७	२९।३४	०७।५४	१०।०९	१२।२७	१४।४३	१६।४७	१८।३१	२०।०१
२७	२१।२५	२३।०३	२४।५९	२७।१३	२९।३१	०७।५०	१०।०५	१२।२३	१४।३९	१६।४३	१८।२७	१९।५७
२८	२१।२१	२२।५९	२४।५६	२७।०९	२९।२७	०७।४६	१०।०१	१२।१९	१४।३५	१६।३९	१८।२३	१९।५३
२९	२१।१७	२२।५५	२४।५२	२७।०५	२९।२३	०७।४२	०९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।३५	१८।१९	१९।४९
३०	२१।१३	२२।५१	२४।४८	२७।०१	२९।१९	०७।३८	०९।५३	१२।११	१४।२८	१६।३१	१८।१५	१९।४६
३१	२१।०९	२२।४७	२४।४४	२६।५७	२९।१५	०७।३४	०९।४९	१२।०७	१४।२४	१६।२७	१८।११	१९।४२
सि१	२१।०५	२२।४३	२४।४०	२६।५३	२९।११	०७।३०	०९।४५	१२।०३	१४।२०	१६।२३	१८।०८	१९।३८
०२	२१।०१	२२।३९	२४।३६	२६।४९	२९।०७	०७।२७	०९।४२	११।५९	१४।१६	१६।१९	१८।०४	१९।३४
०३	२०।५७	२२।३५	२४।३२	२६।४५	२९।०३	०७।२३	०९।३८	११।५५	१४।१२	१६।१५	१८।०१	१९।३०
०४	२०।५३	२२।३१	२४।२८	२६।४१	२८।५९	०७।१९	०९।३४	११।५१	१४।०८	१६।११	१७।५६	१९।२६
०५	२०।५०	२२।२७	२४।२४	२६।३७	२८।५५	०७।१५	०९।३०	११।४७	१४।०४	१६।०८	१७।५२	१९।२२
०६	२०।४६	२२।२३	२४।२०	२६।३३	२८।५१	०७।११	०९।२६	११।४३	१४।००	१६।०४	१७।४८	१९।१८
०७	२०।४२	२२।२०	२४।१६	२६।२९	२८।४७	०७।०७	०९।२२	११।३९	१३।५६	१६।०१	१७।४४	१९।१४

D बुधास्त पूर्वे २९।३८ **E** फूलडोल मेला चारभुजा जी मेवाड़ **F** मेवाड़ी पुण्य जैन ईद ए मिलाद बाराहवफात **G** पूफायां बुधः १६।४२ **H** संध्या पूजा प्रा. भागवत सप्ताह समाप्त खग्रास चन्द्रग्रहण

ग्रहगोचरीय फलम्

रवि संक्रमण शनि दिवस, शासन कर्मी द्वंद। श्रमिक द्वन्द भय आपदा, श्रीधर गणना मंद।देव शनि की वक्रता, तेजी सूत कपास।। दलहन में मंदी नहीं, गणना गणित विकास।। षड़ाष्टकी शनि सूर्य की, श्रमिक कोप अधिभार।आन्दोलित जन निर्धना, शासन चित्त प्रहार।। भादव कृष्ण दूज को, सोमवार शुभवार।। पशुओं में वृद्धि घनी, उत्तम पैदावार।। मावस से अधिके नखत सस्ता करै अनाज।हीन नखत मावस बनी, तब तेजी का राज।। भादव मावस वार शनि, करै चौर उत्पात। संकट दुर्भिक्ष दुःख, पिता पुत्र बिलगात।।दोयज भादव बदी में, घटाटोप आकाश। अन्न खरीदो खूब ही, तेजी फागुण मास। भादव शुक्ला चौथ को, नभ न दिखे चन्द। उत्तम वर्षा से रहै, चारों दिसि आनन्द।। भादवा शुक्ला पंचमी, मेघ न बरसे तोय। दैव कोप ही जानिये, सज्जन दुर्जन होय।। भादव शुक्ला सप्तमी, बादल गाज न बीज। यह लक्षण दुर्भिक्ष का, महंगी हो सब चीज।। भादव शुक्ला अष्टमी, निर्मल चन्दा सूर। अन्न वस्त्र तेजी चलै, पांच मास भरपूर। भादवा शुक्ला अष्टमी, निर्मल चंदा सूर। सस्ता सैंधव सूत सन पांच मास भरपूर।। **B** नृप. वाहन महिष वर्षा श्रेष्ठ मघायां सिंहे बुधः १६।४१ **C** मास १ ता ३० प्रारंभ

गोचर ग्रहाः

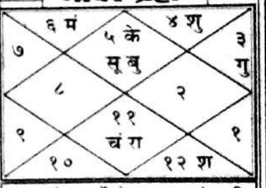

भा. शु. पक्षे १५ सूर्ये स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	१०	०५	०४	०२	०३	११	१०	०४
अं.	२०	१०	२५	१४	२४	२०	०५	२४	२४
क.	२५	२९	३६	२९	४२	३४	२२	०५	०५
वि.	२९	११	३८	५६	१७	०१	४०	४६	४६
ग	५८	८४४	३९	११६	१०	७२	०४	०३	०३
ति	१२	४९	२१	१०	०९	२९	२५	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	पू.फा.३	शत.२	चित्रा १	पू.फा.१	पुनर्व.३	आश्ले.२	उ.भा.१	पू.भा.२	पू.फा.४

आश्विन कृष्ण पक्षः वि. संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

❁❁ ०८ सितम्बर से २१ सितम्बर सन् २०२५ ई. तक ❁❁

शरदऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च उत्तरगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	सूर्यस्पष्ट (प्रातः ५ घं. ३० मि. के) रा.	अं.	क.	वि.	गति	गति	बं. भाद्रं	मु. रबिउल	भा. भाद्र	अं. सित.	
मुसल	१	चं	३७	००	२१	१२	पूभा	३४	०६	२०	०३	धृ/शू	००/५२	१४/११	बा	१०	१०	३०	५५	०६	२४	०६	४६	मी. १४/२१	०४	२१	२३	४१	५८	१४	२४	१५	१७	०८	प्रतिपदा श्राद्ध स्वामी शिवानन्द जन्म विश्व साक्षरता दिवस
सिद्धि	२	मं	३०	१३	१८	३०	उभा	२९	१७	१८	०७	गं	४३	५५	तै	०३	४०	३०	५१	०६	२५	०६	४५	मीन	०४	२२	२१	५६	५८	१६	२५	१६	१८	०९	भ. २१।०५ उ. **द्वितीया श्राद्ध** जिनचन्द्रसूरि दादा मेला बिलाड़ा राज. जैन **A**
चौथव्रत	३	बु	२३	०३	१५	३८	रे	२४	०६	१६	०३	वृ	३५	१६	वि	२३	०३	३०	४७	०६	२५	०६	४४	मे. १६/०३	०४	२३	२०	१२	५८	१८	२६	१७	१९	१०	भ. १५।३८ या. **तृतीया-चतुर्थी श्राद्ध-चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि** २०।२६ **B**
मानस	४	गु	१५	५१	१२	४६	अ	१८	५२	१३	५८	ध्रु	२६	३८	बा	१५	५१	३०	४३	०६	२५	०६	४३	मेष	०४	२४	१८	३०	५८	२०	२७	१८	२०	११	**पंचमी श्राद्ध** सर्वार्थसिद्धि. ०६।२५ उ. १३।५८ या. **B पंचक** १६।०३ या.
मुद्गर	५	शु	०८	५३	०९	५९	भ	१३	५२	११	५९	व्या	१८	१४	तै	०८	५३	३०	४०	०६	२६	०६	४२	वृ. १७/३१	०४	२५	१६	५०	५८	२२	२८	१९	२१	१२	**षष्ठी श्राद्ध D** तुलायां भौमः २१।२१ उफायां बुधः १६।०१ **F** आश्विन मास प्रा.
केतु	६	श	०२	२४	०७	२४	कृ	०९	२३	१०	११	ह	१०	१५	व	०२	२४	३०	३६	०६	२६	०६	४१	वृषभ	०४	२६	१५	१२	५८	२४	२९	२०	२२	१३	भ. ०७।२४ उ. १८।१२ या. **सप्तमी श्राद्ध** सर्वा. अमृत. १०।११ उ. ३०।२७ **C**
क्षय	७	श	५६	३६	२९	०५	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	**C** या. उफायां रविः १५।४१ संग. सू. सू. स्त्री. पु. वाहन जम्बूक वर्षा नेष्ट **D**
धाता	८	र	५१	४०	२७	०७	रो	०५	३६	०८	४१	व/सि	०२/५६	५१/११	बा	२४	०१	३०	३२	०६	२७	०६	३९	मि. २०/०४	०४	२७	१३	३६	५८	२६	३०	२१	२३	१४	**अष्टमी श्राद्ध जीवित्पुत्रिका व्रतं राष्ट्रभाषा दिवस** मघायां सिंहे शुक्रः २४।१६
आनन्द	९	चं	४७	४२	२५	३२	मृ	०२	४२	०७	३२	व्य	५०	१८	तै	१९	३३	३०	२८	०६	२७	०६	३८	मिथुन	०४	२८	१२	०३	५८	२८	३१	२२	२४	१५	**नवमी श्राद्ध मातृ नवमी सौभाग्यवतीनां श्राद्ध** सर्वा. अमृत. ०६।२७ उ. **E**
चर	१०	मं	४४	४८	२४	२३	आ/पुन	००/५९	४७/५६	०६/३०	४६/२६	व	४५	१६	व	१६	०६	३०	२४	०६	२८	०६	३७	क. २४/२९	०४	२९	१०	३२	५८	३०	आ१	२३	२५	१६	भ. १२।५४ उ. २४।२३ या. **दशमी श्राद्ध कन्यायांऽर्कः** २५।४७ बं. **F**
ए. व्रत	११	बु	४३	००	२३	४०	पु	६०	००	-	-	प	४१	०७	ब	१३	४५	३०	२१	०६	२८	०६	३६	कर्क	०५	००	०९	०२	५८	३३	०२	२४	२६	१७	**एकादशी श्राद्ध इंदिरा एकादशी व्रतं सर्वेषाम् विश्वकर्मा पूजा**
शुभ	१२	गु	४२	२२	२३	२५	पु	००	१०	०६	३२	शि	३७	५२	कौ	१२	३२	३०	१७	०६	२८	०६	३५	कर्क	०५	०१	०७	३५	५८	३५	०३	२५	२७	१८	**द्वादशी** ५९ **श्राद्ध सन्यासिनां श्राद्ध गुरू पुष्यः** ०६।२८ उ. ०६।३२ या. **G**
प्रदोष	१३	शु	४२	३२	२३	३७	आ	०१	३३	०७	०६	सि	३५	३१	ग	१२	२८	३०	१३	०६	२९	०६	३४	सिं. ०७/०६	०५	०२	०६	१०	५८	३७	०४	२६	२८	१९	भ. २३।३७ उ. **प्रदोष व्रतं त्रयोदशी श्राद्ध मास शिवरात्रि श्री राम शर्मा ज.**
पद्म	१४	श	४४	३१	२४	१७	म	०४	०२	०८	०६	सा	३४	०४	वि	१३	३२	३०	०९	०६	२९	०६	३३	सिंह	०५	०३	०४	४७	५८	३९	०५	२७	२९	२०	भ. ११।५४ या. **चतुर्दशी श्राद्ध** हस्ते बुधः २४।५२ **दग्धशस्त्रादिहतानां श्राद्धः**
अमावस	३०	र	४७	१७	२५	२४	पूफा	०७	३७	०९	३२	शु	३३	२८	च	१५	४५	३०	०५	०६	३०	०६	३२	क. १५/५८	०५	०४	०३	२७	५८	४१	०६	२८	३०	२१	**देवपितृकार्ये सर्वपितृकार्ये अमावस्या एवं श्राद्ध स्नानं दानं तर्पणञ्च H**

गोचर ग्रहाः

७ मं	६	५ के सू बु
४ शु	३ गु	२ चं
८	११ रा	१
९	१०	१२ श

आ. कृ. पक्षे ८ सूर्ये स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	०१	०६	०४	०२	०३	११	१०	०४
अं.	२७	२१	००	२७	२५	२९	०४	२३	२३
क.	१३	२७	१३	४२	५१	०२	५१	४३	४३
वि.	३६	२४	२७	५४	१३	५३	०७	३०	३०
गति	५८ २६	८६२ ०२	३९ ४८	१११ १२	०९ २५	७२ ५८	०४ ३६	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	उ.फा. १	रोहि. ४	चित्रा ३	उ.फा. १	पुनर्व. २	आर्द्रा ४	उ.भा. १	पू.भा. २	पू.फा. ४

✲ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✲

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
सित.	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं
०८	२०।३८	२२।१६	२४।१२	२६।२५	२८।४३	०७।०३	०९।१८	११।३५	१३।५२	१५।५६	१७।४०	१९।१०
०९	२०।३४	२२।१२	२४।०८	२६।२१	२८।३९	०६।५९	०९।१४	११।३१	१३।४८	१५।५२	१७।३६	१९।०६
१०	२०।३०	२२।०८	२४।०४	२६।१७	२८।३५	०६।५५	०९।१०	११।२८	१३।४४	१५।४८	१७।३२	१९।०२
११	२०।२६	२२।०४	२४।००	२६।१३	२८।३१	०६।५१	०९।०६	११।२४	१३।४०	१५।४४	१७।२८	१८।५८
१२	२०।२२	२२।०१	२३।५६	२६।१०	२८।२७	०६।४७	०९।०२	११।२०	१३।३६	१५।४०	१७।२४	१८।५४
१३	२०।१८	२१।५६	२३।५२	२६।०६	२८।२३	०६।४३	०८।५८	११।१६	१३।३२	१५।३६	१७।२०	१८।५०
१४	२०।१४	२१।५२	२३।४८	२६।०२	२८।१९	०६।३९	०८।५४	११।१२	१३।२८	१५।३२	१७।१६	१८।४६
१५	२०।१०	२१।४८	२३।४४	२५।५८	२८।१५	०६।३५	०८।५०	११।०८	१३।२४	१५।२८	१७।१२	१८।४२
१६	२०।०६	२१।४४	२३।४०	२५।५४	२८।११	०६।३१	०८।४६	११।०४	१३।२०	१५।२४	१७।०८	१८।३८
१७	२०।०२	२१।४०	२३।३६	२५।५०	२८।०७	०६।२७	०८।४२	११।०१	१३।१६	१५।२०	१७।०४	१८।३४
१८	१९।५८	२१।३६	२३।३२	२५।४६	२८।०४	०६।२३	०८।३८	१०।५६	१३।१२	१५।१६	१७।००	१८।३०
१९	१९।५४	२१।३२	२३।२८	२५।४२	२८।०१	०६।१९	०८।३४	१०।५२	१३।०८	१५।१२	१६।५६	१८।२६
२०	१९।५०	२१।२८	२३।२४	२५।३८	२७।५६	०६।१५	०८।३०	१०।४८	१३।०४	१५।०८	१६।५२	१८।२२
२१	१९।४६	२१।२४	२३।२०	२५।३४	२७।५२	०६।११	०८।२६	१०।४४	१३।००	१५।०४	१६।४८	१८।१८

E ०७।३२ या. कन्यायां बुधः ११।०७ **G** सर्वार्थ-अमृत. ०६।२८ उ. ०६।३२ या. **H** श्राद्ध पक्ष पूर्ण खण्डग्रास सूर्यग्रहण विदेशों में सर्वार्थ. ०९।३२ उ. ३०।३० या.

कन्या संक्रान्ति फलम्

आश्विन कृष्ण पक्षे १० भौमे कन्यायांऽर्कः प्र. (स्टे. टा. २५।४७) वा. ४ न. ५ अस्य पुण्यकालः परदिने बुधवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च वन संभागीय रचना गति। वारनाम महोदरी-तस्कर ठग, चौर्यकर्मशील, लोभी, प्रलोभी संग्रहशील, स्टाकिस्ट वर्ग हेतु मनोत्साह वर्धक सुखद। नक्षत्र नाम महोदरी-तस्कर, लोभी प्रलोभी प्रवंचक धूर्त्त, चौर्यकर्मशील, संग्राहक, ठग पक्ष हेतु दिशा पथ सूचक शुभ फलद। रात्रि ३ या. व्या. अभिनेता, चलचित्र निर्माता, नर्तक, गायक, वादक हेतु कष्टद प्रभार सूचक। संक्रांति वास निवास कुंभकार गृहे, बव करणे, वाहन-सिंह, उपवाहन-गज, श्वेत वस्त्र, भुशुण्डा-युध, स्वर्ण पात्र, अन्न भक्षण, कस्तूरी लेपन, देवजाति, पुन्नाग पुष्प, पिरोज भूषण, विचित्र कंचुकी, बालाऽवस्था, उपविष्ठ मुहूर्त्त-४५ धान्य गल्ला स्थिर सम भाव। साबुदाना, मोंठ, मूंग, जौ, चना, बाजरा, ज्वार, मक्का, गेहूँ, सफेद रंग वस्तु, सुगंधी पदार्थ, चावल, कंदमूल पदार्थ, कपास, सूत, चांदी, सोना, सफेद वस्त्र, हाथी आदि वस्तु कार्य लाभद भावी तेज धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स पूर्वे, राहू उत्तरे, मूल स्वर्गे। **A** सर्वा. ०६।२५ उ. १८।०७ या.

गोचर ग्रहाः

७ मं	६ सू बु	५ शु चं के
८	४	३ गु
९	१२ श	२
१०	११ रा	१

आ. कृ. पक्षे ३० सूर्ये स्टै. टा. प्रा. ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	०४	०६	०५	०२	०४	११	१०	०४
अं.	०४	२४	०४	१०	२६	०७	०४	२३	२३
क.	०३	३३	५३	२०	५४	३४	१८	२१	२१
वि.	२७	५२	२५	११	४४	५६	३९	१५	१५
गति	५८ ४१	७८४ ३४	४० १५	१०४ ०७	०८ ३५	७३ २३	०४ ४०	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	उ.फा. ३	पू.फा. ४	चित्रा ४	हस्त १	पुनर्व. ३	मघा ३	उ.भा. १	पू.भा. २	पू.फा. ४

आश्विन शुक्ल पक्षः विक्रम संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

❀❀ २२ सितम्बर से ७ अक्टूबर सन् २०२५ ई. तक ❀❀

शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च उत्तर-दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. (रा. घं. मि.)	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. के (रा. अं. क. वि.)	गति	विविधतारीखें बं. (आश्विनं)	मु. (रबिउल)	भा. (भाद्रं)	अं. (सितं.)	
श्रीवत्स	१	चं	५१	०६	२६	५७	उफा	१२	१६	११	२४	शु	३३	४२	किं	११	०३	३०	०१	०६	३०	०६	३१	कन्या	०५ ०५ ०२ ०८	५८ ४३	०७	२९	३१	२२	मातामह श्राद्ध शरद नवरात्रि प्रा. घटस्थापना श्री अग्रसेन ज. ५१४९वीं **A**
सौम्य	२	मं	५५	५४	२८	५२	ह	१७	५४	१३	४०	ब्र	३४	४१	बा	२३	२३	२९	५८	०६	३०	०६	२९	तु. २६/५६	०५ ०६ ०० ५१	५८ ४५	०८	३०	आ१	२३	**चन्द्रदर्शनं** रा. आश्विन मास प्रा. स्वात्यां भौमः २०।५६ **E** उफायां शुक्रः १८।०५
कालदंड	३	बु	६०	००	-	-	चि	२४	२५	१६	१७	ऐं	३६	११	तै	२८	३६	२९	५४	०६	३१	०६	२८	तुला	०५ ०६ ५९ ३६	५८ ४७	०९	र१	०२	२४	रविउल आखिर मास ४ मुस. **A रवि दक्षिणगोलीय प्रा.** तुलायां भानुः २३।४९
सुस्थिर	३	गु	०१	२८	०७	०७	स्वा	३१	३४	१९	०९	वै	३८	२६	ग	०१	२८	२९	५०	०६	३१	०६	२७	तुला	०५ ०७ ५८ २३	५८ ४९	१०	०२	०३	२५	भ. २०।११ उ. पूफायां शुक्रः २२।१०
मातंग	४	शु	०७	३५	०९	३४	वि	३९	०४	२२	०९	वि	४०	४६	वि	०७	३५	२९	४६	०६	३२	०६	२६	वृ. १५/२४	०५ ०८ ५७ ११	५८ ५०	११	०३	०४	२६	भ. ०९।३४ या. **उपांगललिता व्रतं** सर्वार्थसिद्धि. २२।०९ उ. ३०।३२ या.
अमृत	५	श	१३	५०	१२	०४	अ	४६	३०	२५	०८	प्री	४३	०४	बा	१३	५०	२९	४२	०६	३२	०६	२५	वृश्चिक	०५ ०९ ५६ ०२	५८ ५२	१२	०४	०५	२७	**हस्ते रविः** ०७।०७ संग. सू. सू. स्त्री. नपुं. वाहन चातक वर्षा श्रेष्ठ
काण	६	र	१९	४८	१४	२८	ज्ये	५३	२६	२७	५५	आ	४४	५८	तै	१९	४८	२९	३८	०६	३३	०६	२४	ध. २७/५५	०५ १० ५४ ५४	५८ ५४	१३	०५	०६	२८	**शहीद भगतसिंह ज.** सर्वा. २७।५५ उ. ३०।३३ या. चित्रायां बुधः २३।०५
लुम्बक	७	चं	२४	५८	१६	३२	मू	५९	२२	३०	१८	सौ	४६	०८	व	२४	५८	२९	३४	०६	३३	०६	२३	धनु	०५ ११ ५३ ४८	५८ ५६	१४	०६	०७	२९	भ. १६।३२ उ. २९।२४ या. **सरस्वती आवाहनं नवपद ओली प्रारंभ जैन**
मित्र	८	मं	२८	५३	१८	०७	पूषा	६०	००	-	-	शो	४६	१४	ब	२८	५३	२९	३१	०६	३३	०६	२२	धनु	०५ १२ ५२ ४४	५८ ५७	१५	०७	०८	३०	**सरस्वती पूजनं महाष्टमी दुर्गाष्टमी पूजा बैंक अर्द्धवार्षिक लेखाबंदी**
श्रीवत्स	९	बु	३१	१०	१९	०२	पूषा	०३	५१	०८	०६	अ	४४	५९	बा	००	१४	२९	२७	०६	३४	०६	२१	म. १४/२७	०५ १३ ५१ ४१	५८ ५९	१६	०८	०९	अ१	**सरस्वती बलिदानं** ०८।०६ **उ. दुर्गानवमी पूजा** अक्टूबर मा. १० ता. ३१ प्रा.
सौम्य	१०	गु	३१	३३	१९	११	उषा	०६	३८	०९	१३	सु	४२	१५	तै	०१	३५	२९	२३	०६	३४	०६	१९	मकर	०५ १४ ५० ४१	५९ ०१	१७	०९	१०	०२	**सरस्वती विसर्जनं** ०९।१३ **उ. विजया दशमी दशहरा अपराजिता शमी B**
ए. व्रत	११	शु	२९	५८	१८	३४	श्र	०७	२९	०९	३५	धृ	३७	५७	व	००	५९	२९	१९	०६	३५	०६	१८	कुं. २१/२८	०५ १५ ४९ ४२	५९ ०३	१८	१०	११	०३	भ. ०६।५९ उ. १८।३४ या. **पापांकुशा ११ व्रतं सर्वे. पंचक** २१।२८ **उ. C**
प्रदोष	१२	श	२६	२७	१७	१०	घ	०६	२६	०९	०९	शू	३२	०८	बा	२६	२७	२९	१५	०६	३५	०६	१७	कुंभ	०५ १६ ४८ ४४	५९ ०५	१९	११	१२	०४	**शनि प्रदोष व्रतं C** सर्वा. ०६।३५ उ. ०९।३५ या. पूभायां १ शनिः २३।४६
राक्षस	१३	र	२१	१२	१५	०५	शत/पूभा	०३/५९	३४/११	०८/३०	०९/१६	गं	२४	५६	तै	२१	१२	२९	११	०६	३६	०६	१६	मी. २४/४६	०५ १७ ४७ ४९	५९ ०६	२०	१२	१३	०५	सर्वा. ३०।१६ उ. ३०।३६ या. **D लक्ष्मीचन्द्र पूजा बुधोदय पश्चिमे** १९।०४ **E**
गद	१४	चं	१४	३०	१२	२४	उभा	५३	३४	२८	०२	वृ	१६	३३	व	१४	३०	२९	०८	०६	३६	०६	१५	मीन	०५ १८ ४६ ५५	५९ ०८	२१	१३	१४	०६	भ. १२।२४ उ. २२।५४ या. **शरद पूर्णिमा व्रतं क्षीरपानं कोजागरी व्रतं D**
पूर्णिमा	१५	मं	०६	४३	०९	१८	रे	४७	०९	२५	२८	धु/व्या	०७/५७	१७/२६	व	०६	४३	२९	०४	०६	३७	०६	१४	मे. २५/२८	०५ १९ ४६ ०४	५९ ११	२२	१४	१५	०७	**पंचक** २५।२८ **या. पूर्णिमा पुण्यः श्री वाल्मिकी ज. श्री पाराशर ऋषि F**

गोचर ग्रहाः

७ मं	६	५ शु के	४
८	सू बु	३	
९ चं		गु	
१०	१२ श		२
११ रा		१	

आ. शु. पक्षे ८ भौमे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	०८	०६	०५	०२	०४	११	१०	०४
अं.	[illegible]	[illegible]	१०	२५	२८	१८	०३	२२	२२
क.	५२	५५	५८	२२	०७	३७	३६	५२	५२
वि.	[illegible]	३७	००	२८	२१	१८	५८	३८	३८
ग	[illegible]	[illegible]	४०	[illegible]	०७	[illegible]	०४	०३	०३
ति	[illegible]	[illegible]	४१	४०	२३	५१	३३	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	हस्त १	मूल ४	स्वाति २	विशाखा १	पुनर्वसु ३	पू.फा. १	उ.भा. १	पू.भा. १	पू.फा. ३

✲ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✲

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
सित.	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं
२२	१९।४२	२१।२०	२३।१६	२५।३०	२७।४८	३०।०३	०८।२२	१०।४०	१२।५६	१५।०१	१६।४४	१८।१४
२३	१९।३८	२१।१६	२३।१२	२५।२६	२७।४४	२९।५९	०८।१८	१०।३६	१२।५२	१४।५६	१६।४०	१८।१०
२४	१९।३४	२१।१२	२३।०९	२५।२२	२७।४०	२९।५५	०८।१४	१०।३२	१२।४८	१४।५२	१६।३६	१८।०६
२५	१९।३०	२१।०८	२३।०५	२५।१८	२७।३६	२९।५१	०८।१०	१०।२८	१२।४४	१४।४८	१६।३२	१८।०२
२६	१९।२६	२१।०४	२३।०१	२५।१४	२७।३२	२९।४७	०८।०६	१०।२४	१२।४०	१४।४४	१६।२८	१७।५८
२७	१९।२२	२१।०१	२२।५७	२५।१०	२७।२८	२९।४३	०८।०२	१०।२०	१२।३६	१४।४०	१६।२४	१७।५४
२८	१९।१८	२०।५६	२२।५३	२५।०६	२७।२४	२९।३९	०७।५८	१०।१६	१२।३३	१४।३६	१६।२०	१७।५०
२९	१९।१४	२०।५२	२२।४९	२५।०२	२७।२०	२९।३५	०७।५४	१०।१२	१२।२९	१४।३२	१६।१६	१७।४६
३०	१९।१०	२०।४८	२२।४५	२४।५८	२७।१६	२९।३१	०७।५०	१०।०८	१२।२५	१४।२८	१६।१२	१७।४२
अ१	१९।०६	२०।४४	२२।४१	२४।५४	२७।१२	२९।२७	०७।४६	१०।०४	१२।२१	१४।२४	१६।०८	१७।३८
०२	१९।०२	२०।४०	२२।३७	२४।५०	२७।०८	२९।२३	०७।४२	१०।०१	१२।१७	१४।२०	१६।०४	१७।३४
०३	१८।५८	२०।३६	२२।३३	२४।४६	२७।०४	२९।१९	०७।३८	०९।५६	१२।१३	१४।१६	१६।००	१७।३०
०४	१८।५४	२०।३२	२२।२९	२४।४२	२७।०१	२९।१५	०७।३४	०९।५२	१२।०९	१४।१२	१५।५६	१७।२७
०५	१८।५०	२०।२८	२२।२५	२४।३८	२६।५६	२९।११	०७।३०	०९।४८	१२।०५	१४।०८	१५।५२	१७।२३
०६	१८।४६	२०।२४	२२।२१	२४।३४	२६।५२	२९।०७	०७।२६	०९।४४	१२।०१	१४।०४	१५।४८	१७।१९
०७	१८।४२	२०।२०	२२।१७	२४।३०	२६।४८	२९।०४	०७।२२	०९।४०	११।५७	१४।००	१५।४४	१७।१५

माधवाचार्य ज. श्री गांधी-शास्त्री ज. तुलायां बुधः २७।४३ **F** ज. मतान्तरे कार्तिक स्नान प्रा. कृषक भूमि पूजा नवपद ओली पूर्ण स्वात्यां बुधः १२।१७ सर्वा. अमृत. २५।२८ उ. ३०।३७ या.

ग्रहगोचरीय फलम्

किसी राशि पर संक्रमण करे, भौम दिन सूर। तेल नमक रस घी सहित, तेजी होय कपूर।। देव शनि की वक्रता, तेजी सूत कपास। दलहन में मंदी नहीं, गणना गणित विकास।। पड़वा दशमी अष्टमी, कृष्ण पक्ष आसौज। बादल हों तो शीघ्र ही, वर्षा से हो मौज।। आश्विन लागत चौथ को, बादल निकसे सूर। क्षेम कुशल आरोग्यता, वर्षा हो भरपूर।। दशमी ग्यारस द्वादशी लागत आश्विन मास। बिजली बादल गाज हो, जौ गेहूँ का नास।। आश्विन भरणी कृतिका में, जो शशि कुण्डल होय। अन्न इकट्ठा करैं तो, लाभ लहैं सब कोय।। साते आठे सुदी में, बरसे, आश्विन मास। बढ़ै शांति सुख सम्पदा, विग्रह होय विनास।। बादल वर्षा बिजली, विजया दशमी देख। मूंग उर्द तिल तेल में, तेजी रहे विशेष।। आश्विन पूनम निर्मला, गगन स्वच्छ आकाश। मेघ गाज वर्षा यदि, तेजी धान्य प्रकाश।। भाव ताव व्यापार में, घटबढ़ बने अपार।। लोभी लेवे आपदा, व्यापारे सुख सार।। चलन-कलन शनि सूर्य का, निर्धन जग अभिसार। सेवाकर्मी कोप मे, शासन तंत्र विचार।। अर्थ पक्ष अभिनव गति। धनिक त्रास अभियोग। बैंक कोष मुद्रा विषय, नीति नव्य प्रयोग।। **B** पूजा बौद्धावतारः

गोचर ग्रहाः

७ मं बु	६	५ शु के	४
८	सू	३	
९		गु	
१०	१२ श चं		२
११ रा		१	

आ. शु. पक्षे १५ भौमे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	११	०६	०६	०२	०४	११	१०	०४
अं.	१९	१७	१५	०६	२८	२७	०३	२२	२२
क.	४६	३४	४५	१४	५६	१५	०५	३०	३०
वि.	०४	२५	००	३०	०२	१०	४३	२२	२२
ग	५९	८१६	४१	८१	०६	७४	०४	०३	०३
ति	१०	५०	१५	५२	२२	१०	२०	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	हस्त ३	रेवती १	स्वाति ३	विशाखा ४	पुनर्वसु ३	उ.फा. १	पू.भा. ४	पू.भा. १	पू.फा. ३

कार्तिक कृष्ण पक्षः वि. संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

८ अक्टू. से २१ अक्टूबर सन् २०२५ ई. तक

शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा. अं. क. वि.	गति	विविध तारीखें बं.	मु.	भा.	अं.	
क्षय	१	मं	५८	१३	२९	५४	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	० ० ० ०	० ०	००	००	००	००	D सर्वा. ०६।४३ उ. ३०।४३ या. अमृतसिद्धि योग १७।५० उ. ३०।४३ या.
मृत्यु	२	बु	४९	२५	२६	२३	अ	४०	२०	२२	४५	ह	४७	१९	तै	२३	४९	२९	००	०६	३७	०६	१३	मेष	[illegible]	[illegible]	२३	१५	१६	०८	वायु सेना दिवस A रविः २०।१२ संग. सू. सू. स्त्री. पु. वाहन गज वर्षा श्रेष्ठ
पद्म	३	गु	४०	४३	२२	५५	भ	३३	३३	२०	०३	व	३७	१७	व	१५	०१	२८	५६	०६	३८	०६	१२	वृ. २५/२३	[illegible]	[illegible]	२४	१६	१७	०९	भ. १२।४८ उ. २२।५५ या. **विश्व डाक दिवस** कन्यायां शुक्रः १०।४७
चौथव्रत	४	शु	३२	३२	१९	३९	कृ	२७	१३	१७	३१	सि	२७	३८	ब	०६	३२	२८	५२	०६	३८	०६	११	वृषभ	[illegible]	[illegible]	२५	१७	१८	१०	**करक करवा चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि २०।३७ चित्रायां A**
श्रीवत्स	५	श	२५	१४	१६	४४	रो	२१	४४	१५	२०	व्य	१८	४१	तै	२५	१४	२८	४९	०६	३९	०६	१०	मि. २६/२४	[illegible]	[illegible]	२६	१८	१९	११	**पद्म प्रभु जन्म जैन** सर्वार्थ. अमृत. ०६।३९ उ. १५।२० या.
सौम्य	६	र	११	०६	१४	१७	मृ	१७	२४	१३	३७	व	१०	४०	व	११	०६	२८	४५	०६	३९	०६	०९	मिथुन	[illegible]	[illegible]	२७	१९	२०	१२	भ. १४।१७ उ. २५।१७ या. **E महावीर स्वामी निर्वाण जैन महर्षि दयानन्द पु.**
कालदंड	७	चं	१४	२३	१२	२५	आ	१४	२९	१२	२७	प/शि	०३/५८	४७/०१	ब	१४	२३	२८	४१	०६	४०	०६	०८	क. २१/५१	[illegible]	[illegible]	२८	२०	२१	१३	**अहोई अष्टमी चन्द्रोदय रात्रि २३।४४ कालाष्टमी** विशाखायां भौमः ०१।१६
सुस्थिर	८	मं	११	१५	११	१०	पुन	१३	०६	११	५४	सि	५३	४७	कौ	११	१५	२८	३७	०६	४०	०६	०७	कर्क	[illegible]	[illegible]	२९	२१	२२	१४	**श्री विश्नोई पंथ स्थापना दिवस C** गुरुः ११।४७
मातंग	९	बु	०९	४४	१०	३४	पु	१३	११	१२	००	सा	५०	४१	ग	०९	४४	२८	३४	०६	४१	०६	०६	कर्क	[illegible]	[illegible]	३०	२२	२३	१५	भ. २२।३१ उ. **B संकल्प दिवस** हस्ते शुक्रः १२।१८ वं. कार्तिक मास प्रा.
अमृत	१०	गु	०९	४८	१०	३६	आ	१५	०३	१२	४२	शु	४८	४३	वि	०९	४८	२८	३०	०६	४१	०६	०५	सिं. १२/४२	[illegible]	[illegible]	३१	२३	२४	१६	भ. १०।३६ या. **विश्व खाद्य दिवस** विशाखायां बुधः ११।०५
ए. व्रत	११	शु	११	१८	११	१३	म	१८	१०	१३	५८	शु	४७	४८	बा	११	१८	२८	२६	०६	४२	०६	०४	सिंह	[illegible]	[illegible]	का१	२४	२५	१७	**रमा एकादशी व्रतं सर्वे. तुलायांऽर्कः** १३।४६ **गोवत्स द्वादशी गौ सेवा B**
प्रदोष	१२	श	१४	०४	१२	२०	पूफा	२२	२९	१५	४२	ब्र	४७	४४	तै	१४	०४	२८	२२	०६	४२	०६	०३	क. २२/१२	[illegible]	[illegible]	०२	२५	२६	१८	**शनि प्रदोष व्रतं धनतेरस यमदीपदानं धन्वंतरी ज.** पुनर्वसौ ४ कर्के **C**
मित्र	१३	र	१७	५३	१३	५२	उफा	२७	४७	१७	५०	ऐं	४८	२४	व	१७	५३	२८	१९	०६	४३	०६	०२	कन्या	[illegible]	[illegible]	०३	२६	२७	१९	भ. १३।५२ उ. २६।४६ या. **हनुमान जयंती मतान्तरे मास शिवरात्रि D**
वज्र	१४	चं	२२	३५	१५	४५	ह	३३	५४	२०	१७	वै	४९	३९	श	२२	३५	२८	१५	०६	४३	०६	०१	कन्या	[illegible]	[illegible]	०४	२७	२८	२०	**रूप चतुर्दशी नरक चतुर्दशी अरूणोदयः स्नान**
अमावस	३०	मं	२७	५८	१७	५५	चि	४०	३७	२२	५९	वि	५१	२१	ना	२७	५८	२८	११	०६	४४	०६	००	तु. ०१/३६	[illegible]	[illegible]	०५	२८	२९	२१	**देवपितृकार्ये भौमवती अमावस्या महालक्ष्मी पूजा दीपोत्सव दीपावली E**

गोचर ग्रहाः

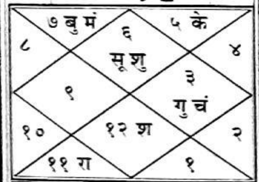

का. कृ. पक्षे ८ भौमे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.									
ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	०२	०६	०६	०२	०५	११	१०	०४
अं.	२६	२१	२०	१६	२१	०५	०२	२२	२२
क.	४१	४३	३५	२६	३७	५५	३६	०८	०८
वि.	०३	३४	०२	२३	१७	१५	२०	०७	०७
ग	५९	८०२	४१	८४	०५	६४	०४	०३	०३
ति	२६	३५	४१	०१	१५	२८	०१	११	११
म. व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ. अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	चित्रा २	पुनर्व. ३	विशा. १	स्वाति ३	पुनर्व. ३	उ.फा. ३	पू.भा. ४	पू.भा. १	पू.फा. ३

✲ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✲

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
अक्टू.	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा
०८	१८।३८	२०।१६	२२।१३	२४।२६	२६।४४	२९।०१	०७।१८	०९।३६	११।५३	१३।५६	१५।४१	१७।११
०९	१८।३४	२०।१२	२२।०९	२४।२२	२६।४०	२८।५६	०७।१५	०९।३२	११।४९	१३।५२	१५।३७	१७।०७
१०	१८।३०	२०।०८	२२।०५	२४।१८	२६।३६	२८।५२	०७।११	०९।२८	११।४५	१३।४८	१५।३३	१७।०३
११	१८।२६	२०।०४	२२।०१	२४।१४	२६।३२	२८।४८	०७।०७	०९।२४	११।४१	१३।४४	१५।२९	१६।५९
१२	१८।२२	२०।००	२१।५७	२४।१०	२६।२८	२८।४४	०७।०३	०९।२०	११।३७	१३।४०	१५।२५	१६।५५
१३	१८।१९	१९।५६	२१।५३	२४।०६	२६।२४	२८।४०	०६।५९	०९।१६	११।३३	१३।३७	१५।२१	१६।५१
१४	१८।१५	१९।५३	२१।४९	२४।०२	२६।२०	२८।३६	०६।५५	०९।१२	११।२९	१३।३३	१५।१७	१६।४७
१५	१८।११	१९।४९	२१।४५	२३।५८	२६।१६	२८।३२	०६।५१	०९।०८	११।२५	१३।२९	१५।१३	१६।४३
१६	१८।०७	१९।४५	२१।४१	२३।५४	२६।१२	२८।२८	०६।४७	०९।०५	११।२१	१३।२५	१५।०९	१६।३९
१७	१८।०३	१९।४१	२१।३७	२३।५१	२६।०८	२८।२४	०६।४३	०९।०१	११।१७	१३।२१	१५।०५	१६।३५
१८	१७।५९	१९।३७	२१।३३	२३।४७	२६।०४	२८।२०	०६।३९	०८।५७	११।१३	१३।१७	१५।०१	१६।३१
१९	१७।५५	१९।३३	२१।२९	२३।४३	२६।०१	२८।१६	०६।३५	०८।५३	११।०९	१३।१३	१४।५७	१६।२७
२०	१७।५१	१९।२९	२१।२६	२३।३९	२५।५७	२८।१२	०६।३१	०८।४९	११।०६	१३।०९	१४।५३	१६।२३
२१	१७।४७	१९।२५	२१।२२	२३।३५	२५।५३	२८।०८	०६।२७	०८।४५	११।०२	१३।०५	१४।४९	१६।१९

शेयर बाजार, वायदा बाजार की जानकारी हेतु **श्रीधरी तेजी मंदी रिपोर्ट** सन् 2025 की मंगवाकर लाभ उठायें।

तुला संक्रान्ति फलम्

कार्त्तिक कृष्ण पक्षे ११ शुक्रे तुलायांऽर्कः प्र. (स्टे. टा. १३।४६) वा. ४ न. ४ अस्य पुण्यकालः अद्यैव शुक्रवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च तीर्थं संभागीय रचना गति। वार नाम मिश्रा-शासकीय पशु धन विकास योजना। पशुपालकों की सुविधा, डेयरी फार्म, दुग्ध उत्पादन पक्ष हेतु सुयोग। नक्षत्र नाम-घोरा-सुदूर, जंगल, पर्वत निवासी, आदिवासी, निर्धन, वयोवृद्ध, अनुसूचित जनजाति हेतु शासकीय सुलाभ नवीन योजना। दिवा ३ याम् व्यापिनी आयात-निर्यातक, व्यापारी, स्वतंत्र कार्यकर्त्ता, उद्योगपति, वैश्य, शेयर बाजार कारक पक्ष हेतु कष्टद प्रभार सूचक। दक्षिणे गमन, नैऋत्यां दृष्टिः, संक्रांति वास निवास माली गृहे, कौलव करणे, वाहन-वराह, उपवाहन-वृषभ, हरित वस्त्र, खड्गायुध, ताम्रपात्र, भिक्षान्न भक्षण, चन्दन लेपन, सर्पजाति, बकुल पुष्प, मुक्ता भूषण, हरित कंचुकी, गतालकाऽवस्था, उत्तिष्ठा मुहूर्त-३० धान्य गल्ला स्थिर सम भाव। शक्कर, घी, रसायन, द्रव्य, तांबा, खोपरा, गोला, मिर्च, मसूर, मेहंदी, हरे मूंग, सौंफ, धनिया, इत्र, चन्दन, मोती, हरा वस्त्र, बैल, उन्नत धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स पूर्वे, राहू उत्तरे, मूल भूमौ।

गोचर ग्रहाः

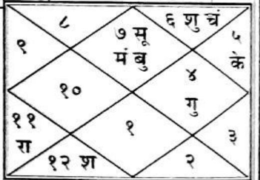

का. कृ. पक्षे ३० भौमे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.									
ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	०५	०६	०६	०३	०५	११	१०	०४
अं.	०३	२७	२५	२५	००	१४	०२	२१	२१
क.	३७	५६	२८	५३	१०	३७	०९	४५	४५
वि.	५४	५६	१२	३३	२६	११	३६	५२	५२
ग	५९	७९३	४२	७६	०४	७४	०३	०३	०३
ति	४२	२८	०८	२८	०२	४३	३४	११	११
म. व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ. अ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	चित्रा ४	चित्रा २	विशा. १	विशा. २	पुनर्व. ४	हस्त २	पू.भा. ४	पू.भा. २	पू.फा. ३

कार्तिक शुक्ल पक्षः वि. संवत् २०८२ राष्ट्रीय शाकः १९४७

२२ अक्टूबर से ५ नवम्बर सन् २०२५ ई. तक

शरद-हेमन्त ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
धूम्र	१	बु	३३	५२	२०	१७	स्वा	४७	४८	२५	५२	प्री	५३	२२	किं	००	५१	२८	०८	०६	४४	०६	००
प्रवर्ध	२	गु	४०	०६	२२	४७	वि	५५	१५	२८	५१	आ	५५	३६	बा	०६	५६	२८	०४	०६	४५	०५	५९
राक्षस	३	शु	४६	२६	२५	२०	अ	६०	००	-	-	सौ	५७	५२	तै	१३	१५	२८	०१	०६	४६	०५	५८
अमृत	४	श	५२	३७	२७	४९	अ	०२	४४	०७	५२	शो	५९	५८	व	१९	३३	२७	५७	०६	४६	०५	५७
काण	५	र	५८	१६	३०	०५	ज्ये	१०	००	१०	४७	अ	६०	००	ब	२५	३१	२७	५३	०६	४७	०५	५६
लुम्बक	६	चं	६०	००	-	-	मू	१६	४०	१३	२८	अ	०१	३७	कौ	३०	४७	२७	५०	०६	४७	०५	५५
मित्र	६	मं	०३	००	०८	००	पूषा	२२	२३	१५	४५	सु	०२	३६	तै	०३	००	२७	४६	०६	४८	०५	५५
वज्र	७	बु	०६	२७	०९	२४	उषा	२६	४३	१७	३०	धृ	०२	३५	व	०६	२७	२७	४३	०६	४९	०५	५४
केतु	८	गु	०८	१४	१०	०७	श्र	२९	२१	१८	३४	शू/गं	०१/५८	१८/३५	ब	०८	१४	२७	३९	०६	४९	०५	५३
धाता	९	शु	०८	०५	१०	०४	ध	३०	०३	१८	५१	वृ	५४	१४	कौ	०८	०५	२७	३६	०६	५०	०५	५२
ए. व्रत	१०	श	०५	५४	०९	१२	श	२८	४५	१८	२१	ध्रु	४८	१७	ग	०५	५४	२७	३३	०६	५१	०५	५२
चर	११	र	०१	४२	०७	३२	पूभा	२५	३१	१७	०४	व्या	४०	४८	वि	०१	४२	२७	२९	०६	५१	०५	५१
क्षय	१२	र	५५	४१	२९	०८	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
प्रदोष	१३	चं	४८	०६	२६	०६	उभा	२०	३५	१५	०६	ह	३१	५९	कौ	२२	०३	२७	२६	०६	५२	०५	५०
शुभ	१४	मं	३९	२०	२२	३७	रे	१४	१५	१२	३५	व	२२	०५	ग	१३	५०	२७	२३	०६	५३	०५	५०
पूर्णिमा	१५	बु	२९	५०	१८	४९	अ/भ	०६/५९	५८/१२	०९/३०	४०/३४	सि	११	२७	वि	०४	३८	२७	१९	०६	५३	०५	४९

योगाः	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति	विविध तारीखें बं. कार्ति.	मु. रबिउल	भा. आश्वि.	अं. अक्टू.	
धूम्र	तुला	०६	०४	३७	३६	५९ ४३	०६	२९	३०	२२	अन्नकूट गोवर्धन पूजा बलि पूजा जैन महावीर संवत् २५५२ प्रा. **A**
प्रवर्ध	वृ. २२/०६	०६	०५	३७	१९	५९ ४५	०७	३०	का१	२३	चन्द्रदर्शनं भाई दूज यम द्वितीया विश्वकर्मा-चित्रगुप्त पूजा वल्लभसूरि **B**
राक्षस	वृश्चिक	०६	०६	३७	०५	५९ ४७	०८	ज१	०२	२४	भगिनी तीज संयुक्त राष्ट्र दि. सर्वा. ३०।४६ या. वृश्चिके बुधः १२।३७ **C**
अमृत	वृश्चिक	०६	०७	३६	५२	५९ ४९	०९	०२	०३	२५	भ. १४।३५ उ. २७।४९ या. **H** सर्वा. १७।०४ उ. ३०।५२ या. तुलायां शुक्रः १३।१४
काण	ध. १०/४७	०६	०८	३६	४१	५९ ५१	१०	०३	०४	२६	सौभाग्य-ज्ञान-लाभ-पांडव पंचमी आचार्य जिन उदय सागर पुण्यः **D**
लुम्बक	धनु	०६	०९	३६	३२	५९ ५३	११	०४	०५	२७	सूर्य षष्ठी डालाछठ वृश्चिके भौमः १५।४१ अनुराधायां बुधः ०९।३१ **E**
मित्र	म. २२/१५	०६	१०	३६	२४	५९ ५४	१२	०५	०६	२८	चौमासी अष्टाह्निका विधान प्रारंभ जैन **C** जमादि अव्वल मास ५ मुस.
वज्र	मकर	०६	११	३६	१८	५९ ५६	१३	०६	०७	२९	भ. ०९।२४ उ. २१।५१ या. सहस्त्रार्जुन ज. माधवानन्द पुरी पुण्यः पाली **F**
केतु	कुं. ३०/४८	०६	१२	३६	१४	५९ ५७	१४	०७	०८	३०	गोपाष्टमी अक्षय आंवला नवमी पंचक ३०।४८ उ. **E** चित्रायां शुक्रः २९।१०
धाता	कुंभ	०६	१३	३६	१२	५९ ५९	१५	०८	०९	३१	सरदार पटेल जयंती रा. एकता दि. **A** गुजराती नववर्ष प्रा. गौतम **A1**
ए. व्रत	कुंभ	०६	१४	३६	११	६० ०१	१६	०९	१०	न१	भ. २०।२८ उ. देवप्रबोधिनी एकादशी व्रतं स्मार्त्त भीष्मपंचक व्रतारंभ **G**
चर	मी. ११/२७	०६	१५	३६	११	६० ०२	१७	१०	११	०२	भ. ०७।३२ या. देवप्रबोधिनी ११ व्रतं वैष्णव निम्बार्क तुलसी विवाह **H**
क्षय	० ०	००	००	००	००	०० ००	००	००	००	००	**G** चातुर्मास पूर्णताः नवम्बर मास ११ ता. ३० प्रा. अनुराधायां भौमः ०८।१६
प्रदोष	मीन	०६	१६	३६	१४	६० ०४	१८	११	१२	०३	सोम प्रदोष व्रतं जैन दिवाकर चौथमल पुण्य **A1** स्वामी रास वाचन जैन
शुभ	मे. १२/३५	०६	१७	३६	१८	६० ०६	१९	१२	१३	०४	भ. २२।३७ उ. पंचक १२।३५ या. वैकुण्ठ चतुर्दशी चौमासी चौदस **I**
पूर्णिमा	मेष	०६	१८	३६	२३	६० ०७	२०	१३	१४	०५	भ. ०८।४५ या. पूर्णिमा व्रतं गुरू नानक ज. कार्त्तिक स्नान पूर्ण मेला **J**

गोचर ग्रहाः

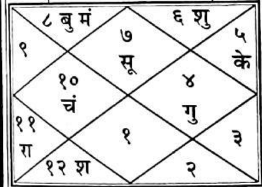

का.शु. पक्षे ८ गुरौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	०९	०७	०७	०३	०५	११	१०	०४
अं.	१२	१६	०१	०६	००	२५	०१	२१	२१
क.	३६	२०	४९	११	४०	५०	४०	१७	१७
वि.	१४	०८	३६	२७	१२	४८	१७	१५	१५
गति	५९ ५७	७७६ ४९	४२ ४१	५७ ५९	०२ २२	७४ ५७	०२ ५१	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	स्वाति२	श्रवण२	विशा.४	अनुरा.१	पुनर्व.४	चित्रा१	पू.भा.४	पू.भा.१	पू.फा.३

✲ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✲

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
अक्टू.	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा
२२	१७।४३	१९।२१	२१।१८	२३।३१	२५।४९	२८।०४	३०।१९	०८।४१	१०।५८	१३।०१	१४।४५	१६।१६
२३	१७।३९	१९।१७	२१।१४	२३।२७	२५।४५	२८।०१	३०।१६	०८।३७	१०।५४	१२।५७	१४।४२	१६।१२
२४	१७।३५	१९।१३	२१।१०	२३।२३	२५।४१	२७।५७	३०।१२	०८।३३	१०।५०	१२।५३	१४।३८	१६।०८
२५	१७।३१	१९।०९	२१।०६	२३।१९	२५।३७	२७।५३	३०।०८	०८।२९	१०।४६	१२।४९	१४।३४	१६।०४
२६	१७।२७	१९।०५	२१।०२	२३।१५	२५।३३	२७।४९	३०।०४	०८।२५	१०।४२	१२।४५	१४।३०	१६।०१
२७	१७।२३	१९।०१	२०।५८	२३।११	२५।२९	२७।४५	३०।०१	०८।२१	१०।३८	१२।४१	१४।२६	१५।५६
२८	१७।१९	१८।५७	२०।५४	२३।०७	२५।२५	२७।४१	२९।५६	०८।१७	१०।३४	१२।३७	१४।२२	१५।५२
२९	१७।१५	१८।५३	२०।५०	२३।०३	२५।२१	२७।३७	२९।५२	०८।१३	१०।३०	१२।३३	१४।१८	१५।४८
३०	१७।११	१८।४९	२०।४६	२२।५९	२५।१७	२७।३३	२९।४८	०८।०९	१०।२६	१२।२९	१४।१४	१५।४४
३१	१७।०७	१८।४५	२०।४२	२२।५५	२५।१३	२७।२९	२९।४४	०८।०५	१०।२२	१२।२५	१४।१०	१५।४०
न१	१७।०४	१८।४१	२०।३८	२२।५१	२५।०९	२७।२५	२९।४०	०८।०१	१०।१८	१२।२१	१४।०६	१५।३६
०२	१७।०१	१८।३७	२०।३४	२२।४७	२५।०५	२७।२१	२९।३६	०७।५७	१०।१४	१२।१८	१४।०२	१५।३२
०३	१६।५६	१८।३४	२०।३०	२२।४३	२५।०१	२७।१७	२९।३२	०७।५३	१०।१०	१२।१४	१३।५८	१५।२८
०४	१६।५२	१८।३०	२०।२६	२२।३९	२४।५७	२७।१३	२९।२८	०७।४९	१०।०६	१२।१०	१३।५४	१५।२४
०५	१६।४८	१८।२६	२०।२२	२२।३५	२४।५३	२७।०९	२९।२४	०७।४६	१०।०२	१२।०६	१३।५०	१५।२०

I चौमासी अष्टाह्निका पूर्ण सर्वा. -अमृत. १२।३५ उ. ३०।५३ या. **J** पुष्कर राज गढ़गंगा तीर्थ भीष्म पंचक व्रत पूर्ण निम्बार्क ज. चातुर्मास पूर्णता श्री सिद्धाचल यात्रा जैन सर्वा. ३०।३४ उ. ३०।५४ या.

ग्रहगोचरीय फलम्

देव शनि की वक्रता, तेजी सूत कपास।। दलहन में मंदी नहीं, गणना गणित विकास।। षड़ाष्टकी शनि सूर्य की, श्रमिक कोंप अधिभार। आंदोलित जन निर्धना, शासन चित प्रहार।। चलन-कलन शनि सूर्य का, निर्धन जग अभिसार। सेवाकर्मी कोप से, शासन तन्त्र विचार।। अर्थपक्ष अभिनव गति, धनिक त्रास अभियोग। बैंक कोष मुद्रा विषय, नीति नव्य प्रयोग।। दीपोत्सव बुधवासरी, जन-जन सौख्य निधान। धन चिन्ता श्रीमन्त को, निर्णय वाक्य विधान। उत्पादन उद्योग की, अनुकम्पा विस्तार। अर्थकोष महती गति, राष्ट्र मध्य प्रस्तार।। पवन वेग दीपोत्सवे, नहीं शकुन सुख पक्ष।। वायु शून्यता मानिये, भावी सुखद सुलक्ष।। कार्त्तिक लागत त्रयोदशी जौ आवे रविवार। तो जौ गेहूँ में चलै तेजी बारम्बार।। कार्त्तिक मावस भौमदिन, अग्निकाण्ड भय त्रास। राज युद्ध रविवार से शनि से धान्य विनास।। एकम शुक्ला कार्त्तिकी जो आवै बुधवार।। दुगुणा तिगुणा चौगुणा महंगा चलै बाजार।। कृतिका कार्त्तिक पूर्णिमा चारों मास सुभिक्ष। चार प्रहर भरणी रहे चार मास दुर्भिक्ष।। कार्त्तिक पड़वा को रहै सूरज के परिवेष। सरसों अलसी तेल तिल महंगे बिकै विशेष।।

B जन्म जैन रा. कार्त्तिक मास प्रा. वृश्चिके भानुः ०९।२१ हेमन्त ऋतु प्रा. स्वात्यां रविः ३०।४० सं. सू. सू. स्त्री. नपु. वाहन मंडूक वर्षा श्रेष्ठ सर्वा. २८।५१ उ. **D** खरतर गच्छ जैन सर्वा. १०।४७ उ. ३०।४७ या. **F** आ. जिन उदयसागर पुण्यः चौमासी अष्टाह्निका प्रा. ३०।४७ या.

गोचर ग्रहाः

का.शु. पक्षे १५ बुधे स्टै. टा. प्रा. ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	००	०७	०७	०३	०६	११	१०	०४
अं.	१८	१०	०६	११	००	०३	०१	२०	२०
क.	३६	४०	०६	०९	५१	२०	२४	५८	५८
वि.	२३	५३	३२	४०	३४	५२	२७	१०	१०
गति	६० ०७	९१८ ०५	४३ ०२	३१ ३७	०१ १३	७५ ०५	०२ १९	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	स्वाति४	अश्वि.४	अनुरा.१	अनुरा.३	पुनर्व.४	चित्रा४	पू.भा.४	पू.भा.१	पू.फा.३

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः वि. संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	सूर्यस्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	गति	बं.	मु.	भा.	अं.
लुम्बक	१	गु	२०	०३	१४	५५	कृ	५१	२५	२७	२८	ध्रु/व	००/४१	२७/२८	कौ	२०	०३	२७	१६	०६	५४	०५	४८	वृ. ११/४७	०६	१९	३६	३१	६०	०१	२१	१४	१५	०६
मित्र	२	शु	१०	२८	११	०६	रो	४४	०७	२४	३४	प	३८	५२	ग	१०	२८	२७	१३	०६	५५	०५	४८	वृषभ	०६	२०	३६	४०	६०	११	२२	१५	१६	०७
चौथव्रत	३	श	०१	३३	०७	३३	मृ	३७	४८	२२	०२	शि	२९	०१	वि	०१	३३	२७	१०	०६	५५	०५	४७	मि. ११/१४	०६	२१	३६	५१	६०	१३	२३	१६	१७	०८
क्षय	४	श	५३	४७	२८	२६	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
ध्वांक्ष	५	र	४७	२९	२५	५६	आ	३२	५२	२०	०५	सि	२०	१५	कौ	२०	२४	२७	०७	०६	५६	०५	४७	मिथुन	०६	२२	३७	०४	६०	१५	२४	१७	१८	०९
धूम्र	६	चं	४३	००	२४	०९	पुन	२९	३९	१८	४८	सा	१२	५०	ग	१४	५९	२७	०४	०६	५७	०५	४६	क. १३/०३	०६	२३	३७	१९	६०	१७	२५	१८	१९	१०
प्रवर्ध	७	मं	४०	३०	२३	०९	पु	२८	२१	१८	१८	शु	०६	५७	वि	११	२८	२७	०१	०६	५७	०५	४६	कर्क	०६	२४	३७	३६	६०	१९	२६	१९	२०	११
राक्षस	८	बु	४०	०२	२२	५९	आ	२९	०३	१८	३५	शु/ब्र	०२/५९	४०/५९	बा	१०	००	२६	५८	०६	५८	०५	४५	सिं. १८/३५	०६	२५	३७	५६	६०	२१	२७	२०	२१	१२
मुसल	९	गु	४१	२९	२३	३५	म	३१	३८	१९	३८	ऐं	५८	४१	तै	१०	३१	२६	५५	०६	५९	०५	४५	सिंह	०६	२६	३८	१७	६०	२३	२८	२१	२२	१३
सिद्धि	१०	शु	४४	३७	२४	५०	पूफा	३५	५३	२१	२१	वै	५८	३५	व	१२	५१	२६	५२	०७	००	०५	४४	क. २७/५२	०६	२७	३८	४०	६०	२५	२९	२२	२३	१४
ए. व्रत	११	श	४९	०४	२६	३८	उफा	४१	२५	२३	३५	वि	५९	२४	ब	१६	४१	२६	४९	०७	००	०५	४४	कन्या	०६	२८	३९	०५	६०	२७	३०	२३	२४	१५
मानस	१२	र	५४	२७	२८	४८	ह	४७	५५	२६	११	प्री	६०	००	कौ	२१	३९	२६	४६	०७	०१	०५	४४	कन्या	०६	२९	३९	३१	६०	२९	मा१	२४	२५	१६
प्रदोष	१३	चं	६०	००	-	-	चि	५४	५९	२९	०२	प्री	००	५२	ग	२७	२३	२६	४३	०७	०२	०५	४३	तु. १५/३५	०७	००	४०	००	६०	३०	०२	२५	२६	१७
केतु	१३	मं	००	२५	०७	१३	स्वा	६०	००	-	-	आ	०२	४६	व	००	२५	२६	४१	०७	०३	०५	४३	तुला	०७	०१	४०	३०	६०	३२	०३	२६	२७	१८
धूम्र	१४	बु	०६	४२	०९	४४	स्वा	०२	२०	०७	५९	सौ	०४	५२	श	०६	४२	२६	३८	०७	०३	०५	४३	वृ. २८/१४	०७	०२	४१	०२	६०	३४	०४	२७	२८	१९
अमावस	३०	गु	१३	०३	१२	१७	वि	०९	४७	१०	५९	शो	०७	०१	ना	१३	०३	२६	३६	०७	०४	०५	४२	वृश्चिक	०७	०३	४१	३६	६०	३५	०५	२८	२९	२०

(दैनिक सूर्यस्पष्ट — प्रातः ५ घं. ३० मि. के; विविध तारीखें — बं. मु. भा. अं.)

६ नवम्बर से २० नवम्बर सन् २०२५ ई. तक

हेमन्त ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

विशाखायां रविः १४।५२ पद्मक योग १४।५२ उ. २७।२८ या. **अस्तं भौमः A**

भ. २१।१७ उ. स्वात्यां शुक्रः २१।०६ **A** पश्चिमे २३।५२

भ. ०७।३३ या. **चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय** रात्रि २०।२३

B खरतरगच्छ मांडवला जहाज मंदिर मेला जैन वक्री गुरूः २१।५१

ॐ श्री मायानन्द चैतन्य ज. सुविधा नाथ जन्म दीक्षा वक्री बुधः २४।३०

भ. २४।०९ उ. सर्वार्थसिद्धि योग १८।४८ उ. ३०।५७ या.

भ. ११।३३ या. सर्वार्थसिद्धि. १८।१८ उ. ३०।५८ या. **जिन कांतिसूरि पुण्यः B**

काल भैरवाष्टमी भैरवसमुत्पत्ति बुधास्त पश्चिमे १८।४१

श्री जाम्भोजी पुण्य दिवस विश्नोई पंथ C स्वामी दीक्षा कल्याणक जैन

भ. १२।०८ उ. २४।५० या. **बाल दिवस चाचा नेहरू जयंती श्री महावीर C**

उत्पत्ति एकादशी व्रतं सर्वेषाम् वैतरणी व्रतं श्री पद्मप्रभु पुण्य दिवस जैन

सर्वा. अमृत. ०७।०१ उ. २६।११ या. **वृश्चिकेऽर्कः** १३।३७ बं. मार्गशीर्ष मास प्रा.

सोम प्रदोष व्रतं सूच्यते-सर्वा. अमृत. अर्थात् सर्वार्थ-अमृतसिद्धि योग

भ. ०७।१३ उ. २०।२८ या. **मास शिवरात्रि** विशाखायां शुक्रः १२।१८

पितृकार्ये अमावस्या अनुराधायां रविः २०।५६ ज्येष्ठायां भौमः ११।२८

देवकार्ये अमावस्या सर्वार्थसिद्धियोग १०।५९ उ. विशाखायां बुधः २८।१४

गोचर ग्रहाः

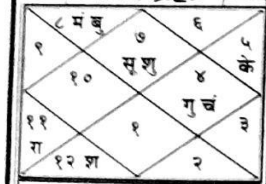

मा. कृ. पक्षे ८ बुधे स्टै. टा. प्रात. ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	०३	०७	०७	०३	०६	११	१०	०४
अं.	२५	२२	११	१२	००	१२	०१	२०	२०
क.	३७	५२	०९	१६	५५	०६	१०	३५	३५
वि.	५६	०९	००	०२	५९	५६	११	५५	५५
गति	६०	७०१	४३	२५	००	७५	०१	०३	०३
	२१	१०	२७	५३	११	१४	३९	११	११
मा/व	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	विशा.२	आर्द्रा.२	अनुरा.३	अनुरा.३	पुनर्व.४	स्वाति.२	पू.भा.४	पू.भा.१	पू.फा.३

✻ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✻

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
नव	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा
०६	१६।४४	१८।२२	२०।१८	२२।३२	२४।४९	२७।०५	२९।२०	०७।४२	०९।५८	१२।०२	१३।४६	१५।१६
०७	१६।४०	१८।१८	२०।१४	२२।२८	२४।४५	२७।०१	२९।१६	०७।३८	०९।५४	११।५८	१३।४२	१५।१२
०८	१६।३६	१८।१४	२०।१०	२२।२४	२४।४२	२६।५७	२९।१२	०७।३४	०९।५०	११।५४	१३।३८	१५।०८
०९	१६।३२	१८।१०	२०।०७	२२।२०	२४।३८	२६।५३	२९।०८	०७।३०	०९।४६	११।५०	१३।३४	१५।०४
१०	१६।२८	१८।०६	२०।०३	२२।१६	२४।३४	२६।४९	२९।०४	०७।२६	०९।४३	११।४६	१३।३०	१५।००
११	१६।२४	१८।०२	१९।५९	२२।१२	२४।३०	२६।४५	२९।००	०७।२२	०९।३९	११।४२	१३।२६	१४।५६
१२	१६।२०	१७।५८	१९।५५	२२।०८	२४।२६	२६।४१	२८।५६	०७।१८	०९।३५	११।३८	१३।२२	१४।५३
१३	१६।१६	१७।५४	१९।५१	२२।०४	२४।२२	२६।३८	२८।५३	०७।१४	०९।३१	११।३४	१३।१९	१४।४९
१४	१६।१२	१७।५०	१९।४७	२२।००	२४।१८	२६।३४	२८।४९	०७।१०	०९।२७	११।३०	१३।१५	१४।४५
१५	१६।०९	१७।४६	१९।४३	२१।५६	२४।१४	२६।३०	२८।४५	०७।०६	०९।२३	११।२६	१३।११	१४।४१
१६	१६।०५	१७।४३	१९।३९	२१।५२	२४।१०	२६।२६	२८।४१	०७।०२	०९।१९	११।२३	१३।०७	१४।३७
१७	१६।०१	१७।३९	१९।३५	२१।४८	२४।०६	२६।२२	२८।३७	०६।५८	०९।१५	११।१९	१३।०३	१४।३३
१८	१५।५७	१७।३५	१९।३१	२१।४५	२४।०२	२६।१८	२८।३३	०६।५५	०९।११	११।१५	१२।५९	१४।२९
१९	१५।५३	१७।३१	१९।२७	२१।४१	२३।५८	२६।१४	२८।२९	०६।५१	०९।०७	११।११	१२।५५	१४।२५
२०	१५।४९	१७।२७	१९।२४	२१।३७	२३।५५	२६।१०	२८।२५	०६।४७	०९।०३	११।०७	१२।५१	१४।२१

शेयर बाजार, वायदा बाजार की जानकारी हेतु **श्रीधरी तेजी मंदी रिपोर्ट** सन् 2025 की मंगवाकर लाभ उठायें।

वृश्चिक संक्रान्ति फलम्

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे १२ सूर्ये वृश्चिकेऽर्कः प्र. (स्टे. टा. १३।३७) वा. ३ न. ४ अस्य पुण्यकालः अद्यैव रविवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च रण संभागीय रचना गति। वार नाम घोरा-आदिवासी, अल्पसंख्यक, निर्धन, असहाय, वयोवृद्ध, अनुसूचित जाति वर्ग हेतु शासकीय नवीन योजना लाभ। नक्षत्र नाम-ध्वांक्षी, आयात, निर्यातकर्त्ता, शेयर बाजार कम्पनी, उद्योगपति, वैश्य, व्यापारी गण हेतु सुखद। दिवा ३ या. व्यापारी स्वतंत्र कार्यकर्त्ता, उद्योगपति, वैश्य, आय-निर्यातक, शेयर बाजार कारक पक्ष हेतु कष्टद प्रभार सूचक। दक्षिणे गमन, नैऋत्यां दृष्टिः, संक्रांति वास निवास शाह वैश्य गृहे, कौलव करणे, वाहन-वराह, उपवाहन-वृषभ, हरित वस्त्र, खड्गा युध, ताम्रपात्र, भिक्षान्न भक्षण, चंदन लेपन, सर्प जाति, बकुल पुष्प, मुक्ता भूषण, हरित कंचुकी, गतालकाऽवस्था, उतिष्ठा, मुहूर्त-३० धान्य, गल्ला स्थिर सम भाव। शक्कर, घी, रसायन, द्रव्य, ताम्बा, खोपरा, गोला, मिर्च, मसूर, मेहंदी, हरे मुंग, सौंफ, धनिया, इत्र, चन्दन, मोती, हरा वस्त्र, बैल उन्नत धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स दक्षिणे, राहु पूर्वे मूल पाताले।

गोचर ग्रहाः

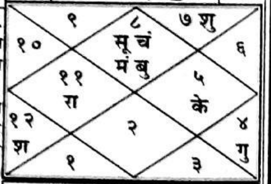

मा. कृ. पक्षे ३० गुरौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	०७	०७	०७	०३	०६	११	१०	०४
अं.	०३	००	१६	०४	००	२२	००	२०	२०
क.	४१	३७	५८	३७	४९	०९	५९	१०	१०
वि.	३६	३०	१७	११	०३	१६	५१	२८	२८
गति	६०	७११	४३	८१	०१	७५	००	०३	०३
	३५	५७	५५	२१	४६	२१	४९	११	११
मा/व	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व
उ/अ	उ	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	अनुरा.२	विशा.४	ज्येष्ठा.१	अनुरा.१	पुनर्व.४	विशा.१	पू.भा.४	पू.भा.१	पू.फा.३

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः वि. संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल
राक्षस	१	शु	१९	१७	१४	४८	अ	१७	०८	१३	५६	अ	०९	०६	ब	१९	१७
मुसल	२	श	२५	१६	१७	१२	ज्ये	२४	१३	१६	४७	सु	११	००	कौ	२५	१६
सिद्धि	३	र	३०	४७	१९	२५	मू	३०	५४	१९	२८	धृ	१२	३५	ग	३०	४७
उत्पात	४	चं	३५	३९	२१	२३	पूषा	३६	५६	२१	५४	शू	१३	४४	व	०३	१८
मानस	५	मं	३९	३४	२२	५८	उषा	४२	०५	२३	५८	गं	१४	१४	ब	०७	४४
छत्र	६	बु	४२	१५	२४	०३	श्र	४६	०१	२५	३३	वृ	१३	५४	कौ	११	०४
श्रीवत्स	७	गु	४३	२३	२४	३१	ध	४८	२७	२६	३२	ध्रु	१२	२९	ग	१३	००
सौम्य	८	शु	४२	४४	२४	१६	श	४९	०९	२६	५०	व्या	०९	४८	वि	१३	१७
कालदंड	९	श	४०	१२	२३	१६	पूभा	४७	५९	२६	२३	ह	०५	४०	बा	११	४२
सुस्थिर	१०	र	३५	४५	२१	३०	उभा	४४	५८	२५	११	व / सि	०० / ५२	०१ / ५६	तै	०८	११
ए.व्रत	११	चं	२९	३३	१९	०२	रे	४०	१५	२३	१८	व्य	४४	२६	व	०२	५१
प्रदोष	१२	मं	२१	५१	१५	५८	अ	३४	०६	२०	५२	व	३४	४८	बा	२१	५१
काण	१३	बु	१३	०१	१२	२६	भ	२६	५५	१८	००	प	२४	१८	तै	१३	०१
पूर्णिमा	१४	गु	०३	२९	०८	३८	कृ	१९	०९	१४	५४	शि	१३	१९	व	०३	२९
क्षय	१५	गु	५३	४४	२८	४४	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००

तिथि	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति		विविधतारीखें बं. मार्ग.	मु. जमादि	भा. कार्ति.	अं. नवं.	❁❁ २१ नवम्बर से ४ दिसम्बर सन् २०२५ ई. तक ❁❁ हेमन्त ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च दक्षिणगोलीय इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।
१	२६	३३	०७	०५	०५	४२	वृश्चिक	०७	०४	४२	११	६०	३७	०६	२१	३०	२१	सर्वा. १३।५६ या. **A** पूफायां २ केतुः १०।१० जमादिउल आखिर मास ६ मुस.
२	२६	३१	०७	०६	०५	४२	ध. १६/४७	०७	०५	४२	४८	६०	३८	०७	३०	मा१	२२	**चन्द्रदर्शनं** राष्ट्रीय मार्गशीर्ष मास प्रारंभ धनुषि भानुः ०७।०६
३	२६	२८	०७	०६	०५	४२	धनु	०७	०६	४३	२६	६०	३९	०८	ज१	०२	२३	सर्वा. ०७।०६ उ. ११।२८ या. तुलायां बुधः २०।०७ शतभिषायां ४ राहुः **A**
४	२६	२६	०७	०७	०५	४२	म. २८/२७	०७	०७	४४	०५	६०	४०	०९	०२	०३	२४	भ. ०८।२६ उ. २१।२३ या.
५	२६	२४	०७	०८	०५	४१	मकर	०७	०८	४४	४५	६०	४१	१०	०३	०४	२५	**श्रीराम जानकी विवाहोत्सवः**
६	२६	२१	०७	०९	०५	४१	मकर	०७	०९	४५	२७	६०	४३	११	०४	०५	२६	**चम्पा-स्कन्दगुह षष्ठी** वृश्चिके शुक्रः ११।२२ **बुधोदय पूर्वे** ३०।०१
७	२६	१९	०७	०९	०५	४१	कुं. १४/०७	०७	१०	४६	१०	६०	४४	१२	०५	०६	२७	भ. २४।३१ उ. **मित्र सप्तमी नरसी मेहता जयंती पंचक** १४।०७ उ.
८	२६	१७	०७	१०	०५	४१	कुंभ	०७	११	४६	५४	६०	४५	१३	०६	०७	२८	भ. १२।२९ या. **मार्गी शनिः** ०९।४५ अनुराधायां शुक्रः २७।००
९	२६	१५	०७	११	०५	४१	मी. २०/३४	०७	१२	४७	३८	६०	४६	१४	०७	०८	२९	**जैन दिवाकर चौथमल पुण्य श्री अरनाथ जन्म+पुण्य मार्गी बुधः** २३।०८
१०	२६	१३	०७	१२	०५	४१	मीन	०७	१३	४८	२४	६०	४७	१५	०८	०९	३०	सर्वार्थसिद्धि योग ०७।१२ उ. २५।११ या. **C जन्म जैन नौ सेना दिवस**
११	२६	१२	०७	१२	०५	४१	मे. २३/१८	०७	१४	४९	११	६०	४८	१६	०९	१०	दि१	भ. ०८।२१ उ. १९।०२ या. **मोक्षदा ११ व्रतं सर्वेषाम् श्री गीता ज. मौन B**
१२	२६	१०	०७	१३	०५	४१	मेष	०७	१५	४९	५८	६०	४९	१७	१०	११	०२	**भौम प्रदोष व्रतं** सर्वा. अमृत. ०७।१३ उ. २०।५२ या. **ज्येष्ठायां रविः** २५।१४
१३	२६	०८	०७	१४	०५	४१	वृ. २३/१४	०७	१६	५०	४७	६०	५०	१८	११	१२	०३	सर्वार्थसिद्धि योग १८।०० उ. ३१।१५ या. **पिशाच मोचन श्राद्ध**
१४	२६	०७	०७	१५	०५	४१	वृषभ	०७	१७	५१	३६	६०	५१	१९	१२	१३	०४	भ. ०८।३८ उ. १८।४१ या. **पूर्णिमा व्रतं श्री दत्त महाप्रभु ज. संभवनाथ C**
१५	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	**B एकादशी व्रतं पंचक** २३।१८ या. दिसम्बर मास १२ ता. ३१ प्रारंभ

गोचर ग्रहाः

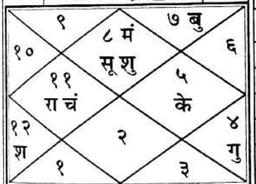

मा. शु. पक्षे ८ शुक्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.									
ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	१०	०७	०६	०३	०७	११	१०	०४
अं.	११	०८	२२	२६	००	०२	००	१९	१९
क.	४६	१६	५१	४५	२९	१२	५६	४५	४५
वि.	५४	२०	१४	५२	२४	२३	१५	०२	०२
ग	६०	७९३	४४	१३	०३	७५	००	०३	०३
ति	४५	०८	२२	४३	२०	२५	०२	११	११
मा/व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	अनुरा. ३	शतभि. १	ज्येष्ठा २	विशा. ३	पुनर्व. ४	विशा. ४	पू.भा. ४	शतभि. ४	पू.फा. २

✡ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✡

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
नव.	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा
२१	१५।४५	१७।२३	१९।२०	२१।३३	२३।५१	२६।०६	२८।२१	३०।३९	०९।०१	११।०३	१२।४७	१४।१७
२२	१५।४१	१७।१९	१९।१६	२१।२९	२३।४७	२६।०२	२८।१७	३०।३५	०८।५६	१०।५९	१२।४३	१४।१४
२३	१५।३७	१७।१५	१९।१२	२१।२५	२३।४३	२५।५९	२८।१४	३०।३१	०८।५२	१०।५५	१२।४०	१४।१०
२४	१५।३३	१७।११	१९।०८	२१।२१	२३।३९	२५।५५	२८।१०	३०।२७	०८।४८	१०।५१	१२।३६	१४।०६
२५	१५।३०	१७।०८	१९।०४	२१।१७	२३।३५	२५।५१	२८।०६	३०।२४	०८।४४	१०।४८	१२।३२	१४।०२
२६	१५।२६	१७।०४	१९।००	२१।१४	२३।३१	२५।४७	२८।०२	३०।२०	०८।४०	१०।४४	१२।२८	१३।५८
२७	१५।२२	१७।०१	१८।५६	२१।१०	२३।२८	२५।४३	२७।५८	३०।१६	०८।३६	१०।४०	१२।२४	१३।५४
२८	१५।१८	१६।५६	१८।५३	२१।०६	२३।२४	२५।३९	२७।५४	३०।१२	०८।३३	१०।३६	१२।२०	१३।५०
२९	१५।१४	१६।५२	१८।४९	२१।०२	२३।२०	२५।३५	२७।५१	३०।०८	०८।२९	१०।३२	१२।१६	१३।४७
३०	१५।१०	१६।४८	१८।४५	२०।५८	२३।१६	२५।३२	२७।४७	३०।०४	०८।२५	१०।२८	१२।१३	१३।४३
दि.१	१५।०७	१६।४४	१८।४१	२०।५४	२३।१२	२५।२८	२७।४३	३०।००	०८।२१	१०।२५	१२।०९	१३।३९
०२	१५।०३	१६।४१	१८।३७	२०।५०	२३।०८	२५।२४	२७।३९	२९।५७	०८।१७	१०।२१	१२।०५	१३।३५
०३	१४।५९	१६।३७	१८।३३	२०।४७	२३।०४	२५।२०	२७।३५	२९।५३	०८।१३	१०।१७	१२।०१	१३।३१
०४	१४।५५	१६।३३	१८।२९	२०।४३	२३।००	२५।१६	२७।३१	२९।४९	०८।०९	१०।१३	११।५७	१३।२७

शेयर बाजार, वायदा बाजार की जानकारी हेतु **श्रीधरी तेजी मंदी रिपोर्ट** सन् 2025 की मंगवाकर लाभ उठायें।

ग्रहगोचरीय फलम्

रवि संक्रमण रवि दिवस, नेता दलपति द्वन्द। पद प्रलोभ की भावना, तंत्र लोक भी मंद।। देव शनि की वक्रता, गुरू देव वक्र चार।। गोचर गणना शास्त्र की, सुखद नहीं संचार।। अस्त्र-शस्त्र सेना गति, शासी शासक क्रन्द। दल विरोध की जाग्रति, नामक सत्ता मंद।। देव शनि की वक्रता, तेजी सूत कपास। दलहन में मंदी नहीं, गणना गणित विकास।। वर्षे संक्रांति दिना कार्त्तिक मंगसिर मेह। खेती मध्यम पौष में तेजी निस्संदेह। वृश्चिक गत जब सूर्य हो, ऊन वस्त्र समभाव। लाल द्रव्य मंदे मिले, तो, खरीद कर लाव। छठे महीने लाभ हो, बेचों जब हो तेज।। तेज वस्तु लेना नहीं, रखना यह परहेज।। मंगसिर पहिले पाख में, कोई तिथि घट जाय। झगड़ा और फसाद नित लोगो में अधिकाय।। मंगसिर पहले पाख में कोई तिथि बढ़ जाय। कही जगत मे युद्ध का भारी बादल छाय।। षड़ाष्टकी राहू गुरू, कुम्भ कर्क विहार। धरा धान्य सुख सम्पदा, चिन्तन विश्व विचार।। त्रोटक संधि सूत्र का, देश विदेशी कक्ष। भू-विवाद सीमा विषय निर्णय गोचर लक्ष।। नव पंचम गुरू भौम का, भारत लोक महान। अणु शक्ति विज्ञान का, साधक देश विधान।

गोचर ग्रहाः

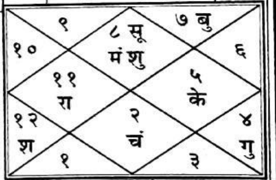

मा. शु. पक्षे १४ गुरौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.									
ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	०१	०७	०६	०३	०७	११	१०	०४
अं.	१७	०३	२७	२७	००	०९	००	१९	१९
क.	५१	५९	१८	५६	०६	४४	५८	२५	२५
वि.	३६	२६	११	३०	४१	५९	०५	५८	५८
ग	६०	९२०	४४	४१	०४	७५	००	०३	०३
ति	५१	२३	४०	४८	२५	२७	४१	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	ज्येष्ठा १	कृति. ३	ज्येष्ठा ४	विशा. ३	पुनर्व. ४	अनु. २	पू.भा. ४	शत. ४	पू.फा. २

पौष कृष्ण पक्षः विक्रम संवत् २०८२ राष्ट्रीय शाकः १९४७

०५ दिसम्बर से १९ दिसम्बर २०२५ ई. तक

हेमन्त ऋतुः रवि दक्षिणायणे तथा च दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल
मित्र	१	शु	४४	१२	२४	५६	रो	११	१८	११	४६	सि/सा	०२/५१	१२/२४	बा	१८	५३	२६	०५
वज्र	२	श	३५	२६	२१	२६	मृ/आ	०३/५७	५२/२४	०८/३०	४९/१३	शु	४१	१४	तै	०९	४१	२६	०४
चौथव्रत	३	र	२७	५२	१८	२५	पुन	५२	१८	२८	१२	शु	३२	०६	व	०१	२७	२६	०२
धाता	४	चं	२१	५६	१६	०४	पु	४८	५८	२६	५३	ब्र	२४	११	बा	२१	५६	२६	०१
आनन्द	५	मं	१७	५१	१४	२१	आ	४७	४२	२६	२३	ऐं	१८	०८	तै	१७	५१	२६	००
चर	६	बु	१६	११	१३	४७	म	४८	३४	२६	४४	वै	१३	३८	व	१६	११	२५	५९
गद	७	गु	१६	३६	१३	५८	पूफा	५१	३१	२७	५६	वि	१०	५१	ब	१६	३६	२५	५८
शुभ	८	शु	१९	०३	१४	५७	उफा	५६	१५	२९	५०	प्री	०९	४०	कौ	१९	०३	२५	५७
मृत्यु	९	श	२३	१५	१६	३८	ह	६०	००	-	-	आ	०९	४९	ग	२३	१५	२५	५६
मानस	१०	र	२८	४२	१८	५०	ह	०२	२३	०८	१८	सौ	१०	५९	वि	२८	४२	२५	५५
ए. व्रत	११	चं	३४	५७	२१	२१	चि	०९	२७	११	०९	शो	१२	५०	ब	०१	४५	२५	५५
केतु	१२	मं	४१	२९	२३	५८	स्वा	१६	५८	१४	१०	अ	१५	०१	कौ	०८	११	२५	५४
प्रदोष	१३	बु	४७	५५	२६	३३	वि	२४	३१	१७	११	सु	१७	१३	ग	१४	४३	२५	५४
आनन्द	१४	गु	५४	००	२९	००	अ	३१	४८	२०	०७	धृ	१९	१५	वि	२१	०१	२५	५३
अमावस	३०	शु	५९	३३	३१	१३	ज्ये	३८	३८	२२	५१	शू	२०	५६	च	२६	५०	२५	५३

योगाः	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति		विविध तारीखें बं. मार्ग.	मु. जमादि.	भा. मार्ग.	अं. दिसं.
मित्र	०७	१५	०५	४१	मि. २२/१५	०७	१८	५१	२७	६०	५२	२०	१३	१४	०५
वज्र	०७	१६	०५	४१	मिथुन	०७	१९	५३	११	६०	५३	२१	१४	१५	०६
चौथव्रत	०७	१७	०५	४२	क. २२/३८	०७	२०	५४	११	६०	५४	२२	१५	१६	०७
धाता	०७	१७	०५	४२	कर्क	०७	२१	५५	०५	६०	५५	२३	१६	१७	०८
आनन्द	०७	१८	०५	४२	सिं. २६/२३	०७	२२	५६	००	६०	५६	२४	१७	१८	०९
चर	०७	१९	०५	४२	सिंह	०७	२३	५६	५६	६०	५७	२५	१८	१९	१०
गद	०७	१९	०५	४२	सिंह	०७	२४	५७	५४	६०	५९	२६	१९	२०	११
शुभ	०७	२०	०५	४३	क. १०/२१	०७	२५	५८	५३	६१	०१	२७	२०	२१	१२
मृत्यु	०७	२१	०५	४३	कन्या	०७	२६	५९	५२	६१	०१	२८	२१	२२	१३
मानस	०७	२१	०५	४३	तु. २१/४२	०७	२७	००	५३	६१	०२	२९	२२	२३	१४
ए. व्रत	०७	२२	०५	४४	तुला	०७	२८	०१	५५	६१	०३	पौ१	२३	२४	१५
केतु	०७	२२	०५	४४	तुला	०८	००	०२	५८	६१	०४	०२	२४	२५	१६
प्रदोष	०७	२३	०५	४५	वृ. १०/२६	०८	०१	०४	०२	६१	०५	०३	२५	२६	१७
आनन्द	०७	२४	०५	४५	वृश्चिक	०८	०२	०५	०६	६१	०५	०४	२६	२७	१८
अमावस	०७	२४	०५	४५	ध. २२/५१	०८	०३	०६	११	६१	०६	०५	२७	२८	१९

अं. दिसं.	विशेष
०५	पुनर्वसौ ३ मिथुने गुरूः १७।२४ **E** अमृतसिद्धि योग १७।११ उ. ३१।२४ या.
०६	वृश्चिके बुधः २०।४४ **सूच्यते- उ. अर्थात उपरांत, या. अर्थात यावत्**
०७	भ. ०७।५१ उ. १८।२५ या. **पौषी चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि** २०।१९ **A**
०८	सर्वार्थसिद्धि. २६।५३ या. **श्री दीपनारायण पुरी पुण्य खाटू बड़ी राजस्थान**
०९	सर्वा. ०७।१८ उ. २६।२३ या. अनुराधायां बुधः २६।२७ ज्येष्ठायां शुक्रः १७।२८
१०	भ. १३।४७ उ. २५।४६ या. **विश्व मानवाधिकार दिवस C** उ. ०८।१८ या.
११	**कालाष्टमी A सशस्त्र सेना झंडा दिवस** सर्वा. २८।१२ उ. **रविपुष्य** २८।१२ **B**
१२	**जिन हरिसागर पुण्य जैन B** उ. ३१।१७ या. मूले धनुषि भौमः २०।१७
१३	भ. २१।४१ उ. **D धनुष्यऽर्कः** २८।१९ **सरदार पटेल पुण्य** बं. पौष मास प्रा.
१४	भ. १८।५० या. **पौषी दशमी पार्श्वनाथ ज. जैन** सर्वा. अमृत. ०७।२१ **C**
१५	**अस्तं शुक्रः पूर्वे १४।५९ सफला एकादशी व्रतं सर्वे. मूले रविः** २८।२९ **D**
१६	**श्री नागरीदास जयंती किशनगढ़ अजमेर राजस्थान F** सर्वा. २०।०७ या.
१७	भ. २६।३३ उ. **प्रदोष व्रतं श्री चन्द्रप्रभु जन्म जैन** सर्वा. १७।११ उ. **E**
१८	भ. १५।४८ या. **मास शिवरात्रि श्री जयप्रभ विजय पुण्यः त्रिस्तु जैन F**
१९	**देवपितृकार्ये अमावस्या** ज्येष्ठायां बुधः ३०।०८

गोचर ग्रहाः

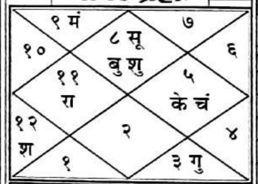

पौष कृ. पक्षे ८ शुक्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	०४	०८	०७	०२	०७	११	१०	०४
अं.	२५	२७	०३	०५	२९	१९	०१	१९	१९
क.	५८	२९	१७	५०	२६	४८	०६	००	००
वि.	५३	०६	०३	५२	३५	४६	३९	३२	३२
ग	६१	७६०	४५	७५	०५	७५	०१	०३	०३
ति	०१	३३	०६	०६	४४	३०	३२	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	ज्येष्ठा ३	उ.फा. १	मूल १	अनुरा. १	पुनर्व. ३	ज्येष्ठा १	पू.भा. ४	शत. ४	पू.फा. २

★ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ★

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिस.	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा
०५	१४।५१	१६।२९	१८।२६	२०।३९	२२।५७	२५।१२	२७।२७	२९।४५	०८।०५	१०।०९	११।५३	१३।२३
०६	१४।४७	१६।२५	१८।२२	२०।३५	२२।५३	२५।०८	२७।२३	२९।४१	०८।०२	१०।०५	११।४९	१३।१९
०७	१४।४३	१६।२१	१८।१८	२०।३१	२२।४९	२५।०४	२७।१९	२९।३७	०७।५८	१०।०१	११।४५	१३।१६
०८	१४।३९	१६।१७	१८।१४	२०।२७	२२।४५	२५।००	२७।१६	२९।३३	०७।५४	०९।५७	११।४१	१३।१२
०९	१४।३५	१६।१३	१८।१०	२०।२३	२२।४१	२४।५७	२७।१२	२९।२९	०७।५०	०९।५३	११।३८	१३।०८
१०	१४।३१	१६।०९	१८।०६	२०।१९	२२।३७	२४।५३	२७।०८	२९।२५	०७।४६	०९।४९	११।३४	१३।०४
११	१४।२७	१६।०५	१८।०२	२०।१५	२२।३३	२४।४९	२७।०४	२९।२१	०७।४२	०९।४५	११।३०	१३।०१
१२	१४।२३	१६।०१	१७।५८	२०।११	२२।२९	२४।४५	२७।०१	२९।१७	०७।३८	०९।४१	११।२६	१२।५६
१३	१४।१९	१५।५७	१७।५४	२०।०७	२२।२५	२४।४१	२६।५६	२९।१३	०७।३४	०९।३७	११।२२	१२।५२
१४	१४।१५	१५।५३	१७।५०	२०।०३	२२।२१	२४।३७	२६।५२	२९।०९	०७।३०	०९।३३	११।१८	१२।४८
१५	१४।११	१५।४९	१७।४६	१९।५९	२२।१७	२४।३३	२६।४८	२९।०५	०७।२६	०९।२९	११।१४	१२।४४
१६	१४।०७	१५।४५	१७।४२	१९।५५	२२।१३	२४।२९	२६।४४	२९।०१	०७।२२	०९।२५	११।१०	१२।४०
१७	१४।०३	१५।४१	१७।३८	१९।५१	२२।०९	२४।२५	२६।४०	२८।५७	०७।१८	०९।२१	११।०६	१२।३६
१८	१३।५९	१५।३७	१७।३४	१९।४७	२२।०५	२४।२१	२६।३६	२८।५३	०७।१४	०९।१७	११।०२	१२।३२
१९	१३।५५	१५।३३	१७।३०	१९।४३	२२।०१	२४।१७	२६।३२	२८।४९	०७।१०	०९।१३	१०।५७	१२।५८

शेयर बाजार, वायदा बाजार की जानकारी हेतु **श्रीधरी तेजी मंदी रिपोर्ट** सन् 2025 की मंगवाकर लाभ उठायें।

धनु संक्रान्ति फलम्

पौष कृष्ण पक्षे ११ चन्द्रे धनुष्यर्कः प्र. (स्टे. टा. २८।१९) वा. २ न. ३ अस्य पुण्यकालः पर दिने भौमवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च दुर्ग रक्षा संभागीय रचना गति। वार नाम ध्वांक्षी-स्वतंत्र कार्यकारक, आयात-निर्यात, उद्योग, संचालक वैश्य व्यापारी गण हेतु हर्षवर्धक लाभद सुयोग। नक्षत्र नाम महोदरी तस्कर लोभी, प्रलोभी, प्रवंचक, धूर्त्त, चौर्यकर्मशील, संग्राहक, ठग पक्ष हेतु दिशापथ सूचक शुभफलद। रात्रि ४ या. व्या. दुग्ध व्यवसायी पशुपालक पर श्रम विशेष प्रभारक कष्टद प्रतिफल। उत्तरेगमन, ईशान दृष्टि, संक्रांति वास निवास रजक गृहे, कौलव करणे, वाहन-वराह, उपवाहन-वृषभ, हरित वस्त्र, खड्गायुध, ताम्रपात्र भिक्षान्न भक्षण, चंदन लेपन, सर्पजाति, बकुल पुष्प, मुक्ता भूषण, हरित कंचुकी, गतालकाऽवस्था, उतिष्ठा मुहूर्त्त-१५ धान्य गल्ला उन्नत भाव। शक्कर, घी, रसायन, द्रव्य, ताम्बा, खोपरा, गोला, मोती, मिर्च, मसूर, मेहंदी, मूंग, सौंफ, धनियां उन्नत धारणा। शुक्रास्त पूर्वे, वत्स दक्षिणे, राहू पूर्वे मूल भूमौ।

गोचर ग्रहाः

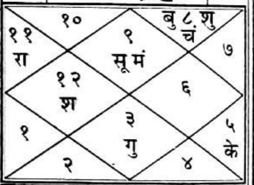

पौ. कृ. पक्षे ३० शुक्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	०७	०८	०७	०२	०७	११	१०	०४
अं.	०३	२१	०८	१५	२८	२८	०१	१८	१८
क.	०६	१९	३३	१२	४३	३७	१९	३८	३८
वि.	११	५९	४७	२७	२१	२२	२८	११	११
ग	६१	७११	४५	८५	०६	७५	०२	०३	०३
ति	०६	४८	२७	१३	४३	३२	१६	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
नक्षत्र	मूल १	ज्येष्ठा २	मूल ३	अनुरा. ४	पुनर्व. ३	ज्येष्ठा ४	पू.भा. ४	शत. ४	पू.फा. २

पौष शुक्ल पक्षः विक्रम संवत् २०८२ राष्ट्रीय शाकः १९४७

२० दिस. २०२५ से ३ जनवरी सन् २०२६ ई. तक

हेमन्त-शिशिर ऋतुः रविदक्षि.-उत्तरायणे तथा च दक्षिणगोलीय
इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. के रा. अं. क. वि.	गति	बं. पौष	मु. जमां.	भा. मार्ग.	अं. दिसं.	
गद	१	श	६०	००	-	-	मू	४४	५२	२५	२२	गं	२२	११	किं	३२	०५	२५	५३	०७	२५	०५	४६	धनु	०८ ०४ ०७ १७	६१ ०६	०६	२८	२९	२०	मूले धनुषि शुक्रः ०७।४५ **A** सर्वार्थसिद्धि योग २७।३६ उ. ३१।२६ या.
शुभ	१	र	०४	२६	०९	१२	पूषा	५०	२७	२७	३६	वृ	२२	५६	ब	०४	२६	२५	५३	०७	२५	०५	४६	धनु	०८ ०५ ०८ २४	६१ ०७	०७	२९	३०	२१	चन्द्रदर्शनं मकरे भानुः २०।३३ रवि उत्तरायणे शिशिर ऋतुः प्रारंभ **A**
मृत्यु	२	चं	०८	३६	१०	५२	उषा	५५	१६	२९	३२	ध्रु	२३	०७	कौ	०८	३६	२५	५३	०७	२६	०५	४७	म. १०/०७	०८ ०६ ०९ ३१	६१ ०७	०८	२१	पौ१	२२	सर्वा. २९।३२ उ. ३१।२६ या. रा. पौष मास प्रा. रज्जब मास ७ मुस. मेला **B**
लुम्बक	३	मं	११	५८	१२	१३	श्र	५९	१४	३१	०८	व्या	२२	३९	ग	११	५८	२५	५३	०७	२६	०५	४७	मकर	०८ ०७ १० ३८	६१ ०८	०९	०२	०२	२३	भ. २४।४६ उ. किसान दिवस श्री यतीन्द्र सूरीश्वर पुण्यः त्रि. स्तु. जैन
मित्र	४	बु	१४	२२	१३	१२	ध	६०	००	-	-	ह	२१	२८	वि	१४	२२	२५	५३	०७	२७	०५	४८	कुं. ११/४६	०८ ०८ ११ ४५	६१ ०८	१०	०३	०३	२४	भ. १३।१२ या. पंचक १९।४६ उ. **B** ख्वाजा साहब अजमेर शरीफ
श्रीवत्स	५	गु	१५	४०	१३	४३	ध	०२	०८	०८	१८	व	१९	२५	बा	१५	४०	२५	५४	०७	२७	०५	४९	कुंभ	०८ ०९ १२ ५३	६१ ०८	११	०४	०४	२५	क्रिसमस डे पण्डित मदन मोहन मालवीय जयंती पूषायां भौमः १२।१३
सौम्य	६	शु	१५	४१	१३	४४	श	०३	५२	०९	००	सि	१६	२३	तै	१५	४१	२५	५४	०७	२८	०५	४९	मी. २७/११	०८ १० १४ ०१	६१ ०८	१२	०५	०५	२६	**C** जन्म व पुण्य जैन **D** आचार्य जिनान्द सागर पुण्यः खर. गच्छ जैन
कालदंड	७	श	१४	१६	१३	१०	पूभा	०४	१४	०९	१०	व्य	१२	१४	व	१४	१६	२५	५४	०७	२८	०५	५०	मीन	०८ ११ १५ ०९	६१ ०८	१३	०६	०६	२७	भ. १३।१० उ. २४।४० या. गुरू गोविन्द सिंह ज. गुरू राजेन्द्र सूरीश्वर **C**
सुस्थिर	८	र	११	१९	१२	००	उभा	०३	०८	०८	४३	व	०६	५३	ब	११	१९	२५	५५	०७	२८	०५	५०	मीन	०८ १२ १६ १७	६१ ०८	१४	०७	०७	२८	पूषायां रविः ३०।३० सर्वा. ०७।२८ उ. ०८।४३ या. मूले धनुषि बुधः ३१।२३
मातंग	९	चं	०६	५१	१०	१३	र/अ	००/५६	३१/२९	०७/३०	४१/०४	प/शि	००/५२	११/३६	कौ	०६	५१	२५	५६	०७	२९	०५	५१	मे. ०७/४१	०८ १३ १७ २५	६१ ०८	१५	०८	०८	२९	पंचक ०७।४१ या. बुधास्तः पूर्वे २५।३०
ए. व्रत	१०	मं	००	५७	०७	५२	भ	५१	१३	२७	५८	सि	४३	५२	ग	००	५७	२५	५६	०७	२९	०५	५२	मेष	०८ १४ १८ ३३	६१ ०८	१६	०९	०९	३०	भ. १८।३० उ. २९।०१ या. पुत्रदा एकादशी व्रतं स्मार्त्त सर्वा. २७।५८ उ. **D**
क्षय	११	मं	५३	५०	२९	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	०० ०० ०० ००	०० ००	००	००	००	००	एकादशी तिथिक्षयः सूच्यते- ज. अर्थात् जयंती, पु. अर्थात् पुण्य दिवस
सिद्धि	१२	बु	४५	४८	२५	४८	कृ	४५	०२	२५	३०	सा	३४	२०	ब	१९	५४	२५	५७	०७	२९	०५	५२	वृ. १०/२३	०८ १५ १९ ४१	६१ ०८	१७	१०	१०	३१	पुत्रदा एकादशी व्रतं वैष्णव निम्बार्क सर्वार्थसिद्धि योग ३१।३० या.
प्रदोष	१३	गु	३७	१३	२२	२३	रो	३८	१७	२२	४८	शु	२४	१७	कौ	११	३३	२५	५८	०७	३०	०५	५३	वृषभ	०८ १६ २० ४८	६१ ०८	१८	११	११	ज१	प्रदोष व्रतं जनवरी मास १ ता. ३१ सन् २०२६ प्रारंभ
मानस	१४	शु	२८	३०	१८	५४	मृ	३१	२५	२०	०४	शु	१४	०२	ग	०२	५१	२५	५९	०७	३०	०५	५४	मि. ०१/२६	०८ १७ २१ ५६	६१ ०८	१९	१२	१२	०२	भ. १८।५४ उ. २९।१२ या. पूर्णिमा व्रतं श्री शाकम्भरी जयंती मरूधर **E**
पूर्णिमा	१५	श	२०	०७	१५	३३	आ	२४	५४	१७	२८	ब्र	०३	५७	ब	२०	०७	२६	००	०७	३०	०५	५४	मिथुन	०८ १८ २३ ०४	६१ ०८	२०	१३	१३	०३	पूर्णिमा पुण्यः माघ स्नान प्रारंभ **E** केसरी मिश्रमल पुण्य स्थापना जैन

गोचर ग्रहाः

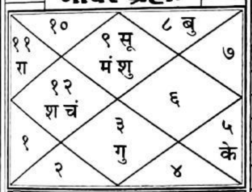

पौष शु. पक्षे ८ सूर्ये स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	११	०८	०७	०२	०८	११	१०	०४
अं.	१२	१४	१५	२८	२७	०९	०१	१८	१८
क.	१६	४९	२४	२२	३९	५७	४३	०९	०९
वि.	१७	१४	२४	३६	००	०४	३०	३९	३९
ग	६१	८३३	४५	९०	०७	७५	०३	०३	०३
ति	०८	४२	५०	१५	३७	३१	१०	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
नक्षत्र	मूल ४	उ.भा. ४	पू.षा. १	ज्येष्ठा ४	पुनर्व. ३	मूल ३	पू.भा. ४	शत. ४	पू.फा. २

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिस.	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा
२०	१३।५१	१५।२९	१७।२६	१९।३९	२१।५७	२४।१२	२६।२७	२८।४५	३१।०२	०९।०९	१०।५३	१२।२३
२१	१३।४७	१५।२५	१७।२२	१९।३५	२१।५३	२४।०८	२६।२३	२८।४१	३०।५८	०९।०५	१०।४९	१२।१९
२२	१३।४३	१५।२१	१७।१८	१९।३१	२१।४९	२४।०४	२६।१९	२८।३७	३०।५४	०९।०१	१०।४५	१२।१५
२३	१३।४०	१५।१७	१७।१४	१९।२७	२१।४५	२४।०१	२६।१६	२८।३३	३०।५०	०८।५८	१०।४२	१२।१२
२४	१३।३६	१५।१४	१७।१०	१९।२४	२१।४२	२३।५७	२६।१२	२८।३०	३०।४६	०८।५४	१०।३८	१२।०८
२५	१३।३२	१५।१०	१७।०७	१९।२०	२१।३८	२३।५४	२६।०९	२८।२६	३०।४३	०८।५०	१०।३४	१२।०५
२६	१३।२९	१५।०७	१७।०३	१९।१६	२१।३४	२३।५०	२६।०५	२८।२२	३०।३९	०८।४७	१०।३१	१२।०१
२७	१३।२५	१५।०३	१६।५९	१९।१३	२१।३१	२३।४६	२६।०१	२८।१९	३०।३५	०८।४३	१०।२७	११।५७
२८	१३।२१	१४।५९	१६।५६	१९।०९	२१।२७	२३।४२	२५।५७	२८।१५	३०।३२	०८।३९	१०।२३	११।५४
२९	१३।१७	१४।५५	१६।५२	१९।०५	२१।२३	२३।३९	२५।५४	२८।११	३०।२८	०८।३५	१०।२०	११।५०
३०	१३।१४	१४।५२	१६।४८	१९।०१	२१।१९	२३।३५	२५।५०	२८।०८	३०।२४	०८।३२	१०।१६	११।४६
३१	१३।१०	१४।४८	१६।४४	१८।५८	२१।१६	२३।३१	२५।४६	२८।०४	३०।२०	०८।२८	१०।१२	११।४२
ज१	१३।०६	१४।४४	१६।४१	१८।५४	२१।१२	२३।२७	२५।४२	२८।०१	३०।१७	०८।२४	१०।०८	११।३८
०२	१३।०२	१४।४०	१६।३७	१८।५०	२१।०८	२३।२४	२५।३९	२७।५६	३०।१३	०८।२०	१०।०५	११।३५
०३	१२।५८	१४।३६	१६।३३	१८।४६	२१।०४	२३।२०	२५।३५	२७।५२	३०।०९	०८।१६	१०।०१	११।३१

शेयर बाजार, वायदा बाजार की जानकारी हेतु **श्रीथरी तेजी मंदी रिपोर्ट** सन् 2025 की मंगवाकर लाभ उठायें।

ग्रहगोचरीय फलम्

रवि संक्रमण सोम का, सुखद बना यह संग। मूंगा मोती धान्य में, मंदी देश सुरंग।। सौम्यवार मंदी करें, मावस शुक्र सुसंग। तेजी से मंदी बने, वस्तु विविध प्रसंग।। पौष अमावस के दिना, ज्येष्ठा अति दुर्भिक्ष, मूल नखत हो जानिये, सुन्दर सुखद सुभिक्ष।। मंगलवारी पंचमी, पौष बदी बरसाय। उत्तम वर्षा उपज अति, मंदा धान्य बिकाय।। सातै आठे पौष बदी, बरसै आधी रात। वर्षा ऋतु में समझ लो, उत्तम हो बरसात।। बादल गर्जे पूर्व में, नौमी लागत पौष। समझो खेती नाश हो, होता है यह घोष।। नौमी ग्यारस पौष में, पूर्व बादल गाज। कृश शरीर जनता रहे। महंगा बिकैं अनाज।। नौमी ग्यारस पौष में, चलै पछवा पौन। धाराधर बरसे नहीं, अति दुर्भिक्ष कुसौन।। पौष बदी एकादशी, चालै दखिनी पौन। बादल बिजली गाज, हो अति दुर्भिक्ष कुसौन।। पड़वा दोयज पौष सुदी, बिजली बादल देख। वर्षा से खेती बढ़े, उपजै अन्न विशेष।। पौष सुदी में चौथ को, ना बादल ना गाज। आगे वर्षा काल हो, वर्षा का मुहताज।। पौष सुदी में पंचमी, को यदि पड़े तुषार।। निश्चय वर्षा काल में, वर्षा होय अपार।।

गोचर ग्रहाः

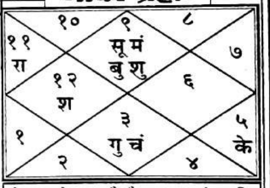

पौष शु. पक्षे १५ शनौ स्टै. टा. प्रा. ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	०२	०८	०८	०२	०८	११	१०	०४
अं.	१८	१२	२०	०७	२६	१७	०२	१७	१७
क.	२३	३३	००	२९	५२	३०	०३	५०	५०
वि.	०४	३८	०१	३२	२२	०४	५४	३५	३५
ग	६१	८११	४६	९२	०७	७५	०३	०३	०३
ति	०८	२३	०४	२४	५७	२९	४३	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
नक्षत्र	पू.षा. २	आर्द्रा २	पू.षा. ३	मूल ३	पुनर्व. ३	पू.षा. २	पू.भा. ४	शतभि. १	पू.फा. २

माघ कृष्ण पक्षः वि. संवत् २०८२ राष्ट्रीय शाकः १९४७

४ जनवरी से १८ जनवरी सन् २०२६ ई. तक

शिशिर ऋतुः रवि उत्तरायणे तथा च दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति		विविध तारीखें बं. पौष	मु. रजब	भा. पौष	अं. जन.	
केतु	१	र	१२	३०	१२	३०	पुन	१९	१२	१५	११	वै	४५	४२	कौ	१२	३०	२६	०२	०७	३०	०५	५५	क. ०१।४३	०८	१९	२४	११	६१	०८	२१	१४	१४	०४	सर्वार्थसिद्धि योग १५।११ उ. रवि पुष्य सुयोग १५।११ उ. ३१।३१ या.
धाता	२	चं	०६	०६	०९	५७	पु	१४	४६	१३	२५	वि	३८	११	ग	०६	०६	२६	०३	०७	३१	०५	५६	कर्क	०८	२०	२५	१९	६१	०८	२२	१५	१५	०५	भ. २०।५४ उ. सर्वार्थसिद्धि योग १३।२५ या.
चौथव्रत	३	मं	०१	१९	०८	०२	आ	११	५८	१२	१८	प्री	३२	०६	वि	०१	१९	२६	०४	०७	३१	०५	५६	सिं. १२।१८	०८	२१	२६	२६	६१	०८	२३	१६	१६	०६	भ. ०८।०२ या. **संकष्ट तिल चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि** २१।१५ सवा. **A**
क्षय	४	मं	५८	२६	३०	५३	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	**C** बं. माघ मास प्रा. सर्वा. अमृत. ०७।३१ उ. २७।०४ या.
चर	५	बु	५७	३८	३०	३४	म	११	०४	११	५६	आ	२७	३७	कौ	२७	४६	२६	०६	०७	३१	०५	५७	सिंह	०८	२२	२७	३४	६१	०८	२४	१७	१७	०७	**A** ०७।३१ उ. १२।१८ या. पूषायां बुधः २३।५१
गद	६	गु	५८	५७	३१	०६	पूफा	१२	१४	१२	२४	सौ	२४	४६	ग	२८	०२	२६	०७	०७	३१	०५	५८	क. १८।३९	०८	२३	२८	४२	६१	०८	२५	१८	१८	०८	भ. ३१।०६ उ. **सूच्यते- ज. अर्थात जयंती, पु.-पुण्य**
शुभ	७	शु	६०	००	-	-	उफा	१५	२४	१३	४१	शो	२३	३१	वि	३०	२२	२६	०९	०७	३१	०५	५९	कन्या	०८	२४	२९	५०	६१	०८	२६	१९	१९	०९	भ. ११।४० या. **स्वा. विवेकानन्द जयंती श्री रामानन्दाचार्य ज. रामानंदः B**
मृत्यु	७	श	०२	१३	०८	२४	ह	२०	२२	१५	४०	अ	२३	३८	ब	०२	१३	२६	११	०७	३१	०५	५९	तु. २८।५२	०८	२५	३०	५८	६१	०८	२७	२०	२०	१०	उषायां शुक्रः १२।२१ **B स्वयं रामः प्रादुर्भूतो-महीतले**
पद्म	८	र	०७	०४	१०	२१	चि	२६	४२	१८	१२	सु	२४	४९	कौ	०७	०४	२६	१२	०७	३१	०६	००	तुला	०८	२६	३२	०६	६१	०८	२८	२१	२१	११	**उषायां रविः** ०८।३६ उषायां भौमः २१।०८
छत्र	९	चं	१३	००	१२	४३	स्वा	३३	५५	२१	०५	धृ	२६	४२	ग	१३	००	२६	१४	०७	३१	०६	०१	तुला	०८	२७	३३	१४	६१	०८	२९	२२	२२	१२	भ. २६।०० उ. **स्वा. विवेकानन्द जन्म रा. युवा दिवस** मकरे शुक्रः २७।५८
श्रीवत्स	१०	मं	१९	२८	१५	१८	वि	४१	२८	२४	०७	शू	२८	५३	वि	१९	२८	२६	१६	०७	३१	०६	०२	वृ. १७।२९	०८	२८	३४	२२	६१	०८	३०	२३	२३	१३	भ. १५।१८ या. **लोहड़ी पर्व पंजाब सूच्यते- नि. अर्थात् निम्बार्क व्रत**
ए.व्रत	११	बु	२५	५५	१७	५३	अ	४८	५१	२७	०४	गं	३१	०१	बा	२५	५५	२६	१८	०७	३१	०६	०२	वृश्चिक	०८	२९	३५	३०	६१	०८	मा१	२४	२४	१४	**षट्तिला एकादशी व्रतं सर्वेषाम् मकरेऽर्कः** १५।०७ मकर संक्रांति पुण्यः **C**
कालदंड	१२	गु	३१	५५	२०	१७	ज्ये	५५	४२	२९	४८	वृ	३२	४७	तै	३१	५५	२६	२०	०७	३१	०६	०३	ध. २१।४८	०९	००	३६	३७	६१	०७	०२	२५	२५	१५	**थलसेना दिवस शीतलनाथ जन्म जैन** मकरे भौमः २८।२६ उषायां बुधः ०९।१८
प्रदोष	१३	शु	३७	०८	२२	२२	मू	६०	००	-	-	ध्रु	३३	५८	ग	०४	३८	२६	२२	०७	३१	०६	०४	धनु	०९	०१	३७	४५	६१	०७	०३	२६	२६	१६	भ. २२।२२ उ. **प्रदोष व्रतं मास शिवरात्रि मेरू त्रयोदशी आदिनाथ पुण्य जैन**
गद	१४	श	४१	२४	२४	०४	मू	०१	४३	०८	१२	व्या	३४	२७	वि	०९	२४	२६	२५	०७	३१	०६	०५	धनु	०९	०२	३८	५२	६१	०७	०४	२७	२७	१७	भ. ११।१६ या. मकरे बुधः १०।२२
अमावस	३०	र	४४	३८	२५	२२	पूषा	०६	४९	१०	१४	ह	३४	१०	च	१३	०९	२६	२७	०७	३१	०६	०६	म. १६।४१	०९	०३	३९	५९	६१	०६	०५	२८	२८	१८	**देवपितृकार्ये अमावस्या मौनी अमावस्या माघी अमावस्या**

गोचर ग्रहाः

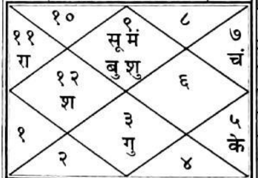

मा. कृ. पक्षे ८ सूर्ये स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	०६	०८	०८	०२	०८	११	१०	०४
अं.	२६	००	२६	११	२५	२७	०२	१७	१७
क.	३२	१८	०९	५९	४७	३३	३६	२५	२५
वि.	०६	४३	४२	२५	५८	५३	१०	०८	०८
ग	६१	७१८	४६	९५	०८	७५	०४	०३	०३
ति	०८	१४	२३	३४	०६	२८	२५	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
नक्षत्र	पू.षा.४	चित्रा ३	पू.षा.४	पू.षा.२	पुनर्व.२	उ.फा.१	पू.भा.४	शत.४	पू.फा.२

✲ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✲

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
जन.	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा	दिवा
०४	१२।५५	१४।३२	१६।२९	१८।४२	२१।००	२३।१६	२५।३१	२७।४८	३०।०५	०८।१३	०९।५७	११।२७
०५	१२।५१	१४।२९	१६।२५	१८।३८	२०।५६	२३।१२	२५।२७	२७।४५	३०।०१	०८।०९	०९।५३	११।२३
०६	१२।४७	१४।२५	१६।२१	१८।३४	२०।५२	२३।०८	२५।२३	२७।४१	२९।५७	०८।०५	०९।४९	११।१९
०७	१२।४३	१४।२१	१६।१७	१८।३१	२०।४८	२३।०४	२५।१९	२७।३७	२९।५३	०८।०१	०९।४५	११।१५
०८	१२।३९	१४।१७	१६।१३	१८।२७	२०।४४	२३।००	२५।१५	२७।३३	२९।४९	०७।५७	०९।४१	११।११
०९	१२।३५	१४।१३	१६।०९	१८।२३	२०।४०	२२।५६	२५।११	२७।२९	२९।४५	०७।५३	०९।३७	११।०७
१०	१२।३१	१४।०९	१६।०५	१८।१९	२०।३६	२२।५२	२५।०७	२७।२५	२९।४१	०७।४९	०९।३३	११।०३
११	१२।२७	१४।०५	१६।०१	१८।१४	२०।३२	२२।४८	२५।०३	२७।२१	२९।३७	०७।४५	०९।२९	१०।५९
१२	१२।२३	१४।०१	१५।५७	१८।१०	२०।२८	२२।४४	२४।५९	२७।१७	२९।३३	०७।४१	०९।२५	१०।५५
१३	१२।१९	१३।५६	१५।५३	१८।०६	२०।२४	२२।४०	२४।५५	२७।१२	२९।२९	०७।३७	०९।२१	१०।५१
१४	१२।१४	१३।५२	१५।४९	१८।०२	२०।२०	२२।३६	२४।५१	२७।०८	२९।२५	०७।३२	०९।१७	१०।४७
१५	१२।१०	१३।४८	१५।४५	१७।५८	२०।१६	२२।३२	२४।४७	२७।०४	२९।२१	०७।२८	०९।१३	१०।४३
१६	१२।०६	१३।४४	१५।४१	१७।५४	२०।१२	२२।२७	२४।४२	२७।००	२९।१७	०७।२४	०९।०८	१०।३८
१७	१२।०२	१३।४०	१५।३६	१७।५०	२०।०८	२२।२३	२४।३८	२६।५६	२९।१२	०७।२०	०९।०४	१०।३४
१८	११।५८	१३।३६	१५।३२	१७।४५	२०।०३	२२।१९	२४।३४	२६।५२	२९।०८	०७।१६	०९।०१	१०।३०

शेयर बाजार, वायदा बाजार की जानकारी हेतु **श्रीधरी तेजी मंदी रिपोर्ट** सन् 2025 की मंगवाकर लाभ उठायें।

मकर संक्रान्ति फलम्

माघ कृष्ण पक्षे ११ बुधे मकरेऽर्कः प्र. (स्टे. टा. १५।०७) वा. ३ न. ३ अस्य पुण्यकालः अद्यैव बुधवासरे अपराह्न वेलातः पुण्यप्रदः तथा च वापी कूप संभागीय रचना गति। वार नाम मंदाकिनी राजपत्रित अधिकारी नीति, निदेशक, विविध दलपति, राजनेता, अधीक्षक वर्ग हेतु सुखद। नक्षत्र नाम मंदाकिनी राजनेता, दलपति, सचिव, राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, अधीक्षक हेतु मनोत्साहवर्धक सुखद। दिवा ३ याम् व्यापिनी व्यापारी स्वतंत्र कार्यकर्त्ता, उद्योगपति, वैश्य, आयात निर्यातक, शेयर बाजार कारक पक्ष हेतु कष्टद प्रभार सूचक। पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टिः, संक्रांति वास निवास माली गृहे, बालव करणे, वाहन-व्याघ्र, उपवाहन-अश्व, पीत वस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुमलेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा मुहूर्त्त-३० धान्य गल्ला स्थिर सम भाव। सुगंधी पदार्थ, गरम मसाला, सौंठ, तम्बाकू, चाय, रोली, चंदन, केसर, दानामेथी, सरसों, हल्दी, तुअर, चना, चांदी, सोना, पीली वस्तुएं, घोड़ा आदि पशुओं में उन्नत धारणा। शुक्रास्त पूर्वे वत्स दक्षिणे, राहू पूर्वे, मूल स्वर्गे।

गोचर ग्रहाः

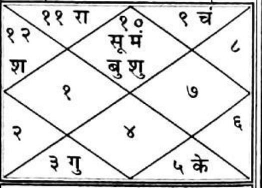

मा. कृ. पक्षे ३० सूर्ये स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	०८	०९	०९	०२	०९	११	१०	०४
अं.	०३	२४	०१	०१	२४	०६	०३	१७	१७
क.	३९	१३	३५	१८	५१	२२	०८	०२	०२
वि.	५९	२५	०८	२६	४३	०५	४१	५३	५३
ग	६१	७४६	४६	९९	०७	७५	०४	०३	०३
ति	०६	२७	३७	०२	५४	२६	५१	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	अ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
नक्षत्र	उ.षा.३	पू.षा.४	उ.षा.२	उ.षा.२	पुनर्व. २	उ.षा. ३	पू.भा.४	शत.४	पू.फा.२

माघ शुक्ल पक्षः विक्रम संवत् २०८२ राष्ट्रीय शाकः १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति	गति	विविधतारीखें बं.	मु.	भा.	अं.
मृत्यु	१	चं	४६	५०	२६	१५	उषा	१०	५४	११	५२	व	३३	०६	किं	१५	५२	२६	२९	०७	३१	०६	०६	मकर	०९	०४	४१	०५	६१	०६	०६	२९	२९	१९
लुम्बक	२	मं	४८	०१	२६	४३	श्र	१४	०१	१३	०७	सि	३१	१६	बा	१७	३४	२६	३२	०७	३०	०६	०७	कुं. २५/३५	०९	०५	४२	१०	६१	०५	०७	३०	३०	२०
मित्र	३	बु	४८	१४	२६	४८	ध	१६	१०	१३	५८	व्य	२८	४०	तै	१८	१५	२६	३४	०७	३०	०६	०८	कुम्भ	०९	०६	४३	१५	६१	०४	०८	श१	मा१	२१
वज्र	४	गु	४७	२७	२६	२९	श	१७	२२	१४	२७	व	२५	१९	व	१७	५८	२६	३७	०७	३०	०६	०९	कुम्भ	०९	०७	४४	२०	६१	०३	०९	०२	०२	२२
ध्वांक्ष	५	शु	४५	४२	२५	४७	पूभा	१७	३८	१४	३३	प	२१	१२	ब	१६	४२	२६	३९	०७	३०	०६	१०	मी. ०८/३४	०९	०८	४५	२३	६१	०२	१०	०३	०३	२३
धूम्र	६	श	४२	५८	२४	४०	उभा	१६	५६	१४	१६	शि	१६	२०	कौ	१४	२८	२६	४२	०७	२९	०६	१०	मीन	०९	०९	४६	२५	६१	०१	११	०४	०४	२४
प्रवर्ध	७	र	३९	१४	२३	११	रे	१५	१७	१३	३६	सि	१०	४१	ग	११	१३	२६	४५	०७	२९	०६	११	मे. १३/३६	०९	१०	४७	२७	६१	००	१२	०५	०५	२५
राक्षस	८	चं	३४	३४	२१	१९	अ	१२	४०	१२	३३	सा/शु	०४/५७	१६/०७	वि	०७	०१	२६	४८	०७	२९	०६	१२	मेष	०९	११	४८	२७	६०	५९	१३	०६	०६	२६
मुसल	९	मं	२९	०४	१९	०६	भ	०९	११	११	०९	शु	४९	२१	बा	०१	५५	२६	५०	०७	२८	०६	१३	वृ. १६/४५	०९	१२	४९	२६	६०	५८	१४	०७	०७	२७
सिद्धि	१०	बु	२२	५१	१६	३७	कृ	०४	५७	०९	२७	ब्र	४१	०४	ग	२२	५१	२६	५३	०७	२८	०६	१३	वृषभ	०९	१३	५०	२४	६०	५७	१५	०८	०८	२८
ए. व्रत	११	गु	१६	१०	१३	५६	रो/मृ	००/५५	१०/०४	०७/२९	३२/२९	ऐं	३२	२९	वि	१६	१०	२६	५६	०७	२८	०६	१४	मि. १८/३१	०९	१४	५१	२१	६०	५६	१६	०९	०९	२९
प्रदोष	१२	शु	०९	१६	११	१०	आ	५०	००	२७	२७	वै	२३	४८	बा	०९	१६	२६	५९	०७	२७	०६	१५	मिथुन	०९	१५	५२	१७	६०	५४	१७	१०	१०	३०
छत्र	१३	श	०२	२८	०८	२६	पुन	४५	१८	२५	३४	वि	१५	१६	तै	०२	२८	२७	०२	०७	२७	०६	१६	क. २०/०१	०९	१६	५३	११	६०	५३	१८	११	११	३१
क्षय	१४	श	५६	०६	२९	५३	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
पूर्णिमा	१५	र	५०	३२	२७	३९	पु	४१	१९	२३	५८	प्री/आ	०७/५१	१०/४५	वि	२३	१२	२७	०५	०७	२६	०६	१६	कर्क	०९	१७	५४	०४	६०	५२	१९	१२	१२	फ१

१९ जनवरी से १ फरवरी सन् २०२६ ई. तक

शिशिर ऋतुः रवि उत्तरायणे तथा च दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

गुप्त नवरात्रि विधान प्रा. कुम्भे भानुः ३१।१५ सर्वा. ११।५२ उ. ३१।३० या. **चन्द्रदर्शनं अभिजिति रविः** २८।१३ **बाबा रामदेव बीज पंचक** २५।३५ उ. **A** **गौरी तृतीया** रा. माघ मास प्रारंभ शव्वाल मास ८ मुस. भ. १४।४१ उ. २६।२९ या. **वरद विनायक तिल चतुर्थी** **नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ज. बसन्त पंचमी श्रीपंचमी सरस्वती ज. श्री B** श्रवणे रविः १०।५० **B** राधा श्याम सुन्दर पंचमी वृन्दावने श्रवणे बुधः १०।२३ भ. २३।११ उ. **श्री नर्मदा ज. अचला रथ आरोग्य सप्तमी देवनारायण C** भ. १०।१७ या. **राष्ट्रीय गणतन्त्र दिवस ७७वाँ भीष्माष्टमी** सर्वा. ११।०९ उ. **A** श्रवणे शुक्रः २६।४९ उभायां १ शनिः १०।४६ भ. २७।१७ उ. सर्वार्थसिद्धि योग ३१।२८ या. श्रवणे भौमः २४।३६ भ. १३।५६ या. **जया ११ व्रतं सर्वे. वेणेश्वर मेला प्रा. डूंगरपुर भीष्मद्वादशी** **प्रदोष व्रतं** सर्वा. २७।२७ उ. ३१।२७ या. गांधी पुण्य दि. धनिष्ठायां बुधः २७।२४ भ. २९।५३ उ. **विश्वकर्मा ज. गुरू गोरखनाथ ज. रामचरण रामस्नेही ज. D** **D स्वा. श्री करपात्रि जी पुण्य** जिनेन्द्र रथ यात्रा जैन धनिष्ठायां शुक्रः १७।३६ भ. १६।४३ या. **पूर्णिमा व्रतं गुरू रविदास** ज. **माघ कवि ज. वेणेश्वर E**

गोचर ग्रहाः

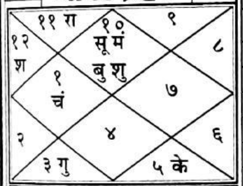

माघ शु. पक्षे ८ चन्द्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	००	०९	०९	०२	०९	११	१०	०४
अं.	११	०९	०७	१४	२३	१६	०३	१६	१६
क.	४८	१२	४८	४६	५०	२५	५०	३७	३७
वि.	२७	५३	५४	२७	२५	१९	४४	२७	२७
ग	६०	[illegible]	४६	१०३	०७	७५	०५	०३	०३
ति	५९	०१	५०	३२	१८	२१	३३	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
नक्षत्र	श्रवण २	अभि. ३	अभि. २	श्रवण २	पुनर्व. २	श्रव. २	उ.भा. १	शत. ३	पू.फा. १

✯ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे ✯

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
जन	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा
१९	११।५३	१३।३१	१५।२८	१७।४१	१९।५९	२२।१५	२४।३०	२६।४७	२९।०४	३१।०८	०८।५६	१०।२६
२०	११।४९	१३।२७	१५।२४	१७।३७	१९।५५	२२।१०	२४।२५	२६।४३	२९।०१	३१।०४	०८।५१	१०।२२
२१	११।४६	१३।२४	१५।२०	१७।३३	१९।५१	२२।०७	२४।२२	२६।३९	२८।५६	३१।००	०८।४८	१०।१८
२२	११।४२	१३।२०	१५।१६	१७।३०	१९।४८	२२।०३	२४।१८	२६।३६	२८।५२	३०।५६	०८।४४	१०।१४
२३	११।३८	१३।१६	१५।१३	१७।२६	१९।४४	२२।००	२४।१५	२६।३२	२८।४९	३०।५२	०८।४१	१०।११
२४	११।३५	१३।१३	१५।०९	१७।२२	१९।४०	२१।५६	२४।११	२६।२८	२८।४५	३०।४९	०८।३७	१०।०७
२५	११।३१	१३।०९	१५।०५	१७।१९	१९।३७	२१।५२	२४।०७	२६।२५	२८।४१	३०।४५	०८।३३	१०।०३
२६	११।२७	१३।०५	१५।०२	१७।१५	१९।३३	२१।४८	२४।०३	२६।२१	२८।३८	३०।४१	०८।२९	०९।५९
२७	११।२३	१३।०१	१४।५८	१७।११	१९।२९	२१।४५	२४।००	२६।१७	२८।३४	३०।३७	०८।२६	०९।५६
२८	११।२०	१२।५८	१४।५४	१७।०७	१९।२५	२१।४१	२३।५६	२६।१४	२८।३०	३०।३४	०८।२२	०९।५२
२९	११।१६	१२।५४	१४।५०	१७।०४	१९।२१	२१।३७	२३।५२	२६।१०	२८।२६	३०।३०	०८।१८	०९।४८
३०	११।१२	१२।५०	१४।४७	१७।०१	१९।१८	२१।३३	२३।४८	२६।०६	२८।२३	३०।२६	०८।१४	०९।४४
३१	११।०८	१२।४६	१४।४३	१६।५६	१९।१४	२१।२९	२३।४४	२६।०२	२८।१९	३०।२२	०८।१०	०९।४०
फ१	११।०४	१२।४२	१४।३९	१६।५२	१९।१०	२१।२६	२३।४१	२५।५८	२८।१५	३०।१८	०८।०७	०९।३७

०७।४९ **E** मेला स्नान माही नदी पूर्ण डूंगरपुर राज. श्री ललिता ज. माघ स्नान पूर्ण फरवरी मास २ ता. २८ प्रा. **रवि पुष्य** ०७।२६ उ. २३।५८ या. सर्वा. ०७।२६ उ. २३।५८ या.

ग्रहगोचरीय फलम्

रवि संक्रमण बुध दिवस, श्रीधर गणना लक्ष। तेल गुड़ रस खाण्ड में, तेजी का ही पक्ष।। शुक्र पंचमी शनि को षष्ठी तथा सप्तमी रविवार माघ बदी में क्रमशः हो तो पृथ्वी पर हो युद्ध अपार।। यदि ऐसा संयोग नहीं हो, तो फिर आगे भादव मास। मूंग उर्द जौ गेहूँ आदिक धान्य तेज मानो विश्वास। सुख-सुभिक्ष सुदी माघ में एकम गुरू भृगु सोम। रविवारी हो युद्ध भय ईति उपद्रव भौम।। माघ सुदी सातै पड़ै, शनि रवि चंदावार। विग्रह भय दुर्भिक्ष से दुःख पावै संसार।। माघ सुदी नौमी दिना, चौथे पहर निहार। बादल हो तो भादवा वर्षे भली प्रकार।। माघ मास प्रतिपदा को, निर्मल नभ और वाय। वस्तु सुगंधित तेल तिल तिलहन तेल बिकाय।। माघ अंधेरी तीज को गर्जे किंतु न मेह। जौ गेहू संग्रह करो लाभै निस्संदेह।। माघी पांचै सुदी में, बादल रहे अकास। उत्तम वर्षा से रहै, सुख मय भादव मास।। माघ बदी छठ को अगर, निर्मल दिशि आकाश। लाभेच्छुक व्यापारियों संग्रह करो कपास।। नौमी आठे सप्तमी, शुक्ला माघ निहार। बादल हो तो धान्य धन उत्सव विविध प्रकार।। नवमी, दशमी, ग्यारसी, बादल बिजली वाय। माघ बदी का शकुन, यह वर्षा करे सुहाय।। **C** ज. गुर्जर वंशे माधवाचार्य ज. पंचक १३।३६ या. सर्वा. १३।३६ उ. ३१।२९ या. अभिजिति निर्गम रविः

गोचर ग्रहाः

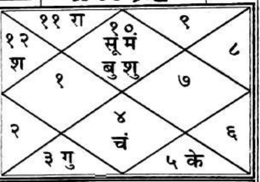

माघ शु. पक्षे १५ सूर्ये स्टै. टा. प्रा. ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	०३	०९	०९	०२	०९	११	१०	०४
अं.	१७	०५	१२	२५	२३	२३	०४	१६	१६
क.	५४	४१	३०	१५	०८	५७	२५	१८	१८
वि.	०४	१४	१५	०१	१४	१५	०२	२२	२२
ग	६०	८५४	४६	१०६	०६	७५	०५	०३	०३
ति	५२	०८	५८	०७	३८	१७	५६	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
नक्षत्र	श्रवण ३	पुष्य १	श्रवण १	धनि. १	पुनर्व. १	धनि. १	उ.भा. १	शत. ३	पू.फा. १

फाल्गुन कृष्ण पक्षः वि. संवत् २०८२ रा. शाकः १९४७

२ फरवरी से १७ फरवरी सन् २०२६ ई. तक

शिशिर ऋतुः रविउत्तरायणे तथा च दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्रराशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. के रा. अं. क. वि.	गति	बं. माघ	मु. शाबान	भा. माघ	अं. फर.	
सौम्य	१	चं	४६	०७	२५	५३	आ	३८	२५	२२	४८	सौ	५३	१९	बा	१८	११	२७	०९	०७	२६	०६	१७	सिं. २२/४८	०९ १८ [illegible]	६० [illegible]	२०	१३	१३	०२	उदितं शुक्रः पश्चिमे ३०।१०
कालदंड	२	मं	४३	१०	२४	४१	म	३६	५३	२२	११	शो	४८	०४	तै	१४	२७	२७	१२	०७	२५	०६	१८	सिंह	०९ १९ [illegible]	६० [illegible]	२१	१४	१४	०३	कुम्भे बुधः २१।५२
सुस्थिर	३	बु	४१	५३	२४	१०	पूफा	३७	००	२२	१३	अ	४४	०९	व	१२	१९	२७	१५	०७	२५	०६	१९	क. २८/२०	०९ २० [illegible]	६० [illegible]	२२	१५	१५	०४	भ. १२।२० उ. २४।१० या.
चौथव्रत	४	गु	४२	२६	२४	२३	उफा	३८	५३	२२	५७	सु	४१	३९	ब	११	५७	२७	१८	०७	२४	०६	१९	कन्या	०९ २१ [illegible]	६० [illegible]	२३	१६	१६	०५	फाल्गुनी चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि २१।५१ कुम्भे शुक्रः २५।११
अमृत	५	शु	४४	४९	२५	१९	ह	४२	३१	२४	२४	धृ	४०	३३	कौ	१३	२५	२७	२१	०७	२४	०६	२०	कन्या	०९ २२ [illegible]	६० [illegible]	२४	१७	१७	०६	धनिष्ठायां रविः १४।०५ **B** सर्वा. ०७।१७ उ. ११।४८ या. पूभायां बुधः २१।४०
काण	६	श	४८	५०	२६	५५	चि	४७	४४	२६	२८	शू	४०	४३	ग	१६	३९	२७	२५	०७	२३	०६	२१	तु. १३/२२	०९ २३ [illegible]	६० [illegible]	२५	१८	१८	०७	भ. २६।५५ उ. सर्वा. २६।२८ उ. ३१।२२ या. शतभिषायां बुधः १६।३०
लुम्बक	७	र	५४	०८	२९	०२	स्वा	५४	११	२९	०३	गं	४१	५४	वि	२१	२२	२७	२८	०७	२२	०६	२२	तुला	०९ २४ [illegible]	६० [illegible]	२६	१९	१९	०८	भ. १५।५५ या. **बुधोदय पश्चिमे** १८।१७
मित्र	८	चं	६०	००	-	-	वि	६०	००	-	-	वृ	४३	४५	बा	२७	०८	२७	३२	०७	२२	०६	२२	वृ. २५/११	०९ २५ [illegible]	६० [illegible]	२७	२०	२०	०९	**सीताष्टमी पर्व A** शतभिषायां शुक्रः ०८।५१
श्रीवत्स	८	मं	००	१७	०७	२८	वि	०१	२५	०७	५५	ध्रु	४५	५२	कौ	००	१७	२७	३५	०७	२१	०६	२३	वृश्चिक	०९ २६ [illegible]	६० [illegible]	२८	२१	२१	१०	**C पुण्य दादा मेला मालपुरा सूर्यग्रहण पंचक** ०९।०६ उ.
सौम्य	९	बु	०६	३७	०९	५९	अ	०८	५१	१०	५३	व्या	४७	५३	ग	०६	३७	२७	३८	०७	२०	०६	२४	वृश्चिक	०९ २७ [illegible]	६० [illegible]	२९	२२	२२	११	भ. २३।१३ उ. सर्वा. अमृत. ०७।२० उ. १०।५३ या. **समर्थ रामदास नवमी A**
कालदंड	१०	गु	१२	३७	१२	२३	ज्ये	१५	५६	१३	४२	ह	४९	२५	वि	१२	३७	२७	४२	०७	२०	०६	२४	ध. १३/४२	०९ २८ [illegible]	६० [illegible]	फा१	२३	२३	१२	भ. १२।२३ या. **कुम्भेऽर्कः** २८।१० बं. फाल्गुन मास प्रा.
ए. व्रत	११	शु	१७	४९	१४	२६	मू	२२	१४	१६	१३	व	५०	१०	बा	१७	४९	२७	४५	०७	१९	०६	२५	धनु	१० ०० [illegible]	६० [illegible]	०२	२४	२४	१३	**विजया एकादशी व्रतं सर्वेषाम्**
प्रदोष	१२	श	२१	५०	१६	०२	पूषा	२७	२५	१८	१६	सि	४९	५८	तै	२१	५०	२७	४९	०७	१८	०६	२६	म. २४/४२	१० ०१ [illegible]	६० [illegible]	०३	२५	२५	१४	**शनि प्रदोष व्रतं** धनिष्ठायां भौमः २४।३६
अमृत	१३	र	२४	३०	१७	०५	उषा	३१	१७	१९	४८	व्य	४८	४३	व	२४	३०	२७	५३	०७	१७	०६	२६	मकर	१० ०२ [illegible]	६० [illegible]	०४	२६	२६	१५	भ. १७।०५ उ. २९।२४ या. **महाशिवरात्रि व्रतं एवं जागरणं अभिषेकञ्च B**
सिद्धि	१४	चं	२५	४५	१७	३५	श्र	३३	४८	२०	४८	व	४६	२३	श	२५	४५	२७	५६	०७	१७	०६	२७	मकर	१० ०३ [illegible]	६० [illegible]	०५	२७	२७	१६	**स्वा. दयानन्द बोधोत्सवः वासू पूज्य जन्म जैन** सर्वा. ०७।१७ उ. २०।४८ या.
अमावस	३०	मं	२५	३८	१७	३१	ध	३५	००	२१	१६	प	४३	०१	ना	२५	३८	२८	००	०७	१६	०६	२८	कुं. ०१/०६	१० ०४ [illegible]	६० [illegible]	०६	२८	२८	१७	**देवपितृकार्ये भौमवती अमावस्या शिव खप्पर पूजा श्री जिनकुशल सूरि C**

गोचर ग्रहाः

१२ श — ११ बु रा शु — १० सू मं — ९ — ८ — ७ चं — ६ — ५ के — ४ — ३ गु — २ — १

फा. कृ. पक्षे ८ चन्द्रे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	०६	०९	१०	०२	१०	११	१०	०४
अं.	२६	२०	१८	०१	२२	०३	०५	१५	१५
क.	००	१३	४६	२०	१८	५९	१४	५२	५२
वि.	३४	२१	३४	४५	५७	०६	०७	५६	५६
गति	६० ४४	७१४ ३३	४७ ०८	१०२ ४०	०५ ३०	७५ ११	०६ २३	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	धनिष्ठा १	विशा. १	श्रवण ३	शतभि. १	पुनर्व. १	धनिष्ठा ४	उ.भा. १	शतभि. ३	पू.फा. १

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी नाम संवत्सरे

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फर.	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः	दिवा
०२	११।००	१२।३८	१४।३५	१६।४८	१९।०६	२१।२२	२३।३७	२५।५४	२८।११	३०।१४	०८।०३	०९।३३
०३	१०।५६	१२।३४	१४।३१	१६।४४	१९।०२	२१।१८	२३।३३	२५।५०	२८।०७	३०।११	०७।५९	०९।२९
०४	१०।५३	१२।३०	१४।२७	१६।४०	१८।५८	२१।१४	२३।२९	२५।४६	२८।०३	३०।०७	०७।५५	०९।२५
०५	१०।४९	१२।२७	१४।२३	१६।३६	१८।५४	२१।१०	२३।२५	२५।४२	२७।५९	३०।०३	०७।५१	०९।२१
०६	१०।४५	१२।२३	१४।१९	१६।३२	१८।५०	२१।०६	२३।२१	२५।३९	२७।५५	२९।५९	०७।४७	०९।१७
०७	१०।४१	१२।१९	१४।१५	१६।२८	१८।४६	२१।०२	२३।१७	२५।३५	२७।५१	२९।५५	०७।४३	०९।१३
०८	१०।३७	१२।१५	१४।११	१६।२४	१८।४२	२०।५८	२३।१३	२५।३१	२७।४७	२९।५१	०७।३९	०९।०९
०९	१०।३३	१२।११	१४।०७	१६।२०	१८।३८	२०।५४	२३।०९	२५।२६	२७।४३	२९।४७	०७।३५	०९।०५
१०	१०।२९	१२।०६	१४।०३	१६।१६	१८।३४	२०।५०	२३।०५	२५।२२	२७।३९	२९।४३	०७।३१	०९।०१
११	१०।२४	१२।०२	१३।५९	१६।१२	१८।३०	२०।४६	२३।०१	२५।१८	२७।३५	२९।३९	०७।२७	०८।५७
१२	१०।२०	११।५८	१३।५५	१६।०८	१८।२६	२०।४२	२२।५७	२५।१४	२७।३१	२९।३४	०७।२३	०८।५३
१३	१०।१६	११।५४	१३।५१	१६।०४	१८।२२	२०।३८	२२।५३	२५।१०	२७।२७	२९।३०	०७।१९	०८।४९
१४	१०।१२	११।५०	१३।४७	१६।०१	१८।१८	२०।३३	२२।४८	२५।०६	२७।२३	२९।२६	०७।१५	०८।४५
१५	१०।०८	११।४६	१३।४३	१५।५६	१८।१४	२०।२९	२२।४४	२५।०२	२७।१९	२९।२२	०७।१०	०८।४०
१६	१०।०४	११।४२	१३।३८	१५।५२	१८।१०	२०।२५	२२।४०	२४।५८	२७।१४	२९।१८	०७।०६	०८।३६
१७	१०।०१	११।३८	१३।३४	१५।४७	१८।०५	२०।२१	२२।३६	२४।५४	२७।१०	२९।१४	०७।०२	०८।३२

शेयर बाजार, वायदा बाजार की जानकारी हेतु **श्रीधरी तेजी मंदी रिपोर्ट** सन् 2025 की मंगवाकर लाभ उठायें।

कुंभ संक्रान्ति फलम्

फाल्गुन कृष्ण पक्षे १० गुरौ कुम्भेऽर्क प्र. (स्टे. टा. २८।१०) वा. २ न. ३ अस्य पुण्यकालः पर दिने शुक्रवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च देवालय संभागीय रचना गति। वार नाम मंदा-वैज्ञानिक, शोधकर्त्ता, विद्वान, जगत, साहित्यकार, प्राचार्य, ज्ञान प्रदाता हेतु सौख्य कारक। नक्षत्र नाम-राक्षसी, श्रमजीवी, निर्धन परिवार जन जाति, व्यवसायहीन, समुदाय हेतु मनोत्साहवर्धक। रात्रि ४ या. व्या. पशुपालक वर्ग, दुग्ध व्यवसायी परिश्रम विशेष प्रभारक कष्टद प्रतिफल। पूर्वे गमन, आग्नेयां दृष्टिः, संक्रांति वास निवास मालीगृहे, बालव करणे, वाहन-व्याघ्र, उपवाहन-अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजत पात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा मुहूर्त्त-४५ धान्य गल्ला स्थिर समभाव। सुगंधी पदार्थ, गरम मसाला, सौंठ, तम्बाकू, चाय, रोली, चंदन, केसरदाना, मेथी, सरसों, हल्दी, तुअर, चना, चांदी, सोना, पीली वस्तुऐं, घोड़ा आदि चौपाया, उन्नत धारणा। शुक्रोदय पश्चिमे, राहु दक्षिणे, वत्स पश्चिमे, मूल पाताले।

गोचर ग्रहाः

१२ श — ११ सू बु शु रा — १० चं मं — ९ — ८ — ७ — ६ — ५ के — ४ — ३ गु — २ — १

फा. कृ. पक्षे ३० भौमे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०९	०९	१०	०२	१०	११	१०	०४
अं.	०४	२८	२५	२१	२१	१४	०६	१५	१५
क.	०५	०२	०४	४७	३९	००	०६	२७	२७
वि.	५७	३२	००	५८	२९	०८	३०	३०	३०
गति	६० ३५	७९० ०५	४७ १४	७४ ३९	०४ १०	७५ ०३	०६ ४५	०३ ११	०३ ११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	धनिष्ठा ४	धनिष्ठा २	धनिष्ठा १	पू.भा. १	पुनर्व. १	शत. ३	उ.भा. १	शतभि. ३	पू.फा. १

फाल्गुन शुक्ल पक्षः वि. संवत् २०८२ राष्ट्रीय शाकः १९४७

१८ फरवरी से ३ मार्च सन् २०२६ ई. तक

शिशिर-बसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे तथा च दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट प्रातः ५घं.३०मि. के रा.	अं.	क.	वि.	गति	विविधतारीखें बं.	मु.	भा.	अं.	
मानस	१	बु	२४	१७	१६	५८	श	३५	०३	२१	१६	शि	३८	४५	ब	२४	१७	२८	०३	०७	१५	०६	२८	कुम्भ	१०	०५	०६	३१	६० ३३	०७	२९	२९	१८	चन्द्रदर्शनं मीने भानुः २१।२२ बंसत ऋतु प्रा. G ३१ प्रा. मीने शुक्रः २४।५७
मुद्गर	२	गु	२१	५२	१५	५९	पूभा	३४	०४	२०	५२	सि	३३	४०	कौ	२१	५२	२८	०७	०७	१४	०६	२९	मी. १५/००	१०	०६	०७	०४	६० ३१	०८	२१	३०	१९	शतभिषायां रविः १८।३४ फूलेरा दूज रामकृष्ण परमहंस जयंती रमजान A
केतु	३	शु	१८	३४	१४	३९	उभा	३२	१५	२०	०७	सा	२७	५४	ग	१८	३४	२८	११	०७	१३	०६	३०	मीन	१०	०७	०७	३६	६० ३०	०९	०२	फा१	२०	भ. २५।५२ उ. सर्वा. अमृत. २०।०७ उ. ३१।१३ या. राष्ट्रीय फाल्गुन मास प्रारंभ
धाता	४	श	१४	३२	१३	०१	रे	२९	४६	१९	०७	शु	२१	३६	वि	१४	३२	२८	१४	०७	१३	०६	३०	मे. १९/०७	१०	०८	०८	०५	६० २८	१०	०३	०२	२१	भ. १३।०१ या. पंचक ११।०७ या. पूभायां शुक्रः २४।३६
आनन्द	५	र	०९	५७	११	१०	अ	२६	४७	१७	५५	शु	१४	५२	बा	०९	५७	२८	१८	०७	१२	०६	३१	मेष	१०	०९	०८	३३	६० २६	११	०४	०३	२२	सर्वार्थसिद्धि योग ०७।१२ उ. १७।५५ या. A मास ९ मुस. पाक रोजे शुरू
चर	६	चं	०४	५७	०९	१०	भ	२३	२७	१६	३४	ब्र	०७	४९	तै	०४	५७	२८	२२	०७	११	०६	३२	वृ. २२/१२	१०	१०	०८	५१	६० २४	१२	०५	०४	२३	भ. ३१।०३ उ. कुम्भे भौमः ११।५० C सर्वार्थसिद्धि. ०७।१० उ. १५।०७ या.
क्षय	७	चं	५९	३९	३१	०३	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	० ०	००	००	००	००	०० ००	००	००	००	००	B होली चौमासा विधान प्रारंभ जैन रौद्र नाम सम्वत्सर ५४ वां प्रा. C
गद	८	मं	५४	१५	२८	५२	कृ	१९	५३	१५	०७	ऐं/वै	००/५३	३४/१०	वि	२६	५९	२८	२६	०७	१०	०६	३२	वृषभ	१०	११	०९	२३	६० २२	१३	०६	०५	२४	भ. १७।५८ या. श्री दादूदयाल ज. होलाष्टक प्रारंभ अष्टाह्निका पर्व B
शुभ	९	बु	४८	५१	२६	४१	रो	१६	१४	१३	३९	वि	४५	४८	बा	२१	३४	२८	२९	०७	०९	०६	३३	मि. २४/५५	१०	१२	०९	४५	६० २०	१४	०७	०६	२५	सर्वा. ०७।०९ उ. ३१।०८ या. E मेवाड़ अस्तं बुधः पश्चिमे २७।५५ F
मृत्यु	१०	गु	४३	३५	२४	३४	मृ	१२	३८	१२	११	प्री	३८	३३	तै	१६	१२	२८	३३	०७	०८	०६	३३	मिथुन	१०	१३	१०	०५	६० १८	१५	०८	०७	२६	वक्री बुधः १२।१७ D खाटूश्याम जी प्रा. रामस्नेही फूलडोल शाहपुरा E
ए. व्रत	११	शु	३८	३५	२२	३३	आ	०९	१४	१०	४९	आ	३१	३०	व	११	०३	२८	३७	०७	०७	०६	३४	क. २७/५२	१०	१४	१०	२३	६० १६	१६	०९	०८	२७	भ. ११।३३ उ. २२।३३ या. आमलकी एकादशी व्रतं सर्वेषाम् मेला D
छत्र	१२	श	३४	०४	२०	४४	पुन	०६	१२	०९	३५	सौ	२४	४९	ब	०६	१६	२८	४१	०७	०६	०६	३५	कर्क	१०	१५	१०	३१	६० १४	१७	१०	०९	२८	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस H उ. ०९।०० या. मुनि नाथूलाल पुण्य जैन
प्रदोष	१३	र	३०	११	१९	१०	पु	०३	४२	०८	३४	शो	१८	३८	कौ	०२	०३	२८	४५	०७	०५	०६	३५	कर्क	१०	१६	१०	५३	६० १२	१८	११	१०	मा१	प्रदोष व्रतं रवि पुष्यः सर्वा. ०७।०५ उ. ०८।३४ या. मार्च मास ३ ता. G
सौम्य	१४	चं	२७	१०	१७	५६	आ	०१	५८	०७	५२	अ	१३	०६	व	२७	१०	२८	४८	०७	०४	०६	३६	सिं. ०७/५२	१०	१७	११	०५	६० १०	१९	१२	११	०२	भ. १७।५६ उ. २९।२९ या. पूर्णिमा व्रतं होलिका दहन प्रदोष सायं ०६।३६ H
पूर्णिमा	१५	मं	२५	११	१७	०८	म	०१	१०	०७	३२	सु	०८	२२	ब	२५	११	२८	५२	०७	०३	०६	३६	सिंह	१०	१८	११	१६	६० ०८	२०	१३	१२	०३	छारण्डी धूलण्डी पूर्णिमा पुण्य चन्द्रग्रहण चैतन्य महाप्रभु ज. कुण्डलपुर I

गोचर ग्रहाः

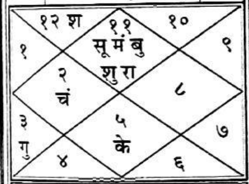

फा.शु. पक्षे ८ भौमे स्टै.टा.प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०१	१०	१०	०२	१०	११	१०	०४
अं.	११	०४	००	२७	२१	२२	०६	१५	१५
क.	०९	१८	३४	५४	१४	४५	५४	०५	०५
वि.	२३	३१	४७	४७	१३	०६	३६	१४	१४
ग	६०	८५२	४७	१७	०२	७४	०७	०३	०३
ति	२२	०४	१६	३३	५१	५४	०१	११	११
मा/व	मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	शत. २	कृति. ३	धनिष्ठा ३	पू.भा. ३	पुनर्व. १	पू.भा. १	उ.भा. २	शतभि. ३	पू.फा. १

★ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री सिद्धार्थी-रौद्र नाम संवत्सरे ★

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फर.	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१८	०९।५६	११।३३	१३।३०	१५।४३	१८।०१	२०।१७	२२।३२	२४।४९	२७।०६	२९।१०	३०।५४	०८।२८
१९	०९।५२	११।२९	१३।२६	१५।३९	१७।५७	२०।१३	२२।२८	२४।४५	२७।०२	२९।०६	३०।५०	०८।२४
२०	०९।४८	११।२६	१३।२२	१५।३६	१७।५३	२०।०९	२२।२४	२४।४२	२६।५८	२९।०२	३०।४६	०८।२०
२१	०९।४४	११।२२	१३।१८	१५।३२	१७।५०	२०।०५	२२।२०	२४।३८	२६।५४	२८।५८	३०।४२	०८।१६
२२	०९।४०	११।१८	१३।१५	१५।२८	१७।४६	२०।०१	२२।१६	२४।३४	२६।५१	२८।५४	३०।३८	०८।१२
२३	०९।३६	११।१४	१३।११	१५।२४	१७।४२	१९।५८	२२।१३	२४।३०	२६।४७	२८।५०	३०।३५	०८।०९
२४	०९।३२	११।१०	१३।०७	१५।२०	१७।३८	१९।५४	२२।०९	२४।२६	२६।४३	२८।४७	३०।३१	०८।०५
२५	०९।२९	११।०७	१३।०३	१५।१६	१७।३४	१९।५०	२२।०५	२४।२३	२६।३९	२८।४३	३०।२७	०८।०१
२६	०९।२५	११।०३	१२।५९	१५।१३	१७।३०	१९।४६	२२।०१	२४।१९	२६।३५	२८।३९	३०।२३	०७।५७
२७	०९।२१	१०।५९	१२।५५	१५।०९	१७।२७	१९।४२	२१।५७	२४।१५	२६।३१	२८।३५	३०।१९	०७।५३
२८	०९।१७	१०।५५	१२।५२	१५।०५	१७।२३	१९।३८	२१।५३	२४।११	२६।२८	२८।३१	३०।१५	०७।४९
मा१	०९।१३	१०।५१	१२।४८	१५।०१	१७।१९	१९।३४	२१।४९	२४।०७	२६।२४	२८।२७	३०।११	०७।४६
०२	०९।०९	१०।४७	१२।४४	१४।५७	१७।१५	१९।३१	२१।४६	२४।०३	२६।२०	२८।२३	३०।०८	०७।४२
०३	०९।०५	१०।४३	१२।४०	१४।५३	१७।११	१९।२७	२१।४२	२३।५९	२६।१६	२८।१९	३०।०४	०७।३८

F सर्वार्थसिद्धि योग १०।४९ उ. ३१।०६ या. I मक्षी जी सोनगिरि मेला जैन अष्टाह्निका पर्व विधान पूर्ण जैन

ग्रहगोचरीय फलम्

द्विर्द्वादश शनि भौम का, नीति राज नवरंग। नेता नायक आपदा, आंदोलित जन संग।। चलन कलन शनि भौम का, द्विर्द्वादश गति चार। राहत सेहत पक्ष में, व्यय विशेष संसार।। यान खान घटना विविध, हरण करण प्रतिचार। आतंक द्वन्द विस्फोटकी नैतिक पतन प्रहार।। षष्ठी फागुन बदी में, चित्रा करै सुभिक्ष। यदि स्वाति नक्षत्र हो, तीन मास दुर्भिक्ष।। तृतीया फागुन बदी में, देखो बादल बात। आश्विन शुक्ला तीज को, वर्षा हो दिन रात।। फागुन शुक्ला सप्तमी, ना बादल ना बाय। तो तृण संज्ञक धान्य की पैदावार सिवाय।। फागुन में बादल रहै किंतु न बरसै नीर। तो फिर वर्षा काल में, वर्षा हो गंभीर।। फागुन पूनम को रहै, बादल वर्षा गाज। लाभ सातवें मास हो, खूब खरीदो नाज।। होली जलने के समय, यदि बादल हो जाये। जो गेहूँ रोली लगे, महंगे भाव बिकाय।। क्रूर वार तेजी करै, मावस पूनम देत्य। सोम शुक्र गुरूवार, शुभवारी मंदी होय।। नवम पंचम गुरू भौम का, श्रीधर कथन निवेश। ज्ञान कला विज्ञान की, प्रगति देश विदेश। जन कल्याणक योजना, सुविधा ऋण प्रादेश। निर्धन सुख की कामना, वसुधा भारत देश।।

गोचर ग्रहाः

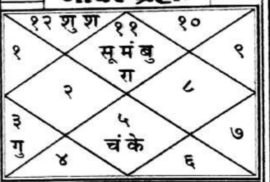

फा. शु. पक्षे १५ भौमे स्टै. टा. प्रा. ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०४	१०	१०	०२	११	११	१०	०४
अं.	१८	१२	०६	२६	२०	०१	०७	१४	१४
क.	११	११	०५	३६	५८	२८	४४	४२	४२
वि.	१६	५९	४२	५८	१७	५६	१९	५९	५९
ग	६०	७१७	४७	४५	०१	७४	०७	०३	०३
ति	०८	१७	१६	०१	३०	४४	१३	११	११
मा/व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
नक्षत्र	शतभि. ४	मघा ४	धनिष्ठा ४	पू.भा. २	पुनर्व. १	पू.भा. ४	उ.भा. २	शतभि. ३	पू.फा. १

चैत्र कृष्ण पक्षः विक्रम संवत् २०८२ राष्ट्रीय शाकः १९४७

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल स्टै. टा. रा. घं. मि.	दैनिक सूर्यस्पष्ट (प्रातः ५ घं. ३० मि. के) रा.	अं.	क.	वि.	गति	गति	विविध तारीखें बं.	मु.	भा.	अं.
सुस्थिर	१	बु	२४	२८	१६	४९	पूफा	०१	३१	०७	३९	धृ	०४	३५	कौ	२४	२८	२८	५६	०७	०२	०६	३७	क. १३/४६	१०	१९	११	२४	६०	०७	२१	१४	१३	०४
मातंग	२	गु	२५	०७	१७	०४	उफा	०३	११	०८	१८	शू	०१	५०	ग	२५	०७	२९	००	०७	०१	०६	३७	कन्या	१०	२०	११	३१	६०	०५	२२	१५	१४	०५
चौथव्रत	३	शु	२७	१४	१७	५४	ह	०६	१४	०९	३०	गं/वृ	००/५१	११/३१	वि	२७	१४	२९	०४	०७	००	०६	३८	तु. २२/११	१०	२१	११	३६	६०	०३	२३	१६	१५	०६
काण	४	श	३०	४६	१९	१८	चि	१०	४०	११	१६	धु	६०	००	बा	३०	४६	२९	०८	०६	५९	०६	३८	तुला	१०	२२	११	३९	६०	०२	२४	१७	१६	०७
लुम्बक	५	र	३५	३३	२१	१२	स्वा	१६	२३	१३	३२	धु	००	१३	कौ	०३	०२	२९	१२	०६	५८	०६	३९	तुला	१०	२३	११	४१	६०	०१	२५	१८	१७	०८
मित्र	६	चं	४१	१६	२३	२८	वि	२३	०५	१६	११	व्या	०१	३५	ग	०८	२०	२९	१५	०६	५७	०६	४०	वृ. ०१/३०	१०	२४	११	४०	५९	५८	२६	१९	१८	०९
वज्र	७	मं	४७	२६	२५	५५	अ	३०	२२	१९	०५	ह	०३	३२	वि	१४	२१	२९	१९	०६	५६	०६	४०	वृश्चिक	१०	२५	११	३९	५९	५७	२७	२०	१९	१०
ध्वांक्ष	८	बु	५३	३२	२८	२०	ज्ये	३७	४२	२२	००	व	०५	४१	बा	२०	३३	२९	२३	०६	५५	०६	४१	ध. २२/००	१०	२६	११	३५	५९	५५	२८	२१	२०	११
धूम्र	९	गु	५८	५८	३०	३०	मू	४४	३३	२४	४४	सि	०७	४०	तै	२६	२३	२९	२७	०६	५४	०६	४१	धनु	१०	२७	११	३०	५९	५३	२९	२२	२१	१२
प्रवर्ध	१०	शु	६०	००	-	-	पूषा	५०	२५	२७	०३	व्य	०९	०५	व	३१	१८	२९	३१	०६	५३	०६	४२	धनु	१०	२८	११	२४	५९	५२	३०	२३	२२	१३
राक्षस	१०	श	०३	१८	०८	११	उषा	५४	५३	२८	४९	व	०९	३५	वि	०३	१८	२९	३५	०६	५२	०६	४२	म. ०९/३३	१०	२९	११	१५	५९	५०	चै१	२४	२३	१४
ए. व्रत	११	र	०६	०५	०९	१७	श्र	५७	४३	२९	५६	प	०८	५५	बा	०६	०५	२९	३९	०६	५१	०६	४३	मकर	११	००	११	०५	५९	४८	०२	२५	२४	१५
प्रदोष	१२	चं	०७	०८	०९	४१	ध	५८	५०	३०	२२	शि	०६	५६	तै	०७	०८	२९	४३	०६	५०	०६	४३	कुं. १८/१४	११	०१	१०	५४	५९	४६	०३	२६	२५	१६
मृत्यु	१३	मं	०६	२६	०९	२३	श	५८	२०	३०	०१	सि/सा	०३/५८	३५/५२	व	०६	२६	२९	४७	०६	४९	०६	४४	कुंभ	११	०२	१०	४०	५९	४५	०४	२७	२६	१७
पद्म	१४	बु	०४	०५	०८	२६	पूभा	५६	२३	२९	२१	शु	५३	०३	श	०४	०५	२९	५१	०६	४८	०६	४४	मी. २३/३६	११	०३	१०	२५	५९	४३	०५	२८	२७	१८
अमावस	३०	गु	००	१७	०६	५३	उभा	५३	१५	२८	०५	शु	४६	१५	ना	००	१७	२९	५५	०६	४७	०६	४५	मीन	११	०४	१०	०७	५९	४१	०६	२९	२८	१९

०४ मार्च से १९ मार्च २०२६ ई तक

बसन्त ऋतुः रवि उत्तरायणे तथा च दक्षिणगोलीय

इस संदर्भ का सम्पूर्ण समय भा. स्टै. टा. घण्टा मिनटों में दिया गया है।

वसन्तोत्सवः पूभायां रविः २४।५५ उभायां शुक्रः १७।०९
भ. २१।२५ उ. सन्त तुकाराम ज. E ज्योतिष दि. ध्वजा रोपण सर्वा. २८।०५ उ.
भ. १७।५४ या. चैत्री चतुर्थी व्रतं चन्द्रोदय रात्रि २१।२८
सर्वा. ११।१६ उ. ३०।५८ या. D नववर्ष प्रा. श्री गौतम ज. गुड़ी पड़वा E
विश्व महिला दिवस श्री रंगपंचमी अस्तं शनिः पश्चिमे ०९।३४
भ. २३।२८ उ. एकनाथ षष्ठी B या. बुधोदय पूर्वे १२।४०

भ. १२।४१ या. शीतला सप्तमी शतभिषायां बुधः ०७।५६
शीतलाष्टमी बासोड़ा मार्गी गुरूः ०९।०१ केसरिया जी मेला मेवाड़ वर्षी- A
A तप प्रा. ऋषभदेव जन्म+दीक्षा श्री आदिनाथ दीक्षा कल्याणक जैन
भ. १९।२५ उ. दशामाता व्रतं C मंडोर जोधपुरे वारूणी योग ०९।२३ या.
भ. ०८।११ या. मीनेऽर्कः २५।०४ बं. चैत्र मास प्रा. सर्वा. २८।४९ उ. ३०।५१ B
पापमोचिनी एकादशी व्रतं सर्वेषाम् रेवत्यां शुक्रः १०।३७

सोम प्रदोष व्रतं वारूणी योग ३०।२२ उ. पंचक १८।१४ उ.
भ. ०९।२३ उ. २०।५९ या. मासशिवरात्रि रंगतेरस श्री प्रकाशपुरी निर्वाण C
पितृकार्ये अमावस्या उभायां रविः ०९।२१
देवकार्ये अमावस्या संवत् २०८२ पूर्णता नवरात्रि प्रा. घट स्थापना चैत्री D

गोचर ग्रहाः

चैत्र कृ. पक्षे ८ बुधे स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०७	१०	१०	०२	११	११	१०	०४
अं.	२६	२१	१२	१९	२०	११	०८	१४	१४
क.	११	४९	२३	०८	५१	२६	४२	१७	१७
वि.	३५	०९	५१	२८	४५	०४	४०	३३	३३
गति	५९	[illegible]	४७	५४	००	७४	०७	०३	०३
	५५	१७	१५	०५	०४	३२	२३	११	११
मा/व	मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
नक्षत्र	पू.भा.२	ज्येष्ठा २	शतभि.२	शतभि.४	पुनर्व.१	उ.भा.३	उ.भा.२	शतभि.३	पू.फा.१

✱ दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी (भा. स्टै. टा. घंटा मिनटों में) श्री रौद्र नाम संवत्सरे ✱

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मार्च	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
०४	०९।०१	१०।३९	१२।३६	१४।४९	१७।०७	१९।२३	२१।३८	२३।५५	२६।१२	२८।१६	३०।०१	०७।३४
०५	०८।५८	१०।३५	१२।३२	१४।४५	१७।०३	१९।१९	२१।३४	२३।५१	२६।०८	२८।१२	२९।५६	०७।३०
०६	०८।५४	१०।३२	१२।२८	१४।४१	१६।५९	१९।१५	२१।३०	२३।४८	२६।०४	२८।०८	२९।५२	०७।२६
०७	०८।५०	१०।२८	१२।२४	१४।३७	१६।५५	१९।११	२१।२६	२३।४४	२६।००	२८।०४	२९।४८	०७।२२
०८	०८।४६	१०।२४	१२।२०	१४।३४	१६।५१	१९।०७	२१।२२	२३।४०	२५।५६	२८।०१	२९।४४	०७।१८
०९	०८।४२	१०।२०	१२।१६	१४।३०	१६।४७	१९।०३	२१।१८	२३।३६	२५।५२	२७।५६	२९।४०	०७।१४
१०	०८।३८	१०।१६	१२।१२	१४।२६	१६।४३	१८।५९	२१।१४	२३।३२	२५।४८	२७।५२	२९।३६	०७।१०
११	०८।३४	१०।१२	१२।०८	१४।२२	१६।४०	१८।५५	२१।१०	२३।२८	२५।४४	२७।४८	२९।३२	०७।०६
१२	०८।३०	१०।०८	१२।०४	१४।१८	१६।३६	१८।५१	२१।०६	२३।२४	२५।४०	२७।४४	२९।२८	०७।०२
१३	०८।२६	१०।०४	१२।०१	१४।१४	१६।३२	१८।४७	२१।०२	२३।२०	२५।३७	२७।४०	२९।२४	०६।५८
१४	०८।२२	१०।०१	११।५७	१४।१०	१६।२८	१८।४३	२०।५८	२३।१६	२५।३३	२७।३६	२९।२०	०६।५४
१५	०८।१८	०९।५६	११।५३	१४।०६	१६।२४	१८।३९	२०।५४	२३।१२	२५।२९	२७।३२	२९।१६	०६।५०
१६	०८।१४	०९।५२	११।४९	१४।०२	१६।२०	१८।३५	२०।५०	२३।०८	२५।२५	२७।२८	२९।१२	०६।४६
१७	०८।१०	०९।४८	११।४५	१३।५८	१६।१६	१८।३१	२०।४६	२३।०४	२५।२१	२७।२४	२९।०८	०६।४२
१८	०८।०६	०९।४४	११।४१	१३।५४	१६।१२	१८।२७	२०।४२	२३।००	२५।१७	२७।२०	२९।०४	०६।३९
१९	०८।०२	०९।४०	११।३७	१३।५०	१६।०८	१८।२३	२०।३८	२२।५६	२५।१३	२७।१६	२९।००	०६।३५

शेयर बाजार, वायदा बाजार की जानकारी हेतु **श्रीधरी तेजी मंदी रिपोर्ट** सन् 2025 की मंगवाकर लाभ उठायें।

मीन संक्रान्ति फलम्

चैत्र कृष्ण पक्षे १० शनौ मीनेऽर्कः प्र.(स्टे. टा. २५।०४) वा. ३ न. ३ अस्य पुण्यकालः पर दिने रविवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः तथा च भवन संभागीय रचना गति। वार नाम राक्षसी–आदिवासी जन, सुदूर जंगल पर्वत निवासी जनजाति अनुसूचित अल्पसंख्यक वर्ग हेतु सुखद। नक्षत्र नाम–मंदा–धर्मोपदेशक, कथावाचक, व्याख्याता, लेखक, पत्रकार, शिक्षक वर्ग हेतु सुखद मनोत्साह वर्धक। रात्रि ३ या. व्या. अभिनेता, चलचित्र, निर्माता, नर्तक, वादक, गायक हेतु कष्टद प्रभार सूचक। उत्तरे गमन, ईशान दृष्टिः, संक्रांति वास निवास दुष्टजन–पापात्मा गृहे, बालव करणे, वाहन व्याघ्र, उपवाहन–अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जातिपुष्प, कंकण भूषण, पर्णकंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा मुहूर्त–४५ धान्य गाम्र स्थिर सम भाव। सुगंधी पदार्थ, गरम मसाला, सौंठ, तमाखु, चाय, रोली, चंदन, केसर, दानामेथी, सरसों, हल्दी, तुअर, चना, चांदी, सोना, पीली वस्तुऐं, घोड़ा आदि चौपाया पशु उन्नत भाव धारणा। शुक्रोदय पश्चिमे, वत्स पश्चिमे, राहु दक्षिणे, मूल भूमौ।

गोचर ग्रहाः

चैत्र कृ. पक्षे ३० गुरौ स्टै. टा. प्रातः ५ घं. ३० मि.

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	११	१०	१०	०२	११	११	१०	०४
अं.	०४	०३	१८	१४	२०	२१	०९	१३	१३
क.	१०	२५	४१	२५	५७	२१	४२	५२	५२
वि.	०७	०२	३९	५४	४५	३४	०४	०७	०७
गति	५९	८४५	४७	०७	०१	७४	०७	०३	०३
	४१	१५	११	५९	३७	१९	२८	११	११
मा/व	मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ/अ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
नक्षत्र	उ.भा.१	उ.भा.१	शतभि.४	शतभि.३	पुनर्व.१	रेवती २	उ.भा.२	शतभि.३	पू.फा.१

❁श्री संक्रान्ति वाहनं व्याघ्रः❁संक्रान्त्युपवाहनं अश्वः❁

▲ श्रीमन् महामंगल मूर्त्तयेनमः ▲ ***अथ मकर संक्रान्ति फलं***- स्वस्ति श्री विक्रमाब्द संवत् २०८२ शाके १९४७ श्री सिद्धार्थी-रौद्र नामकीय संवत्सरे प्रवर्त्तमाने रविरुत्तरे शिशिर ऋतौ मासानां मासोत्तमे माघ मासे कृष्ण पक्षे ११ एकादशी तिथि मध्ये बुधवासरे २५।५५ अनुराधा नक्षत्रे ४८।५१ गण्ड योगे ३१।०१ बालव करणे २५।५५ दिन प्रमाणं २६।१८ रात्रि प्रमाणं ३३।४२ अहोरात्रैक्यं ६०।०० एवं पंचांग शुद्धावत दिने श्री सूर्योदयादिष्टं १९।०० अस्तं अपराह्न कालः वेलायां मकर राशौ सूर्यस्य संक्रमणं स्यात् तदा देवानां दिनोदयः दैत्यानां रात्र्युद्गमो। अस्य पुण्यकालः धर्मशास्त्रीय वचनानुसारेण अद्यैव बुधवासरे अपराह्न वेलातः श्रीकार शुभपुण्यप्रदः। ***अथ मकर संक्रांति विषये वाहनादि*** क्रमात् वारात् ३ नक्षत्रात् ३ कूप-वापी संभागीय रचना गति। वारनाम-मंदाकिनी-राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, विविध दलपति, राजनेता, अधीक्षक, वर्ग हेतु सुखद। नक्षत्रनाम-मंदाकिनी-राजनेता, दलपति, सचिव, राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, अधीक्षक हेतु मनोत्साह वर्धक सुखद। दिवा ३ याम् व्यापिनी-व्यापारी, स्वतंत्र कार्यकर्त्ता, उद्योगपति, वैश्य, आयात-निर्यातक, शेयर बाजार कारक पक्ष हेतु कष्टद प्रभार सूचक। पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टिः, संक्रान्ति वास निवास-माली गृहे, बालव करणे, वाहन- व्याघ्र, उपवाहन-अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुम लेपन, भूतजाति, जातिपुष्प, कंकण भूषण, पर्णकंचुकी, कुमार्याऽवस्था, उपविष्टा, मुहूर्त्त-३० धान्यगल्ला स्थिर सम भाव। सुगंधी पदार्थ, गरम मसाला, सौंठ, तम्बाकू, चाय, रोली, चन्दन, केसर, दानामेथी, सरसों, हल्दी, तुअर, चना, चांदी, सोना, घोड़ा उन्नत धारणा। इतीदं संक्रमणं फलं तस्यात् प्राक्परतोऽपि वा। श्रृणुयात पुत्र पौत्राद्ये मोऽते सुचिरम्भुवि।। इतीदं संक्रमणं मकर संक्रान्ति फलम्।।

शकुन सूत्रावली- रवि संक्रमण बुध दिवस, गणना श्रीधर कक्ष। तेल, गुड़, रस, खाण्ड में तेजी का ही पक्ष।। बम्बई वाले पं. श्रीधर शिवलाल जी, ज्ञानसागर छापाखाना, पुराना शहर किशनगढ़-सिटी, राजस्थान।

अथ गुरुचार-शनिचार फलम्- इस विक्रम संवत् २०८२ मध्य देवगुरू बृहस्पति नवीन वर्ष प्रवेश चैत्र सुदी १ रविवार तारीख ३१-०३-२०२५ से वृषभ राशि में गतिशील रहते आगामी ज्येष्ठ बदी २ बुधवार तारीख १४-०५-२०२५ से शत्रु राशि मिथुन में गतिशील बनेगें। तथा तारीख १८-१०-२०२५ ई. से तारीख ०५-१२-२०२५ के मध्य अपनी उच्च तत्व मित्र राशि कर्क में गतिशील बनेगें। वृषभ राशि शुक्र तत्व प्रधान शत्रु गतिचारी तथा मिथुन स्थित बुध तत्व प्रधान सम शत्रु गतिचारी रहेगें। कर्क राशि उच्च तत्व मित्र गतिचारी रहेगें। एवं मूल प्रतिफल यह कि गुरूदेव की वृषभ-मिथुन राशि संज्ञा विशेष शुभ सूचक मांगलिक तत्व प्रसारक नही तथा सामान्य उत्पत्ति उत्पादन का सूचक कहा है। नाक्षत्रिक योग गणना गतिचार नियामक से रोहिणी-मृगशिरा-आर्द्रा-पुनर्वसु आदि नक्षत्रचार से गुरू बृहस्पति का वर्चस्व रहेगा। गतिचार पक्ष नियामक अनुसार चैत्र वर्ष प्रारंभ से मार्गी गतिशील तथा मार्गशीर्ष बदी ७ मंगलवार तारीख ११-११-२०२५ ई. से चैत्र बदी ८ बुधवार तारीख ११-०३-२०२६ ई. तक वक्रगति में गमनशील रहेगें। संहिता शास्त्रानुसार गुरू वृषभ राशि स्थित प्रतिफल यहकि- जीवे वृषे सुभिक्षं स्याद् गोरसस्य महर्घता। स्वल्प वृष्टिः प्रजा पीड़ा सस्यानां बहुधा भवेत। तथा मिथुन राशि अंतरांश का प्रतिफल यहकि- मिथुने च गुरूर्याति तत्राब्दे दारूणं भयम्। नृपाणां विग्रहस्य स्वल्पं तोयं भविष्यति।। कर्क राशि अंतरांश का प्रतिफल यहकि- बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्प मेघः प्रवर्षति। राजभि विग्रहश्चेव दुर्भिक्षं तत्र जायते।। अभिप्राय यह कि वर्ष पर्यन्त विषम फलद रचना रहे। गुरू वक्रगति फलाशय यहकि- मिथुन राशिस्थ गुरू वक्र फलम्-मिथुनस्थः सुरगुरूः विकारं कुरूते यदा। अष्टमासी भवेत्क्रूश चतुष्पद महर्घता।। उपरोक्त भावार्थ यहकि कृषि उत्पत्ति उत्पादन विपाक में कृमि कीट आदि से न्यूनता का आभास जन मानस में आदि संक्रामक रोग विशेष की गतिविधि बन पावे। तथा राजनायक-दलनेता-सचिव-अधिशासी-अभियंता वर्ग पर विविध जन समस्याओं का प्रारूप चरितार्थ होवे। तथा राजकाज संचालन में विबाधा एवं वैचारिक द्वन्द आर्थिक मुद्रा कोष में न्यूनता का वातावरण सहज बन पावें। दूध, धी, दही, तेल आदि तरल पदार्थो में विशेष तेजी का गतिक्रम। विविध प्रान्तीय स्तर पर जल समस्या का मानक विघटित होवें। वक्रगति कालांश में गाय, भैंस, अश्व, बकरी, ऊँट, बैल आदि में तेजी का गतिक्रम बनें। नक्षत्रचार फलाशय यहकि- रोहिण्यां न वृष्टिश्चतुष्पद विकारः। मृगशिरायां जने रोगो धान्य महर्घता। आर्द्रायां नभ मेघ गाज वर्षा सहितं कर्पासतिल विनाशः। पुनर्वसौ आरोग्यं सुभिक्षं सुवृष्टिः धान्य निष्पतिः सुयोग। भावार्थ यहकि रोहिणी नक्षत्र में मध्यम वृष्टि एवं चतुष्पदो में विकार। मृगशिरा में जन-मानस में रोगोपद्रव एवं धान्य में वृद्धि बनें। आर्द्रा में वर्षा मेघ गर्जना आदि से दुर्भिक्ष का वातावरण बनें तथा कपास तिल आदि में न्यूनता बनें। पुनर्वसु में उत्पादन उत्पत्ति में अभिवृद्धि, जनता में आरोग्यता, मनोत्साह, कार्य व्यवसाय वृद्धि एवं सुयोगद बनें।

शनिदेव का राश्यात्मक गतिचार- चैत्री वर्ष प्रारंभ तारीख ३०-०३-२०२५ ई. रविवार से शनि मीन राशिगत वर्ष पर्यन्त प्रभावशील रहेगे तथा ता. १३-०७-२०२५ ई. रविवार से वक्रगति होकर ता. २८-११-२०२५ ई. शुक्रवार को मार्गी गति का चलन कलन मान्य रहेगा। वार्षिक नक्षत्र चालन अनुसार पूर्वाभाद्रपद-उत्तराभाद्रपद दो नक्षत्र मध्य नक्षत्रचार रहेगा। मीन राशिगत प्रतिफल यहकि- प्रथिव्यां कम्पयागं प्रचलति पवनः कम्पते नागलोकः सप्तद्वीपेषु सिन्धोगरिवर गहने सर्ववृक्षादि हानिः। नाशः पृथिवीपतीनां जनयदविलयो यान्ति मेघाः प्रणाशं चक्रावर्तं समस्तं भ्रमति जगदिदं मीनगे सूर्य पुत्रे।। भावार्थ सरलार्थ यहकि देश विदेश स्तरीय राष्ट्र कर्णधार-महापुरूष, नीति निर्णायक पद विशेषस्थ एवं शासकीय राजपत्रित अधिकारी इन पक्ष हेतु विषम प्रतिफल एवं कार्य समस्या समाधान हेतु कष्टद प्रतिफल प्रतिभारक रचना बन पावें। तस्करी कारोबार कार्य व्यवसाय में विशेष गति तथा नित्य उपयोगी वस्तु पदार्थ दुग्ध आदि भावों में उन्नत गति। विविध यान चालक, ड्राईवर पक्ष हेतु कार्य संचालन समस्या बनें। समुद्र सीमा-तटीय देश संभाग में ऋतु प्रकोपवश जनधन हानि की रचना, मुस्लिम देश संभाग विविध समस्या का अनुभव लेगें। वर्षा में कमी तथा मेघ प्रवर्षण में प्रतिकूलता बने। वृक्षों की उत्पत्ति हेतु कार्यक्रम में विलम्ब से पर्यावरण दुषित बनें। प्रचण्ड वायु से जनधन हानि एवं जन मानस में भय व्याप्त रहेंगा। भूकंप आदि प्राकृतिक आपदा से जनधन हानि हो सकती है। तापमान प्रतिवृद्धि, कुयोग, भूस्खलन, क्रन्दन आदि दैविक प्राकृतिक प्रकोप एवं जन धन क्षति कुयोग, पशुधन सम्पदा में न्यूनता एवं पशुपालन में श्रम साध्य रचना विशेष बनें। **राहु-केतु गतिचार** : चैत्र नववर्ष २०८२ में तारीख १८-०५-२५ ई. से राहु कुंभ राशि में एवं केतु सिंह राशि में वर्षान्त तक गतिशील रहेगे। संहिता प्रतिफल यह- कुंभे राशौ यदा राहुर्दैवाद्रोगोपि संगता। तदालोक्य विधातव्यः शणसूत्राणि संग्रहः।। यदा राहुः स्थितः कुम्भेः। क्रूरग्रह समन्वितः। ग्रहीते सूत्र गोधूम मासे षष्ठे चतुर्गुणम्।। शुभमिति-यह अभिलेख मानवीय संहिता शास्त्रकृत है। तदुपरांत परमपिता परमेश्वर की मायावी सृष्टि रचना का विधान भी अस्तित्वशील बन जाता है। शुभमिति- पं. आशीष गौड़

✪ विविध ग्रहसंज्ञा विवेक ✪

नवग्रहो का भाग्योदय कालांश

रवि का २२ से २४ वर्ष तक। **चंद्र का** २४ से २५ वर्ष तक। **मंगल का** २८ से ३२वर्ष तक। **बुध का** ३२ से ३६ वर्ष तक। **गुरु का** १६ से २२ वर्ष तक। **शुक्र का** २५ से २८ वर्ष तक। **शनि का** ३६ से ४२ वर्ष तक। तथा **राहु का** ४२ से ४८ वर्ष तक और **केतु** ४८ से ५४ वर्ष तक प्रारब्ध विकासक।

✪ ग्रहाणां धात्वादि ✪

सूर्य-अस्थि, चन्द्र-रुधिर, **भौम**-मज्जा एवं मांस **बुध**-चमड़ी, **गुरु**-चर्बी, **शुक्र**-वीर्य, **शनि+राहु+केतु**-नसों के अधिपति है। इनकी विषम नेष्ट स्थिति में इन धातुओं की कमी एवं रोग तथा शुभ सबल स्थिति में इन धातुओं का सौंख्य।

✧ ग्रहाणां नैसर्गिक प्रतिफलं ✧

सूर्य-पिता, आत्मा, प्रताप, आरोग्य, शक्ति, लक्ष्मी। **चन्द्र**-मन, बुद्धि, उत्तम, सोसायटी, माता, धन का कारक। **मंगल**-पराक्रम, रोग, गुण, भाई, भूमि, जाति, शत्रु, शासक। **बुध**-विद्या, बंधु, विवेक, मामा, मित्र, वचन। **गुरु**-बुद्धि, शरीर, पुष्टि, पुत्र और ज्ञान को प्रदायक है। **शुक्र**-स्त्रीसुख, वाहन, भूषण, काम, श्रृंगार, व्यापार, सुख। **शनि**-आयु, जीवन, मृत्यु, सुख दुःख कारक। आदि उपलक्षक।

☆ ग्रहाणां मौलिक तत्त्व ☆

रवि, मंगल- तेज तत्व। **चन्द्र, शुक्र**-जल तत्व। **बुध**-पृथ्वी तत्त्व। **गुरू**- आकाश तत्व। **शनि**-वायु तत्व। **राहु**-जल, वायु तत्त्व। **केतु**-आकाश तेज तत्त्व के गुण धर्म से योग-वाही है।

अथ द्वादश भाव फल विबोधक यंत्रम्

फलित अन्वेषण के समय किस भाव से क्या-क्या विचार होना चाहिये इस हेतु सुलभ कोष्ठ प्रस्तुत है। साथ ही **ग्रह+राशि+कारक**+नेष्ट ग्रहों के स्थान व भाव संज्ञा भी स्थापित किये गये हैं।

प्रथम भाव- शरीर, वर्ण, आकृति, बुद्धि-लक्षण, यश-मान, गुणत्व, विवेकशक्ति, सुख-दुःख, प्रवास, तेज, जन जीवनीय विवेक, प्रारब्ध योग, जिज्ञासा, मस्तिष्क, स्वभाव, प्रतिष्ठा, आयु, शरीर चिन्ह, वर्णादि, निद्रा, दादी, स्त्री का दादा। **सूर्यकारक** ☆ मिथुन, कन्या,तुला, कुम्भ बलवान राशि। **भाव संज्ञा-केन्द्र संज्ञक।**

द्वितीय भाव- धन विवेक, दाहिना नेत्र, परिवार, कुटुम्ब सुख, स्वर विचार, गुणज्ञता, वचन विद्या भोजन, सौन्दर्य, यात्रा स्वर्णरत्नादि कोष, लक्षाधिपति तथा विपुल धन सम्पदा। **गुरु कारक** ☆ **मंगल नेष्ट। भाव पणफर।**

तृतीय भाव- बहन, भाई पराक्रम, साहस, हाथ, कान, महत्त्वकांक्षा, नौकर, सुखे-दुःख, हस्ताक्षर, मित्रता, रहन-सहन, वृत्ति, धैर्य, दत्तक, उद्योग, यश, अपयश, माता-पिता मरण, खांसी, दमा, ओषध ज्ञान। **मंगल कारक** ☆ पाप ग्रह बली। **भाव संज्ञा-आपोक्लिम, उपचय।**

चतुर्थ भाव- विद्या विचार, मातृ सुख दुःख पशु पालन, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद, नवनिर्माण मनोवृत्ति, मानसिक सुख-दुःख,गृह सुख, उपभोग, रहन-सहन, हृदय का साहस, जीवनीय उन्नति, कार्य प्रसाधन क्षमता, पूर्वीजित विविध सुख, ऐश्वर्य, कीर्ति, वाहन सवारी योग। **चन्द्र-बुध कारक** ☆ **बुध नेष्ट। भाव संज्ञा केन्द्र।**

पंचम भाव- बुद्धि, सन्तान, विवेक, देव भक्ति, विद्या योगयांत्रिक विद्या, शास्त्र निपुणता, सट्टा, लाटरी, राजनीति, प्रतिभा, वाक्पटुता, साहित्य योग, लेखन कुशलता, मंत्र यंत्र शक्ति, सन्तान सुख दुःख गर्भ। **गुरु कारक** ☆ गुरु एक मात्र विफल। **भाव संज्ञा त्रिकोण-पणफर**

षष्ठ भाव-रोग, शत्रु, व्यसन, चोट, घाव, सांसर्गिक रोग, मामा का पक्ष, नुक्सानी, चोरी भय, हानि स्वजन- विरोध, काका,मामा, कारागार, कमर, पैर, धोखा, मनस्ताप। **शनि+मंगलकारक** ☆ **शुक्र नेष्ट। भाव-त्रिक।**

सप्तम भाव-पत्नी का रुप रंग, गुण, स्वभाव, स्त्री सुखादि, लाभ-हानि, व्यापार-व्यवसाय, सुरत काम कला व्याभिचार, विवाह, न्यायालय विवेक, व्यापार क्रिया लाभ, मूत्राशय स्थान, अण्डकोष, साझेदारी, लिंग, योनि, भतीजा पक्ष, गुमा हुआ धन लाभ, मुकदमे, स्वतंत्र कार्य, अर्शरोग। **शुक्रकारक** ☆ शनि नेष्ट। **भाव केन्द्र।**

अष्टम भाव-रिश्वत, भूगत द्रव्य लाटरी आदि से आकस्मिक धन लाभ जल यात्रा, ससुराल से लाभ, चिन्ता, शत्रु गुप्त रोग विकार, स्त्री लाभ, सर्प दंश, आयुष्य, आत्म घात,व्यसन, ऋणत्व, संकट, **शनिकारक** ☆ **भाव-त्रिक**

नवम भाव- जलयात्रा, वायु यात्रा, धर्म, पाप, पुण्य, आदि का विवेक। उदारता, दान, दैविक शक्ति, यंत्र मंत्र साधना, पर्यटन, पौत्र सुख, शली, संतोष, संपन्नता योग, भाग्य विकास, अधिकार मान। **सूर्य+गुरु कारक** ☆ त्रिकोण का सर्व क्षेत्रिय विचार। **भाव त्रिकोण।**

दशम भाव-पिता का रूपरंग वृति एवं पात्रता, गुण, स्वभाव, आयु, उत्कर्ष, मान-सम्मान, उच्च पद राजयोग, सत्ता अधिकार, नौकरी, व्यापार, धन्धा, पिता का सुख, कर्म सिद्धि, मान हानि, जन-जीवनीय स्तर, अनुशासन, पद-लाभ, राज मान्यता, परीक्षोत्तीर्ण, वैभव उपजीविका। **मंगल योगद, गुरु, सूर्य, बुध, शनि कारक** ☆ **भाव-केन्द्र।**

एकादश भाव-सम्पूर्ण धनागम लाभ आदि का विचार, मित्र सुख, भाई जंवाई समाज में श्रेष्ठता, वाहन, सवारी का लाभ, सुख, प्रापर्टी योग, मंगल कृत्य, मशीनरी कार्य, मेल मिलाप क्रिया कुशलता। आकस्मिक लाभ, आभूषण-योग **गुरु कारक** ☆ **भाव-पणफर उपचय।**

द्वादश भाव- वाम नेत्र, दूर यात्रा का विचार, व्यसन, दुराचरण, कारावास, दण्ड, गुप्त शत्रु, अपव्यय, ऋण, अपघात, कलह, अच्छा-बुरा, विचार, मुकदमा, शत्रुत्व, द्रव्य हानि, अपयश। **शनिकारक** ☆ **भाव-त्रिक आपोक्लिम।**

✧✧✧

✷ ग्रह परिहार विवेक ✷

☆ **ग्रहों के दोष शासक ग्रह**- राहु का दोष नाशक बुध, राहु व बुध का दोष नाशक शनि और राहु बुध, शनि इन तीनों का दोष नाशक मंगल तथा राहु, **बुध** शनि मंगल इन चारों का दोष नाशक शुक्र है। **शुक्र**, राहु, बुध, शनि, मंगल इन पाचों का दोष नाशक गुरु है। राहु, मंगल, बुध, गुरू, शनि, शुक्र इन ६ दोष निवारण में चन्द्र तथा सभी ग्रहों का दोष नाशक सूर्य के बलवान होने पर समझें।

☆ **ग्रहाणां विफलत्वयोग**- सूर्य के साथ चन्द्र, लग्न से चतुर्थ बुध, पांचवें भाव में गुरु, दूसरे मंगल, छठे शुक्र, सातवें शनि हो तो विफल योग अर्थात् मौलिक फल के नाशक है।

☆ **ग्रहाणां फलकाल**- सूर्य+मंगल आदि में शनि तथा चन्द्र मध्य में, गुरु तथा शुक्र अन्त्य में तथा बुध सर्वदा शुभाऽशुभ फल के प्रतिकारक है।

❂ ग्रहों के अस्तकालांश ❂

(उपकरण-सूर्य + चन्द्रान्तरम्)

चन्द्र २, मंगल १७, बुध १३, गुरु ११, शुक्र ९, शनि १५ अंशान्तर कालांश से अस्तगत समझना चाहिये। ☆ **ग्रहाणां भोग राशि**-सूर्य बुध शुक्र १ मास, मंगल १॥ मास, शनि २॥ वर्ष गुरु १। वर्ष राहु १॥ **वर्ष** १ राशि में मौलिक स्थूल नियम में **गतिशील है**॥ वक्र अतिचार स्थिति बनने पर यह नियामक स्पष्ट गणना का नहीं। इसी प्रकार अस्त कालांश गणना हेतु भी नियम समझना चाहिये।

विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु
सरल ज्योतिष ज्ञान चन्द्रिका
मुल्य ६०/- अग्रिम मनिआर्डर भेजकर मंगावें
बम्बई वाले पं. श्रीधर शिवलालजी
किशनगढ़-सिटी (अजमेर) ३०५८०२

अथमुहूर्त्तचिंतामणिमार्तण्डगणपतीत्यादिमतेन श्रीधरीय आवश्यक मुहूर्त्ताः

१. गर्भाधान मुहूर्त्त :- ऋतुकाल के प्रथम चार रात्रि को छोड़कर सम रात्रि में यह संस्कार किया जाता है। **तिथि**-१, २, ३, ५, ७ ,१०, ११, १२, १३ **वार**-रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- ज्येष्ठा, मूल, मघा, रेवती को छोड़कर सभी नक्षत्र शुभ है।

२. पुंसवन मुहूर्त्त :- गर्भ तीसरे मास में पुंसवन संस्कार करना चाहिये कहीं कहीं द्वितीय मास में भी पुंसवन संस्कार कहा गया है। **तिथि**- १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ **वार**- रवि, मंगल, गुरु मतान्तर से चन्द्र, बुध, शुक्र। **नक्षत्र**-पुरुष नक्षत्र-पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, श्रवण।

३. सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त :- गर्भाधान के अनन्तर गर्भाधान के छठे या आठवें मास में मासाधिपति बलवान होने पर यह संस्कार किया जाता है। राजस्थान में इस संस्कार को आठवां पूजन भी कहा जाता है। **तिथि**- १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ **वार**-रवि, मंगल, गुरु। **नक्षत्र**-पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, श्रवण। रक्षा हेतु विष्णु भगवान की पूजा करनी चाहिये।

४. जातकर्म-नामकरण मुहूर्त्त :- जातकर्म जातक के जन्म के तुरन्त बाद किया जाता है। जातक के जन्म के ११ वें या १२ वें दिन पूर्वाह्न में नामकरण किया जाता है। **तिथि**-भद्रा., व्यतिपात, वैधृति, संक्रान्ति रहित १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **वार**-चन्द्र, बुध, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्वि., रोहि., मृग, पुन., पु., ह., चि., स्वा., अनु., तीनों उत्तरा, अभि., श्रव., धनि., शत., रेव.। लग्न नवांश बल का विचार अवश्य करें।

५. निष्क्रमण मुहूर्त्त :- शिशु के जन्म से तीसरे या चौथे मास में यह संस्कार किया जाता है। **तिथि**-२, ३, ५, ७, १०, ११ कृ. १, शु.१३, १५। **वार**-चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**-अश्वि., मृग., अनु., पुन., पु., ह., श्रव., धनि.। सूर्य व नक्षत्रों का पूजन कराना शुभ है। आवश्यक होने पर १२ वें दिन में भी कर सकते है।

६. भूम्यूपवेशन मुहूर्त्तः-जातक के जन्म समय से पाचवें मास में संस्कार किया जाता है। इस काल में मंगल ग्रह शोच स्वराशि, मित्रराशि आदिगत होकर बलवान हो तो शुभ है। **तिथि**-२, ३, ५, ७, १०, ११ कृ. १, शु.१३, १५। **वार**-चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**-अश्वि., रो., मृग., अनु., पु., ह., ज्ये., ३उत्तरा, अभि.। चरलग्न शुभ माना गया है। पृथ्वी और वराह भगवान की पूजा करके कमर में करघनी बांध कर भूमि पर बैठावें।

७. कर्णवेध मुहूर्त्तः- शिशु के जन्म से बारवें या सोलवें दिन या ६, ७, ८ वें मास में या किसी विषम वर्ष में करें। चैत्र , पौष मास, देवशयन, अधिकमास व जन्ममास, समवर्ष क्षयतिथि में निषेध है। **तिथि**-शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३, १५। **वार**- चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**-अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, चित्रा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती।

८. अन्नप्राशन मुहूर्त्तः-बालक को जन्म समय से ६, ८, १० वें मास में व कन्या को ५, ७, ९ वें मास में पहली बार अन्नप्राशन कराया जाता है। मीन, मेष, वृश्चिक लग्न एवं जन्म राशि अथवा जन्म लग्न से ८ वीं राशि या उसका नवांश निषेध है। **तिथि**- शुक्लपक्ष की २, ३, ५, ७, १०, १३, १५। **वार**-चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, चित्रा, स्वाति, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, शतभिषा। अन्य मत से जन्म नक्षत्र निषेध है। **नोटः**-ऊपर बतलाये गये इन संस्कारों में गर्भाधान से अन्नप्राशन तक के मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्रास्त, अधिक मास, श्राद्धपक्ष, सिंहस्थ गुरु आदि का विचार नहीं किया जाता हैं। क्योंकि इनका समय नियत है।

९. मुण्डन (जड़ूला) मुहूर्त्तः- यह संस्कार जन्मकाल से तृतीयादि विषम वर्षो में किया जाता है। चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण काल श्रेष्ठ है। **तिथि**-२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ **वार**-चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- मृग., चि., रे., पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत., अश्वि., पु., ह., अभि., ज्ये.। प्रथम गर्भ से ज्येष्ठ में जन्में बालक का ज्येष्ठ में मुण्डन निषेध है। बालक की माता को पांच महीनें का गर्भ होने पर मुण्डन संस्कार निषेध है। लेकिन पांच वर्ष से अधिक आयु के बालक के लिये मुण्डन शुभ है।

१०. अक्षरारम्भ मुहूर्त्तः- शिशु की आयु से पांचवें वर्ष में लिपिज्ञान के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है। कुम्भस्थ सूर्य को छोड़कर शेष उत्तरायण काल मे सरस्वती आदि का पूजन कर यह संस्कार करना चाहिये। **तिथि**- २, ३, ५, ६, १०, ११, १२। **वार**- चन्द्र, बुध, गुरु , शुक्र। **नक्षत्र**- अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण, रेवती। स्थिर एवं द्विस्वभाव लग्न शुभ।

११. विद्यारम्भ मुहूर्त्तः- **तिथि**-२, ३, ५, ६, १०, ११, १२ **वार**- रवि., बुध., गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**-अश्वि., रो., मृ., आ., पुन., पुष्य, आश्ले., पू. फा., उ. फा., ह., चि., स्वा., अनु., मू., पू. षा., उ.षा., श्रव., धनि., शत., रेव., पू.भा., उ.भा.। उत्तरायण में कुम्भ का सूर्य छोड़कर विद्यारम्भ करना शुभ है।

१२. उपनयन (जनेऊ) मुहूर्त्तः- शिशु के जन्म से या गर्भ से ब्राह्मण को ५ या ८वां, क्षत्रिय को छठे या ग्यारवें और वैश्यों को ८वां या १२ वें वर्ष में उपनयन संस्कार करना चाहिए। यदि इन वर्षो में यह संस्कार न हो सकें तो बाह्मणों का १६वां, क्षत्रियों का २२वें व वैश्यों का २४ वें वर्ष तक उपनयन करा सकते हैं। उत्तरायण में माघादि ६ मासों में देवशयन से पूर्व करना शुभ है। **तिथि**-शुक्ल की २, ३, ५, १०, ११, १२ कृष्ण की १, २, ३, ५ (पंचमी के दोपहर तक) मन्वादि व सोम पदा तिथियों को छोड़कर। **वार**- रवि, चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्वि., रो., मृ., पुन., आर्द्रा, पुष्य., आश्ले., तीनों पू. और तीनों उत्तरा, ह., चि., स्वा., अनु., मू., श्र., धनि., शत., रेव., अभि.। बालक का गुरु, चन्द्र, सूर्य बल अवश्य देखें। ऋग्वेदियों हेतु गुरु, यजुर्वेदियों हेतु शुक्र, सामवेदियों हेतु भौम बल, अथर्वेदियों हेतु बुध बल आवश्यक है। संक्रांति दिन, रोगबाण (सूर्य के गतांश ८। १७। २६) गुरु शुक्र के अस्त काल को छोड़कर मध्याह्न से पहले अभिजित् शुभ है। चैत्र में मीन के सूर्य में यज्ञोपवीत श्रेष्ठ है।

१३. केशान्त मुहूर्त्तः- ब्राह्मण जातक के १६वां, क्षत्रिय के २२ वां और वैश्य के २४ वें वर्ष में निम्न संस्कार किया जाता है। इसमें तिथ्यादि नक्षत्र आदि मुण्डन संस्कार के आधार पर निर्दिष्ट होते हैं।

१४. समावर्तन मुहूर्त्तः- जब ब्रह्मचारी गुरु की आज्ञा से घर लोटता है इसके अनन्तर वह विवाह संस्कार का अधिकारी बनता है। इसके तिथि नक्षत्रादि उपनयन संस्कार के समान मान्य है।

१५. विवाह मुहूर्त्तः-विवाहांगकृत्य मुहूर्त्त

(१) वर वरण मुहूर्त्तः-तिथि- दोनो पक्षों की २, ३, ५, ७, १०, ११, १२ कृ. १, शु. १३ **वार**-चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**-कृतिका, रोहिणी, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा.।

(२) कन्या वरण मुहूर्त्त (सगाई) :-तिथि-२, ३, ५, ७, १०, ११, १२ कृ. १, शु. १३ **वार**-चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**-विवाह मुहूर्त के नक्षत्र, कृतिका, तीनों पूर्वा, स्वा., अनु., उ.षा., श्र., धनि.।

(३) विवाह मुहूर्त्तः-तिथि- शु. १, कृ. १३, १४, ३० तिथियों को छोड़कर शेष तिथियां। **वार**-सभी वार। **नक्षत्र**-अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा., मघा., तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती.। **नोटः**- लग्न शुद्धि एवं ग्रह बल के लिए अलग से **बृहद् पंचांग** में परिशिष्ट देखें।

(४.) नव वधू प्रवेश मुहूर्त्तः- तिथि- रिक्ता, अमावस्या को छोड़कर शेष सभी। **वार**- चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। **नक्षत्र**- अश्वि., रो., मृग., पुष्य, मघा. तीनों उत्तरा., ह., चि., अनु., मू., श्र., स्वा., धनि., रे.।

विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में ५, ७, ९ वें दिन प्रवेश करावें इसके बाद एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में स्थिर लग्न में प्रवेश करावें। कुछ आचार्यों ने बुधवार को अशुभ कहा है।

(५.) **द्विरागमन मुहूर्त्तः**- विवाह के १६ दिन के भीतर ११ वें दिन या सम दिनों में शुभ है वर का सूर्य बल औ कन्या का गुरु बल देखें। मेष,वृश्चिक, कुम्भ के सूर्य में एवं २, ३, ६, ७, १२ लग्न में शुभ है। **तिथि**- रिक्ता, अमावस्या को छोड़कर सभी। **वार**- चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य., ३ उत्तरा., हस्त., चि., स्वा., अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अभिजित्, रेवती। १६ दिन के भीतर चन्द्र बल, गुरु, शुक्र अस्तादि तथा सन्मुख दक्षिणस्थ शुक्रादि दोषो का विचार नही किया जाता है।

१६. स्त्रियों की चोटी गूथनें का मुहूर्त्तः- तिथि- शुभ। **वार**- सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- हस्त, मूल, रोहिणी, विशाखा, श्रवण, स्वाति, तीनों उत्तरा, मृगशिरा। **लग्न**-२, ३, ४, ५, ८, १२ शुभ है।

१७. गर्भवती को प्रसूति के लिए भेजने का मुहूर्त्तः- तिथि-रिक्ता अमावस्या को छोड़कर शेष सभी। **वार**-शुभ। **नक्षत्र**-अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, ३ उत्तरा, स्वा., ह., चि., अनु., ध., शत., रेव.।

१८. सूतिका स्नान मुहूर्त्तः- सूतिका स्नान शिशु जन्म से एक सप्ताह बाद होता है। **तिथि**- दोनो पक्षों की २, ३, ५, ७, १०, ११, कृ. १ और शु. १३, १५। **वार**- सूर्य, मंगल, गुरु। **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, रेवती एवं कुयोग रहित दिनों में शुभ है।

१९. जलवा पूजन मुहूर्त्तः- प्रसव के एक मास उपरान्त मास पूरा होने पर यह संस्कार किया जाता है। **तिथि**- २, ३, ५, ७, १०, ११ कृ. १ शु. १३, १५ **वार**- चन्द्र, बुध., गुरु.। **नक्षत्र**- मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल, श्रवण। चैत्र, पौष तथा अधिक मास और गुरु शुक्रादि में निषिद्ध है।

२०. पालने में सुलाने का मुहूर्त्तः- तिथि- १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ **वार**- चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य., तीनों उत्तरा, ह., चि., अभि., अनु., रेव.। बालक के जन्म से १०, १२, १६, १८, ३२ वें दिन का बालक का सिर पूर्व की ओर करके पालने में सुलाना चाहिए।

२१. गंधर्व विवाह मुहूर्त्तः- तिथि- २, ३, ५, ६, १०, ११, १३। **वार**- सूर्य, मंगल, शनि.। **नक्षत्र**- अश्विनी, कृतिका, आर्द्रा., पुनर्वसुं, आश्ले, ज्ये., धनि., शत.। गुरु व शुक्रास्त का विचार नहीं करें।

२२. चूड़ा पहनने का मुहूर्त्तः- तिथि- २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ **वार**- सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती। **सूर्यभात**- सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। ३ नेष्ट ५ नेष्ट ३ शुभ ४ शुभ ७ नेष्ट २ नेष्ट १ शुभ २ शुभ १ नेष्ट।

२३. ऋण लेन देनः- रविवार युक्त हस्त, मंगलवार, संक्रांति के दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग में ऋण नहीं लेवें। मंगलवार को चुकावें तथा बुधवार को धन नहीं देवे। भौम प्रदोष व्रत से ऋण से मुक्ति मिलती है।

२४. दुकान खोलने का मुहूर्त्तः- तिथि- २, ३, ५, ७, १०, १२, १३। **वार**- मंगल को छोड़कर सभी वार। **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य., तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती। चन्द्र व शुक्र लग्न में शुभ, कुम्भ लग्न निषेध है। २-१०-११ वें स्थान में शुभ ग्रह। ३-६ ठें स्थान में पाप ग्रह हो।

२५. क्रय मुहूर्त्तः- तिथि-रिक्ता व ८, १५, ३०, कृष्ण की १३, शुक्ल १, तिथियों को छोड़कर सभी। नक्षत्र-अश्विनी, रेवती, स्वाति, चित्रा, श्रवण, शतभिषा,। **वार**- सभी शुभ, रवि, बुध विशेष शुभ।

२६. विक्रय मुहूर्त्तः- तिथि- रिक्ता व ८, १५, ३०, कृष्ण की १३, शुक्ल १, तिथियों को छोड़कर सभी। वार- सभी शुभ। **नक्षत्र**- ३ पूर्वा, विशा., कृ., आश्ले., भ.। कुम्भ लग्न निषेध। चन्द्र, गुरु विशेष शुभ।

२७. बहीखाता मुहूर्त्तः- तिथि- १ कृ. दोनों २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५। **वार**- सूर्य, चन्द्र, बुध., गुरु., शनि। **नक्षत्र**- मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य., तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चतुर्मास, गुरु व शुक्र अस्तकाल में निषेध। दीपावली, विजयादशमी, अक्षय तृतीया, नवरात्रा स्थापना दिवस आदि अबूझ मुहूर्त्त में प्रारंभ करें। चर व द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ।

२८. नौकर रखने का मुहूर्त्तः- तिथि- २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३ **वार**- सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र। नक्षत्र- अश्वि., मृग., पुष्य, ह., चि., अनु., अभि., रे.। स्वामी व सेवक दोनों की योनिमैत्री एवं दोनों की राशीशों की मैत्री शुभ होवें। स्थिर लग्न अवश्य देखें। शुभ ग्रह लग्न में व सू. मं. १०, ११ में हो।

२९. द्वारशाखा मुहूर्त्तः- तिथि-शुभ। **वार**- शुभ। **नक्षत्र**- रवि भाद्रगणना-सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक ४ श्रेष्ठ, ८ नेष्ट, ८ श्रेष्ठ, ३ नेष्ट ४ श्रेष्ठ।

३०. देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्तः- तिथि-शुक्ल प्रतिपदा, रिक्ता, अमावस्या को छोड़कर सभी शुभ व जिस देव की प्रतिष्ठा की जा रही है उस देव की तिथि मान्य है। **मास**- सभी देवताओं की प्रतिष्ठा उत्तरायण (हरिशयन निषेध काल) में की जाती है, व मातृ, भैरव, नृसिंह, त्रिविक्रम, चण्डी, काली तामस देवों की (हरिशयन वर्जित) दक्षिणायन में भी की जा सकती है। **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, ३ उत्तरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अभिजित्, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। देव प्रतिष्ठा हमेंशा पूर्वाह्न में होती है। आर्द्रा नक्षत्र में शिव प्रतिष्ठा शुभ है।

लग्न शुद्धिः- चन्द्र और पाप ग्रह ३, ६, ११ वें भावों में हो, शुभग्रह ८, १२ वें भावों को छोड़कर अन्य भावों में शुभ होते है। सूर्य की सिंह, शिव की मिथुन, विष्णु की कन्या, ब्रह्मा की कुंभ, दुर्गा की द्विस्वभाव व शुद्र (यक्ष गन्धर्व) देवों की चर लग्न में प्रतिष्ठा करना चाहिये। प्रायः सभी देवों की प्रतिष्ठा स्थिर लग्न में होना चाहिये जो शास्त्रविहित है।

३१. तंत्र-मंत्र-यंत्र साधना मुहूर्त्तः- (१) सूर्य चन्द्र ग्रहण के पर्व काल (२) दीपावली की रात्रि (३) सायन एवं निरयन संक्रान्ति काल से पूर्वापरवर्ती ६-६ घंटा काल (४) प्रत्येक मास की अमावस्या (५) क्रान्तिसाम्य काल (६) षडशीति मुख संक्रान्तियों से पूर्वापरवर्ती ६-६ घंटा काल (७) वारूणी/महावारूणी/महामहावारूणी पर्व काल (८) अर्घोदय/महोदय योग काल में तंत्र-मंत्र-यंत्र की साधना करनी चाहिए।

३२. यज्ञानुष्ठान प्रारम्भ मुहूर्त्तः- तिथि १, ५, ७, १०, १३, १५ **वार**- रवि, चन्द्र, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, विशा., ज्येष्ठा, ३ उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु., श्रवण, धनिष्ठा, शत., रेव.। **लग्न**- २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ लग्न शुद्धि देखें। **मास**- आश्विन, कार्त्तिक, वैशाख, माघ, मार्ग., फा.।

३३. भूमि क्रय-विक्रय मुहूर्त्तः- तिथि- १, ५, ६, १०, ११, १५ **वार**- गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, अनुराधा, मूल, रेवती।

३४. गृहारंभ मुहूर्त्तः- तिथि- २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५। **वार**- चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र शनि। **नक्षत्र**- रो., मृ., चि., हस्त, स्वाति, अनु., उत्तरा ३, घनिष्ठा, शत. रेव. पुष्य आदि नक्षत्रों में शुभ। **मास**-वैशा., श्रावण, कार्त्तिक, मार्ग., माघ, फाल्गुनादि सोर मास तथा भाद्र., कार्त्तिक सामान्यतया मान्य। वेध रहित नक्षत्रों में तथा १, ३, ५, ६, ८, ११, १२ लग्नों में शुभ है। पंचबाण और भूमि शयन रहित दिनों में साथ ही लग्न बल हेतु लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११ वें स्थान में पापग्रह एवं अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारंभ शुभ है। **भूशयनः**-भूशयन काल में गृहारंभ नहीं किया जाता है।

(1) सूर्य नक्षत्र से ग्रहारंभ दिन ५, ७, ९, १२ १९, २६ वां हो तो भूशयनशील रहती है। इन नक्षत्रों में भी क्रमशः ४, ८, ५, ३, ६, ७ घटी कालांश मात्र में भूशयन शेष घटियों में सुप्त नही।

(2) सूर्य संक्रान्ति दिन से ५, ७, ९, १५, २१ २४ वें दिन भूशयनकाल होता है।

वास्तु चक्रः-सूर्य नक्षत्र से लेकर ७ नक्षत्र अशुभ। तदन्तर ८ वें से १८ नक्षत्र तक शुभ उसके बाद १९ वें नक्षत्र से २८ वें नक्षत्र तक अशुभ होते हैं।

ग्रहारम्भे वृषभवास्तु चक्रम

सूर्य भात	३	४	४	३	४	३	४	३
अंग	मस्तक	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पृष्ठ	दक्षिणकुक्षौ	पुच्छे	वामकुक्षे	मुखे
फलम्	दाह	शून्य	स्थिर	श्री	लाभ	नाश	दरिद्रता	पीड़ा

भूशयन परीक्षण- जिस भूमि पर मकान बनाना है वहां एक हाथ गहरा, एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा गड्ढा बनावें। उसे पानी से भर देवें। दूसरे दिन प्रातः उसे देखें। यदि जल से युक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल छिन्न-भिन्न हो तो अशुभ भूमि जाने।

खात चक्र

संक्रांति	विवाह में सूर्य	देवालय में सूर्य	गृहारम्भ में सूर्य	जलाशय में सूर्य	खा. दिशा	राहु मुख
सूर्य	वृष, मिथुन, कर्क	मीन, मेष, वृषभ	सिंह, कन्या, तुला	मकर, कुंभ, मीन	आग्नेय	ईशान
सूर्य	कुंभ, मीन, मेष	धनु, मकर, कुंभ	वृष, मिथुन, कर्क	तुला, वृश्चि., धनु	नैऋत्य	आग्नेय
सूर्य	वृश्चि., धनु, मकर	कन्या, तुला, वृश्चि.	कुंभ, मीन, मेष	कर्क, सिंह, कन्या	वायव्य	नैऋत्य
सूर्य	सिंह, कन्या, तुला	मिथु., कर्क, सिंह	वृश्चि., धनु, मकर	मेष, वृष, मिथुन	ईशान	वायव्य

३५. कुआ-बोरिंग खोदने का मुहूर्त्तः- तिथि-शुक्ल पक्ष की १, रिक्ता तिथि, कृष्ण पक्ष की १३ व ८, १४, १५, ३० को छोड़कर सभी तिथियां। **वार**- चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- रोहि., मृग., पुष्य, मघा, हस्त, अनु., पू.षा., तीनों उत्तरा, धनि., शत., रेव.। **नोट**-घर के मध्य, आग्रेय, दक्षिण, नैऋत्य, वायव्य में शुभप्रद नहीं है। वापी कूपादि में उत्तरायण, लग्न शुद्धि, भूशयन का विचार करें। गुरु शुक्रास्त में वर्जित है।

३६. गृहप्रवेश मुहूर्त्तः-मास- वेशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन आदि चान्द्र मास शुभ है। **वार**-चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। **तिथि**- रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर शेष सभी तिथियां। **नक्षत्र**- रोहिणी, मृगशिरा, उत्तरा तीनों, चित्रा, अनुराधा, रेवती, विशेष शुभ है। **तिथि नक्षत्र विशेष**-पूर्वद्वार गृह के लिए रो. मृगशिरा नक्षत्र पूर्णा तिथि पश्चिमद्वार के लिए अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, नक्षत्र एवं भद्रा तिथि। उत्तर द्वार के लिए उत्तराभाद्रपद, रेवती नक्षत्र एवं जया तिथि। दक्षिण द्वार के लिए उत्तराफाल्गुनी, चित्रा नक्षत्र एवं नंन्दा तिथि शुभ मानी जाती है। स्थिर लग्न में उत्तम एवं द्विस्वभाव लग्न में मध्यम तथा लग्न से १, २, ३, ४, ५, ७, ९, १० इस स्थानों में शुभ ग्रह हो, ३-६-११ वे स्थानों में पाप ग्रह हों। १-६-८-१२ वे स्थानों में चंद्र न हो तथा चौथा, आठवां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न व जन्म राशि से अष्टम राशि का लग्न नहीं हो एवं कलश चक्र की शुद्धि देखकर सन्मुख में गौ, कन्या, जलपूर्ण, पुष्प माला श्रीफल सह कलश सहित मंगल गीत गुंजन एवं गायन वाद्य सहित ग्रह प्रवेश शुभ होता है।

वाम सूर्य विचारः- ग्रह प्रवेश में सूर्य यदि ८ से १२ वें स्थानों में हो तो पूर्वाभिमुख द्वारा के घर में ५ से ९ वें स्थानों में हो तो दक्षिणाभिमुखी वाले घर में २ से ६ठें स्थानों में हो तो पश्चिमद्वार वाले घर में ११ वें से ३ रें स्थानों में हो तो उत्तरद्वार वाले घर में प्रवेश शुभप्रद होता है। **कलश चक्रम्** - सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें ५ तक अशुभ, ६ से १३ तक शुभ, १४ से २१ तक अशुभ, २२ से २७ तक शुभ जानें।

गृह प्रवेश कलश चक्रम् सूर्य नक्षत्रात्

सूर्य भात	१	४	४	४	४	४	३	३
अंग	मुखे	पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे	गर्भे	गुदे	कंठे
फलम्	मृत्यु	उदासिनम्	धनलाभ	लक्ष्मी	कलह	विनाश	स्थिरता	सुख

३७. चूल्हा भट्टी मुहूर्त्तः- तिथि- २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३। **वार**- बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- पू.भा., तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, अश्वि., आ.। **चुल्ली चक्रमः**- सूर्य नक्षत्र से ६ नक्षत्र पृष्ठे (पीठ) सुख प्रद। ४ सिर मृत्यु, ८ बाहु सौख्य, ५ वां नक्षत्र गर्भ के नाशक। २ नक्षत्र भूजा (कर) श्रेष्ठप्रद २ पाद स्त्री नाशक। शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनाये व निम्न नक्षत्रों में प्रथम अग्नि प्रज्वलित करें।

३८. वास्तु शांति मुहूर्त्तः- नक्षत्र-अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य., उत्तरा तीनों, ह., चि., स्वा., अनु., मूल., श्रवण., धनि., रेव., इन नक्षत्रों में एवं कुयोग से रहित दिनों में वास्तु शान्ति करें।

३९. दत्तक पुत्र ग्रहण- तिथि- रिक्ता, अमावस्या को छोड़कर सभी। **वार**- रवि, मंगल, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- पुष्य., ह., चि., स्वा., विशा., अनु., धनि., शत., **लग्न शुद्धि** २, ५, ८, ११ राशियां लग्न में हो।

४०. जीर्णगृह प्रवेश- मास-कार्तिक, मार्गशीर्ष श्रावण। **नक्षत्र**-शत., पुष्य., स्वाति, धनिष्ठा। **लग्न**- जन्म राशि जन्म लग्न से ३, ६, १०, ११ वें व स्थिर लग्न में प्रवेश करना चाहिये। गुरु-शुक्रास्त, क्षय-अधिकमास तथा सिंहस्थ-मकरस्थ गुरु आदि का विचार नहीं किया जाता है।

४१. पशु क्रय-विक्रय मुहूर्त्त :-तिथि-रिक्ता, अमावस्या, अष्टमी तिथि को छोड़कर अन्य सभी। **वार**- मंगलवार त्याज्य। **नक्षत्र**- अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्येष्ठा., धनि., शत., रेवती नक्षत्र में गाय खरीदना बेचना शुभ है। अन्य पशु हेतु पुन., ३ पूर्वा, ह., अनु., ज्ये., मू., धनि., रे. क्रय-विक्रय शुभ है।

४२. रोगमुक्त स्नान मुहूर्त्तः- तिथि-रिक्ता तिथियां ग्राह्य है। **वार**- सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि। **नक्षत्र**- आश्लेषा, स्वाति, मघा., तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुनर्वसु, रेवती, इन नक्षत्रों में निषेध बाकी सभी नक्षत्रों में चर लग्न एवं अशुभ चन्द्र स्थिति में स्नान करें।

४३ औषधि निर्माण एवं सेवन मुहूर्त्त- तिथि-कृ. पक्ष १, दोनो पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११। **वार**-रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**-अश्वि., मृग., पुन., पुष्य., हस्त., चि., स्वा., अनु., मूल., श्रव., धनि., शत., रेव। **लग्न**- द्विस्वभाव एवं शुभ लग्न । **नोट**-जन्म नक्षत्र वर्जित है।

४४. विशेष पदग्रहण मुहूर्त्तः- नक्षत्र- ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, मृगशिरा, रेवती, चित्रा., अनुराधा, उत्तरा तीनों, रोहिणी। **तिथि**- रिक्ता तिथि, मंगलवार, रात्रि समय, मलमास का त्याग करे। **लग्न**- ३, ५, ६, ७, ८, ११ **लग्न शुद्धि**-३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह तथा १, ४, ७, १०, ५, ९, ११-२, ३ भावों में शुभग्रह होवें।

४५ राजसेवा पदग्रहण मुहूर्त्त-तिथि- कृष्ण १, दोनों पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५। **वार**- सूर्य, बुध गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**-अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, अभिजित्। **नोट**- १० वें ११वें स्थान पर सूर्य और मंगल शुभ है तथा लग्न से १, २, ४, ७, १०, ११ वें स्थान में शुभ ग्रह होवे, सूर्य ५, १४, २३ वें अंश पर हो तब नृप बाण होता है। अतः नृपबाण का त्याग करना चाहिये।

४६. अग्निवासः- जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर १ और जोड़े। योग में ४ का भाग देवें। ० या ३ शेष रहे तो पृथ्वी पर अग्नि का वास सुखप्रद होता है। इसमें होम करने से सुख मिलता है। यदि १ बचे तो आकाश में अग्नि का वास रहता है जो हानिकारक होता है। २

बचे तो पाताल में अग्नि का वास रहता है, वह हानिकारक है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करना चाहिये। निम्न चक्र में सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने।

सूर्य नक्षत्र से हवन चक्र

सूर्य भात	३	३	३	३	३	३	३	३	३
ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	राहु	केतु
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

नोटः- नित्य कार्य, जन्म समय, दुर्गा पूजा, यात्रा, विवाह, ग्रहण, रोग, पीड़ा, दुर्भिक्ष, शांति यज्ञ यज्ञोपवीत आदि में अग्निवास का विचार नहीं करें।

४७. बड़े अधिकारी से मिलने का मुहूर्त्तः- तिथिः-दोनों पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ कृष्ण पक्ष की १ शुभ है। **वारः**- सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्रः**- अश्विनी, रोहिणी, मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ है।

४८. अनाज रखने का मुहूर्त्तः- नक्षत्रः-विशाखा, कृतिका, तीनों पूर्वा, भरणी, मघा, आर्द्रा, श्ले., ज्येष्ठा, को छोड़कर सभी नक्षत्र। **वारः**-चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **तिथिः**-२, ३, ५, ७, १०, १२, १५। **लग्नः**-चर लग्नों को छोड़कर अन्य लग्न में संग्रह शुभ।

४९. हल प्रवाह मुहूर्त्तः- तिथि- २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ **वार**- चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, अभि., हस्त, चि., स्वा., अनु., मूल., ३ उत्तरा, श्रव., धनि., शत., रेव.। **सूर्यभात गणना**-सूर्यभात नक्षत्र से अभिजित् सहित दिन नक्षत्र तक गिनें। १ से ३ अशुभ, ४ से ११ शुभ, १२ से २० अशुभ, २१ से २८ शुभ। सिंह, कुम्भ, कर्क, मेष, मकर, तुला लग्नों में तथा रिक्ता व षष्ठी तिथि में निषेध।

५०. बीज बावणी मुहूर्त्तः- तिथि-शुभ। **वार**- रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। **नक्षत्र**- हल प्रवाह नक्षत्रों में से श्र., शत., पुन., विशा. को छोड़कर सभी नक्षत्र शुभ है। राहु शुद्धि चक्र देखें। **राहु नक्षत्र गणना**- राहु नक्षत्र से दिन नक्षत्र गिनना ८ नेष्ट, ३ श्रेष्ठ, १ नेष्ट, ३ श्रेष्ठ, १ नेष्ट, ३ श्रेष्ठ, १ नेष्ट, ३ श्रेष्ठ, ४ नेष्ट।

५१. फसल कटाई मुहूर्त्तः- तिथि-२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ **वार**- चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, रवि। **नक्षत्र**- हस्त, मूल, श्रवण, स्वाति, तीनों उत्तरा, पू.षा., मघा, मृगशिरा, पुष्य, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, पू.भा., कृतिका, धनिष्ठा, भरणी। स्थिर लग्न में फसल की कटाई शुभ है।

५२. स्कूटर कार, वाहन खरीदनाः-तिथि-कृ. १, दोनो की ३, ४, ५, १०, १५। **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा, अभिजित्, रेवती। **लग्न**-चर लग्न शुभ। चंद्र शुद्धि देखें।

५३. मशीनरी शुभारंभ मुहूर्त्तः- नक्षत्र - धनिष्ठा, अश्वि, हस्त., चि., अनु. पुन., पुष्य., ज्ये., रेव.। **वार**- बुधवार विशेष शुभ । अन्य वार सामान्य **लग्न**- चर लग्न , चरसंज्ञक नक्षत्र विशेषकर शुभ।

५४. कम्प्यूटर निर्माण व संचालन मुहूर्त्तः- तिथि- १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ **वार**- रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। **नक्षत्र**- अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। लग्न शुद्धि का विचार अवश्य करना चाहिये।

५५. फिल्म निर्माण एवं संचालन मुहूर्त्तः- तिथि- २, ५, ७, १०, १५। **वार**- बुध, गुरु, शुक्र। **नक्षत्र**- अश्वि., मृग., पु., ह., चि., अनु., रे.। फिल्म प्रसारण हेतु रवि, शुक्र शुभ। चन्द्र शुद्धि अवश्य देखें।

नक्षत्रों की संज्ञा व करने योग्य काय

१. ध्रुव-स्थिर नक्षत्र- रोहिणी, उत्तराफाल्गुन, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद तथा रविवार ध्रुव और स्थिर संज्ञक है। इनमें स्थिर कार्य बीज बोना, बगीचा लगाना, गीत वाद्योत्सव, विवाह, वस्त्र आभूषण धारण करना, शांति कर्म, गृहारंभ, नृत्य सीखना, मैत्री, शपथ ग्रहण करना, खेल कूद आरम्भ करना शुभप्रद है।

२. चर-चल नक्षत्र- पुन., स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तथा सोमवार। इनमें स्कूटर, कार, बस, ट्रक आदि वाहन का लेन देन एवं उपयोग करना, क्रय-विक्रय, रतिक्रिया, शिक्षा ज्ञान, दुकान खोलना, लम्बी यात्रा, चित्रकारी शुभ है।

३. उग्र-क्रूर नक्षत्र- भरणी, मघा, तीनों पूर्वा तथा मंगलवार। दुष्टकार्य, तस्करी, सट्टा, लॉटरी, विष, शस्त्रकर्म शुभ है।

४. मिश्र-साधारण नक्षत्र- कृत्तिका, विशाखा नक्षत्र तथा बुधवार इनमें अग्निदाह, मांगलिक कार्य, व्यापार, शस्त्र-विष संबंधी कर्म, घात कर्म आदि शुभ है।

५. क्षिप्र-लघु नक्षत्र- अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित् तथा गुरुवार। दुकान खोलना, रतिकर्म, ज्ञानार्जन, शिल्पकर्म, चित्राकला, वाहन, लेन-देन, दूर समीप यात्रा, क्रय-विक्रय शुभ होता है।

६. मृदु-मैत्र नक्षत्र- मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती तथा शुक्रवार। इनमें गीत विवाहादि मंगलोत्सव, नृत्य सीखना, गृह निर्माण, क्रीड़ा कर्म, बीज बोना, बगीचा लगाना, शांति कर्म, गोपनीयता की शपथ लेना, आभूषण बनवाना अथवा धारण करना।

७. तीक्ष्ण दारूण नक्षत्र- आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल तथा शनिवार। इनमें अस्त्र-शस्त्र निर्माण एवं प्रयोग विषादि कर्म, पशु शिक्षा, तस्करी, लॉटरी, सट्टा, पापकर्म, अभिचार, घात आदि शुभ है।

रवि योग- सूर्य और चन्द्रमा की परस्पर दूरी की खगोलीय स्थितियों में शुभ और अशुभ समय का निर्धारण होता है, जिसे सुयोग और कुयोग की संज्ञा दी जाती है। सुयोगो अथवा शुभ योगों में रवि बहुत ही शुभ माना जाता है। रवि योग में १३ प्रकार के कुयोगों का स्वतः ही शमन होता है। अतः रवि योग में किसी भी प्रकार के शुभ कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं। सूर्य जिस नक्षत्र में होता है उस नक्षत्र से चौथे, छठे, नौवें, दसवें, तेरहवें अथवा बीसवें नक्षत्र पर जब चन्द्रमा संचरण करता है, तब सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के उस नक्षत्र-संचरण अवधि को रवि योग कहा जाता है।

अमृतसिद्धि/सर्वार्थ सिद्धि योग

निश्चित वार और निश्चित नक्षत्र के संयोग से बनने वाले शुभ और अशुभ योगों में अमृतसिद्धि और सर्वार्थसिद्धि जैसे अति शुभ योग बनते हैं। इन शुभ योगों में शुभ कार्य किये जा सकते हैं। परन्तु कुछ कार्य वर्जित भी हैं।

(1) अमृतसिद्धि योग- निम्न स्थितियों में बनता है-रविवार+हस्त नक्षत्र, सोमवार+मृगशिरा, मंगलवार+अश्विनी, बुधवार+अनुराधा, गुरुवार+पुष्य, शुक्रवार+रेवती, शनिवार+रोहिणी। परन्तु मंगल +अश्विनी के योग में गृह-प्रवेश, शनि+रोहिणी में यात्रा और गुरु+पुष्य में विवाह कार्य कभी सम्पन्न नहीं करने चाहिये।

(2) सर्वार्थसिद्धियोग- निम्न स्थितियों में बनता है-रविवार को अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त अथवा मूल नक्षत्र, सोमवार को रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा अथवा श्रवण, मंगलवार को अश्विनी, कृत्तिका, आश्लेषा अथवा उत्तरा भाद्रपद, बुधवार को कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त अथवा अनुराधा, गुरुवार को अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा अथवा रेवती, शुक्रवार को अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण अथवा रेवती, शनिवार को रोहिणी स्वाति अथवा श्रवण नक्षत्र होने पर जो वर्जनाएँ अमृतसिद्धि योग की हैं वे ही सर्वार्थसिद्धि योग होते है।

आनन्दादि योग परिज्ञान सारिणी

संख्या	आनंद योग	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	फल
०१	आनन्द	अश्वि	मृग.	आश्ले	हस्त	अनु.	उषा.	शत.	शुभ
०२	कालदंड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठ	अभि.	पूभा.	अशुभ
०३	धूम्र	कृति.	पुन.	पूफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उभा.	अशुभ
०४	धाता	रोहि.	पुष्य	उफा.	विशा.	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती	शुभ
०५	सौम्य	मृग.	आश्ले	हस्त	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि	शुभ
०६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठ	अभि.	पूभा.	भरणी	अशुभ
०७	केतु	पुन.	पूफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उभा.	कृति.	शुभ
०८	श्रीवत्स	पुष्य	उफा.	विशा.	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	शुभ
०९	वज्र	आश्ले	हस्त	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि	मृग.	अशुभ
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठ	अभि.	पूभा.	भरणी	आर्द्रा	अशुभ
११	छत्र	पूफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उभा.	कृति.	पुन.	शुभ
१२	मित्र	उफा.	विशा.	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	पुष्य	शुभ
१३	मानस	हस्त	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि	मृग.	आश्ले	शुभ
१४	पद्म	चित्रा	ज्येष्ठ	अभि.	पूभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	शुभ
१५	लुम्बक	स्वाति	मूल	श्रवण	उभा.	कृति.	पुन.	पूफा.	अशुभ
१६	उत्पात	विशा.	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	पुष्य	उफा.	अशुभ
१७	मृत्यु	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि	मृग.	आश्ले	हस्त	अशुभ
१८	काण	ज्येष्ठ	अभि.	पूभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	अशुभ
१९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उभा.	कृति.	पुन.	पूफा.	स्वाति	शुभ
२०	शुभ	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	पुष्य	उफा.	विशा.	शुभ
२१	अमृत	उषा.	शत.	अश्वि	मृग.	आश्ले	हस्त	अनु.	शुभ
२२	मुसल	अभि.	पूभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठ	अशुभ
२३	गद	श्रवण	उभा.	कृति.	पुन.	पूफा.	स्वाति	मूल	अशुभ
२४	मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहि.	पुष्य	उफा.	विशा.	पूषा.	शुभ
२५	राक्षस	शत.	अश्वि	मृग.	आश्ले	हस्त	अनु.	उषा.	अशुभ
२६	चर	पूभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठ	अभि.	शुभ
२७	सुस्थिर	उभा.	कृति.	पुन.	पूफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	शुभ
२८	प्रवर्ध	रेवती	रोहि.	पुष्य	उफा.	विशा.	पूषा.	धनिष्ठा	शुभ

रवियोग ज्ञानसूत्र सारिणी

सूर्य नक्षत्र	दैनिक चन्द्र नक्षत्र गणना क्रम					
अश्विनी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा	मघा	हस्त	पू.षा.
भरणी	मृगशिरा	पुनर्वसु	मघा	पू.फा.	चित्रा	उ.षा.
कृतिका	आर्द्रा	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	स्वाति	श्रवण
रोहिणी	पुनर्वसु	आश्लेषा	उ.फा.	हस्त	विशाखा	धनिष्ठा
मृगशिरा	पुष्य	मघा	हस्त	चित्रा	अनुराधा	शतभिषा
आर्द्रा	आश्लेषा	पू.फा.	चित्रा	स्वाति	ज्येष्ठ	पू.भा.
पुनर्वसु	मघा	उ.फा.	स्वाति	विशाखा	मूल	उ.भा.
पुष्य	पू.फा.	हस्त	विशाखा	अनुराधा	पू.षा.	रेवती
आश्लेषा	उ.फा.	चित्रा	अनुराधा	ज्येष्ठ	उ.षा.	अश्विनी
मघा	हस्त	स्वाति	ज्येष्ठ	मूल	श्रवण	भरणी
पू.फा.	चित्रा	विशाखा	मूल	पू.षा.	धनिष्ठा	कृतिका
उ.फा.	स्वाति	अनुराधा	पू.षा.	उ.षा.	शतभिषा	रोहिणी
हस्त	विशाखा	ज्येष्ठ	उ.षा.	श्रवण	पू.भा.	मृगशिरा
चित्रा	अनुराधा	मूल	श्रवण	धनिष्ठा	उ.भा.	आर्द्रा
स्वाति	ज्येष्ठ	पू.षा.	धनिष्ठा	शतभिषा	रेवती	पुनर्वसु
विशाखा	मूल	उ.षा.	शतभिषा	पू.भा.	अश्विनी	पुष्य
अनुराधा	पू.षा.	श्रवण	पू.भा.	उ.भा.	भरणी	आश्लेषा
ज्येष्ठा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.भा.	रेवती	कृतिका	मघा
मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	अश्विनी	रोहिणी	पू.फा.
पू.षा.	धनिष्ठा	पू.भा.	अश्विनी	भरणी	मृगशिरा	उ.फा.
उ.षा.	शतभिषा	उ.भा.	भरणी	कृतिका	आर्द्रा	हस्त
श्रवण	पू.भा.	रेवती	कृतिका	रोहिणी	पुनर्वसु	चित्रा
धनिष्ठा	उ.भा.	अश्विनी	रोहिणी	मृगशिरा	पुष्य	स्वाति
शतभिषा	रेवती	भरणी	मृगशिरा	आर्द्रा	आश्लेषा	विशाखा
पू.भा.	अश्विनी	कृतिका	आर्द्रा	पुनर्वसु	मघा	अनुराधा
उ.भा.	भरणी	रोहिणी	पुनर्वसु	पुष्य	पू.फा.	ज्येष्ठा
रेवती	कृतिका	मृगशिरा	पुष्य	आश्लेषा	उ.फा.	मूल

एकादशी फलाहार सूत्रम्

मास एवं पक्ष	एकादशी	फलाहार	फलाहार से योनि मुक्ति
चैत्र शुक्ल	कामदा	लौंग	स्वर्णकार
वैशाख कृष्ण	वरूथिनी	खरबूजा	चकवा
वैशाख शुक्ल	मोहिनी	गौमूत्र	मनुष्य योनि
ज्येष्ठ कृष्ण	अपरा	ककड़ी	यमफांसी मुक्ति
ज्येष्ठ शुक्ल	निर्जला	कैरी(गोमूत्र)	बगुला
आषाढ़ कृष्ण	योगिनी	मिश्री	कोयला
आषाढ़ शुक्ल	देवशयनी	किशमिश	शिकरा
श्रावण कृष्ण	कामिका	गौ दुग्ध	शुक
श्रावण शुक्ल	पवित्रा	गुड़	अजगर
भाद्रपद कृष्ण	अजा	छुहारे	गूंगा
भाद्रपद शुक्ल	जलझूलनी	ककड़ी	पशु
आश्विन कृष्ण	इन्दिरा	तिल	गिलहरी
आश्विन शुक्ल	पापांकुशा	ईमली	दीमक
कार्त्तिक कृष्ण	रमा	केला	सर्प
कार्त्तिक शुक्ल	प्रबोधिनी	काचरी	तोते
मार्गशीर्ष कृष्ण	उत्पन्ना	गुड़, बादाम	कुत्ते
मार्गशीष शुक्ल	मोक्षदा	बिलपत्र	अजा
पौष कृष्ण	सफला	तिल,गुड़	नो योनि
पौष शुक्ल	पुत्रदा	गौ दुग्ध	नीच कुल
माघ कृष्ण	षट्तिला	तिलपपड़ी	बिच्छु
माघ शुक्ल	जया	ईख (गन्ना)	हाथी
फाल्गुन कृष्ण	विजया	सिंगाड़ा	चुहा
फाल्गुन शुक्ल	आमलकी	आंवला	चौरासीलाख यानि
चैत्र कृष्ण	पापमोचिनी	चिरोंजी	जूं
अधिक कृष्ण	कमला	दाख	शिकरा
अधिक शुक्ल	कमला	मिश्री	कोयल

बम्बई वाले पं. श्रीधर शिवलालजी, ज्ञानसागर छापाखाना, पुराना शहर किशनगढ़-सिटी जिला-अजमेर (राजस्थान)

सूक्ष्मतम एवं शुद्ध सूर्योदयास्त की गणना

पंचांग में पृष्ठ १२३, १२४, १२५ में क्रमश: सूर्य क्रान्ति / चर सारिणी व वेलान्तर सारिणी दी गई है। इनके प्रयोग से अपने अभीष्ट स्थान का सही सूर्योदयास्त/दिनमान आदि सैकण्ड पर्यन्त तक सूक्ष्म प्राप्त कर सकते है। जिनको इष्टकाल से लग्न गणना करनी हो उनके लिए यह आवश्यक है कि वे इसी विधि का प्रयोग करके शुद्ध सूर्योदय ज्ञात करके ही इष्ट काल निकालें इष्टकाल की छोटी सी अशुद्धि भी आगे जाकर लग्नांशो में काफी अन्तर ला सकती है।

इस विधि द्वारा सूर्योदय स्पष्ट करें। यदि आप तारीखों की अपेक्षा सायन सूर्य स्पष्ट का प्रयोग करे तो सही परिणाम प्राप्त होगें। सायन सूर्य स्पष्ट करने के लिए अभीष्ट दिन के प्रात: कालीन सूर्य स्पष्ट में अयनांश जोड़ने पर सायन सूर्य स्पष्ट हो जायेगा।

इस सायन सूर्य के अंशो तथा परम क्रांति के आधार पर निम्न सूत्र द्वारा रवि क्रान्ति की गणना की गई है।

सूत्र:- रवि क्रान्ति ज्या-सायन सूर्यांश ज्या×परम क्रान्ति ज्या

यहां परम क्रान्ति का आधार २३°। २७′ लिया गया है। जिसकी **त्रिज्या** ०.३९७९४८६ है। जिसके आधार पर यह सारिणी तैयार की गई है। अत: सायन सूर्यांश अथवा तारीख के द्वारा इष्ट सारणी से रवि क्रान्ति प्राप्त करें। रवि क्रान्ति और अक्षांश के आधार पर चर सारिणी से चर मिनट उठाएं, फिर ६ घंटा में (+,-) करके दिनार्द्ध काल बनाऐ, दिनार्द्ध काल बनाते समय चर संस्कार इस प्रकार करें।

	क्रांति	अक्षांश	चर संस्कार
(६+-)	+	+	+
	-	-	+
	+	-	-
	-	+	-

(**+ उत्तर, - दक्षिण**) दिनार्द्ध काल का दूना दिनमान होगा। सायन सूर्य के आधार पर वेलान्तर सारिणी से वेलान्तर उठाए और उसे १२ में से चिन्हानुसार घन, ऋण कर स्पष्ट मध्यान्ह काल बनाए, अब सूर्योदयास्त की गणना इस प्रकार करें।

(१) स्पष्ट मध्यान्ह - दिनार्द्ध काल = सूर्योदय

(२) स्पष्ट मध्यान्ह + दिनार्द्ध काल = सूर्यास्त

स्टैण्डर्ड समयान्तर का संस्कार चिन्ह के विपरीत करने से भारतीय स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदयास्त प्राप्त होगा

सूर्यास्त - सूर्योदय = दिनमान। २४ - दिनमान = रात्रिमान

उदाहरण:- दिनांक: १३ अगस्त १९९९, स्थान: जयपुर, अक्षांश: २६। ५५ उत्तर, देशान्तर ७५। ४९, स्टै. अन्तर: ४ (७५°-४९′′-८२°-३०′′)= (-)६.६८३३×४=(-) २६′। ४८′

अयनांश:- १ अगस्त को २३°। ५०′। ५३′′

प्रात: निरयन रवि स्पष्ट ५घ. ३०मि. पर ३। २५°-५८′-४५′′

सायन सूर्य = ३। २५°-५८′-४५′′

+ २३°-५०′-५३′′ **अयनांश**

३। ४९°-४९′-३८′′ = १३९.८२७२२ सूर्यांश

रवि कान्ति = १४°-५२′-३१′′ उत्तर सारिणी से अथवा सूत्र से

चर ३१′-०′′-(उत्तर)+ सारिणी से अक्षांश व क्रान्ति द्वारा

वेलान्तर = +४′-५६′′

अत: उक्त उपकरणों के आधार पर स्पष्ट मध्यान्ह= १२+४′.५६ **वैलांतर** = १२-४′-५६′′ स्पष्ट मध्याह्न

दिनार्द्ध काल = ६+चर ३१′-०′′ = ६-३१′-००′′

सूर्योदय:- = १२-०४′-५६′′

(-) = ०६-३१′-०० सूर्योदय का मध्याह्न काल

०५-३३′-५६′′

(+) = ००-२६′-४८′ स्टैण्डर्ड अन्तर

०६-००-०० स्पष्ट समय भा.स्टै.समय

सूर्यास्त:- = १२-०४′-५६′′

(+) = ०६-३१′-००′′

= १८-३५′-५६′′

(+) = ००-२६′-४८′

= १९-०२-४० स्पष्ट समय भा.स्टै.समय

देशान्तर संस्कार एवं पंचाग विभेद विधि

जोधपुर से अन्यत्र नगरों का देशान्तर जानने हेतु सुगम विधि यह है जोधपुर के **रेखांश** ७३। ४ में से अपने इष्ट स्थान के रेखांश घटा देवें, शेष अंश-कला संख्या के प्राप्त होगें। इस शेष में ४ से गुणा करें, जो गुणनफल आवेगा वह **देशान्तर संस्कार** मिनिट सेकण्ड मे आवेगा। इसके घटि पल बना लेंवे इस हेतु नियम ढ़ाई गुणा करने से पलात्मक **देशान्तर** प्राप्त होगा। इसे जोधपुर से पूर्व देशों में **धन** तथा पश्चिम देशों में ऋण करें एवं मध्यम इष्ट नगरीय पंचांग बन जायेगा यथा देहली रेखांश ७७। १२ जोधपुर रेखांश ७३। ४ के अन्तर से शेष ४ अंश ८ कला आया इसमें ४ से गुणित फल १६।३२ आया इसे ढ़ाई से गुणन करने पर ४०।८० आया विपल में ६० से संशोधन करने पर ४२ पल **देशान्तर** फलाशय आया। जोधपुर से देहली पूर्व देश वश धन + संज्ञक प्रतिफल बना। **चरांतर संस्कार** मध्यम इष्ट नगरीय पंचांग में चर संस्कार करने से स्पष्ट पंचांग इष्टनगरीय बनता है। यथा इष्ट दिन तारीख की **सूर्य क्रान्ति** क्रान्ति सारिणी से लेवें तथा इष्ट नगर के अक्षांश लेवें इनका परस्पर गुणन करें, गुणनफल में ५ का भाग देने से **चरपल** प्राप्त होगें। सूर्य कांति **उत्तर** हो तो तिथ्यादि में जोड़े तथा **दक्षिण** हो तो घटावें। इष्टनगरीय **दिनमान-चरपल** का २ से गुणा करें। **सूर्य उत्तरगोल** में हो तो ३० घटी में जोड़ें तथा **सूर्य दक्षिण गोल** हो तो ३० घटी घटावें एवं उस दिन का इष्ट नगर स्पष्ट होगा।

उदाहरण:- बाड़मेर रेखांश ७१।२३ जोधपुर रेखांश ७३।४ घटाने पर १ अंश ४१ कला अन्तर आया। नियमत : ४ से गुणा करने ६ अंश ४४ कला बने। ६। ४४ को ढ़ाई से गुणित करने पर १६। ५० पल बने ३० अर्धाधिक विपल वंश १७ पल देशान्तर ऋण बना।

सारिणी द्वारा शुद्ध लग्न कला पर्यन्त बनाईये

पंचांग में जो विभिन्न अक्षांश की लग्न सारिणीयां दी गई है वे २४ अयनांश पर दी गई है। ये लग्न सारिणीयां इन लिखित अक्षांशो के न्यूनतम **३०′** एवं अधिकतम **३०′** तक के लिए उपयोगी है। वैसे परामर्श है कि जहां तक हो सके अभिष्ट स्थान की ही लग्न सारिणीयों का ही प्रयोग करना चाहिये। चूंकि अयनांश का इसमें प्रयोग हो चुका है अत: अयनांश की अब इसमें आवश्यकता नहीं है। इष्ट कालीन सूर्य और इष्ट काल के द्वारा इन सारिणीयों से शुद्ध लग्न प्राप्त किये जा सकते है।

सायन सारिणी से लग्न बनाते समय सायन सूर्य बनाने की आवश्यकता नहीं होती, केवल इष्ट कालीन निरयन सूर्य ही लिया जाता है। सूर्य के अंश जिस राशि के भीतर हो उस राशि के **अंश** के नीचे सारणी में जो अंक मिले इसमें इष्टकाल जोड़ना चाहिये यह **इष्ट** युक्त सारिणी का अंक हुआ। इस सारिणी में खोजने पर प्राप्त अंक से मिलता-जुलता समीप का अंक जिस राशि के नीचे मिले वह राशि अंश लग्न की हुई- यह निरयन लग्न है।

(१) यह लग्न निकालने का स्थूलतम व सर्वमान्य सिद्धान्त है इस सारिणी से लग्न की कला विकला पर्यन्त पूर्णतया शुद्ध लग्न प्राप्त नही होता है। कला विकला पर्यन्त तक शुद्धतम् लग्न प्राप्त करने हेतु इसमें इष्टकाल व स्पष्ट सूर्य जितने निकटतम् की प्राप्त होगी लग्नांशों में उतनी ही अधिक शुद्धता प्राप्त होगी। (२) दो अंको की लग्न सारिणी की अपेक्षा ३ अंको की लग्न सारिणीयां अधिक शुद्ध फल देती है। **श्रीधरी पंचांग एवं बृहद श्रीधरी पंचांग में इस वर्ष दी गई कई सारिणीयां** त्रिकोण-मिति निष्पत्तियों के आधार पर अक्षांशो की पलभा प्राप्त ज्ञात करके चरखण्ड़ व स्वोदय पल के आधार पर निर्माण की गई है। (३) इष्ट कालीन स्पष्ट सूर्य की राशि के सामने और नीचे के कोष्ठक में जो घटीपल प्राप्त हो उनमें इष्ट काल के घटी पल जोड़ने पर जो फल प्राप्त हो उसे लग्न फल कहेंगे। (४) यह लग्न फल पुन: सारिणी में खोजनें से इसके समीपतम् का अंक जिस राशि और अंश के सामने प्राप्त हो उसे लग्नांश फल कहेंगे। यह लग्नांश फल स्थूल मान से प्राप्त होगा। इससे कला पर्यन्त जानना हो तो सूर्य की शेष कला विकला पर से फल लेकर फल में जोड़ना चाहिये तब वास्तविक लग्न फल प्राप्त होगा और इस वास्तविक लग्न फल से भी अनुपात द्वारा लग्न की कला विकला का साधन करना चाहिये। **अन्य सारिणीयों हेतु बृहद श्रीधरी पंचांग देखें।**

सुगम सूर्यक्रान्ति सारिणी श्रीधरीय

उपकरण सायन सूर्य अथवा तारिख

सूत्रः- रविक्रान्ति ज्या = सायन सूर्यांश ज्या × परमक्रान्ति ज्या
परमक्रांति २३°२७' ज्या ०.३९७९४८६

दिनांक	जनवरी सायन सूर्यांश	जनवरी दक्षिण अ. क. वि.	फरवरी सायन सूर्यांश	फरवरी दक्षिण अ. क. वि.	मार्च सायन सूर्यांश	मार्च दक्षिण अ. क. वि.	अप्रैल सायन सूर्यांश	अप्रैल उत्तर अ. क. वि.	मई सायन सूर्यांश	मई उत्तर अ. क. वि.	जून सायन सूर्यांश	जून उत्तर अ. क. वि.
०१	२८०	२३/०४/२३	३११	१७/२८/३९	३४०	०७/४९/२१	११	०४/२१/१७	४१	१५/०८/०२	७१	२२/०६/१०
०२	२८१	२२/५९/३८	३१२	१७/१२/०६	३४१	०७/२६/३९	१२	०४/४४/४५	४२	१५/२६/३४	७२	२२/१४/२०
०३	२८२	२२/५४/२८	३१३	१६/५५/१३	३४२	०७/०३/४९	१३	०५/०८/०९	४३	१५/४४/५१	७२	२२/१४/२०
०४	२८३	२२/४८/५२	३१४	१६/३८/०३	३४३	०६/४०/५३	१४	०५/३१/२८	४४	१६/०२/५२	७३	२२/२२/०६
०५	२८४	२२/४२/४९	३१५	१६/२०/३५	३४४	०६/१७/५०	१५	०५/५४/४२	४५	१६/२०/३५	७४	२२/२९/२६
०६	२८५	२२/३६/२०	३१६	१६/०२/५२	३४५	०५/५४/४२	१६	०६/१७/५०	४६	१६/३८/०३	७५	२२/३६/२०
०७	२८६	२२/२९/२६	३१७	१५/४४/५१	३४६	०५/३१/२८	१७	०६/४०/५३	४७	१६/५५/१३	७६	२२/४२/४९
०८	२८७	२२/२२/०६	३१८	१५/२६/३४	३४७	०५/०८/०९	१८	०७/०३/४९	४८	१७/१२/०५	७७	२२/४८/५२
०९	२८८	२२/१४/२०	३१९	१५/०८/०३	३४८	०४/४४/४५	१९	०७/२६/३९	४९	१७/२८/३९	७८	२२/५४/२८
१०	२८९	२२/०६/१०	३२०	१४/४९/१४	३४९	०४/२१/१७	२०	०७/४९/२१	५०	१७/४४/५६	७९	२२/५९/३८
११	२९०	२१/५७/३३	३२१	१४/३०/१२	३५०	०३/५७/४४	२१	०८/११/५६	५१	१८/००/५३	८०	२३/०४/२३
१२	२९१	२१/४८/३३	३२२	१४/१०/५४	३५१	०३/३४/०९	२२	०८/३४/२३	५२	१८/१६/३२	८१	२३/०८/४०
१३	२९२	२१/३९/०८	३२३	१३/५१/२३	३५२	०३/१०/३०	२३	०८/५६/४३	५३	१८/३१/५१	८२	२३/१२/३०
१४	२९३	२१/२९/१८	३२४	१३/३१/३८	३५३	०२/४६/४७	२४	०९/१८/५३	५४	१८/४६/५०	८३	२३/१५/५३
१५	२९४	२१/१९/०५	३२५	१३/११/३९	३५४	०२/२३/०२	२५	०९/४०/४४	५५	१९/०१/३०	८४	२३/१८/५०
१६	२९५	२१/०८/२८	३२६	१२/५१/२७	३५५	०१/५९/१५	२६	१०/०७/४८	५६	१९/१५/४८	८५	२३/२१/२९
१७	२९६	२०/५७/२६	३२७	१२/३१/०३	३५६	०१/३५/२७	२७	१०/२४/३०	५७	१९/२९/४७	८६	२३/२३/२२
१८	२९७	२०/४६/०३	३२८	१२/१०/२६	३५७	०१/११/३६	२८	१०/४६/०३	५८	१९/४३/२४	८७	२३/२४/५७
१९	२९८	२०/३४/१५	३२९	११/४९/३७	३५८	००/४७/४४	२९	११/०७/२६	५९	१९/५६/३९	८८	२३/२६/०४
२०	२९९	२०/२२/०६	३३०	११/२८/३७	३५९	००/२३/५३	३०	११/२८/३७	६०	२०/०९/३४	८९	२३/२६/४६
२१	३००	२०/०९/३४	३३१	११/०७/२६	३६०	द०/००/००	३१	११/४९/३७	६१	२०/२२/०६	९०	२३/२७/००
२२	३०१	१९/५६/३९	३३२	१०/४६/०३	०१	उत्तरक्रांति उ०/२३/५३	३२	१२/१०/२६	६२	२०/३४/१५	९१	२३/२६/४६
२३	३०२	१९/४३/२४	३३३	१०/२४/३०	०२	००/४७/४४	३३	१२/३१/०३	६३	२०/४६/०३	९२	२३/२६/०४
२४	३०३	१९/२९/४७	३३४	१०/०२/४८	०३	०१/११/३६	३४	१२/५१/२७	६४	२०/५७/२६	९३	२३/२४/५७
२५	३०४	१९/१५/४८	३३५	०९/४०/४४	०४	०१/३५/२७	३५	१३/११/३९	६५	२१/०८/२८	९३	२३/२४/५७
२६	३०५	१९/०१/३०	३३६	०९/१८/५३	०५	०१/५९/१५	३६	१३/३१/३८	६६	२१/१९/०५	९४	२३/२३/२२
२७	३०६	१८/४६/५०	३३७	०८/५६/४३	०६	०२/२३/०२	३७	१३/५१/२३	६७	२१/२९/१८	९५	२३/२१/१९
२८	३०७	१८/३१/५१	३३८	०८/३४/२३	०७	०२/४६/४७	३८	१४/१०/५४	६८	२१/३९/०८	९६	२३/१८/५०
२९	३०८	१८/१६/३२	३३९	०८/११/५६	०८	०३/१०/३०	३९	१४/३०/१२	६९	२१/४८/३३	९७	२३/१५/५३
३०	३०९	१८/००/५३	---	------	०९	०३/३४/०९	४०	१४/४९/१४	७०	२१/५७/३३	९८	२३/१२/३०
३१	३१०	१७/४४/५६	---	------	१०	०३/५७/४४	---	------	---	------	---	------

दिनांक	जुलाई सायन सूर्यांश	जुलाई उत्तर अ. क. वि.	अगस्त सायन सूर्यांश	अगस्त उत्तर अ. क. वि.	सितम्बर सायन सूर्यांश	सितम्बर उत्तर अ. क. वि.	अक्टुबर सायन सूर्यांश	अक्टुबर दक्षिण अ. क. वि.	नवम्बर सायन सूर्यांश	नवम्बर दक्षिण अ. क. वि.	दिसम्बर सायन सूर्यांश	दिसम्बर दक्षिण अ. क. वि.
०१	९९	२३/०८/४०	१२९	१८/००/५३	१५९	०८/११/५६	१८८	०३/१०/३०	२१९	१४/३०/१२	२४९	२१/४८/३३
०२	१००	२३/०४/२३	१३०	१७/४४/५६	१६०	०७/४९/२१	१८९	०३/३४/०९	२२०	१४/४९/१४	२५०	२१/५७/३३
०३	१०१	२२/५९/३८	१३१	१७/२८/३९	१६१	०७/२६/३९	१९०	०३/५७/४४	२२१	१५/०८/०२	२५१	२२/०६/१०
०४	१०२	२२/५४/२८	१३२	१७/१२/०५	१६२	०७/०३/४९	१९१	०४/२१/१७	२२२	१५/२६/३४	२५२	२२/१४/२०
०५	१०३	२२/४८/५२	१३३	१६/५५/१३	१६२	०७/०३/४९	१९२	०४/४४/४५	२२३	१५/४४/५१	२५३	२२/२२/०६
०६	१०४	२२/४२/४९	१३४	१६/३८/०३	१६३	०६/४०/५३	१९३	०५/०८/०९	२२४	१६/०२/५२	२५४	२२/२९/२६
०७	१०५	२२/३६/२०	१३५	१६/२०/३५	१६४	०६/१७/५०	१९४	०५/३१/२८	२२५	१६/२०/३५	२५५	२२/३६/२०
०८	१०६	२२/२९/२६	१३६	१६/०२/५२	१६५	०५/५४/४२	१९५	०५/५४/४२	२२६	१६/३८/०३	२५६	२२/४२/४९
०९	१०७	२२/२२/०६	१३६	१६/०२/५२	१६६	०५/३१/२८	१९६	०६/१७/५०	२२७	१६/५५/१३	२५७	२२/४८/५२
१०	१०८	२२/१४/२०	१३७	१५/४४/५१	१६७	०५/०८/०९	१९७	०६/४०/५३	२२८	१७/१२/०५	२५८	२२/५४/२८
११	१०९	२२/०६/१०	१३८	१५/२६/३४	१६८	०४/४४/४५	१९८	०७/०३/४९	२२९	१७/२८/३९	२५९	२२/५९/३८
१२	११०	२१/५७/३३	१३९	१५/०८/०२	१६९	०४/२१/१७	१९९	०७/२६/३९	२३०	१७/४४/५६	२६०	२३/०४/२३
१३	१११	२१/४८/३३	१४०	१४/४९/१४	१७०	०३/५७/४४	२००	०७/४९/२१	२३१	१८/००/५३	२६१	२३/०८/४०
१४	११२	२१/३९/०८	१४१	१४/३०/१२	१७१	०३/३४/०९	२०१	०८/११/५६	२३२	१८/१६/३२	२६२	२३/१२/३०
१५	११३	२१/२९/१८	१४२	१४/१०/५४	१७२	०३/१०/३०	२०२	०८/३४/२३	२३३	१८/३१/५१	२६३	२३/१५/५३
१६	११४	२१/१९/०५	१४३	१३/५१/२३	१७३	०२/४६/४७	२०३	०८/५६/४३	२३४	१८/४६/५०	२६४	२३/१८/५०
१७	११४	२१/१९/०५	१४४	१३/३१/३८	१७४	०२/२३/०२	२०४	०९/१८/५३	२३५	१९/०१/३०	२६५	२३/२१/२९
१८	११५	२१/०८/२८	१४५	१३/११/३९	१७५	०१/५९/१५	२०५	०९/४०/४४	२३६	१९/१५/४८	२६६	२३/२३/२२
१९	११६	२०/५७/२६	१४६	१२/५१/२७	१७६	०१/३५/२७	२०६	१०/०२/४८	२३७	१९/२९/४७	२६७	२३/२४/५७
२०	११७	२०/४६/०३	१४७	१२/३१/०३	१७७	०१/११/३६	२०७	१०/२४/३०	२३८	१९/४३/२४	२६८	२३/२६/०४
२१	११८	२०/३४/१५	१४८	१२/१०/२६	१७८	००/४७/४४	२०८	१०/४६/०३	२३९	१९/५६/३९	२६९	२३/२६/४६
२२	११९	२०/२२/०६	१४९	११/४९/३७	१७९	००/२३/५३	२०९	११/०७/२६	२४०	२०/०९/३४	२७०	२३/२७/००
२३	१२०	२०/०९/३४	१५०	११/२८/३७	१८०	उ०/००/००	२१०	११/२८/३७	२४१	२०/२२/०६	२७१	२३/२६/४६
२४	१२१	१९/५६/३९	१५१	११/०७/२६	१८१	दक्षिणक्रांति द०/२३/५३	२११	११/४९/३७	२४२	२०/३४/१५	२७२	२३/२६/०४
२५	१२२	१९/४३/२४	१५२	१०/४६/०३	१८२	००/४७/४४	२१२	१२/१०/२६	२४३	२०/४६/०३	२७३	२३/२४/५७
२६	१२३	१९/२९/४७	१५३	१०/२४/३०	१८३	०१/११/३६	२१३	१२/३१/०३	२४४	२०/५७/२६	२७४	२३/२३/२२
२७	१२४	१९/१५/४८	१५४	१०/०७/४८	१८४	०१/३५/२७	२१४	१२/५१/२७	२४५	२१/०८/२८	२७५	२३/२१/१९
२८	१२५	१९/०१/३०	१५५	०९/०२/५५	१८५	०१/५९/१५	२१५	१३/११/३९	२४६	२१/१९/०५	२७६	२३/१८/५०
२९	१२६	१८/४६/५०	१५६	०९/१८/५३	१८६	०२/२३/०२	२१६	१३/३१/३८	२४७	२१/२९/१८	२७७	२३/१५/५३
३०	१२७	१८/३१/५१	१५७	०८/५६/४३	१८७	०२/४६/४७	२१७	१३/५१/२३	२४८	२१/३९/०८	२७८	२३/१२/३०
३१	१२८	१८/१६/३२	१५८	०८/३४/२३	---	------	२१८	१४/१०/५४	---	------	२७९	२३/०८/४०

(१) अस्ताभिमुख ग्रह के सूर्यास्त कालिक उन्नतांश (क्षितिज से अंशात्मक ऊचांई) प्राप्त होने पर अस्त तथा उदयाभिमुख ग्रह के सूर्योदय कालिक उन्नतांश प्राप्त होने पर उदय होता है। ग्रहों के उन्नतांश अक्षांश भेद से परिवर्तित होते है। मंगल लगभग ७८०, बुध वर्ष में ६बार, गुरू ३९९ दिनों में , शुक्र ५८४ दिनों में, शनि ३७८ दिनों में सूर्य के पास आकर अस्त होते है। (२) मंगल १६४, बुध १४४, गुरू १३०, शुक्र १६३, शनि ११५ शीघ्र केन्द्रांशों पर वक्री होते है। (३) मंगल १९६, बुध २१६, गुरू २३०, शुक्र १९७, शनि, २४५, शीघ्र केन्द्रांशों पर मार्गी होता है।

* शनि राशि-नक्षत्र प्रवेश काल *

२८ अप्रैल	मीन	उ.भा. १	०६।१७
०७ जून	मीन	उ.भा. २	१४।०७
१३ जुलाई	मीन	उ.भा. २ व	०९।३८
१८ अगस्त	मीन	उ.भा. १	१३।१५
०३ अक्टूबर	मीन	पू.भा. ४	२३।४६
२८ नवम्बर	मीन	पू.भा. ४ मा	०९।४५
२० जनवरी २६	मीन	उ.भा. १	१०।४६
२१ फरवरी	मीन	उ.भा. २	२७।११
०८ मार्च	मीन	उ.भा. २ अ	०९।३४

* राहु राशि-नक्षत्र प्रवेश काल *

१८ मई	कुंभ	पू.भा. ३	१७।१२
२० जुलाई	कुंभ	पू.भा. २	१४।५१
२१ सितम्बर	कुंभ	पू.भा. १	१४।५४
२३ नवम्बर	कुंभ	शतभिषा ४	१०।१०
२५ जनवरी २६	कुंभ	शतभिषा ३	१०।१३

* केतु राशि-नक्षत्र प्रवेश काल *

१८ मई	सिंह	उ.फा. १	१७।१२
२० जुलाई	सिंह	पू.फा. ४	१४।५१
२१ सितम्बर	सिंह	पू.फा. ३	१४।५४
२३ नवम्बर	सिंह	पू.फा. २	१०।१०
२५ जनवरी २६	सिंह	पू.फा. १	१०।१३

श्रीधरी पंचांगकर्ता:-
पं. आशीष गौड़ (ज्योतिष रत्न)
पुराना शहर, कचहरी चौक, किशनगढ़-सिटी
(जिला-अजमेर) पिन नं. ३०५८०२

* सायन सूर्य संक्रान्ति कालांश *

१९ अप्रैल	वृषभ	२५।२७
	ग्रीष्म ऋतु: प्रारंभ	
२० मई	मिथुन	२४।२५
२१ जून	कर्क	०८।१२
	रवि दक्षिणायने/वर्षा ऋतु: प्रारंभ	
२२ जुलाई	सिंह	१८।५९
२२ अगस्त	कन्या	२६।०४
	शरद ऋतु: प्रारम्भ	
२२ सितम्बर	तुला	२३।४९
	रवि दक्षिणगोलीय प्रारम्भ	
२३ अक्टूबर	वृश्चिक	०९।२१
	हेमन्त ऋतु: प्रारंभ	
२२ नवम्बर	धनु	०७।०६
२१ दिसम्बर	मकर	२०।३३
	रवि उत्तरायने/ शिशिर ऋतु: प्रारंभ	
१९ जनवरी २०२६	कुंभ	३१।१५
१८ फरवरी	मीन	२१।२२
	वसन्त ऋतु: प्रारंभ	
२० मार्च	मेष	२०।१७
	रवि उत्तरगोलीय प्रारंभ	

श्रीधरी तेजी मंदी रिपोर्ट

शुल्क ६५०/-

सोना, चांदी, कॉपर, शेयर्स, दलहन-तिलहन, अनाज आदि किराणा वस्तुओं की कब तेजी होगी कब मंदी होगी की जानकारी हेतु वार्षिक पुस्तक मंगावें। शुल्क 650/- एवं स्पेशल रिपोर्ट हेतु सम्पर्क करें। मोबा. +919462504750

पक्षी शकुन विचार

चोंच दु:ख पांखा मरण कंठा मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन मस्तक पावे राज॥
शुभ लक्षण पावां पैर घर में मंगलाचार।
श्रीधर जोवो जगत सूं पक्षी शकुन विचार॥

पृच्छक अपने मन में काम विचार के इस चिड़िया के शरीर के ऊपर जो श्री है उनमें से कोई भी अंग की एक श्री के ऊपर अंगुली रखें जिसका फल ऊपर लिखे दोहे के योग्य समझ लेवें। **इति शकुन विषये।**

सिद्ध श्रीयंत्र

लक्ष्मी प्राप्ति, व्यापार वृद्धि, घर में सुख-समृद्धि, वैभव प्राप्ति हेतु व्यापार पूजन स्थल एवं गृह पूजन स्थल पर सुमुहूर्त्त में प्रतिस्थापित करें। शुल्क ५०१/- रूपये मनी आर्डर भेजकर मंगावें।

* * रवि योग संवत् २०८२ सन् २०२५-२६ * *

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
दिनांक	घं.-मि.	दिनांक	घं.-मि.	दिनांक	घं.-मि.	दिनांक	घं.-मि.
३१ मार्च	१३।४५	३१ मार्च	१४।००	२४ सितम्बर	१६।१७	२५ सितम्बर	१९।०९
०१ अप्रैल	११।०७	०२ अप्रैल	०८।५०	२६ सितम्बर	२२।०९	२७ सितम्बर	०७।०७
०३ अप्रैल	०७।०२	०३ अप्रैल	२९।५१	२७ सितम्बर	२५।०८	२८ सितम्बर	२७।५५
०५ अप्रैल	२९।३२	०८ अप्रैल	०७।५५	०१ अक्टूबर	०८।०६	०३ अक्टूबर	०९।३५
१० अप्रैल	१२।२५	११ अप्रैल	१५।१०	०५ अक्टूबर	०८।०१	०५ अक्टूबर	३०।१६
१९ अप्रैल	१०।२१	२० अप्रैल	११।४८	१२ अक्टूबर	१३।३७	१३ अक्टूबर	१२।२७
३० अप्रैल	१६।१८	०१ मई	१४।२१	२३ अक्टूबर	२८।५१	२३ अक्टूबर	३०।४०
०२ मई	१३।०४	०३ मई	१२।३४	२५ अक्टूबर	०७।५२	२६ अक्टूबर	१०।४७
०५ मई	१४।०१	०७ मई	१८।१७	२७ अक्टूबर	१३।२८	२८ अक्टूबर	१५।४५
०९ मई	२४।०९	१० मई	२७।१५	३० अक्टूबर	१८।३४	०१ नवम्बर	१८।२१
११ मई	१३।१८	१२ मई	०६।१७	०३ नवम्बर	१५।०६	०४ नवम्बर	१२।३५
१८ मई	१८।५३	१९ मई	१९।३०	१० नवम्बर	१८।४८	११ नवम्बर	१८।१८
२९ मई	२२।३९	३० मई	२१।२९	२३ नवम्बर	१९।२८	२४ नवम्बर	२१।५४
३१ मई	२१।०७	०१ जून	२१।३७	२५ नवम्बर	२३।५८	२६ नवम्बर	२५।३३
०३ जून	२७।५९	०६ जून	०६।३४	२८ नवम्बर	२६।५०	३० नवम्बर	२५।११
०९ जून	१५।३१	१० जून	१८।०२	०२ दिसम्बर	२०।५२	०२ दिसम्बर	२५।१४
१६ जून	२५।१४	१७ जून	२५।०२	०३ दिसम्बर	१८।००	०४ दिसम्बर	१४।५४
२८ जून	०६।३६	२९ जून	०६।३४	०९ दिसम्बर	२६।२३	१० दिसम्बर	२६।४४
३० जून	०७।२१	०१ जुलाई	०८।५४	२२ दिसम्बर	२९।३२	२३ दिसम्बर	३१।०८
०३ जुलाई	१३।५१	०५ जुलाई	१९।५१	२५ दिसम्बर	०८।१८	२६ दिसम्बर	०९।००
०५ जुलाई	२९।४८	०६ जुलाई	२२।४२	२८ दिसम्बर	०८।४३	२८ दिसम्बर	३०।३०
०८ जुलाई	२७।१५	०९ जुलाई	२८।५०	२९ दिसम्बर	०७।४१	३० दिसम्बर	२७।५८
१५ जुलाई	२९।४७	१६ जुलाई	२८।५०	०१ जन. २६	२२।४८	०२ जनवरी	२०।०४
२७ जुलाई	१६।२३	२८ जुलाई	१७।३६	०८ जनवरी	१२।२४	०९ जनवरी	१३।४१
२९ जुलाई	१९।२८	३० जुलाई	२१।५३	२१ जनवरी	१३।५८	२२ जनवरी	१४।२७
०१ अगस्त	२७।४१	०२ अगस्त	२८।०८	२३ जनवरी	१४।३३	२४ जनवरी	१०।५०
०३ अगस्त	०६।३५	०५ अगस्त	११।२३	२४ जनवरी	१४।१६	२५ जनवरी	१३।३६
०७ अगस्त	१४।०१	०८ अगस्त	१४।२८	२७ जनवरी	११।०९	२९ जनवरी	०७।३२
१४ अगस्त	०९।०६	१५ अगस्त	०७।३६	३० जनवरी	२७।२७	३१ जनवरी	२५।३४
२५ अगस्त	२७।५०	२६ अगस्त	३०।०४	०७ फरवरी	२६।२८	०८ फरवरी	२९।०३
२८ अगस्त	०८।४४	२९ अगस्त	११।३९	२० फरवरी	२०।०७	२१ फरवरी	१९।०७
०१ सित.	१९।५५	०३ सितम्बर	२३।०८	२२ फरवरी	१७।५५	२३ फरवरी	१६।३४
०५ सितम्बर	२३।३८	०६ सितम्बर	२२।५६	२५ फरवरी	१३।३९	२७ फरवरी	१०।४९
१२ सितम्बर	११।५९	१३ सितम्बर	१०।११	०१ मार्च	०८।३४	०२ मार्च	०७।५२
१३ सितम्बर	१५।४१	१४ सितम्बर	०८।४१	०९ मार्च	१६।११	१० मार्च	१९।०५

सूचना- "**श्रीधरी चण्डांशु पंचांग**" खरीदते समय मुख पृष्ठ पर "**श्रीधरी**" का इन्द्रधनुष सा सप्तरंगी होलोग्राम (जिस पर "**पं. महावीर प्रसाद जी गौड़**" की फोटो लगी हुई है) को अवश्य देखें। यदि पंचांग पर हालोग्राम नहीं लगा हुआ है तो इसे नकली पंचांग समझें। इसकी सूचना हमें शीघ्र निम्न पते पर देवें। सूचना देने वाले का नाम गुप्त रहेगा तथा उसे उचित पुरस्कार भी दिया जावेगा। एवं नक्कालों पर शीघ्र कानूनी कार्यवाही की जावेगी। यदि किसी पुस्तक विक्रेता के बिना होलोग्राम लगा हुआ पंचांग प्राप्त होता है तो उसकी जवाबदारी स्वयं उसी विक्रेता की होगी, अतः होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदे एवं विक्रय करें। नक्कालों से सावधान रहें। पता:- बम्बई वाले पं. श्रीधर शिवलालजी ज्ञानसागर छापाखाना, पुराना शहर किशनगढ़-सिटी जिला-अजमेर राज.

इस पञ्चाङ्ग की अधिक मान्यता देख, इसी माफिक अन्य पञ्चाङ्ग बने हैं, अतः पञ्चाङ्ग लेते समय पं. महावीर प्रसादजी का शुद्ध चित्र अवश्य देखें।

श्रीधरी पञ्चाङ्ग बम्बई कार्यालय किशनगढ़ (राजस्थान)

नक्कालों से सावधान– असली श्रीधरी श्रीचण्डांशु पञ्चाङ्ग खरीदते समय कवर पृष्ठ पर 3D इफेक्ट एवं महावीर प्रसाद जी का शुद्ध चित्र तथा **श्रीधरी** वाला गोल्डन सतरंगी होलोग्राम अवश्य देखें। नकली की सूचना देने वाले को उचित ईनाम दिया जायेगा।

॥ श्री हरिः ॥ यह जोधपुर का 'श्रीधरी श्रीचंडांशु पञ्चाङ्ग' सूक्ष्म ब्रह्मतुल्य ग्रहगणित सहित धर्म कृत्योपयोगी पं. श्रीधर शिवलालजी गौड़ ब्राह्मण सलेमाबाद ने, ज्ञानसागर छापाखाना में मुद्रित किया। श्लोक – ज्योतिर्विदां प्रसादाय श्री शिवलाल सुनुना ॥

श्री धरेणांकितं पत्रं मुम्बय्यां सीसकाक्षरैः ॥ १ ॥ श्रीरस्तुः

(पञ्चाङ्ग १८४७ के एक्ट २० और १८६७ के एक्ट प्रमाण से रजिस्ट्री किया गया है।)

Published by- Pandit Indra Mohan Sharma Grand S/o Pt. Mahabir Prasad Sharma for Bombay Wale Pt. Shridhar Shiolalji
Printed by- Gyan Sagar Press, Kishangarh (Rajasthan) PIN 305802 Ph.: (01463) 244160 Mob. +9194625 04750